



प्रतिष्ठा पशव

(मन्दिर-वेदीप्रतिष्ठा-कलशारोहण विधि)



पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'
ब्र. जयकुमार 'निशांत'

Pratiṣṭhā - Parāga

(Mandira-Vedī-Pratiṣṭhā-Kalaśarohaṇa Vidhi)

Co-ordination :
Paṇḍita Gulābachandra 'Puṣpa'

Editing :
Bra. Jayakumāra 'Niśānta'

Publishers
Paṇḍita Mannūlāl Jain Pratiṣṭhācārya Smarṭi Trust
Akhila Bhāratavarṣīya Digambara Jain Śāstri-Pariṣad

Pratiṣṭhā Parāga

Co-ordination : Paṇḍita Gulābacandra 'Puṣpa'
Editing : Bra. Jayakumāra 'Niśānta'
Edition : 1100 (Fourth Revised), Mahāvīra Jayanti 2013
Publishers : Paṇḍita Mannūlāla Jain Pratiṣṭhācārya Smarṭi Trust
Puṣpa Bhavana, Tikamagarha (M. P.) 472001

Akhila Bhāratavarṣīya Digambara Jain Śāstri-Pariṣad
Mahāmantri Kāryālaya, Puṣpa Bhavana,
Tikamagarha (M. P.) 472001

Occasion : Dikṣā Varṣa (Year of Renunciation) of Sarākodhāraka
Upādhyāyaratna Śrī Gyānasāgara jī Mahārāja &
Muni Śrī Pramāṇasāgara jī Mahārāja,
Muni Śrī Ārajava Sāgara j Mahārāja
Courtesy : In memory of Śrī Padmasen Jain By Dharmapatnī
Śakuntalā, Son Mukeśa Kumāra, Putravadhu Madhu Jain,
Grand Son Rajata, Grand Daughter Āyuṣī, Miśana cauka,
Sonīpata (Hariyānā)

Places, where from one can get the copy of the Book:

1. **Bra. Jayakumāra 'Niśānta'**
Paṇḍita Mannūlāl Jain Pratiṣṭhācārya Smarṭi Trust
Puṣpa Bhavana, Tikamagaḍha (M.P.) 472001, Phone – (07683) 243138
2. **ArihantaSāhityaSadana**
4, Rainwo Vihāra, Mujaphphara Nagara (U.P.), Phone – 0131-2433257
3. **Gajendra Publication**
2578, Galī Pīpala Vāli, Dharmapurā, Delhi, Phone – 09810035356
4. **Śrī Digambara Jain Pañcabālayati Mandira**
Near Bombe Hospital, A.B. Road, Indore-10, Phone – 0731-2571851
5. **Jain Sāhitya Sadana**
Lāla Mandira, Cāndanī Cauka, Delhi, Phone –011-23253638
6. **Upādhyāya Śrī Jñānasāgara Sāhitya Sadana**
Tijārā, Alavar (Rajasthāna), Phone- 0140-262407, 262119
7. **Amara Granthālaya**
Śrī Diga. Jain Udāsīna Āśrama. Indore, Phone-09425478846

Production Cost: 120/-

Printer: Deep Printers, 70-A Rāmā Road, Industrial Area, New Delhi-110015
M. 9871196002

प्रतिष्ठा-पराग

(मन्दिर-वेदी-प्रतिष्ठा-कलशारोहण विधि)

संयोजन

पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'

सम्पादन

ब्र. जयकुमार 'निशान्त'

—: प्रकाशक :-

पं. मन्मूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट
अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्र-परिषद्

प्रातिष्ठा-पराग

संयोजन : पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'

सम्पादन : ब्र. जयकुमार 'निशान्त'

आवृत्ति : चतुर्थ-1100 संशोधित संस्करण, महावीर जयंति 2013

प्रकाशक : पं. मन्मूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट
पुष्प भवन, टीकमगढ़ (म.प्र.) 472001

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्र-परिषद्
महामन्त्री कार्यालय, पुष्प भवन, टीकमगढ़ (म.प्र.) 472001

अवसर : सराकोद्धारक उपाध्यायरत्न श्री ज्ञानसागर जी महाराज एवं
मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज, मुनिश्री आर्जव सागर जी महाराज
का रजत दीक्षा वर्ष

सौजन्य : स्व. श्री पद्मसेन जैन की स्मृति में धर्मपत्नी शकुन्तला पुत्र
मुकेश कुमार पुत्रवधु मधुजैन पौत्र रजत एवं पौत्री आयुषी,
मिशन चौक, सोनीपत (हरियाणा)

प्राप्तिस्थान

1. ब्र. जयकुमार 'निशान्त'
पं. मन्मूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट
पुष्प भवन, टीकमगढ़ (म.प्र.) 472001 फोन-(07683) 243138
 2. अरिहन्त साहित्य सदन
4, रेनवो विहार, मुजफ्फरनगर(उ.प्र.) फोन-0131-2433257
 3. गजेन्द्र पब्लिकेशन
2578, गली पीपल वाली, धर्मपुरा, दिल्ली, फोन-09810035356
 4. श्री दिगम्बर जैन पञ्चबालयति मन्दिर
बाम्बे हास्पिटल के पास, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10
फोन-0731-2571851
 5. जैन साहित्य सदन
लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली, फोन-011-23253638
 6. उपाध्याय श्रीज्ञानसागर साहित्य सदन
तिजारा, अलवर (राजस्थान), फोन-0149-262407, 262119
 7. अमर ग्रन्थालय
श्री दिग० जैन उदासीन आश्रम, तुकोगंज, इन्दौर फोन-09425478846
- लागत राशि : 120/-
मुद्रक : दीप प्रिंटर्स
70-ए रामा रोड़ इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110015
फोन : 09871196002

अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय	vii	इन्द्रप्रतिष्ठा	84
सम्पादकीय	1	मण्डपप्रतिष्ठा	88
प्रतिष्ठाचार्यों को चेतावनी	4	बृहद्देवी व मानस्तम्भ प्रतिष्ठा ...	93
मङ्गल पञ्चकम्	6	शुद्धि विधान (81 मन्त्र)	96
मङ्गलाचरण	7	वेदीसंस्कार	106
मङ्गलाष्टकम्	7	जिनविम्ब स्थापन विधि	118
अभिषेक विधि	9	मानस्तम्भ प्रतिष्ठा	127
अभिषेक पाठ	12	यन्त्र प्रतिष्ठा	131
शान्तिधारा	16	कलशारोहण विधि	134
आरती	18	कलश शुद्धि	137
स्वस्तिक अङ्कन उद्देश्य एवं भावना	19	शिखर शुद्धि	141
पूजा विधि	22	कलशारोहण, ध्वजारोहण	142
विनय पाठ	23	शान्तिहवन विधि	146
पूजन पीठिका	25	पुण्याहवाचन	156
देव-शास्त्र-गुरु पूजन	29	मण्डल विसर्जन	158
अर्घ्यावली	33	मङ्गल ध्वज विसर्जन	159
शान्तिपाठ	44	यज्ञदीक्षा समापन विधि	159
विसर्जन	45	भूमि शुद्धि शिलान्यास	161
सकलीकरण एवं जाप्यानुष्ठान	48	खात-क्रिया	164
प्रतिक्रमण	53	शिलान्यास	169
जाप्यानुष्ठान	55	परिशिष्ट	173
यन्त्र अभिषेक	55	सङ्केत सूची	173
विनायक यन्त्र पूजा	57	देवउत्थापन विधि	173
जप सङ्कल्प	62	शान्तिकर्म	175
मालाशुद्धि मन्त्र	62	बृहच्छान्तिमन्त्र	175
जापमन्त्र	63	श्रीपार्श्वनाथ स्तोत्र	182
ध्वजास्थापन विधि	66	उवसगहर पार्श्वनाथ स्तोत्र	183
ध्वजगान	73	चैत्य चैत्याल्य निर्माण एवं विधि...184	
घटयात्रा	75	गृह/प्रतिष्ठान में यन्त्र स्थापना .	188
तीर्थमण्डल पूजा	78	श्रुतपञ्चमी पर्व एवं पूजन विधि	189
वेदीसंस्कार विधि	82	महावीर निर्वाणोत्सव	190

दीपावली पूजन विधि	192	शिलान्यास मुहूर्त चक्र	235
श्रीगौतम गणधर पूजा	193	गृहनिर्माण के लिए सप्तसकारयोग ..	235
महावीराष्टक स्तोत्र	197	कलशचक्र	235
दुकान पर दीपावली एवं बही शुभारम्भ	198	नूतन गृहप्रवेश चक्र	236
गृहारम्भ	199	पुनर्निर्मित गृहप्रवेश चक्र	236
गृहप्रवेश	200	दुकान मुहूर्त चक्र	236
प्रतिष्ठान शुभारम्भ	202	वृहद् व्यापार मुहूर्त चक्र	237
प्रथम देवदर्शन विधि	202	शाक्तिक एवं पौष्टिक मुहूर्त चक्र	237
वाहन शुद्धि संस्कार विधि	203	मन्दिर मुहूर्त चक्र	237
व्रती/महाव्रती का अन्तिम संस्कार	203	प्रतिमा निर्माण मुहूर्त चक्र	237
सुतक पातक एक दृष्टि	205	प्रतिष्ठा मुहूर्त चक्र	238
व्रत ग्रहण एवं उद्यापन विधि ...	210	बिम्ब स्थापन मुहूर्तचक्र	238
भक्तियाँ	213	कूपखनन-मुहूर्तचक्र	239
पञ्च गुरुभक्ति	214	कूप शुद्धि चक्र	239
सिद्धभक्ति	215	होमाहुति नक्षत्र मुहूर्त	239
श्रुतभक्ति	216	अग्निवास	239
चारित्र्यभक्ति	217	अशुभयोग चक्र	240
आचार्यभक्ति	218	शुभयोग चक्र	243
तीर्थङ्करभक्ति	219	बारह मास में तिथियों में	
चैत्यभक्ति	220	तीर्थङ्करों के कल्याणक	246
योगभक्ति	221	विनायक यन्त्र	250
समाधिभक्ति	223	लघु सिद्ध यन्त्र	251
निर्वाणभक्ति	226	मातृका यन्त्र	252
शान्तिभक्ति	228	नवदेव मण्डल यन्त्र	253
अनुष्ठान में मुहूर्त	231	यन्त्रेश यन्त्र	253
चन्द्रमा का शुभाशुभ फल	231	जल यन्त्र	254
नक्षत्र	232	आकाश मण्डल यन्त्र	255
भूमिशयन	232	अग्नि मण्डल यन्त्र	255
भूमिरजस्वला	232	नन्द्यावर्त स्वस्तिक	256
राहुचक्र	233	चतुर्विंशति तीर्थङ्कर यन्त्र	257
वृषवास्तुचक्र	233	अष्टप्रातिहार्य	263
शल्यशोधन	234	अष्टमङ्गलद्रव्य	264

प्रकाशकीय

पण्डितप्रवर श्री गुलाबचन्द्र जी 'पुण्य' एक सिद्धान्तज्ञ विद्वान् एवं अनुभव-वृद्ध प्रतिष्ठाचार्य हैं। प्रतिष्ठाकार्यों को सम्पन्न कराते समय वे आगम सम्मत समस्त मर्यादा एवं पात्रों की त्रियोग शुद्धि का पूरा ध्यान रखते हैं। इस सन्दर्भ में वह कभी कोई समझौता नहीं करते और अपनी इसी दृढ़ता के कारण वह आज सर्वमान्य भी हैं।

'प्रतिष्ठारत्नाकर' में उन्होंने प्रतिष्ठा सम्बन्धी सम्पूर्ण विधियों को बहुत स्पष्टता एवं विस्तार के साथ प्रस्तुत किया है। जो देश के नवोदित प्रतिष्ठाचार्यों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। यही नहीं अधिकांश प्रतिष्ठाचार्य इसी ग्रन्थ से प्रतिष्ठाकार्य सम्पादित करा रहे हैं।

अनुष्ठानों से धार्मिक प्रभावना के साथ श्रावक संस्कारित हों तो अनुष्ठान की सार्थकता है। ज्ञान के प्रचार-प्रसार से स्वाध्याय की अभिरुचि जागृत हुई है इसलिए प्रत्येक श्रावक पुस्तक से पढ़कर अनुष्ठान करना चाहता है। सभी विधानों की पुस्तकों में अनुष्ठान क्रिया विधि उपलब्ध नहीं होती। यदि होती भी है तो अति संक्षिप्त होती है, जिससे पूर्ण क्रिया सम्पादित करना सम्भव नहीं होता। नवीन विद्वान कभी कभी उसी से काम चला लेते हैं। जिसका दुष्प्रभाव भी पड़ सकता है।

मन्त्रजाप, सकलीकरण, रक्षामन्त्र, दिग्बन्धन सभी का प्रभाव परिलक्षित होता है। वर्तमान में विज्ञान ही विश्वास की कसौटी बन गया है। नवोदित विद्वानों में ज्ञान का विकास तो हुआ है परन्तु शोध की ओर जिज्ञासा न होने से क्रियाकाण्ड की आवश्यकता, प्रभाव, महत्त्व एवं सफलता से आज तक अनभिज्ञ हैं। यह समस्त मौलिक क्रियाएँ औपचारिक रूप में की जाती हैं, जबकि विज्ञान भी मन्त्रशक्ति, मन्त्र ऊर्जा को स्वीकारने लगा है। आज आवश्यकता है इस पर चिन्तन-मनन की, वैज्ञानिक प्रमाणों से श्रावकों में विश्वास जगाने की, मन, वचन, काय की शुद्धि, तन्मयता एवं समर्पण की जिससे हमारी आन्तरिक भावना में परिवर्तन करके कषायों का शमन कर सकें। भक्ति में तल्लीन होकर अशुभ से बचकर शुभ चिन्तन की ओर बढ़ सकें।

इस क्षेत्र में प्रवेशेच्छुकों के लिए मन्दिर वेदी प्रतिष्ठा सम्बन्धित ग्रन्थ की अत्यधिक आवश्यकता महसूस की जा रही थी। यह 'प्रतिष्ठा पराग' ग्रन्थ उसकी पूर्ति की दिशा में किया गया एक सार्थक प्रयास है।

यह 'प्रतिष्ठा पराग' ग्रन्थ जनमानस के लिए भी उपयोगी है। दीपावली पूजन, श्रुतपञ्चमी, गृहप्रवेश, मुहूर्तशोधन, वाहनशुद्धि, सल्लेखना पूर्वक अन्तिम संस्कार विधि आदि कई विषयों की क्रिया विधि को इतने विस्तार से दिया गया है कि सुधीजन यह माङ्गलिक क्रियाएँ स्वयं भी सम्पादित कर सकते हैं। जो इस ग्रन्थ की महत्ता को वृद्धिगत करती हैं।

पूर्व में वेदी प्रतिष्ठा विषयक ग्रन्थ "मन्दिर वेदी प्रतिष्ठा" डॉ. पं. पन्ना लाल जी साहित्याचार्य द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित हुआ था। "प्रतिष्ठा पराग" ग्रन्थ में नवीन विषयों के समावेश के साथ-साथ क्रिया विधि के संशोधन एवं संवर्द्धन होने से यह कृति अपनी एक अलग ही पहचान बनाएगी।

निश्चित रूप से इसके सङ्कलन/सम्पादन में अत्यन्त श्रम किया गया है। ब्र. जयकुमार 'निशान्त' की योग्यता निरन्तर प्रखर हो रही है, उन्होंने 'पुष्प जी' से प्रतिष्ठाकार्य की सारी जिम्मेदारी ले ली है। इस ग्रन्थ के सम्पादन में उनके साथ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी लोग आभार के पात्र हैं।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्र-परिषद् 'प्रतिष्ठा पराग' ग्रन्थ को नवोदित प्रतिष्ठाचार्यों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं प्रामाणिक मानती है। नवोदित विद्वानों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से शास्त्र-परिषद् एवं पं. मन्नु लाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट ने इसे प्रकाशित किया है।

संस्कारों में आस्था रखने वालों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है। जैन समाज में इस प्रयास का भरपूर स्वागत होगा यह विश्वास है।

इंजी. शिखर चन्द्र सिंघई

अध्यक्ष

पं. मन्नु लाल जैन प्रतिष्ठाचार्य
स्मृति ट्रस्ट

डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बडौत

अध्यक्ष

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन
शास्त्र-परिषद्

सम्पादकीय

पूजार्हणार्चा यजनं च यज्ञ इज्या सपर्या परिसेवनं च।
महः कृतुः कल्प उपासनेति प्रभृत्युपाख्या जिनपूजनस्य ॥

पूजा, अर्हणा, अर्चा, यजन, यज्ञ, इज्या, सपर्या, सेवा, मह, कृतु, कल्प, उपासना आदि पूजा के पर्यायवाची नाम हैं। सभी का तात्पर्य है पाप क्रियाओं का त्याग करके, विकल्प रहित निर्मल भावों से, आराधना में मन, वचन, काय से समर्पित होना।

आचार्यों ने दान, पूजा, शील, उपवास से ही श्रावक के पापों का प्रक्षालन होना बताया है, यहाँ तक कि निधत्ति, निकाचित कर्मों का क्षय भी इसी पवित्र भावना से सम्भव है। परन्तु हमारी उत्सव-प्रियता ने धार्मिक अनुष्ठान को भी उत्सव बना दिया है। आज अनुष्ठान की अलौकिक क्रियाएँ भी आत्म-शुद्धि की जगह मनोरञ्जन के लिए की जाने लगी हैं, जो अरिहन्त एवं आगम की अवज्ञा ही है, जिसका दुष्परिणाम आयोजक एवं प्रतिष्ठाचार्य के लिए अनिष्टकारक हो सकता है। यही कारण है कि अर्थोपार्जन बोली (मान प्रतिष्ठा) एवं प्रदर्शन (सांस्कृतिक मञ्चीय क्रियाओं) में ही समय बीतने से अनुष्ठान के मन्त्र, जाप, भक्तियों की समयाभाव से संक्षिप्त रूप में केवल औपचारिकता कर ली जाती है। जिससे हमारे जीवन में सुख, शान्ति, सन्तोष की जगह अहङ्कार, मान, आवेग एवं क्षोभ बढ़ रहा है।

पात्रों की शुद्धि अङ्गन्यास (सकलीकरण), जापमन्त्र का शुद्धोच्चारण, पवित्र भावना तथा आगमोक्त क्रिया विधि से करने पर अतिशय प्रभावना होती है एवं सुख, समृद्धि, शान्ति भी प्राप्त होती है। अनुष्ठान लौकिक कामनाओं से परे अर्हद्भक्ति, आत्मविशुद्धि, धन के सदुपयोग का सौभाग्य मानते हुए मन, वचन, काय की एकाग्रता के साथ करना चाहिए। प्रतिष्ठाचार्यों को सभी की धार्मिक भावना जागृत करके अनुष्ठान की महत्ता, बहुमान एवं क्रियाविधि से अवगत कराना चाहिए, जिससे वह अनुष्ठान केवल 8-10 दिन ही नहीं जीवन भर उनकी चर्या को विशुद्ध करता रहे।

अनुष्ठान की क्रियाविधि अलग-अलग ग्रन्थों में उल्लिखित है जो कार्य कराने वालों की अनभिज्ञता, अनुभवहीनता, समयाभाव में अपूर्ण की जाती है। यह धार्मिक प्रभावना की जगह अप्रभावना का कारण बन जाती है। वर्तमान में अनावश्यक क्रियाओं का समावेश होने से अनुष्ठान क्रियाएँ

विकृत रूप में की जाने लगी हैं जिनका उल्लेख जैनागम में नहीं मिलता है जैसे- दीपावली की रात्रि पूजन, व्यापार उपकरण पूजा, वाहन पूजा, अन्य मतानुसार अनुष्ठान क्रिया विधि आदि। इनका उल्लेख आगम में उपलब्ध न होने पर भी प्राचीन परम्परा एवं वयोवृद्ध विद्वानों के अनुभव के आधार पर देने का प्रयास किया गया है।

शिलान्यास, बिम्बस्थापन, शिखरशुद्धि, कलशारोहण का विषय अपूर्ण एवं अव्यवस्थित मिलता था जिसे ग्रन्थों एवं विद्वानों से प्राप्त कर संयोजित किया गया है। अनुष्ठान में उपयोगी यन्त्र-मन्त्र तथा चौबीस तीर्थङ्करों के अनाहत मन्त्र एवं यन्त्र समाविष्ट किए गये हैं, जिससे क्रियाएँ सम्यक् विधि से की जा सकें। जीवनोपयोगी विषय वर्तमान की आवश्यकतानुसार दिये गये हैं। जिससे गृहारम्भ, गृहप्रवेश, दीपावली पूजन आदि आगमानुसार सम्पादित की जा सकें। इसी के साथ इनके शुभ मुहूर्त विशद रूप में दिये गये हैं।

समस्त क्रिया विधि को सरलीकृत पूर्ण रूपेण व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है, फिर भी हो सकता है कहीं कमी रह गयी हो तो सुधीजन उनका सङ्केत करने का कष्ट करें, जिससे आगामी संस्करण में परिमार्जन किया जा सके।

ग्रन्थ के संयोजन में परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज, आचार्यश्री विद्यानन्दजी महाराज, उपाध्यायश्री ज्ञानसागरजी, गुप्तसागर मुनिश्री क्षमासागर, समतासागर, प्रमाणसागर, प्रसादसागर, सौरभसागरजी का मङ्गल आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही कई आचार्यों, मुनिराजों, विद्वानों से परामर्श एवं सहयोग मिला है उनके सदैव कृतज्ञ रहेंगे, उनका शब्दों में आभार नहीं किया जा सकता। इस श्रम साध्य कार्य में ब्र.विनोद जी (पपौरा जी), पं.विनोद कुमार जी (रजवांस) डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी (पठा) के साथ संकलन का दुरुह कार्य अर्चना (पम्मी), मनीष (संजू) ने दिनरात अथक परिश्रम करके किया है जो अविस्मरणीय है। अक्षर संयोजन दीपक जैन (ए.व्ही.एस. कम्प्यूटर टीकमगढ़) ने करके तथा दीप प्रिण्टर्स, दिल्ली ने उत्कृष्ट प्रकाशन करके कृति को सुन्दर रूप दिया है। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् ने इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता को स्वीकार करके तथा शास्त्र-परिषद् ने इसका प्रकाशन करके इसे सर्वमान्य बनाया है जो मेरा सौभाग्य है। विद्वान् इस कृति से लाभान्वित हों इसी भावना के साथ.....।

श्रुत पञ्चमी 2004

- ब्र. जयकुमार 'निशान्त'

चतुर्थ संस्करण

'प्रतिष्ठा पराग' कृति को जहाँ सभी आचार्यों एवं मुनिराजों द्वारा प्रतिष्ठा आदि कार्यों हेतु अत्यन्त उपयोगी बताया गया, वहीं विद्वानों द्वारा विशिष्ट मान्यता प्रदान किये जाने से प्रस्तुतकृति का संस्करण अल्पकाल में ही समाप्त हो गया। गहन अध्ययन के उपरान्त इसमें संशोधन एवं परिवर्द्धन की आवश्यकता प्रतीत हुई तथा नवोदित विद्वानों के लिए स्पष्ट निर्देश एवं सावधानियों का समायोजन करके इस कृति को और सरल बनाया गया है।

सराकोद्धारक उपाध्यायरत्न श्री ज्ञानसागर जी महाराज के सान्निध्य में कई वरिष्ठ विद्वानों एवं ब्रह्मचारी भाइयों ने संशोधन करने हेतु विचार विमर्श किया। जिसे सन्तशिरोमणि आचार्य श्रीविद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनिश्री मार्दवसागर मुनिश्री प्रमाणसागर, क्षु.श्री ध्यानसागर जी महाराज एवं भट्टारक चारुकीर्ति के निर्देशन में डॉ. सुदीप जैन दिल्ली, पं. नन्हेभाई जी सागर, पं. विनोद जी रजवांस एवं पं. मनीष जी टीकमगढ़ ने अथक श्रम करके पूर्ण किया है। वह अत्यन्त सराहनीय है, जिसकी प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

तृतीय संस्करण के सूक्ष्म संशोधन ब्र. करुणासागर ब्र. राकेश भैया सागर, प्राचार्य अरुण जी ब्यावर, पं. सोनल शास्त्री को साधुवाद, विनम्र आभार।

इस संशोधित कृति में अपूर्ण विषयों के पूर्ण करने के लिए आचार्य जयसेनस्वामी के प्रतिष्ठापाठ, अन्य प्रतिष्ठा ग्रन्थों एवं हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के सन्दर्भ से कई विषयों एवं मन्त्रों में परिमार्जन करके आवश्यक सामग्री सङ्गृहीत की गई है; जिससे इस कृति का उपयोग सर्व सुलभ होगा।

सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के संघस्थ मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज द्वारा पृष्ठ क्रमांक 67, 68, 71, 108, 166 के श्लोक (*) तथा पृष्ठ 114 एवं 133 की पूजा की जयमाला की रचना प्रसंगानुसार करके विषय पूर्ण कर उपकृत किया है।

यह मेरा सौभाग्य है कि अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्र परिषद् एवं विद्वत् परिषद् का पूर्ण समर्पण एवं वरिष्ठ विद्वान पं. पन्ना लाल जी साहित्याचार्य, सागर पं. नाथूलाल जी शास्त्री, इंदौर का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

नवोदित विद्वान् इस कृति का सम्यक् उपयोग कर निष्ठापूर्वक अनुष्ठान सम्पन्न कराएँ जिससे समाज, देश तथा विश्व में मन्त्रानुष्ठान से सुख समृद्धि एवं शान्ति की वृद्धि हो।

इस मङ्गल भावना के साथ समस्त सहयोगियों के प्रति आभार सहित—
महावीर जयन्ती 2013

- ब्र. जयकुमार 'निशान्त'

प्रतिष्ठाचार्यों को चेतावनी

वर्तमान में श्रावकों को स्वाध्याय एवं सन्त समागम का सौभाग्य सहज ही प्राप्त हो रहा है। नगर-नगर में धार्मिक अनुष्ठान बहुलता से हो रहे हैं, नवोदित विद्वानों को भी अनुष्ठान क्रियाएँ सम्पादित करने का पुण्यावसर प्राप्त होता है, परन्तु अनुष्ठान क्रिया-विधि का सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक एवं शास्त्रोक्त ज्ञान नहीं होने के कारण त्रुटियाँ होती हैं, जिसका दुष्प्रभाव स्वयं विद्वान् पर, समाज पर एवं अनुष्ठान कर्ताओं पर पड़ता है।

अर्थ-हीनाऽथ कर्तारं मन्त्र-हीना तु ऋत्विजम्।

श्रियं लक्षण-हीना तु न प्रतिष्ठा समो रिपुः॥१७८॥

(बृहद्वास्तुमाला)

द्रव्यहीन प्रतिष्ठा यजमान का, मन्त्रहीन प्रतिष्ठा आचार्य का एवं लक्षणहीन प्रतिष्ठा लक्ष्मी का विनाश करती है। ऐसी प्रतिष्ठाओं के समान कोई शत्रु नहीं है।

नवोदित विद्वानों को वरिष्ठ विद्वानों के साथ अनुष्ठान क्रिया विधि की गूढ़ विधियाँ, शुभ मुहूर्त, मन्त्रोच्चारण, यन्त्रों का प्रयोग तथा क्रियाकाण्ड का गहन अध्ययन कर अनुभव प्राप्त करना चाहिए। अनुष्ठान के प्रति निष्ठा, मन्त्र जाप, भक्तियों का सम्यक् रूपेण उपयोग तथा शुभवेला में क्रियाएँ करना अनिवार्य है। अनुष्ठान को लौकिक कामनाओं, चमत्कारों एवं अर्थार्जन का माध्यम न बनाकर अर्हद्भक्ति, आत्मविशुद्धि, संयमसाधना एवं सौभाग्य-वर्धन के रूप में करना चाहिए।

आचार्यों ने सभी कल्याणकों एवं क्रियाओं के काल निर्धारित किये हैं। यथा गर्भ की क्रिया रात्रि में, दीक्षा क्रिया एवं ज्ञान कल्याणक क्रिया दोपहर में ही की जायें। परन्तु प्रतिष्ठाचार्य अपनी सुविधानुसार यह क्रियाएँ करने लगे हैं, पंचकल्याणक, वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण में

(5)

प्रतिष्ठा पराग

यागमण्डल विधान को एक दिन में ही सम्पन्न करें, उसको 2-3 दिन में सुविधानुसार करना उचित नहीं है।

दीक्षा क्रिया के पहले तपकल्याणक पूजा केवलज्ञान क्रिया होने के पहले ही ज्ञान कल्याणक पूजा करना विधि एवं सिद्धान्त दोनों के ही विपरीत है।

वर्तमान में लघु पञ्चकल्याणक के रूप में नवीन विषयों की प्रतिष्ठा-विधि 2-3 दिन में सम्पन्न की जा रही है, आचार्यों की आज्ञा एवं विधि विधान से मनमानी का दुष्परिणाम संबंधित प्रतिष्ठाचार्य एवं आचार्य/मुनि को भी प्रभावित करेगा।

सिद्धचक्र विधान की कुछ पूजाओं को एक साथ करके एवं अन्तिम पूजाओं को 2-2 दिन में करने का प्रचलन आरम्भ हो गया है, विधि का उल्लंघन करके किये जाने वाले अनुष्ठान से श्रावक को वह लाभ कभी प्राप्त नहीं हो सकता जो विधिपूर्वक सम्पन्न करके प्राप्त किया जा सकता है। इसी कारण जो पूर्व में अतिशय घटित होते थे आज देखने को नहीं मिल रहे हैं।

अनुष्ठान में अशुद्धि, संयम नियम में शिथिलता, जापमन्त्र एवं भक्तियों में उतावली के दुष्परिणाम साक्षात् देखे गये हैं।

यदि मोहात्तथा-भूता प्रतिष्ठा कुरुते तथा।

पुरं राष्ट्रं नरेन्द्रश्च प्रजा सर्वा विनश्यति॥

प्रतिष्ठासारसङ्ग्रह

प्रतिष्ठादि क्रियाओं में प्रमाद एवं प्रदर्शन न करते हुए विधिवत् सम्पन्न करायें अन्यथा अनुष्ठान विधि राजा, प्रजा, राष्ट्र, प्रतिष्ठाचार्य एवं प्रतिष्ठाकारक आदि के विनाश का कारण हो सकती है।

अतः नवोदित विद्वान् शास्त्रीय विधि का ध्यान रखते हुए सावधानीपूर्वक प्रतिष्ठा कार्य कराएँ। सद्भावना के साथ.....।

श्रुतपञ्चमी 2007

-पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'

मङ्गल-पञ्चकम्

हरिगीतिका

गुणरत्नभूषा विगतदूषाः सौम्यभाव-निशाकराः,
सद्बोधभानुविभा-विभासित-दिक्चया विदुषां वराः।
निःसीम-सौख्य-समूह-मण्डित-योग-खण्डित-रतिवराः,
अर्हन्त इह कुर्वन्तु मङ्गलमद्य आदि-जिनेश्वराः ॥1१॥

सद्धान-तीक्ष्ण-कृपाण-धारा निहत-कर्म-कदम्बकाः,
देवेन्द्र-वृन्द-नरेन्द्र-वन्द्याः प्राप्त-सुख-निकुरम्बकाः।
योगीन्द्र-योग-निरूपणीयाः प्राप्त-बोध-कलापकाः,
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते सिद्धाः सदा सुखदायकाः ॥12॥

आचार-पञ्चक-चरण-चारण-चुञ्चवः समताधराः,
नानातपोभरहेति-हापित-कर्मकाः सुखिताकराः।
गुप्तित्रयी-परिशीलनादि-विभूषिता वदतां वराः,
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते श्रीसूरयोऽर्जित-शम्भराः ॥13॥

द्रव्यार्थ-भेद-विभिन्न-श्रुतभरपूर्ण-तत्त्व-निभालिनो-
दुर्योग-योग-निरोध-दक्षाः सकल गुणवर-जालिनः।
कर्तव्य-देशन-तत्परा विज्ञान-गौरव-शालिनः,
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते गुरुदेव-दीधितिमालिनः ॥14॥

संयम-समित्यावश्यकपरिहाणि-गुप्ति-विभूषिताः,
पञ्चाक्ष-दान्ति-समुद्यताः समता-सुधा-परिभूषिताः।
भूपृष्ठ-विष्टर-शायिनो विविधर्द्धिवृन्द-विभूषिताः,
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते मुनयः सदा शम-भूषिताः ॥15॥

□□□

मङ्गलाचरण

अनुष्टुभ्

मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमो गणी।
मङ्गलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥1॥

शिखरिणी

नमः स्यादर्हद्भ्यो, विततगुण-राड्भ्यस्त्रिभुवने,
नमः स्यात् सिद्धेभ्यो, विगतगुणवद्भ्यः सविनयम्।
नमो ह्याचार्येभ्यः, सुरगुरुनिकरो भवति यैः,
उपाध्यायेभ्योऽथ, प्रवरमति-धृद्भ्योऽस्तु च नमः ॥2॥

नमः स्यात् साधुभ्यो, जगदुदधिनौभ्यः सुरुचितः,
इदं तत्त्वं मन्त्रं, पठति शुभकार्ये यदि जनः।
असारे संसारे, तव पदयुग-ध्यान-निरतः,
सुसिद्धः सम्पन्नः, स हि भवति दीर्घायुररुजः ॥3॥

शार्दूलविक्रीडित

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवराः, रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥4॥

मङ्गलाष्टकम्

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योतरत्नप्रभा,
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्बोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनु-गतास् ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥1॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्ति-सुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥2॥

नाभेयादिजिनाः प्रशस्त-वदनाः ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥3 ॥

ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसो¹ वृद्धिगताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग-महानिमित्त-कुशलाश्चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञान-धरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥4 ॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामर-गृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥5 ॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य-सज्जिनपते² सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध-विभवाः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥6 ॥

सर्पो हारलता भवत्यसि-लता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षतितरा³ कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥7 ॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेश-महिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥8 ॥

इत्थं श्री जिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्य-सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥9 ॥

□□□

पाठान्तर-¹ श्रुत तपो ² तुगजिनपतेः ³ वर्षति नरोः

अभिषेक विधि

अभिषेक की सावधानियाँ

1. घर के समस्त वस्त्र उतारकर गीली तौलिया पहनकर ही शुद्ध धोती दुपट्टा पहिनें।
2. अभिषेक का जल दोहरे मोटे वस्त्र से छानकर प्रासुक करके ही उपयोग में लें।
3. गर्म जल ही प्रासुक है। किसी कारणवश लौंग से प्रासुक करना पड़े, तो लौंग पीसकर इतनी मात्रा में डालें कि पानी का स्वाद एवं रङ्ग बदल जाये।
4. शुद्ध हाथों से अङ्ग-शुद्धि करके चन्दन लगाकर अभिषेक करें।
5. जिस कलश से अभिषेक करना हो, उससे हाथ न धोयें। हाथ धोने के लिए अलग से जल रखें।
6. वेदी से श्रीजी उठाने के पूर्व नौ बार णमोकारमन्त्र पढ़ें।
7. प्रतिमा को एक हाथ से न उठाकर विनयपूर्वक दोनों हाथों से उठायें।
8. पाषाण की प्रतिमा को अभिषेक के लिए न उठाकर वहीं गीले कपड़े से मार्जन करना अधिक उचित है।
9. वस्त्र को श्रीजी के चरणों पर रखकर अभिषेक न करें।
10. जिनेन्द्र भगवान जन्म-मरण से रहित हो गये हैं, अतः जन्माभिषेक का पाठ पढ़ते हुए अभिषेक न करें।
11. दोनों हाथों में कलश लेकर मन्त्रोच्चारण के साथ अभिषेक करें।
12. श्रीजी का अभिषेक एकदम सामने खड़े होकर न करें, ध्यान रखें कि दर्शनार्थियों को देखने में बाधा न हो।
13. अभिषेक करते समय सावधानी रखें, कि गन्धोदक नीचे नहीं गिरे।
14. यदि अधिक व्यक्ति हैं, तो पंक्ति लगाकर क्रम से ही अभिषेक करें।
15. मार्जन के समय श्रीजी को आड़ा-तिरछा या उल्टा नहीं करें।
16. श्रीजी के परिमार्जन करने का वस्त्र स्वच्छ धुला होना चाहिए।
17. अभिषेक करने के बाद श्रीजी को परिमार्जन करके वेदी में विराजमान कर अर्घ्य चढ़ाने के बाद गन्धोदक लेना चाहिये।

18. बिना हाथ धोये गन्धोदक नहीं लेना चाहिये।
19. मुनि, आर्यिका एवं त्यागी-व्रती की उपस्थिति में उन्हें गन्धोदक देकर ही स्वयं गन्धोदक लेना चाहिए।

जलशुद्धि-मन्त्र

ॐ हां हीं हूं हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरि कान्ता-सीतासीतोदा-नारीनरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला-रक्तारक्तोदाःक्षीराम्भोनिधिजलं सुवर्णघट-प्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षतपुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं हं सः स्वाहा इति मन्त्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम्। (जल की शुद्धि करके कलशों में जल भरें)

ॐ हीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं व्लूं व्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं इवीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(सभी पात्र दाहिनी अंजली में जल लेकर मन्त्रित-जल के छींटे लगाकर शुद्धि करें)

अनुष्टुभ्

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।

समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्।

ॐ ह्रं ह्रीं हूं ह्रौं हः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर-जलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(दाहिनी अंजली में जल लेकर पूजा के सभी बर्तन, चटाई आदि मन्त्रित जल के छींटे लगाकर शुद्ध करें)

ॐ ह्रीं अहं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं वीं इवीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रजलेन शुद्धपात्र-निक्षिप्त-पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

उपजाति

पात्रेऽर्पितं चन्दनमोषधीशं, शुभ्रं सुगन्धाह्व-चञ्चरीकम्।

स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्य, न केवलं देहविकारहेतोः ॥

ॐ ह्रं हीं हूं ह्रौं हः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु। (नवतिलक करें)

शार्दूलविक्रीडित

श्रीमन्मन्दर-मस्तके शुचि जलैर्धौते सदर्भाक्षतैः।
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितां त्वत्पादपद्मम्रजं ॥
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे।
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रोचिताभूषणानि अवधारयामि।

(हार मुकुट, यज्ञोपवीत आदि धारण करें)

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा। (जल के छींटे लगायें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा। (पुष्पक्षेपण करें)

(सभी दिशाओं में बन्द मुट्ठी से पुष्पक्षेपण करें)

ॐ ह्रं णमो अरिहंताणं ह्रं पूर्वदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ हूं णमो आयरियाणं हूं पश्चिमदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः सर्वदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्र-खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं फट् स्वाहा। (रक्षामन्त्र पढ़कर स्वयं के ऊपर पुष्पक्षेपण करें)

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्व-क्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्रं हीं हूं ह्रौं हः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा।

(विश्व शान्ति की भावना से सभी दिशाओं में पुष्पक्षेपण करें।)

अभिषेक पाठ

(आचार्य माघनन्दीकृत)

वसन्ततिलका

श्रीमन् - नतामर - शिरस्तट - रत्नदीप्ति-
तोयाव-भासि-चरणाम्बुज-युग्ममीशम् ।
अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य-
त्वन्मूर्ति-षूद्यदभिषेक-विधिं करिष्ये ॥

अथ पौर्वाहिक (माध्याह्निक/आपराहिक) देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण
सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं
करोम्यहम् । (शवासोच्छ्वास पूर्वक नौ बार णमोकार-मन्त्र का स्मरण करें)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखादयस्ताः ।
सद्भाव-लब्धि-समयादि-निमित्त-योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वल-धिया कुसुमं क्षिपामि ॥

ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञायै पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ।

इन्द्रवज्रा

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण - शशाङ्ककल्पे ।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्ता, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि ॥

ॐ ह्रीं अहं श्रीकारलेखनं करोमि ।

अनुष्टुभ्

कनकाद्रि-निभं कम्पं पावनं पुण्य-कारणम् ।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः ॥

ॐ ह्रीं पीठ (सिंहासने) स्थापनं करोमि ।

वसन्ततिलका

भृङ्गार-घामर-सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-तालध्वजातप-निवारक-भूषिताग्रे ।
वर्धस्व नन्द जयपाठ-पदावलीभिः, सिंहासने जिन! भवन्त-महं श्रयामि ॥

(13)

प्रतिष्ठा पराग

अनुष्टुभ्

वृषभादि-सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान् ।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।

वसन्ततिलका

श्रीतीर्थकृत्स्नपन - वर्य - विधौ - सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि - वारिभि - रपूरय - दुग्ध - कुम्भान् ।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम - चन्दन - भूषिताग्रान् ॥

अनुष्टुभ्

शात-कुम्भीय-कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोय-पूरितान् ।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान् ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुकलशस्थापनं करोमि ।

वसन्ततिलका

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि - गानै -
वादित्र - पूर - जय - शब्द - कलप्रशस्तैः ।
उद्गीयमान - जगतीपति - कीर्ति-मेनाम्,
पीठस्थलीं वसु - विधार्चन - योल्लसामि ॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ-स्थितजिनायार्थं निर्वपामीति स्वाहा

कर्म - प्रबन्ध - निगडै - रपि हीनताप्तम्,
ज्ञात्वापि भक्ति-वशतः परमादि-देवम् ।
त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव!
शुद्धौदकै - रभिनयामि नयार्थ-तत्त्वम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं
पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते
श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

अनुष्टुभ

तीर्थोत्तम-भवै-नीरैः क्षीर-वारिधि-रूपकैः ।
स्नपयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ-सिद्धिदान् ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा ।

लघुशान्ति-मन्त्र

मालिनी

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः ।
यदभिषवन-वारां, बिन्दु-रेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं
पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः
यः सः क्षां क्षीं धूं क्षें क्षौं क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्यं ह्रीं हूं हें हें ह्यं ह्यं हं हः
ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं
करोमि ।

(यहाँ शान्तिधारा करें)

वसन्ततिलका

पानीय-चन्दन-सदक्षत-पुष्पपुञ्ज-
नैवेद्य-दीपक-सुधूप-फल-व्रजेन ।
कर्माष्टक-कथन-वीर-मनन्त-शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम् ॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं कृपालसन्तं श्रीवृषभादि-महावीरान्त-चतुर्विंशति- तीर्थङ्कर-परमदेवं
मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.....प्रदेशे.....नाम्नि नगरे
मन्दिरे(-मण्डपे)वीरनिर्वाणसंवत्सरे मासानामुत्तमेमासे.....
..पक्षेतिथौ.....वासरे मुन्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्म -क्षयार्थं
जलेनाभिषिञ्चे ।

पाठान्तर-¹ कृपा-वन्त

हे तीर्थपा! निज-यशो-धवली-कृताशाः, सिद्धौषधाश्च भवदुःख-महा-गदानाम् ।
सद्भव्य-हृज्जनित-पङ्क-कबन्ध-कल्पाः, यूयं जिनाः सतत-शान्तिकरा भवन्तु ॥
(शान्त्यर्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

नत्वा मुहु-निज-करै-रमृतोप-मेयैः, स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करावदातैः ।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त-रम्ये, देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि ॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब-मार्जनं करोमि ।

स्नानं विधाय भवतोष्ट-सहस्र-नाम्ना-मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम् ।
जिघृक्षु-रिष्ट-मिन तेऽष्ट-मर्यां विधातुं,सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि ॥

ॐ ह्रीं सिंहासने जिनबिम्बं स्थापयामि ।

अनुष्टुभ

जल-गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीप-सुधूपकैः ।
फलै-रघै-र्जिनमर्चे जन्मदुःखापहानये ॥

ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसन्ततिलका

नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाटयोश्च, व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे ।
शुद्धोदकं जिनपते! तव पाद-योगाद्, भूयाद् भवातप-हरं धृत-मादरेण ॥

शार्दूलविक्रीडित

मुक्तिश्री-वनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं,
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्रचक्रपदवी-राज्याभिषेकोदकम् ।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता-संवृद्धि-सम्पादकं,
कीर्तिश्री-जयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गन्धोदकम् ॥

ॐ ह्रीं जिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि । (गन्धोदक मस्तक पर लगावें)

शिखरिणी

इमे नेत्रे जाते सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं कृतीजन-गणादेय-मभवत् ।
मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर-कर्माटन-मभूत्,
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

□□□

शान्ति-धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्रीवीतरागाय नमः।।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽहंते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्य-तेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्व-परकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अहं अ सि आ उ सा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं हौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ हां सि ह्रीं आ हूं उ हौं सा हः जगदापद्-विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट-सहिताय बीजाष्ट-मण्डन-मण्डिताय सर्व-विघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

तव भक्ति-प्रसादाल्लक्ष्मी-पुर-राज्यगेह-पदभ्रष्टोपद्रव-दारिद्र्य-भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्-भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्-भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। सर्वेषां पुष्टिरस्तु। तुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। कुलगोत्र-धनधान्यं सदास्तु। श्रीसद्धर्म-बलायु-रारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं अहं णमो सम्पूर्णकल्याणमङ्गलरूप-मोक्ष-पुरुषार्थेश्च भवतु।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानाम्।

देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

आरती

आनन्द अपार है भक्ति का प्रसार है।
देखो बिम्ब प्रतिष्ठा का, कैसा जय-जयकार है ॥टेक ॥
मङ्गल आरती लेकर स्वामी, आया तेरे द्वार जी।
गुण गाता हूँ आदि प्रभु का, होगा बेड़ा पार जी ॥1 ॥
इन्द्र इन्द्राणी नाचे भगवन्, आज तुम्हारे द्वार जी।
शान्ति प्रभु का करके न्हवन, बोलें जय-जयकार जी ॥2 ॥
पर परिणति से अब तक भटका, शरण कहीं नहीं पाया जी।
तारन तरन विरद सुन करके, सिद्ध शरण में आया जी ॥3 ॥
अब तो पार लगा दो भगवन्, 'पुष्प' चरण शिरनाया जी।
अजर अमर पद पा जाऊँ मैं, सिद्ध शरण में आया जी ॥4 ॥

अभिषेक एवं पूजा के दूषण

पादसङ्कोचनाधिक्य क्रोधभ्रुकुटितर्जनैः।

मन्दामन्दस्वराधारै-र्जनस्नपन दूषणम्॥

पैर सङ्कोचना या फँलाना, क्रोध करना, भ्रुकुटि चढ़ाना, दूसरे को तर्जन करना, मन्द या अमन्द (तीव्र) स्वर और वेग के साथ जलधार करना, ये जिनाभिषेक के दूषण हैं।

वाष्पका सातुरश्वास श्लेष्मालसविजृम्भणैः।

अशुद्ध वेह वस्त्राभ्यां जिनार्चादूषणं भवेत्॥462

वाष्प, काम से आतुर (पीड़ित) हो श्वास, श्लेष्मा करते हुए आलस, जम्पाई, अशुद्ध शरीर एवं अशुद्ध वस्त्र से जिनपूजा करना, पूजा के दूषण हैं।

ब्रतोद्योतन श्रावकाचार पृ. 255

स्वस्तिक अङ्कन उद्देश्य एवं भावना

स्वस्तिक हमारी पूजा का सार्थक उद्देश्य है। यह हमारी अन्तरङ्ग भावना का प्रतीक है। जो हमें चारों गतियों से छुड़ाकर सिद्धक्षेत्र में पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करता है।

नर-सुर-तिर्यङ्नारक-योनिषु परिभ्रमति जीवलोकोऽयम्।

कुशला स्वस्तिक-रचनेतीव निदर्शयति धीराणाम्॥

अर्थात् संसार में प्राणी निरन्तर जन्म-मरण करता हुआ चार मोड़ वाली रेखाओं में निरूपित नरकगति, तिर्यञ्चगति, देवगति और मनुष्यगति रूप में लोक की चौरासी लाख योनियों में घूमता है। यह स्वस्तिक की रचना से निर्देशित होता है।

आचार्य जयसेन स्वामी ने ठोने पर 'स्वस्तिक' बनाने का विधान स्पष्ट रूप से प्रतिष्ठा पाठ के पृष्ठ 144 पर किया है।

प्रत्यर्थिब्रजनिर्जयान्निजगुणप्राप्तावनन्ताक्रम-

दृष्टिज्ञानचरित्रवीर्यसुखचित्संज्ञास्वभावाः परं।

आगत्यात्रनिवेशितांकितपदैः संवौषडाद्विष्ठतो

मुद्रारोपणसत्कृतैश्च वषडा गृहणीध्वमर्चाविधिम्॥

शत्रूनका समूहकूं अर्थात् बाह्याभ्यन्तर बैरीन का समूहका अत्यंत जयतै निज गुण की प्राप्तिनै होता संता अनंत अरु क्रम-रहित दर्शन, ज्ञान, चारित्र, वीर्य, सुख, चैतन्यसत्ता-रूप है स्वभाव जिनका ऐसे सर्व जिन-मुनि हैं, ते इहां आय संवौषट् मंत्र निवेशन किया अरु द्विबार ठः ठः मन्त्र करि स्थापन किया अरु मुद्रका आरोपण सत्कार करि तथा वषट् पद करि संनिहित किया संता पूजा की विधिनें ग्रहण करो। ऐसैं तीन बार पढ़ै।

ॐ ह्रीं अत्र जिन प्रतिष्ठाविधाने सर्वयागमण्डलोक्ता जिनमुनय अत्रावतरत अवतरत, तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः, ममात्रसन्निहितो भवत भवत वषट् इत्यादि त्रिबारं कुर्यात्।

मंडलमध्ये सुप्रतीकपीठे स्वस्तिकोपरि स्थापयेत्।

मण्डल मध्य कर्णिक में पीठ में स्वस्तिक ऊपरि स्थापना करनी।

इस प्रकार मुद्रापूर्वक आह्वानम् आदि तीनों क्रियायें करने के पश्चात् पूजा का सङ्कल्प करते हुए ठोने पर पुष्प क्षेपण करें। इस क्रिया में पुष्पों की गिनती का उल्लेख किसी शास्त्र में उपलब्ध नहीं हुआ है।

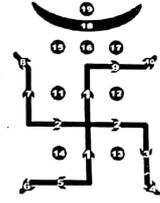
सर्वप्रथम हस्त प्रक्षालन कर मन्त्रित जल से स्वयं की एवं स्थल की शुद्धि करें। तत्पश्चात् द्रव्य चढ़ाने वाली थाली में दाहिने हाथ की अनामिका अँगुली से स्वस्तिक अङ्कित करते समय प्रथमतः खड़ी रेखा नीचे से ऊपर उसी तरह बनाना चाहिए, जिस प्रकार हम अपने आत्मीय का तिलक नीचे से ऊपर की ओर करके उसकी उन्नति एवं समृद्धि की कामना करते हैं। स्वस्तिक बनाने में भी आराध्य प्रभु के सामने स्वयं की उन्नति की कामना करते हैं।

हे भगवन्! इस त्रस नाली में निगोद से स्वर्गों की यात्रा करते हुए (क्र.-1) अनादिकाल से चारों गतियों की 84 लाख योनियों में जन्म-मरण कर रहा हूँ। (क्र.-2) छोटे कर्म करके कभी अधोगति नरक में गया हूँ। (क्र.-3) हे प्रभु! शक्ति देना कि ऐसे कार्य नहीं करूँ जिससे नरक जाना पड़े (क्र.-4) कभी छल कपट करके तिर्यञ्च गति में गया (क्र.-5) मैं तिर्यञ्च गति में न जाने का सङ्कल्प करता हूँ। (क्र.-6) कभी शुभ भावों से मरण कर देव गति को प्राप्त हुआ (क्र.-7) मैं असंयमी देव भी नहीं होना चाहता (क्र.-8) कभी शुभ सङ्कल्प व्रतादि धारण कर मानव पर्याय पाई (क्र.-9) मैं इसमें उत्कृष्ट संयम पालन करने की भावना करता हूँ। (क्र.-10) यह परिभ्रमण मूलतः अज्ञान, मिथ्यात्व, मोह एवं विषय कषाय के कारण से हो रहा है- यथा.

1. कित निगोद कित नारकी कित... 2. चौदह राजु उत्तुङ्ग नभ.....
3. भव विकट वन में कर्म बैरी... 4. मोह महामद पियो अनादि...
5. मैं भ्रमों अपन को विसर आप...

अज्ञान मिटाने के लिए मैं सङ्कल्प करता हूँ कि प्रथमानुयोग (क्र.-11), करणानुयोग (क्र.-12), चरणानुयोग (क्र.-13) एवं द्रव्यानुयोग (क्र.-14), का स्वाध्याय करके मैं सुख से शून्य इन चारों गतियों से छूटने के लिए भी सम्यग्दर्शन (क्र.-15), सम्यग्ज्ञान (क्र.-16), एवं सम्यक्चारित्र

(क्र.-17) को प्राप्त करूँगा तथा रत्नत्रय की पूर्णता करके सिद्ध शिला (क्र.-18), से ऊपर मानव पर्याय के परम लक्ष्य पञ्चम गति सिद्ध पद को प्राप्त करूँगा (क्र.-19)।



इस प्रकार शुभ एवं पवित्र भावना को लेकर ठोना एवं जल, चन्दन के पात्रों पर भी स्वस्तिक अङ्कित करके पूजन आरम्भ करें।

अभिषेक की थाली में 'श्री' अङ्कित करने का विधान आचार्य माघनन्दी महाराज ने अभिषेक पाठ में किया है।

अभी तक किसी भी शास्त्र में पूजा की थाली में बीजाक्षर अङ्कित करने का विधान प्राप्त नहीं हुआ है।

आह्वान, स्थापन एवं सन्निधिकरण

पूजा के पांच अंग होते हैं- 1. आह्वान 2. स्थापन 3. सन्निधिकरण 4. पूजन 5. विसर्जन। इनके अनुसार ही पूजा विधि सम्पादित करना चाहिए। प्रथम तीन अंग मुद्रा पूर्वक सम्पादित करके ठोने पर बने स्वस्तिक के ऊपर पुष्प क्षेपण करके पूजा का संकल्प करना चाहिए।

आह्वानम् मुद्रा- हथेली को ऊपर करके हाथ की दोनों रेखाओं को मिलाकर अंगूठे को अनामिका के मूल में लगाकर जिनबिम्ब को देखते हुए आह्वान का भाव करना।

स्थापन मुद्रा- ऊपर की मुद्रा को अधोमुखी हथेली करते हुए स्थापन का भाव करना।

सन्निधिकरण मुद्रा- दोनों अंगूठों को ऊपर उठाकर मुट्ठी बंद करके अंगूठे को हृदय के पास लगाकर प्रभु को हृदयासन पर विराजमान होने की भावनापूर्वक सन्निधिकरण करके पूजा का संकल्प करते हुए पुष्प या लवंग ठोने पर क्षेपण करें। इस क्रिया में पुष्पों की गिनती का विधान किसी ग्रन्थ में नहीं मिला है।

पूजा विधि

पूजा की सावधानियाँ

1. पूजा शुद्ध वस्त्रों एवं शुद्ध सामग्री से ही करें।
2. शुद्ध वस्त्रों में ही गर्भगृह में प्रवेश करें।
3. अभिषेक पूर्वक ही पूजा करें।
4. थाली, ठोना एवं पूजा के वर्तनों में स्वस्तिक अङ्कित करें।
5. यदि श्रीजी पूर्व मुख हों तो उत्तर दिशा की ओर मुख करके और श्रीजी उत्तरमुख हों तो पूर्वादिशा की ओर मुख करके पूजा करनी चाहिये। आमने-सामने खड़े होने पर दिशा का दोष नहीं होता है।
6. पूजा जमीन पर खड़े होकर न करें। चटाई या आसन पर खड़े होकर ही पूजा करें।
7. आह्वान, स्थापन, सन्निधिकरण, पूजन, विसर्जन सभी क्रियायें विधिपूर्वक सम्पादित करनी चाहिये। इनको छोड़कर पूजा करने से पूजा अधूरी होती है।
8. पूजा होने तक मन, वचन, काय की प्रवृत्ति स्थिर रखें अर्थात् बार-बार आसन न बदलें।
9. जल, चन्दन आदि को शुद्धोच्चारण के साथ भावपूर्वक चढ़ायें।
10. पूजा इस प्रकार से पढ़ें कि उसका अर्थाभास हो, अत्यन्त शीघ्रता से पूजन न पढ़ें।
11. पूजा मध्यम स्वर में पढ़ें जिससे अन्य लोगों को व्यवधान न हो।
12. पूजा करते समय आपस में वार्तालाप न करें।
13. पूजा की पुस्तक में से चावल आदि निकालकर विनय पूर्वक यथास्थान रखें।

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो' होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जू आठ॥1॥
अनन्त-चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
जायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अन्धियार के, करता धर्मप्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्माभूत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥5॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥6॥
भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥7॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पदपङ्कज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरें, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अञ्जन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेट्यो राग कुटेव॥14॥

'खड़े होकर

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
 आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर धान ॥15॥
 तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
 धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥16॥
 अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
 मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार ॥17॥
 इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
 अपनो विरद निहारकैं, कीजै आप समान ॥18॥
 तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
 हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार ॥19॥
 जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उर झार।
 मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार ॥20॥
 वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
 विघनहरन मङ्गलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥21॥
 चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
 शिवमग साधक साधु 'नमि', रच्यो पाठ सुखदाय ॥22॥

मङ्गलपाठ

मङ्गल मूर्ति परमपद, पञ्चधरो नित ध्यान।
 हरो अमङ्गल विश्व का, मङ्गलमय भगवान ॥23॥
 मङ्गल जिनवर पद नमों, मङ्गल अर्हन्तदेव।
 मङ्गलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव ॥24॥
 मङ्गल आचारज मुनि मङ्गल गुरु उवझाय।
 सर्व साधु मङ्गल करो, वन्दों मन वच काय ॥25॥
 मङ्गल सरस्वती मात का, मङ्गल जिनवर धर्म।
 मङ्गल मय मङ्गल करो, हरो असाता कर्म ॥26॥
 या विधि मङ्गल करन से, जग में मङ्गल होत।
 मङ्गल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत ॥27॥

अथ अर्हत्-पूजा-प्रतिज्ञायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-
 वन्दनास्तव-समेतं पञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार-मन्त्र का ध्यान करें)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
 णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं।
 णमो उवज्जायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥
 ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मन्त्रेभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।
 चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं
 साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
 चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा
 साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
 चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि
 सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि
 केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
 ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अनुष्टुभ्

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
 ध्यायेत्पञ्च-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥1॥
 अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
 यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥2॥
 अपराजित-मन्त्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः।
 मङ्गलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः ॥3॥
 एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
 मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥4॥
 अर्ह-मित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
 सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणामाम्यहम् ॥5॥

कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥6 ॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥7 ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

द्वतविलम्बित

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश-चरु-सुदीप-सुधूप-फलाघ्यकैः ।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥1 ॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपञ्चकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं नि० स्वाहा ।

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश-चरु-सुदीप-सुधूप-फलाघ्यकैः ।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥2 ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश-चरु-सुदीप-सुधूप-फलाघ्यकैः ।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथ यजामहे ॥3 ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टाधिकसहस्रनामभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश-चरु-सुदीप-सुधूप-फलाघ्यकैः ।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥4 ॥

ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रस्यदशाध्यायेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसन्ततिलका

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवन्द्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम् ।
श्रीमूल - सङ्घ - सुदृशां सुकृतैक - हेतुर्
जैनेन्द्रयज्ञ-विधि-रेष मयाभ्यधायि ॥1 ॥

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुङ्गवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय ॥2 ॥

पाठान्तर-¹ जिनवरेष्ठ-महं

स्वस्-त्युच्छलद्¹-विमलबोधसुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभास-काय ।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ॥3 ॥

द्रव्यस्य शुद्धि-मधि-गम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिका-मधि-गन्तुकामः ।
आलम्बनानि विविधान्यव-लम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥4 ॥

अर्हन् पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्य-नून-मखिलान्यय-मेक एव ।
अस्मिन्-ज्वलद्विमल-केवल-बोध वह्नौ,
पुण्यं समग्र - मह - मेक - मना जुहोमि ॥5 ॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः ।

श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः ।

श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ।

श्रीसुपाशर्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ।

श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।

श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।

श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः ।

श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः ।

श्रीकुन्धुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः ।

श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ।

श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।

श्रीपाशर्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

इति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रस्वस्तिमङ्गलविधानं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

¹ स्वस्ति-उच्छलद्

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति-क्रियासुः, परमर्षयो नः ॥1॥

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये)
कोष्ठस्थ-धान्योपम-मेक-बीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धि-बलं दधानाः, स्वस्ति-क्रियासुः, परमर्षयो नः ॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा- दास्वादन-घ्राण-विलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्ब्रह्मन्तः, स्वस्ति-क्रियासुः, परमर्षयो नः ॥3॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक-बुद्ध्या दशसर्वपूर्वेः ।
प्रवादिनोऽप्याङ्ग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति-क्रियासुः, परमर्षयो नः ॥4॥

जङ्घानल-श्रेणि-फलाम्बु-तन्तु-प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाद्वाः ।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति-क्रियासुः, परमर्षयो नः ॥5॥

अणिमि दक्षाः कुशला महिम्नि, लधिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि ।
मनो-वपु-वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति-क्रियासुः, परमर्षयो नः ॥6॥

सकाम-रूपित्व-वशित्व-मैशयं, प्राकाम्य-मन्तर्द्धि-मथापि-माप्ताः ।
तथाप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति-क्रियासुः, परमर्षयो नः ॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथामहोग्रं¹, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति-क्रियासुः, परमर्षयो नः ॥8॥

आमर्ष-सर्वोषधयस्तथाशी-विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च ।
सखिल्ल¹-विङ्गल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥9॥

क्षीरं भ्रवन्तोऽत्र घृतं भ्रवन्तो, मधु-भ्रवन्तोऽप्यमृतं भ्रवन्तः ।
अक्षीण-संवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥10॥
इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गल-विधानं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

देव-शास्त्र-गुरु पूजन

अडिल्ल

प्रथम देव अरहन्त सुश्रुत सिद्धान्त जू,
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुर पन्थ जू ।
तीन रतन जग माँहि सु ये भवि ध्याइये,
तिनकी भक्ति-प्रसाद परम-पद पाइये ॥

दोहा

पूजों पद अरहन्त के, पूजों गुरुपद सार ।
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार ॥

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरु-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

हरिगीतिका

सुरपति उरग नरनाथ तिन-करि, वन्दनीक सुपदप्रभा ।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा ॥
वर नीर क्षीर-समुद्र घट भरि, अग्र तसु बहु विधि नचूँ ।
अरहन्त श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

दोहा

मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मलछीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जे त्रिजग-उदर मँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे,
तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे ।
तसु भ्रमर-लोभित प्राण पावन, सरस चन्दन घिसि सचूँ,
अरहन्त श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

चन्दन शीतलता करे, तपत वस्तु परवीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह भवसमुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई,
अति दृढ़- परम-पावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही ।
उज्ज्वल अखण्डित सालि तन्दुल, पुञ्ज धरि त्रयगुण जचूँ,
अरहन्त श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

तन्दुल सालि सुगन्ध अति, परम अखण्डित बीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

जे विनयवन्त सुभव्य-उर, अम्बुज प्रकाशन भानु हैं,
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजग माहिं प्रधान हैं ।
लहि कृन्द-कमलादिक पहुप, भव-भव कृवेदन सों बचूँ,
अरहन्त श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

विविधभाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अति सबल मद-कन्दर्प जाको, क्षुधा-उरग अमान हैं,
दुस्सह भयानक तासु नाशन, को सु गरुड़ समान हैं ।
उत्तम छहों रस युक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ,
अरहन्त श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

नानाविध संयुक्तरस, व्यञ्जन सरस नवीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जे त्रिजग-उद्यम नाश कीने, मोह-तिमिर महावली,
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप, प्रकाशज्योति प्रभावली ।
इह भाँति दीप प्रजाल कञ्चन, के सुभाजन में खचूँ,
अरहन्त श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

स्वपरप्रकाशक ज्योतिअति, दीपक तमकरि हीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो कर्म ईंधन दहन अग्नि-समूह सम उद्धत लसै,
वर धूप तासु सुगन्धिताकरि, सकल परिमलता हँसे ।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित, भव-ज्वलन माहिं नहीं पचूँ,
अरहन्त श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

अग्निमाहिं परिमल दहन, चन्दनादि गुणलीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोचन सु रसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं,
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं ।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ,
अरहन्त श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

दोहा

जे प्रधान फल-फल विषै, पञ्चकरण रस-लीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ,
वर धूप निर्मल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूँ ।
इह भाँति अर्घ चढाय नित भवि, करत शिव-पङ्कति मचूँ,
अरहन्त श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ ॥

दोहा

वसुविधि अर्घ संजोय कै, अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घ्यपद-प्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा

देव-शास्त्र-गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
भिन्न-भिन्न कहूँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार ॥1॥

पद्धरि

चउ कर्म की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दौषराशि ।
जे परम सुगुण हैं अनंतधीर, कहवत के छ्यालिस गुण गम्भीर ॥2॥
शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर सीस धार ।
देवाधिदेव अरहन्त देव, वन्दों मन-वच-तन कर सुसेव ॥3॥
जिनकी धुनि है ओंकाररूप, निर-अक्षरमय महिमा अनूप ।
दश-अष्ट महाभाषा समेत, लघु भाषा सात शतक सुचेत ॥4॥
सो स्याद्वादमय सप्तभङ्ग, गणधर गूँथे बारह सुअङ्ग ।
रविशशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमो बहुप्रीति ल्याय ॥5॥

गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रत्नत्रय निधि अगाध ।
संसार देह वैराग्य धार, निरवाञ्छि तपै शिव-पद निहार ॥6॥
गुण छत्तिस पच्यस आठ बीस, भवतारण तरण जहाज ईश ।
गुरु की महिमा वरणी न जाय, गुरु नाम जपों मन वचन काय ॥7॥

सोरख

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै ।
'द्यानत' सरधावान, अजर-अमर पद भोगवै ॥8॥
ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

श्री जिनके परसाद तैं, सुखी रहैं सब जीव ।
यातैं तन मन वचन तैं, सेवो भव्य सदीव ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ्य

शार्दूलविक्रीडित

कृत्याकृत्रिम-चारु-चैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वन्दे भावन-व्यन्तर-द्युतिवरान् स्वर्गामरा-वासगान् ।
सद्-गन्धाक्षत-पुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शान्तये ॥
ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालयसम्बन्धि-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रवज्रा

वर्षेषु वर्षान्तर-पर्वतेषु नन्दीश्वरे यानि च मन्दरेषु ।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वन्दे जिनपुङ्गवानाम् ॥1॥

मालिनी

अवनितल-गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,
वन-भवन-गतानां दिव्य-वैमानिकानाम् ।
इह मनुज-कृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवर-निलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥2॥

शार्दूलविक्रीडित

जम्बू-धातकि-पुष्करार्ध-वसुधा क्षेत्रत्रये ये भवाश्-
चन्द्राम्भोज-शिखण्डिकण्ठ-कनक-प्रावृद्धनाभा-जिनाः।
सम्यग्ज्ञान - चरित्र - लक्षणधरा दग्धाष्ट¹ - कर्मन्धनाः,
भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥3 ॥

स्रग्धरा

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचके कुण्डले मानुषाङ्के।
इष्वाकारेऽज्जनाद्रौ दधिमुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवन्दे भवन-महितले यानि चैत्यालयानि ॥4 ॥

शार्दूलविक्रीडित

द्वौ कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविन्द्रनीलप्रभौ,
द्वौ बन्धूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियङ्गुप्रभौ।
शेषाः षोडश-जन्म-मृत्यु-रहिताः सन्तप्त-हेम-प्रभास्-
ते संज्ञान-दिवाकराः सुर-नुताः सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः ॥5 ॥

(ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि-कृत्रिमाकृत्रिम-जिन-चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा)

इच्छामि भन्ते! चेइय-भक्ति काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं अहोलोय-
तिरियलोय- उड्डलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि-जिण-चेइयाणि ताणि सव्वाणि
तीसु वि लोएसु भवणवासिय-वाणवित्तर-जोइसिय-कप्पवासिय त्ति चउव्विहा
देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूवेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण
वासेण दिव्वेण ण्हाणेण सया णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति अहमवि
इह संतो तत्थ संताइ णिच्चकालं अच्चंमि पूजेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ
कम्मक्खओ वोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण-संपत्ती होउ मज्झं।

इति पौवाहिणक(माध्याह्निक/आपराहिणक) देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण
सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा-वन्दनास्तवसमेतं चैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्।

¹ दग्धाष्ट

विद्यमान बीस तीर्थकर अर्घ्य

जल फल आठों दरव अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनिहू-तैं धुति पूरी न करी है ॥
घानत सेवक जानके हो जगतैं लेहु निकार,
सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जहाज ॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थङ्करेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ्य

गन्धाढ्यं सुपयो मुधव्रत-गणैः सङ्गं वरं चन्दनम्,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं, रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम् ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिनेऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

तीस चौबीसी अर्घ्य

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना है,
पूजता पाप छीना है, भानुमल जोड़ कीना है।
द्वीप ढाई सरस राजै, क्षेत्र दस ता विषैं छाजै,
सातशत बीस जिनराजे, पूजता पाप सब भाजै ॥

ॐ ह्रीं पञ्चभरतैरावत-क्षेत्रस्थ-विंशत्युत्तर-सप्तशतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्व.।

वर्तमान चौबीसी अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करों,
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्दकन्द सही,
पद जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थङ्करेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री आदिनाथ अर्घ्य

शुचि निर्मल नीरं गन्ध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय,
दीप धूप फल अर्घ्य सु लेकर, नाचत ताल मृदङ्ग बजाय।

श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातें मैं पूजों प्रभु पाय ॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री अजितनाथ अर्घ्य

जल फल सब सज्जै बाजत-बज्जै, गुनगनरज्जै मनमज्जै,
तुम पदजुगमज्जै सज्जन जज्जै, ते भव भज्जै निजकज्जै ।
तुम अजित जिनेशं नुत चक्रेशं चक्रधरेशं खगेशं,
मन वांछित दाता त्रिभुवन त्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं ॥
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सम्भवनाथ अर्घ्य

जल चन्दन तन्दुल पुष्प चरु, दीप धूप फल अर्घ्य किया,
तुमको अरपो भावभगतिधर, जै जै जै शिवरमनि पिया ।
सम्भवजिन के चरन चरचते, सब आकुलता मिट जावै,
निज निधि ज्ञान-दरश-सुख-वीरज, निराबाध भविजन पावै ॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री अभिनन्दननाथ अर्घ्य

अष्ट द्रव्य संवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही,
नचत रजत जजों चरन जुग, नाय नाय सुभाल ही ।
कलुष ताप निकन्द श्री अभिनन्द, अनुपम चन्द हैं,
पदवन्द वृन्द जजे प्रभु, भवद्वन्द-फन्द निकन्द हैं ॥
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सुमतिनाथ अर्घ्य

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय,
नाचिराचि शिरनाय समरचों, जय जय जय जय जय जिनराय ।
हरिहर वन्दित पाप निकन्दित, सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय,
तुम पद पद्म सद्म शिवदायक, जजत मुदित मन उदित सुभाय ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री पद्मप्रभ अर्घ्य

जलफल आदि मिलाय गाय गुन, भगति भाव उमगाय,
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ।
पूजों भाव सों श्री पद्मनाथ पद सार, पूजों भाव सों ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सुपारश्वनाथ अर्घ्य

आठोंदरव साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय,
दया निधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ।
तुम पद पूजों मन वच काय, देव सुपारस शिवपुरराय,
दया निधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपारश्वनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री चन्द्रप्रभ अर्घ्य

वसु विधि अर्घ्य बनाय मनोहर, श्री जिन मन्दिर जावो,
अष्टकर्म के नाश करन को, श्री जिन चरण चढ़ावो ।
चञ्चल चित को रोक, चतुर्गति चक्रभ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुरनर, चन्द्रप्रभ चितधारो ॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री पुष्पदन्त अर्घ्य

जलफल सकल मिलाय मनोहर मनवचतन हुलसाय,
तुम पद पूजों प्रीति लायकें जय जय त्रिभुवनराय ।
मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी अरज सुनीजे ॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री शीतलनाथ अर्घ्य

कं श्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे, नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे ।
रागादिदोष मलमर्दन हेतु येवा, चचों पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री श्रेयांसनाथ अर्घ्य

जल मलय तन्दुल सुमन चरु, अरु दीप धूप फलावली,
करि अर्घ्य चरचौं चरनजुग, प्रभु मोहि तार उतावली।
श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र त्रिभुवन, वन्द्य आनन्द कन्द हैं,
दुख द्वन्दफन्द निकन्द पूरन, चन्द्र जोति अमन्द हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य अर्घ्य

जल फल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अङ्ग नमाई,
शिवपदराज हेतु हे श्री पति! निकट धरों यह लाई।
वासुपूज्य वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई,
बाल ब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ अर्घ्य

आठों दरब संवार, मनसुख दायक पावने।
जजों अर्घ्य भर थार, विमल विमल शिवतिय रमन॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ अर्घ्य

शुचि नीर चन्दन शालितन्दुल, सुमन चरु दीपक धरों,
धूप फल जुत अरघ करके, जोर जुग विनती करों।
जगपूज परमपुनीत मीत, अनन्त सन्त सुहावनें,
शिवकन्तवन्त महन्त ध्यावों, भ्रमणतन्त नशावनें॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ अर्घ्य

आठों दरव साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई,
वाजत दृमदृम दृम मृदङ्गगत, नाचत ता थेइ थाई।
परम धरम शमरमण धरम-निज अशरन शरन तिहारी,
पूज्य पाय गाय गुन सुन्दर, नाचूँ दे दे तारी॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ अर्घ्य

वसु द्रव्य संवारी, तुम ढिंग धारी, आनन्दकारी दृग प्यारी,
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातें थारी शरनारी।
श्री शान्ति-जिनेशं, नुतशकेशं, वृषचकेशं, चकेशं,
हनि अरि चकेशं, हे गुनधेशं, दयामृतेशं, मकेशं॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्धुनाथ अर्घ्य

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी,
फलजुत जजन करों मन सुखधरि, हरो जगत फेरी।
कुन्धु सुन अरज दास केरी, नाथ सुन अरज दास केरी,
भवसिन्धु परयो हों नाथ, निकारो बाँह पकर मेरी॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्धुनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरनाथ अर्घ्य

शुचि स्वच्छ पटीरं, गन्धगहीरं, तन्दुलशीरं पुष्प चरुं,
वर दीपं धूपं, आनन्दरूपं, लै फल भूपं अर्घ्य करुं।
प्रभु दीनदयालं, अरिकूलकालं, विरद विशालं सुकुमालं,
हरि मम जञ्जालं, हे जगपालं, अरगुनमालं वरमालम्॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ अर्घ्य

जलफल अरघ मिलायगाय गुन, पूजों भगति बढाई,
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरनगहो मैं आई।
राग द्वेष मद मोह हरन को, तुम ही हो वरवीरा,
यातें शरन गही जगपतिजी, वेग हरो भव पीरा॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ अर्घ्य

जलगन्ध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरों,
पूजों चरनरज भगत जुत, जातें जगत सागर तरों।

शिव साथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनि गुनमाल है,
तुम चरन आनन्दभरन तारन, तरन विरद विशाल है॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ अर्घ्य

जल फलादि मिलाय मनोहरं, अरघ धारय ही भय भव हरं।
जजतु हों नमि के गुन गाय कें, जुगपदाम्बुज प्रीति लगाय कें॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ अर्घ्य

जलफल अर्घ्य बनाय गाय गुन, रतन थाल भरिये सुखदान,
अष्टकर्म के नाशक प्रभु को, पूजूं निजगुणदायक जान।
बाल ब्रह्मचारी जगतारी, नेमिश्वर जिनराज महान,
मैं नित ध्यान करूँ प्रभु तेरा, मोकूँ दीजे अविचल थान॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ अर्घ्य

सङ्घर्षों में उपसर्गों में तुमने समता का भाव धरा,
आदर्श तुम्हारा अमृत बन भक्तों के जीवन में बिखरा।
मैं अष्टद्रव्य से पूजा का शुभथाल सजाकर लाया हूँ,
जो पदवी तुमने पाई है मैं भी उस पर ललचाया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर अर्घ्य

जलफल वसु सजि हिम धार, तन मन मोद धरों,
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति नायक हो,
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मतिदायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबलि अर्घ्य

वसु विधि के वश वसुधा सब ही परवश अति दुख पावें,
तिहिं दुख दूर करन को भविजन अर्घ्य जिनाग्र चढ़ावें।

परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी,
तिनके चरण कमल को नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलि-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण अर्घ्य

जल फल आठोदरब चढय, धानत वरत करोमनलाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थद्वार पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥

ॐ ह्रीं दर्शन-विशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चमेरु अर्घ्य

आठदरब मय अरघ बनाय, 'धानत' पूजों श्री जिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम,
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्ध्यशीति-जिनचैत्यालयस्थ-जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्व।

नन्दीश्वरद्वीप अर्घ्य

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों,
'धानत' कीज्यों शिव-खेत, भूमि समरपतु हों।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूज करों,
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्व।

दशलक्षण अर्घ्य

आठों दरब संवार, 'धानत' अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजों सदा॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माङ्गायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ इति श्रीमहादेवसुव्रतनाथस्य अर्घ्यं जिनोक्तिः ॥

॥ आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ॥

॥ जन्म-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रयायानर्घ्यपद-प्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

नवदेवता अर्घ्य

मध्ये कर्णिकमर्हदार्य-मनघं बाह्येष्टपत्रोदरे,
सिद्धान् सुरिवरांश्च पाठक-गुरून् साधूँश्च दिक्पत्रगान् ।
सद्धर्मागम-चैत्य-चैत्यनिलयान् कोणस्थ-दिक्पत्रगान्,
भक्त्या सर्वसुरासुरेन्द्र-महितान् तानष्टधेष्ट्या यजे ॥
ॐ ह्रीं अर्हदादि-नवदेवैभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विनायक यन्त्र अर्घ्य

सुवरण के थाल भराये, शुचि आठों द्रव्य मिलाये ।
गुरुपञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई ॥
ॐ ह्रीं अर्हं मङ्गलोत्तम-शरणभूतेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
सरस्वती अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत, फूल चरु, अरुदीप धूप अति फल लावै,
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर'घानत' सुख पावै ।
तीर्थङ्कर की ध्वनि, गणधर ने सुन, अङ्ग रचे चुनि ज्ञान मई,
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई ॥
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तर्षि अर्घ्य

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ्य कीजे पावना ।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारी, मुनिन की पूजा करूँ,
ता करें पातक हटे सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-सप्तर्षिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाणक्षेत्र अर्घ्य

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु फल, दीप धूपायन धरों,
घानत करो निर्भय जगत्-सौं प्रोरकर विनती करों ।
सम्मदगङ्गा मिरनार-हम्पा, पावापुरि-कैलाश को,
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण-भूमि निवास को ॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

समुच्चय महार्घ्य

में देव श्री अर्हन्त पूजें सिद्ध पूजें चाव सों,
आचार्य श्री उवज्ञाय पूजें साधु पूजें भाव सों ।
अर्हन्त-भाषित बैन पूजें द्वादशाङ्ग रची गनी,
पूजें दिगम्बर गुरुचरन शिव हेतु सब आशा हनी ॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजें सदा,
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय जा विना शिव नहीं कदा ।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजुँ,
पनमेरु नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजुँ ॥
कैलाश श्रीसम्मद श्रीगिरनार गिरि पूजें सदा,
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा ।
चौबीस श्री जिनराज पूजें बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस-वसु जय होय पति शिवगेह के ॥

दोहा

जल गन्धाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय ।

सर्व पूज्य पद पूज हूँ बहु विधि भक्ति बढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो द्वादशाङ्ग-जिनागमेभ्यः
उत्तम-क्षमादि-दशलक्षण-धर्माय दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यः
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र्येभ्यः त्रिलोकस्थित-कृत्रिमाकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यः
पञ्चमेरु-सम्बन्ध्यशीतचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नन्दीश्वरद्वीप-
स्थित-द्विपञ्चाशज्-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः श्रीसम्मदोष्ठापद-
ऊर्जयन्तगिरि-चम्पापुर-पावापुरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यः सातिशयक्षेत्रेभ्यो
विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽष्टाधिक-सहस्रजिननामभ्यः श्रीवृषभादि-
चतुर्विंशतितीर्थङ्करेभ्यो जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।*

* टिप्पणी: प्रचलित मन्त्र हिन्दी संस्कृत मिश्रित हैं अतः संशोधित करके दिया गया है।

विसर्जन

पूजा का समापन ही विसर्जन है। पूर्व में पूजन का सङ्कल्प पञ्चमहागुरु भक्ति से करके सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति पूर्वक पूजन करते हुये अन्त में शान्ति एवं समाधि भक्ति पूर्वक पूजन को पूर्ण करते हैं। पूजन अनुष्ठान क्रिया में होने वाली त्रुटियों, असावधानियों / अज्ञानता के लिए प्रभु चरणों में क्षमायाचना करके मन्त्र पूर्वक ठोने पर पुष्पक्षेपण करके पूजन का विसर्जन करना चाहिए।

मुनि क्षमासागर

पूजा के पर्यायवाची

यागो यज्ञः कृतुः पूजा सपर्येज्याध्वरो मखः।

मह इत्यपि पर्यायवचनान्यर्चनाविधोः॥

पूजार्हणार्चा यजनं च यज्ञ इज्या सपर्या परिसेवनं च।

महः क्रतुःकल्प उपासनेति प्रभृत्युपाख्या जिनपूजनस्य॥601॥

याग, यज्ञ, कृतु, पूजा, सपर्या, इज्या, अध्वर, मख, मह, सेवा, कल्प, उपासना आदि। पाप क्रियाओं का त्याग करके, परिग्रह को निषिद्ध करके, विकल्प रहित निर्मल भावों से पूज्य की आराधना में मन, वचन और कार्यपूर्वक समर्पित होना पूजा है। अर्थात् अनीचा (निष्काम) भक्ति यथार्थ पूजा है।

उत्तरपुराण, 67/193, प्रतिष्ठापाठ, 14

जाप का फल

गृहे जपफलं प्रोक्तं वने शतगुणं भवेत्।

पुण्यारामे तथारण्ये सहस्रगुणितं मतम्॥

पर्वते दशसाहस्रं नद्यां लक्षमुदास्रतं।

कोटि देवालये प्राहुरनन्तं जिनसन्निधौ॥

घर में मन्त्राराधन करने से एक गुणा, उपवन में सौ गुणा, नशिया एवं वन में हजार गुणा, पर्वत पर दस हजार गुणा, नदी पर लाख गुणा, देवालय में करोड़ गुणा, जिनेन्द्रदेव के समक्ष अनन्त गुणा फलदायक होता है। अतः कार्य सिद्धि के लिये मन्त्राराधन देवालय या जिनेन्द्रदेव के समक्ष करना चाहिये।

गोम्पट प्रश्नोत्तर चिन्तामणि/855

निर्वपामीति एवं स्वाहा का उद्देश्य

निर्वपामीति - सम्पूर्ण रूप से समर्पित करना अर्थात् मन, वचन, काय से अष्टद्रव्य चढ़ाना/समर्पित करना।

निर्वपामीति = निः + वप् + आमि + इति

निः = निःशेष, सम्पूर्ण रूप से, कि शेष न रहे (समाप्त हो जाने तक)

वप् = बोना, विस्तीर्ण करना, समर्पित करना।

आमि = मैं (वर्तमान काल, उत्तम पुरुष के एक वचन का ज्ञान करने वाला प्रत्यय = पहिचान चिह्न)

इति = क्रिया की पूर्णता।

स्वाहा - पापनाशक, मंगलकारक, आत्मा की आन्तरिक शान्ति उद्घाटित करने वाला है। बीजाक्षर रूप में स्वाहा-शान्तिकं मोहकं वा, स्वधा-पौष्टिकं माना गया है।

इस प्रकार पूजा में स्वाहा का अर्थ समर्पण से नहीं बल्कि आत्मा की शक्ति उद्घाटित करने से है।

मंगल मंत्र णामोकार एक अनुचिंतन से

गर्भगृह की अनिवार्यता

जिनालय में जिनबिम्ब गर्भगृह में ही विराजमान करना चाहिए। बिना गर्भगृह के वेदी बनाना प्रतिष्ठा एवं वास्तु शास्त्रों के विरुद्ध है, क्योंकि गर्भगृह के बिना मंदिर की शुद्धि सम्भव नहीं है। वर्तमान में श्रावक जिन वस्त्रों में लघुशंकादि क्रियाएँ करता है उन्हीं वस्त्रों को पहिनकर जिनालय आता है। अधिकांश श्रावक-श्राविकाओं के वस्त्र साफ तो होते हैं पर शुद्ध नहीं, क्योंकि वस्त्र धोबी या नौकर से धुलाये जाते हैं तथा विस्तर, पर्दा आदि से स्पर्शित होते हैं। इसलिए गृहस्थ कार्यों में उपयोग में आने वाले वस्त्रों को पहिनकर गर्भगृह में प्रवेश नहीं करना चाहिए।

सकलीकरण एवं जाप्यानुष्ठान

- मन्त्र- 1) णमोकार महामन्त्र/ शान्तिमन्त्र/अनुष्ठान का आवश्यक मन्त्र
मण्डल- 1) पञ्चपरमेष्ठी मण्डल/ अनुष्ठानानुसार मण्डल
यन्त्र- 1) विनायक यन्त्र
2) सिद्ध यन्त्र
भक्तियाँ- 1) सिद्धभक्ति 4) चारित्रभक्ति
2) श्रुतभक्ति 5) शान्तिभक्ति
3) आचार्यभक्ति

सकलीकरण सावधानियाँ

- मानसिक विकृति न हो
 - स्वस्थ एवं निरोग हो, अति वृद्ध न हो।
 - आठ वर्ष से कम उम्र के बालक, बालिकाएँ न हो।
 - पाँच माह से ज्यादा का गर्भ न हो।
 - ऋतु काल के पाँचवें दिन ही पूजन में सम्मिलित हों।
 - अत्यन्त छोटा अथवा दूध पीता बच्चा न हो।
 - ब्रह्मचर्य का पूर्णतः पालन करें।
 - पूजा के वस्त्र धुले हुये हों, कोरे (नवीन) भी धोकर प्रयोग करें।
 - इन्द्र के घोती दुपट्टा एवं इन्द्राणी के साड़ी चुनरी दो वस्त्र होने चाहिये।
 - पूजा के वस्त्र शुद्ध छने हुए जल से रोज धोना चाहिये।
 - पूजा के वस्त्र पहिनकर भोजन न करें एवं लघुशुद्धा आदि न जायें।
 - अनुष्ठान पर्यन्त शादी, पार्टी आदि कार्यों से विरक्त रहें।
 - अभक्ष्य सेवन एवं बार-बार खान-पान नहीं करें।
 - सप्त व्यसन का त्याग करें।
 - वीड़ी, पान, मसाला, तम्बाकू, सिगरेट आदि नशीले पदार्थों का त्याग करें।
 - वाजार की बनी हुई वस्तुएँ एवं रात्रि भोजन का त्याग करें।
 - हिंसाजन्य तरीके से बनी वस्तुओं का त्याग करें।
- सर्वप्रथम मङ्गलाष्टक पढ़कर जलशुद्धिमन्त्र से जलशुद्धि करके सकलीकरण की क्रियाएँ करें।

(49)

प्रतिष्ठा पराग

उपजाति

अथेन्द्रराजः परिवद्धकर्मा ह्याचार्यवर्यः कृतुनायकाश्च।
स्थित्वा स चैत्योपकृतौ सुवेद्यां देहस्य शुद्धिं विदधातु मन्त्रैः॥

मुख्यपात्र, प्रतिष्ठाचार्य एवं अन्य पात्र मूलनायक भगवान के समक्ष मन्त्रों के द्वारा शरीर की शुद्धि करें।

मनःप्रसत्यै वचसः प्रसत्यै कायप्रसत्यै च कषायहानिः।
सैवार्थतः स्यात्सकलीक्रियान्या मन्त्रैरुदारैः कृतिकल्पनाङ्गा॥

मन वचन एवं काय की प्रसन्नता अर्थात् निर्मलता के लिए क्रोध, मान, माया, लोभादि कषायों से निर्वृत्त होना निश्चय सकलीकरण है और श्रेष्ठ मन्त्रों द्वारा हस्त स्पर्शन के क्रिया व्यवहार (वाह्य) सकलीकरण है।

अनुष्ठुभ्

पृथक्द्विधैकवाक्यान्तं मुक्त्वोच्छ्वासं जपेन्नव।
वारान् गाथां प्रतिक्रम्य निषिद्यालोचयेत्ततः॥

णमोकार मन्त्र का प्राणायाम पद्धति से जाप जिसमें प्रथम श्वांस भरते हुए दो पद का ध्यान (पूरक) कुछ देर श्वांस रोककर (कुम्भक) धीरे-धीरे श्वांस छोड़ें (रेचक)। इसी तरह द्वितीय श्वांस में अगले दो पद एवं तृतीय श्वांस में अन्तिम पद का ध्यान करने के पश्चात् आलोचना प्रतिक्रमण करते हुए भक्ति पाठ करना चाहिए।

उपजाति

प्राक्कल्पितानेकविदुष्टभावप्रत्याहतिं तां पुरतो विधाय।
आचार्यसिद्धश्रुतभक्तिपाठं करोतु पूर्वं विजनप्रदेशे॥

मुख्यपात्र, प्रतिष्ठाचार्य एवं अन्य पात्र मूलनायक भगवान के समक्ष पूर्व में सञ्चित की हुई अशुभ भावना का त्यागकर (प्रत्याख्यान) आलोचना करते हुए आचार्य, सिद्ध, श्रुतभक्ति का पाठ करें।

ॐ ह्यं णमो अरिहंताणं ह्यं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (अंगुठा शुद्ध करें)
ॐ ह्यं णमो सिद्धाणं ह्यं तर्जनीभ्यां नमः। (तर्जनी अंगुली शुद्ध करें)
ॐ ह्यं णमो आइरियाणं ह्यं मध्यमाभ्यां नमः। (मध्यमा अंगुली शुद्ध करें)

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः।

(अनामिका अँगुली शुद्ध करें)

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

(कनिष्ठा अँगुली शुद्ध करें)

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं हः करतलाभ्यां नमः।

(दोनों हथेली सीधी फैलाकर नमन करें)

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं हः करपृष्ठभ्यां नमः।

(दोनों हथेली उल्टी फैलाकर नमन करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(सिर का स्पर्श करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(मुँह का स्पर्श करें)

ॐ हूं णमो आइरियाणं हूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(हृदय का स्पर्श करें)

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ह्रीं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(नाभि का स्पर्श करें)

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

(पैरों पर स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

(शरीर पर पुष्प छोड़ें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम पूजावस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(वस्त्रों पर पुष्प छोड़ें)

ॐ हूं णमो आइरियाणं हूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(पूजा सामग्री के पास पुष्प छोड़ें)

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ह्रीं मम पूजास्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(पूजास्थल पर पुष्प छोड़ें)

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

(चारों ओर पुष्प क्षेपण करें)

क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः पढ़कर पुष्पक्षेपण करते हुए सभी दिशाओं की शुद्धि करें पुनः ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं हः पढ़कर भी दिशाओं की शुद्धि करें।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लीं ब्लीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

(इस मन्त्र से जल को मन्त्रित कर सिर पर अमृत स्थापन करें)

उपजाति

शिरस्युरस्यक्षि गले ललाटे पञ्चाक्षरान् पिण्डग-धर्मसिद्धये।
आद्यन्तबीजादि-विदर्भगर्भै-गुरुपदेशादथवा विदध्यात्॥

पिण्डस्य धर्मध्यान की सिद्धि के लिए पञ्चपरमेष्ठी वाचक अ सि आ उ सा पञ्चाक्षरों को "ॐ नमः" से गर्भित करके मस्तक, हृदय, नेत्र, कण्ठ और ललाट आदि अङ्गों की रक्षा हेतु स्मरण करते हुए धारण (स्थापित) करें।

ॐ अ सि आ उ सा नमः मम शिरो रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ अ सि आ उ सा नमः मम वक्षस्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ अ सि आ उ सा नमः मम नेत्रे रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ अ सि आ उ सा नमः मम कण्ठं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ अ सि आ उ सा नमः मम ललाटं रक्ष रक्ष स्वाहा।

अनुष्ठुभ्

हस्तद्वये कनीयस्याद्यङ्गुलीनां यथाक्रमं।

मूले रेखात्रयस्योर्ध्वमग्रे च युगपत् सुधीः॥

न्यस्योँहामादिहोमान्तान्मस्कारान् मिथः करौ।

संयुज्याद्दृष्टयुग्मेन व्यस्तान् स्वाङ्गेष्विति न्यसेत्॥

दोनों हाथों की कनिष्ठिकादि अँगुलियों में अधो से ऊर्ध्व की ओर तीनों रेखाओं पर एक साथ क्रमशः ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां स्वाहा ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं स्वाहा ॐ हूं णमो आइरियाणं हूं स्वाहा ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ह्रीं स्वाहा ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः स्वाहा मन्त्र स्थापित करें।

दोनों हाथों को परस्पर जोड़ें व दोनों हाथों से अँगूठों को खड़ा करके उनके द्वारा अपने हृदयादि पर न्यास (स्पर्श) करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं स्वाहा हृदये

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा ललाटे

ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा शिरसो दक्षिणे

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं स्वाहा शिरसः पश्चिमे

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा शिरस उत्तरे

तत्पश्चात् पुनः न्यास करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं स्वाहा ललाटे

ॐ हीं णमो सिद्धाणं स्वाहा मध्ये
 ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा शिरसो दक्षिणे
 ॐ हौं णमो उवज्जायाणं स्वाहा शिरसः पश्चिमे
 ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा शिरस उत्तरे
 ॐ नमोऽर्हते सर्वे रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

(इस मन्त्र को सात बार पढ़कर सभी पात्र अपने ऊपर पुष्पाक्षत क्षेपण करें।)

ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय
 सहस्र-खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः
 क्षः हूं फट् स्वाहा । (अनेन सिद्धार्थानभिमन्त्र्य सर्वविघ्नोपशमार्थं सर्वं दिक्षु क्षिपेत्)

उपजाति

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं शुभ्रं सुगन्धाहृत्-चञ्चरीकम् ।
 स्थाने नवाङ्के तिलकाय चर्च्यं न केवलं देहविकारहेतोः ॥

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर (1) मस्तक, (2) शिखा, (3) ग्रीवा,
 (4) कान*, (5) हृदय, (6) दोनों भुजाएँ,
 (7) कलाई, (8) नाभि
 (9) पीठ में नौ तिलक लगावें।

वसन्ततिलका

सम्यक्-पिनद्ध-नवनिर्मल-रत्नपङ्की रोचिर्बृहद्वलयजात-बहुप्रकारम् ।
 कल्याणनिर्मितमहं कटकं जिनेशपूजाविधान-ललिते स्वकरे करोमि ॥

ॐ नमोऽर्हते सर्वे रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा । (दाहिने हाथ में रक्षा सूत्र बाँधें)

उपजाति

यज्ञार्थमेवं सृजतादिचक्रेश्वरेण चिह्नं विधिभूषणानाम् ।

यज्ञोपवीतं विततं हि रत्नत्रयस्य मार्गं विदधाम्यतोऽहम् ॥

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायार्हं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं
 दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा ।

* प्रतिष्ठापाठ में कान के स्थान पर दो बाहु लिए हैं ।

निम्न नियमों को ग्रहण कर यज्ञोपवीत धारण करें

- (1) सप्तव्यसन का त्याग (2) अष्टमूलगुण धारण करना (3) अभक्ष्यत्याग
- (4) बीड़ी, पान मसाला, तम्बाकू, सिगरेट आदि नशीले पदार्थों का त्याग
- (5) ब्रह्मचर्य पालन (6) भूमिशयन (7) एकाशन (8) रात्रिभोजन त्याग
- (9) शुद्धभोजन (10) हिंसाजन्य तरीके से बनी वस्तुओं का त्याग (11)
- विषय कषाय की मन्दता (12) व्यग्रता, चित्त की चञ्चलता एवं आलस्य

त्याग । इन नियमों का यज्ञ समापन तक पालन करना आवश्यक है ।

(सभी दिशाओं में बन्द मुट्ठी से पुष्पक्षेपण करा ।)

प्रतिक्रमण

हे भगवन् अरिहन्त देव! मैं आपके समक्ष अपने मन, वचन, काय से किए हुए दोषों की आलोचना गार्हा आत्मनिन्दापूर्वक करके प्रतिक्रमण करता हूँ। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के निमित्त से किसी जीव की विराधना अथवा प्राण-पीड़ा हुई हो, उसे मैं आत्मनिन्दा पूर्वक मन, वचन, काय की शुद्धि से परित्याग करता हूँ। एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय, पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पति काय और त्रसकाय इन जीवों को मैंने स्वतः मारा हो, अन्य से मरवाया हो व मारने वाले की अनुमोदना की हो अथवा और किसी प्रकार से जीवों को सन्ताप दिया हो, अन्य से दिलवाया हो, सन्ताप देने वाले को भला माना हो अथवा प्राणियों के अङ्गोपाङ्ग का वियोग किया हो, कराया हो, करते हुए को भला माना हो इत्यादि अनेक प्रकार से जिन जीवों को पीड़ा हुई हो उनसे उत्पन्न हुए पापों का परित्याग करता हूँ। मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदना सहित जिन जीवों का मुझसे घात हुआ हो तो हे भगवन्! वह सब पाप निरर्थक हों, तथा प्रमाद व अज्ञान से अतिचार व अनाचार से व्रत भङ्ग का दोष लगा हो उसकी मैं मन, वचन, काय से उपस्थापना करता हूँ। दिवस सम्बन्धी, शारीरिक, मानसिक और वाचनिक कार्य करने में जो दोष मैंने किए हों उनका प्रतिक्रमण करता हूँ।

अब मैं मन शुद्धि के लिए अपने किए हुए दोषों की आलोचना करता हूँ एवं दोषों से सर्वथा मुक्त होने के लिए श्री पञ्चपरमेष्ठी का चिन्तन कर सिद्धभक्ति में लीन होता हूँ।

ॐ ह्यं णमो अरिहंताणं ह्यं पूर्वदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्यं णमो सिद्धाणं ह्यं दक्षिणदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्यं णमो आरियाणं ह्यं पश्चिमदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्यं णमो उवञ्जायाणं ह्यं उत्तरदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः सर्वदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

रक्षामन्त्र

ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्र-खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं फट् स्वाहा।

शान्तिमन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृच्छ्रोपद्रवविनाशनाय सर्व-क्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्यं ह्यं हूं ह्यं हः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा।

(सभी दिशाओं में पुष्पक्षेपण करें।)

नोट: जप करने वाले जपगृह की शुद्धि करके वहाँ विनायक यन्त्र पूजा करें प्रतिष्ठापात्र मुख्य वेदी पर ही पूजा करें।

जाप्यानुष्ठान

जाप्यानुष्ठान की सावधानियाँ

1. जपस्थल सार्वजनिक स्थान में न होकर एकान्त में हो, वहाँ आने-जाने का रास्ता न हो।
 2. विनायकयन्त्र या सिद्धयन्त्र की स्थापना पूर्वया उत्तराभिमुख करें तथा प्रतिदिन पूजा करें।
 3. यन्त्र के ऊपर छत्र एवं चन्दोवा लगायें।
 4. यन्त्र दीवाल से सटाकर न रखें।
 5. जापकर्ता शुद्ध धोती दुपट्टा पहिनकर जाप करें।
 6. जाप दाहिने हाथ से फेरें और माला पूर्ण होने पर धूप खेंवें।
 7. जापकर्ता शुद्ध भोजन करे एवं ब्रह्मचर्य पूर्वक संयम से रहे।
 8. जापकर्ता का मन्त्र उच्चारण शुद्ध हो।
 9. जापकर्ता का मुख पूर्व या उत्तर दिशा में हो, यदि आमने सामने बैठते हैं तो दिशा दोष नहीं रहता।
 11. धूप शुद्ध मर्यादित होना चाहिए।
 13. मन्त्र को मन में जपें आवाज करने से दूसरे को बाधा होती है।
 14. रात्रि में अनुष्ठान जाप कदापि न करें।
 15. जाप शुरू करने के पूर्व एवं समाप्ति पर नौ बार णमोकारमन्त्र पढ़कर स्थान छोड़ें।
 16. जाप कक्ष को छोड़ने के पूर्व दीपक को खुला न छोड़ें उस पर एक खाली दीपक रखकर ढँक दें।
- ॐ ह्यं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा। (इस मन्त्र द्वारा जपस्थल की शुद्धि करें।)

यन्त्र अभिषेक

ॐ ह्यं श्रीकारलेखनं करोमि।

(थाली में श्री लेखन करें)

अनुष्ठान

अहं मन्त्रं नमस्कृत्य रत्नत्रयतपोनिधिम्।
सिद्धयन्त्रं स्थापयामि, सर्वोपद्रवशान्तये ॥
ॐ तर्ही स्नापन-पीठे विनायक / सिद्धयन्त्रं स्थापयामि।

उदकचन्दन तण्डुल अर्घ्य चढ़ावें
ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुष्कोणेषु चतुष्कलश-स्थापनं करोमि।

वसन्ततिलका

स्नात्वा शुभाम्बरधरः कृतयत्नयोगात् यन्त्रं निवेश्य शुचिपीठवरेऽभिषिञ्चेत्।
ॐ भूर्भुवःस्वरिह मङ्गलयन्त्रमेतत् विघ्नौषवारक-महं परिषिञ्चयामि।
ॐ ह्रीं भूर्भुवःस्वरिह विघ्नौषवारकं यन्त्रं वयं परिषिञ्चयामः।

(यन्त्र अभिषेक करें।)

उदकचन्दन-तण्डुल अर्घ्य चढ़ावें

शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्जायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धेसरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मन्त्रेभ्यः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष-दोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः
श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न-प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय
सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं
हः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय
सहस्र-खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं
फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहन्ताणं ह्रीं
सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

तव भक्ति-प्रसादात् लक्ष्मी-पुरराज्यगेह-पदभ्रष्टोपद्रवदारिद्र्योद्भवोपद्रव-
स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-प्रघण्ड-पयनानल-जलोद्भवोपद्रव-शाकिनी-डोकिनी-

भूतपिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्ष-व्यापार-वृद्धि-रहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।
सम्पूर्ण-कल्याण-मङ्गलरूप-मोक्षपुरुषार्थश्च भवतु। लोक-कल्याणं भवतु।

उदकचन्दन-तण्डुल अर्घ्य चढ़ाकर यन्त्र का प्रक्षाल करके
सिंहासन में विराजमान करें। पूजापीठिका पूर्वक विनायक यन्त्र की पूजा करें।

विनायक यन्त्र पूजा

अनुष्टुभ्

परमेष्ठिन्! जगत्त्राण-करणे मङ्गलोत्तम!।

इतः शरण! तिष्ठ त्वं सन्निधौ भव पावन! ॥

ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा मङ्गलोत्तमशरणभूतपरमेष्ठिन्! अत्र अवतरत
अवतरत संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्। अत्र
मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

इन्द्रवज्रा/उपजाति

पङ्केरुहायत-परागपुञ्जैः सौगन्ध्यवद्भिः सलिलैः पवित्रैः।

अर्हत्पदाभासित-मङ्गलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा मङ्गलोत्तमशरणभूत-परमेष्ठिभ्यो जलं निर्व।

काश्मीर-कर्पूरकृतद्रवेष संसार-तापापहतौ युतेन।

अर्हत्पदाभासित-मङ्गलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा मङ्गलोत्तमशरणभूत-परमेष्ठिभ्यः चन्दनं निर्व।

शाल्यक्षतैरक्षत-मूर्तिमदिभ-रब्जादिवासेन सुगन्धवद्भिः।

अर्हत्पदाभासित-मङ्गलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा मङ्गलोत्तमशरणभूत-परमेष्ठिभ्योऽक्षतान् निर्व।

कदम्बजात्यादिभवैः सुरद्रुमैः, -जातिर्मनोजात-विपाशदक्षैः।

अर्हत्पदाभासित-मङ्गलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा मङ्गलोत्तमशरणभूत-परमेष्ठिभ्यः पुष्पं निर्व।

पीयूषपिण्डैश्च शशाङ्क-कान्ति-स्पर्धाभिविष्टैर्नयन-प्रियैश्च।

अर्हत्पदाभासित-मङ्गलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा मङ्गलोत्तमशरणभूत-परमेष्ठिभ्यो नैवेद्यं निर्व।

- ध्वस्तान्धकार-प्रसरैः सुदीपै-घृतोद्भवै रत्नविनिर्मितैर्वा ।
अर्हत्पदाभासित-मङ्गलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥
- ॐ ह्रीं अहं अ सि आ उ सा मङ्गलोल्लसणभूत-परमेष्ठिभ्यो दीपं निर्व ।
स्वकीयधूमेन नभोऽवकाश-संव्याप्नुवद्भिश्च सुगन्धधूपैः ।
अर्हत्पदाभासित-मङ्गलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥
- ॐ ह्रीं अहं अ सि आ उ सा मङ्गलोल्लसणभूत-परमेष्ठिभ्यो धूपं निर्व ।
नारङ्गपूगादि-फलै-रनर्घ्यै-हृन्मानसादि-प्रियतर्पकैश्च ।
अर्हत्पदाभासित-मङ्गलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥
- ॐ ह्रीं अहं अ सि आ उ सा मङ्गलोल्लसणभूत-परमेष्ठिभ्यः फलं निर्व ।

शार्दूलविक्रीडित

- अच्छाम्भःशुचि-चन्दनाक्षत-सुमै-नैवेद्यकैश्-चारुभिः ।
दीपैर्धूप-फलोत्तमैः समुदितै-रेभिः सुपात्रस्थितैः ॥
अर्हत्सिद्धसुसूरि-पाठकमुनीन् लोकोत्तमान् मङ्गलान् ।
प्रत्यूहौघ-निवृत्तये शुभकृतः सेवे शरण्यानहम् ॥
- ॐ ह्रीं अहं अ सि आ उ सा मङ्गलोल्लसणभूत-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्व ।

प्रत्येक अर्घ्यं

वसन्ततिलका

- कल्याणपञ्चक-कृतोदय-माप्तमीश-मर्हन्तमच्युत-चतुष्टय-भासुराङ्गम् ।
स्याद्वादवागमृतसिन्धु-शशाङ्गकोटि-मर्चं जलादिभि-रनन्त-गुणालयं तम् ॥1॥
- ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयादि लक्ष्मीविभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
कर्माष्टकैश्च-चयमुत्पथमाशु हुत्वा सद्धानवहिनविसरे-स्वयमात्मवन्तम् ।
निश्रेयसामृतसरस्यथ सन्निनाय तं सिद्धमुच्चपददं परिपूजयामि ॥2॥
- ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठ-भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्व । स्वाहा ।
स्वाचारपञ्चकमपि स्वयमाचरन्तः ह्याचारयन्ति भविकान्निज-शुद्धभाजः ।
तानर्चयामि विविधैः सलिलादिभिश्च प्रत्यूहनाशनविधौ निपुणान् पवित्रैः ॥3॥
- ॐ ह्रीं पञ्चाचार-परायणाचार्य-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

- अङ्गाङ्गबाह्य-परिपाठनलालसाना-मष्टाङ्गज्ञानपरिशीलन-भावितानाम् ।
पादारविन्दयुगलं खलु पाठकानां शुद्धैर्जलादिवसुभिः परिपूजयामि ॥4॥
- ॐ ह्रीं द्वादशाङ्ग-पठनपाठनोद्यताय उपाध्याय-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्व 0 ।
आराधनासुखविलास-महेश्वराणां सद्धर्मलक्षणमयात्म-विकस्वराणाम् ।
स्तोतुं गुणान् गिरिवनादि-निवासभाजां एषोऽर्घतश्चरण-पीठभुवं यजामि ॥5॥
- ॐ ह्रीं त्रयोदश-प्रकारचारित्राराधकसाधु-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनुष्टुभ्

- अर्हन्मङ्गलमर्चामि जगन्मङ्गलदायकम् ।
प्रारब्धकर्म-विघ्नौघ-प्रलयाय पयोमुखैः ॥6॥
- ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
चिदानन्द-लसद्दीची-मालीढं गुणशालिकम् ।
सिद्धमङ्गलमर्चंऽहं सलिलादिभि-रुज्ज्वलैः ॥7॥
- ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
बुद्धिक्रिया-रसतपो-विक्रियौषधि-मुख्यकाः ।
ऋद्धयो यं न मोहन्ति साधुमङ्गलमर्चये ॥8॥
- ॐ ह्रीं साधुमङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
लोकालोक-स्वरूपज्ञ-प्रज्ञप्तं धर्म-मङ्गलम् ।
अर्चं वादित्रनिर्घोष-गीतनृत्यैः वनादिभिः ॥9॥
- ॐ ह्रीं केवलप्रज्ञप्तधर्म-मङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
लोकोत्तमोऽर्हन् जगतां भवबाधाविनाशकः ।
अर्च्यतेऽर्घ्येण स मया कुर्मगण-हानये ॥10॥
- ॐ ह्रीं अहं लोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
विश्वाम्र-शिखर-स्थायी सिद्धो लोकोत्तमो मया ।
महयते महसानन्द-चिदानन्द-सुमेदुरः ॥11॥
- ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
रागद्वेष-परित्यागी साम्यभावावबोधकः ।
साधुलोकोत्तमोऽर्घ्येण पूज्यते सलिलादिभिः ॥12॥
- ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तमक्षमया भास्वान् सद्धर्मो विष्टपोत्तमः ।
अनन्तसुखसंस्थानं यज्यतेऽम्भःसुमादिभिः ॥13 ॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अहंस्त्वमेव शरणं नान्यथा शरणं मम ।
तत् त्वां भावविशुद्ध्यर्थ-महयामि जलादिभिः ॥14 ॥

ॐ ह्रीं अहंशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
ब्रजामि सिद्धशरणं परावर्तन-पञ्चकम् ।
भित्वा स्वसुखसन्दोह-सम्पन्नमिति पूजये ॥15 ॥

ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
आश्रये साधुशरणं सिद्धान्तप्रतिपादनैः ।
न्यक्कृताज्ञान-तिमिर-मिति शुद्ध्यया यजामि तम् ॥16 ॥

ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
धर्म एव सदा बन्धुः स एव शरणं मम ।
इह वान्यत्र संसारे इति तं पूजयेऽधुना ॥17 ॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसन्ततिलका

संसारदुःख-हनने निपुणं जनानां नाद्यन्तचक्रमिति सप्तदशप्रमाणं ।
सम्पूजये विविधभक्ति-भरावनम्रः शान्तिप्रदं भुवनमुख्य-पदार्थसारैः ॥
ॐ ह्रीं अहंदादि-सप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

वसन्ततिलका

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा अग्रेसरं जिन! वदन्ति भवन्तमिष्टम् ।
आनाद्यनन्त-युगवर्तिन-मत्र कार्ये विघ्नौघवारण-कृतेऽह-मपि स्मरामि ॥1 ॥

भुजंगप्रयात

गणानां मुनीना-मधीशत्वतस्ते गणेशाख्यया ये भवन्तं स्तुवन्ति ।
सदाविघ्न-सन्दोह-शान्तिर्जनानां करे संलुठत्यायतक्षेमकानाम् ॥2 ॥

उपेन्द्र वज्रा/ठपजाति

कलेः प्रभावात्कलुषाशयेषु जनेषु मिथ्यामदवासितेषु ।
प्रवर्तितो यो गणराजनाम्ना कथं स कुर्याद् भववार्धि-शोपम् ॥3 ॥
यो वाक्सुधा-तोषितभयजीवो यो ज्ञानपीयूष-पयोधितुल्यः ।
यो वृत्तदूरीकृतपापपुञ्जः स एव मान्यो गणराजनाम्ना ॥4 ॥
यतस्त्वमेवासि विनायको मे दृष्टेष्टयोगान्नविरुद्धवाचः ।
त्वन्नाममात्रेण पराभवन्ति विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ॥5 ॥

मालिनी

जय जय जिनराज, त्वद्गुणान् को व्यनक्ति,
यदि सुरगुरुरिन्द्रः कोटिवर्षप्रमाणम् ।
वदितु-मभिलषेद्वा, पारमाप्नोति नो चेत्,
कथित इह मनुष्यः स्वल्पबुद्ध्यया समेतः ॥6 ॥
ॐ ह्रीं अहंदादिसप्तदशमन्त्रेभ्यो जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनुष्टुभ्

श्रियं बुद्धिमनाकुल्यं धर्मप्रीति-विवर्धनम् ॥
जिनधर्मे स्थितिर्भूयात् श्रेयसं मे दिशत्व्वरम् ॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ।)

महार्घ्यं, शान्तिपाठ एवं विसर्जन कर कार्य पूर्ण करें ।

शालिनी

वेद्या मूले पञ्चरत्नोपशोभं कण्ठेलम्बान्माल्यमादर्शयुक्तम् ।
माणिक्याभं काञ्चनं पूगदर्भस्त्रक्वासोभं सद्घटं स्थापयेद् वै ॥

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने
कर्मणिश्रीवीरनिर्वाण-संवत्सरे..... मासे
..... पक्षे तिथौवासरे प्रशस्तलग्ने..... कार्यस्य
निर्विघ्न-समाप्त्यर्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत-श्रीफलादि-शोभितं
मङ्गलकलश-स्थापनं करोमि । श्रीं इवीं इवीं हं सः स्वाहा ।

द्वतविलम्बित

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम् ।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमङ्गलकं मुदा ॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि ।

जप का सङ्कल्प

ॐ जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे देशे
प्रान्ते नगरे वीरनिर्वाण-संवत्सरे
ऋतौ मासे पक्षे तिथौ
जैनमन्दिरे कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थ
इति-मन्त्रस्य वासरादारभ्य वासरपर्यन्तं
करिष्यामहे जाप्यस्य सङ्कल्पं कुर्मः निर्विघ्नं मापनं
भवतु । अहं नमः स्वाहा ।

(यह सङ्कल्प लेकर श्रीफल यन्त्र के पास चढ़ा दें।)

मौन-ग्रहण मन्त्र

ॐ ह्रीं अहं ह्यं मौनस्थित्यर्थं मौनव्रतं गृह्णामि ।

आसन-ग्रहण मन्त्र

ॐ ह्रीं अहं निःसहि हूं फट् दर्भासने उपविशामि ।

प्रतिष्ठाचार्य नवीन जाप की शुद्धि करके जपवालों से जाप मन्त्र का उच्चारण कराकर मन्त्रोच्चारण शुद्ध करा दें। मन्त्राराधन बहुत ही शुद्धतापूर्वक होना चाहिए।

प्रतिदिन की माला का हिसाब लवंग द्वारा लगाकर सावधानी पूर्वक अलग कागज पर लिखकर रखना चाहिए।

मालाशुद्धि

ॐ ह्रीं रत्नैः स्वर्णैः सूतैर्बजैः रचित्वा जपमालिका सर्वजपेषु
सर्वाणि वाञ्छितानि प्रयच्छतु ।

माला (जाप) को प्रासुक जल से धोकर, थाली में स्वस्तिक बनाकर उसमें रखें उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें।

जाप मन्त्र

वृहच्छान्ति-मन्त्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।

णमो उवज्जायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्जामि हौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

मध्यम शान्तिमन्त्र

ॐ हां ह्रीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु ।

लघु शान्ति-मन्त्र

ॐ ह्रीं अहं अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु ।

विश्वशान्तिचक्र-मन्त्र

ॐ ह्रीं अहंते भगवते श्रीशान्तिनाथाय विश्वशान्तये नमः ।

शान्तिचक्र-मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय जगच्छान्तिकराय सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु ।

धर्मचक्र-मन्त्र

ॐ ह्रीं अहंते भगवते धर्मचक्राधिपतये श्रीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नमः ।

अचिन्त्य फलदायक-मन्त्र

ॐ ह्रीं अहं णमो अरिहंताणं ह्रीं नमः ।

सर्वसिद्धिदायक-मन्त्र

ॐ ह्रीं अहं अ सि आ उ सा नमः ।

रक्षामन्त्र

ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं फट् स्वाहा ।

वृहद् शान्तिमन्त्र

ॐ नमोऽहंते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः
श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय
सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्व-क्षाम-डामर-विनाशनाय ॐ हां हीं हूं हौं
हः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

वेदीप्रतिष्ठा, कलशारोहण तथा बिम्ब-स्थापन मन्त्र

ॐ हीं श्रीं क्लीं अहं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहन्ताणं हौं
सर्वशान्तिं कुरु कुरु ।

भक्तामर-मन्त्र

ॐ हीं क्लीं श्रीं अहं श्रीवृषभनाथतीर्थङ्कराय नमः ।

ऋषिमण्डल-मन्त्र

ॐ हां हिं हुं हूं हें हें हौं हः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्येभ्यो हीं नमः ।

कलिकुण्डदण्ड-मन्त्र

ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अहं कलिकुण्डदण्ड-स्वामिन् अतुलबलवीर्यपराक्रमाय
ममाभीष्टसिद्धिं कुरु कुरु स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रः ममात्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां
छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द हूं फट् स्वाहा ।

गणधरवलय-मन्त्र

(1) ॐ हीं क्लीं श्रीं अहं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्राय फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः ।
(2) ॐ णमो अरिहन्ताणं ॐ णमो जिणाणं हां हीं हूं हौं हः अप्रतिचक्राय फट्
विचक्राय ॐ हीं अहं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः ।

सिद्धचक्रविधान-मन्त्र

(1) ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविमुक्ताय
श्रीसिद्धाय नमः ।
(2) ॐ हीं अहं अ सि आ उ सा सिद्धचक्राधिपतये नमः ।

इन्द्रध्वज विधान मन्त्र

(1) ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा मध्यलोकसम्बन्धि-चतुः शताष्टपञ्चाशत्-
जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः ।

(2) ॐ हीं श्रीं क्लीं अहं अ सि आ उ सा मध्यलोकस्थित-सर्वजिनालयस्थ-
जिन-बिम्बेभ्यो नमः ।

त्रैलोक्यतिलक -मण्डल विधान मन्त्र

ॐ हीं श्रीं अहं अनाहत-विद्याधिपाय त्रैलोक्यनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु
स्वाहा ।

जम्बूद्वीप विधान मन्त्र

(1) ॐ हीं जम्बूद्वीप-सम्बन्ध्यहृत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुजिनधर्म-
जिनागम- जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः ।
(2) ॐ हीं अहं अ सि आ उ सा जिनधर्म-श्रुतचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः ।

कल्पद्रुम विधान मन्त्र

ॐ हीं समवसरणपद्म-सूर्यवृषभादि-वर्द्धमानान्तेभ्यो नमः ।

सर्वतोभद्र विधान मन्त्र

ॐ हीं त्रिलोक-सम्बन्ध्यहृत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-
जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः ।

ढाईद्वीप विधान मन्त्र

ॐ हीं अहं अ सि आ उ सा सार्द्धद्वय-द्वीपसम्बन्धि-शाश्वत-जिनालय- जिनेभ्यो
नमः ।

समवसरण विधान मन्त्र

ॐ हीं समवसरणस्थित-चतुर्विंशति-तीर्थङ्करेभ्यो नमः ।

नन्दीश्वरद्वीप विधान मन्त्र

ॐ हीं नन्दीश्वरद्वीप-सम्बन्धि-द्वापञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः ।

चौसठ ऋद्धि विधान मन्त्र

ॐ हीं चतुःषष्टि-ऋद्धिसमुद्ध-गणधरेभ्यो नमः ।

□□□

ध्वजस्थापन विधि

मन्त्र	- शान्तिमन्त्र	मण्डल	- नवदेव मण्डल
यन्त्र	- (1) विनायक यन्त्र	(2)	नवदेव यन्त्र
भक्तियाँ	- (1) सिद्धभक्ति	(2)	श्रुतभक्ति
	(3) तीर्थङ्करभक्ति	(4)	शान्तिभक्ति

ध्वजस्थापन सावधानियाँ

1. ध्वजपीठिका मण्डप से लगभग 15 से 20 फुट की दूरी पर ढाई से तीन फुट ऊँची तीन कटनी वाली होनी चाहिए।
2. ध्वजपीठिका भगवान् की वेदी के ठीक सामने हो।
3. ध्वजदण्ड लकड़ी का श्रेष्ठ होता है।
4. ध्वजदण्ड की ऊँचाई मण्डप से ऊँची रखें।
5. मङ्गलध्वज का कपड़ा मजबूत एवं सुन्दर होना चाहिए। ध्वज चौकोर एवं त्रिकोण दोनों प्रकार की तथा रङ्ग केशरिया या पचरङ्गा हो सकता है।
6. ध्वज की लम्बाई, चौड़ाई से डेढ़ गुनी (5x7½) होना श्रेष्ठ है।
7. ध्वज पर स्वस्तिक बनायें।
8. ध्वज के ऊपरी सिरे पर माला बाँधें एवं निचले सिरे को अच्छी तरह ध्वज डोरी से बाँधें।
9. ध्वजपीठिका को रङ्गोली से अलङ्कृत करें।
10. ध्वजस्थल को चारों ओर से रस्सी या साङ्गल से सुरक्षित करें जिससे जूता चप्पल वहाँ तक न पहुँचे, जिससे वहाँ की शुद्धि बनी रहे।
11. ध्वजस्थापन कर्ता सदाचारी व्यसन मुक्त हो।
12. ध्वजस्थापन कर्ता शुद्धधोती दुपट्टा पहिन कर ही पूजा एवं ध्वजा का कार्य सम्पादित करें।
13. यदि ध्वज की दिशा प्रतिकूल हो तो शान्तिमन्त्र एवं विधान अनुष्ठान करके शान्तिकर्म करें।
14. ध्वजस्थापन कर्ता विधुर न हो।
15. माङ्गलिक क्रियाएँ सौभाग्यवती स्त्री या कन्या से ही कराएँ।

(67)

प्रतिष्ठा पराग

प्रतिष्ठाकारक लोक प्रभावक जुलूस की व्यवस्था बनाएँ, जिसमें ध्वजाएँ, बैण्ड बाजे, कीर्तन पार्टी, इन्द्राणियाँ एवं महिलाएँ मङ्गलकलश सिर पर रख कर चलें। विमान में जिनबिम्ब और विनायकसिद्धयन्त्र विराजमान करें और धाली में मङ्गलध्वज रखें।

जुलूस को श्री जैनमन्दिर से प्रारम्भ करें और यज्ञस्थल पर जावें। मङ्गलकार्य की निर्विघ्नता हेतु जुलूस में जिनबिम्ब के आगे प्रतिष्ठाचार्य रक्षामन्त्र पढ़ता हुआ पीले सरसों या पुष्प क्षेपण करते रहें। यज्ञस्थल पर शामियाना तथा चन्दोवा लगवाना आवश्यक है। श्री जिनबिम्ब एवं विनायक यन्त्र को उचित स्थान पर विराजमान करें।

सर्वप्रथम मङ्गलाष्टक, पात्रशुद्धि, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्ति मन्त्राराधन कर पृष्ठ 55 से यन्त्राभिषेक पूर्वक विनायक यन्त्र एवं नवदेव पूजा करें। तत्पश्चात् शान्ति मन्त्र का जप करें एवं भक्तियाँ पढ़ें।

ध्वजभूमि-शुद्धि

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु हूं फद् स्वाहा।

(ध्वज चबूतरे के चारों ओर जल से शुद्धि करें)

उपजाति

अहो धरायामिह ये सुराश्च क्षमन्तु यज्ञाधिकृतिं ददन्तु।

प्रीतिः पुराणा बहुवासयोगात् क्षितावतोऽस्मद्विनिवेदनं वः॥

ॐ अस्मिन्यज्ञस्थाने स्थितदेवगणाः आज्ञाप्रदानं कुर्युः विघ्ननिवारणार्थं अत्र आगच्छ आगच्छ।

(मङ्गलध्वज के स्थान पर पुष्पक्षेपण कर आज्ञा प्राप्त करके श्रीफल भेंटकर आमन्त्रित करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा । (पुष्पक्षेपण करें)

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यै विबुधैः प्रणुत्या।

भक्त्या सदागत्य हि यागभूमेः कुर्वन्तु शुद्धिं पवनाख्यदेवाः॥*

भो वायुकुमारदेवगणाः! सर्वविघ्नविनाशाय महीपूतां कुरु कुरु हूं फद् स्वाहा।

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यैर्विबुधैः प्रणुत्या।
 भक्त्या सदागत्य हि यागभूमेः कुर्वन्तु शुद्धिं वरमेघदेवाः॥*

भो मेघकुमारदेवगणाः! सर्वविघ्नविनाशाय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं
 सं वं झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा।

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यैर्विबुधैः प्रणुत्या।
 भक्त्या सदागत्य हि यागभूमेः कुर्वन्तु शुद्धिं ज्वलनारुख्यदेवाः॥*

भो अग्निकुमारदेवगणाः! सर्वविघ्नविनाशाय भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं
 सं वं झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा।

वसन्ततिलका

श्रीमज्जिनस्य जगदीश्वरता-ध्वजस्य, मीनध्वजादि- रिपुजाल- जयध्वजस्य।
 तन्त्यासदर्शन-जनागमन-ध्वजस्य, चारोपणं विधिवदाविदधे ध्वजस्य ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा विधियज्ञ-प्रतिज्ञायै पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।
 (ध्वजा स्थान पर पुष्प क्षेपण करें) पश्चात् यन्त्र अभिषेक करके नवदेव पूजा करें।

नवदेव पूजा¹

अनुष्टुभ

अहंत्सिद्धाचार्योपाध्यायाश्च साधवः।
 चैत्यचैत्यालयो धर्मो जिनशास्त्रं नवदेवताः ॥

निर्विघ्नकार्य-सिद्ध्यर्थ-माहवायामि सुभक्तितः।
 प्रसिद्धान् नवदेवास्तान् प्रतिष्ठादिमहोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं नवदेवसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ
 तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

उपजाति

स्थानासनार्थं प्रतिपत्तियोगान् सद्भावसन्मानजलादिभिश्च।
 ध्वजप्रतिष्ठासमये सुभक्त्या जिनादिकानादरतो यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड-कर्पूर सुकुङ्कुमाद्यैः गन्धैः सुगन्धीकृतदिग्विभागैः।
 ध्वजप्रतिष्ठासमये सुभक्त्या जिनादिकानादरतो यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

¹ पं. म. ला. जे. प्र. ह. लि. डा.

शाल्यक्षतैरक्षतदीर्घगात्रैः सुनिर्मलैश्चन्द्रकरावदातैः।
 ध्वजप्रतिष्ठासमये सुभक्त्या जिनादिकानादरतो यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बोज-नीलोत्पल-पारिजात-कदम्ब-कुन्दादि-वरप्रसूनैः।
 ध्वजप्रतिष्ठासमये सुभक्त्या जिनादिकानादरतो यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यकैः काञ्चनभाजनस्थैः रसप्रपूर्णैर्नयनप्रियैश्च।
 ध्वजप्रतिष्ठासमये सुभक्त्या जिनादिकानादरतो यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपोत्करैर्ध्वस्ततमोवितानै-रुद्योतिताशेषपदार्थजातैः।
 ध्वजप्रतिष्ठासमये सुभक्त्या जिनादिकानादरतो यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तरुष्ककृष्णागरुचन्दनादि-सच्चूर्णजै-रुत्तम-धूपवर्गैः।
 ध्वजप्रतिष्ठासमये सुभक्त्या जिनादिकानादरतो यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लवङ्गनारिङ्गकपित्थपूग-श्रीमोच-चोचादिफलैःपवित्रैः।
 ध्वजप्रतिष्ठासमये सुभक्त्या जिनादिकानादरतो यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीचन्दनाद्यक्षततोयमिश्रं विकासिपुष्पाञ्जलिना सुभक्त्या।
 ध्वजप्रतिष्ठासमये सुभक्त्या जिनादिकानादरतो यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्यं

निःशेषदोषेन्धनधूमकेतु - मपारसंसारसमुद्रसेतुम्।
 यजे समस्तातिशयैक-हेतून् श्रीमज्जिनानम्बुज-कर्णिकायाम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्पूर्वपत्रे परितः पुरस्तात् दुष्टाष्ट-कर्मारि विनाशकांश्च।
 लोकाग्रचूडामणिसन्निभास्तान् सिद्धान् यजे शान्तिकरान् नराणाम् ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

- सूरिं सदाचारविचारसारा-नाचारयन्तं स्वपरान्यथेष्टम् ।
दुष्टोपसर्गैकनिवारणार्थं समर्चयाम्यक्षतगन्धधूपैः ॥
ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशान्त्यै पठन्ति येऽन्यानपि पाठयन्ति ।
अध्यापकांस्तान् परमाब्जपत्रैः स्थितान् चरित्रान् परिपूजयामि ॥
ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रवज्रा

- वैराग्यमन्तर्वचःसुपरं प्रसिद्धं सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ।
एषामुदक्पत्रगतान्पवित्रान् साधून् सदा तान् परिपूजयामि ॥
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडित

- कृत्याकृत्रिमचारु चैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वन्दे भावनव्यन्तरद्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान् ।
सद्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शान्तये ॥
ॐ ह्रीं कृत्याकृत्रिमत्रिलोकवर्ति-श्रीजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनुष्टुभ्

- यावन्ति जिनचैत्यानि¹ विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम्² ॥
ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिवीतरागबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्रग्धरा

- अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशाङ्गं विशालं,
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभै-धारितं बुद्धिमदिभः ।
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं,
भक्त्या नित्यं प्रवन्दे श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ।
ॐ ह्रीं जिनागमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाठान्तर-¹ जिन विम्बानि ² त्रिशुद्धया पूजयाम्यहम्

इन्द्रवज्रा

- आराधकानभ्युदये समस्तान् निःश्रेयसे वा धरति ध्रुवं यः ।
तं धर्ममाग्नेय-विदिग्दलान्ते सम्पूजये केवलिनोपदिष्टम् ॥
ॐ ह्रीं जिनधर्मायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्वजदण्ड-शुद्धि एवं संस्कार

अनुष्टुभ्

- पञ्चवर्णप्रभोपेतं विजयोद्योगसूचकम् ।
स्नापयामि महामन्त्रैः जिनशासनसद्ध्वजम् ॥*
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्जायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ।

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं-केवलपण्णत्तो
धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू
लोगुत्तमा केवलपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते
सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवल
पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अनादिसिद्धमन्त्रेभ्यो नमः
पवित्रतरजलेन ध्वजदण्डशुद्धिं करोमि ।

(जल से ध्वजदण्ड की शुद्धि करें।)

अनुष्टुभ्

- स्वस्तिकलेखनं कृत्वा ध्वजदण्डस्य चोपरि ।
मालामङ्गलसूत्रेण सज्जां कुरुत धीधनाः ॥*
ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं ध्वजदण्डं मालामङ्गलसूत्रेण वेष्टयामि ।
(ध्वजदण्ड को माला मङ्गलसूत्र से वेष्टित करें एवं स्वस्तिक बनावें)

ध्वजगर्तशुद्धि

- जहाँ ध्वजदण्ड लगाना है, उस गर्त की जलादि द्रव्यों से शुद्धि करें ।
ॐ ह्रीं नीरजसे नमः (जलं)
ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः (सुगन्धं)
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतं)

- ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पं)
 ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यं)
 ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः (दीपं)
 ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपं)
 ॐ ह्रीं अभीष्ट-फलप्रदाय नमः (फलं)
 ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः (अर्घ्यं)
 ॐ ह्रीं ध्वजदण्डगते पञ्चरत्नहिरण्यस्वस्तिकादि-स्थापनं करोमि।

(गर्त में चाँदी का स्वस्तिक, पञ्चरत्न, पारद, डालें)

अनुष्टुभ

मङ्गलैः पूजितैर्द्रव्यैर्भरितं मङ्गलं घटम् ।
 श्रावका जिनभक्ताश्च स्थापयन्तु सुभक्तितः ॥

- ॐ ह्रीं स्वस्ति-विधानाय मङ्गलकलश-स्थापनं करोमि।

द्वतविलम्बित

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम् ।
 तिमिर-जालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमङ्गलकं मुदा ॥

- ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

ध्वजस्थापन-मन्त्र

वसन्ततिलका

- रत्नत्रयात्मकतयाभिमतेश्च दण्डे, लोकत्रयप्रकृतकेवलबोधरूपम् ।
 संकल्प्य पूजितमिदं ध्वजमर्च्यलग्ने, स्वारोपयामि सति मङ्गलवाद्यघोषे ॥
 ॐ णमो अरिहन्ताणं स्वस्ति भद्रं भवतु। सर्वलोकस्य शान्तिर्भवतु स्वाहा।

उपजाति

- तदग्रदेशे ध्वजदण्डमुच्चैर्भास्वद्विमानं गमनाद्विरुन्धत् ।
 निवेश्य लग्ने शुभभोपदेश्ये महत्पताकोच्छ्रयणं विदध्यात् ॥
 ॐ ह्रीं अहं जिनशासनपताके सदोच्छ्रिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।

मालिनी

स जयतु जिनधर्मो यावदाचन्द्र-तारं व्रत-नियम-तपोभिर्वर्धतां साधुसङ्घः ।
 अहरहरभिवृद्धिं यान्तु चैत्यालयास्ते तदधिकृतजनानां क्षेममारोग्यमस्तु ॥
 (प्रतिष्ठाकारक, प्रतिष्ठाचार्य एवं दर्शकगण ध्वजा पर पुष्पक्षेपण करें
 एवं वाद्यघोष के साथ ध्वज की परिक्रमा करें, ध्वजगीत पढ़ें)।
 शान्तिभक्ति (शान्तिपाठ) पढ़कर विसर्जन करें।
 ध्वज फहराने का फल

अनुष्टुभ

मुक्ते प्राचीं गते केतौ, सर्वकामानवाप्नुयात् ।
 उत्तराशां गते तस्मिन्, स्वस्वारोग्यं च सम्पदः ॥71 ॥

यदि पश्चिमतो याति, वायव्ये च दिशाश्रये ।
 ऐशान्ये वा ततो वृष्टिः, कुर्यात् केतुः शुभानि सः ॥72 ॥

अन्यस्मिन् दिग्विभागे तु, गते केतौ मरुद्वशात् ।
 शान्तिकं तत्र कर्त्तव्यं, दान-पूजा-विधानतः ॥73 ॥

पूर्व-सर्व इष्ट कार्यं सिद्धि,

उत्तर-आरोग्य सम्पत्ति कारक

ईशान, वायव्य, पश्चिम-कल्याणकारी एवं सुखद वृष्टि

दक्षिण, आग्नेय, नैऋत्य दिशाओं में फहराने पर दान, पूजा व विधान करके
 शान्ति-कर्म करें।

ध्वजगीत

लहर लहर लहराये, केशरिया झण्डा जिनमत का 2।

यह सबका मन हरपाये, केशरिया झण्डा जिनमत का 2।

फर फर फर फर करता झण्डा, गगन शिखा पर डोले,
 स्वस्तिक का यह चिह्न अनूठा, भेद हृदय को खोले।
 यह ज्ञान की ज्योति जलाये, केशरिया झण्डा..॥1॥

इसकी शीतल छाया में सब, पढ़े रतन जिनवाणी,
 सत्य अहिंसा प्रेम युक्त फिर, बने देश लासानी।
 यह सत पथ पर पहुँचाये, केशरिया झण्डा..॥2॥

□□□

ध्वजगीत

आदि ऋषभ के पुत्र भरत का,
भारत देश महान ।
ऋषभदेव से महावीर तक,
करें सुमंगल गान ॥
पंच रंग पाँचों परमेष्ठी,
युग को दें आशीष ।
विश्व शान्ति के लिए झुकाएँ,
पावन ध्वज को शीष ॥
'जिन' की ध्वनि जैन की संस्कृति,
अग-जग को वरदान ।
आदि ऋषभ के पुत्र भरत का
भारत देश महान ।

ध्वज का माप

प्रतिष्ठा एवं पुराण ग्रंथों में ध्वज के रंग एवं चिन्ह निर्धारण में भेद मिलता है। श्वेत, पीली, केशरिया, पंचवर्ण एवं विभिन्न वर्ण की ध्वज का निर्देश मिलता है।

ध्वज के आकार के लम्ब पट्ट एवं एक अनुपात डेढ़ के प्रमाण मिलते हैं।

पं. आशाधर जी प्रतिष्ठा सारोद्धार ग्रंथ में पृष्ठ 124 श्लोक 51 पर वर्णन करते हैं-

हस्तत्रिभाग विस्तीर्णैरर्ध हस्तायतैर्दृढैः

वस्त्रोत्तम सुसंश्लिष्टैर्ध्वजं निर्मापयेच्छुभम् ।

बारह अंगुल लंबी और आठ अंगुल चौड़ी मजबूत उत्तम कपड़े की ध्वज बनवायें इससे बड़ी ध्वजाओं में भी यही अनुपात लिया जायेगा।

□□□

घटयात्रा

भक्तियाँ- (1) सिद्धभक्ति (2) शान्तिभक्ति
यन्त्र- (1) विनायक यन्त्र (2) जलमण्डल यन्त्र
मन्त्र- (1) शान्तिमन्त्र
मण्डल- (1) नवदेव मण्डल/ 81 कोष्ठों का मण्डल/ नन्दावर्त स्वस्तिक

घटयात्रा सावधानियाँ

1. कलशों की संख्या विषम होना चाहिए।
2. स्टील कलश के स्थान पर ताम्रकलश को प्रमुखता दें।
3. कलश में हल्दी, सुपारी, पीली सरसों आदि सामग्री धोकर तथा सुखाकर ही प्रयोग करें।
4. महिलाएँ कलश सिर पर रख कर चलें।
5. कलश पर श्रीफल रखें चाँदी या पीतल का श्रीफल योग्य नहीं है।
6. कलश लेने वाली महिलाएँ चम्पल आदि न पहनें।
7. घटयात्रा में सम्मिलित महिलाएँ धुली केशरिया या पीली साड़ी एवं हार मुकुट पहनें।
8. कलश लेने वाली महिलाएँ नेलपॉलिस, लिपिस्टिक एवं हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का प्रयोग न करें।
9. इन्द्राणियों को घटयात्रा एवं शुद्धि के महत्त्व को विस्तार से बताकर बहुमान जागृत करें।
10. अष्टकुमारियाँ साड़ी पहिनकर शुद्धिपूर्वक क्रियाएँ सम्पादित करें।
11. कलश लेकर चलने वाली महिलाएँ रास्ते में कुछ खाएँ पीएँ नहीं।
12. घटयात्रा सम्बन्धि माङ्गलिक क्रियाएँ सौभाग्यवती महिलाएँ एवं कन्याओं से करवाएँ।

मन्दिर, वेदी तथा कलश शुद्धि के लिए तीर्थ जल की आवश्यकता होती है। अतः किसी जलाशय कूप आदि से गाजे-बाजे (जुलूस) के साथ जल लाना चाहिए। इस कार्य हेतु 9, 21, 31, 51, 81 कलश होना चाहिए। प्रत्येक कलश में हल्दी गाँठ, सुपारी, पीले सरसों या पुष्प डालकर तूस या पीले वस्त्रयुक्त श्रीफल (नारियल) एवं मङ्गलसूत्र (मौली, कलावा) बाँधना आवश्यक है।

बड़ी टेबिल, तख्त, बड़े पाटे पर नन्द्यावर्त स्वस्तिक या 81 कोष्ठ का मण्डल तथा नवदेव पूजा मण्डल बनाएँ। पानी भरने के लिये एक बड़े बर्तन की व्यवस्था करें, जिसमें पानी छानकर रखें और पिसी लवंग को पानी में डालकर प्रासुक करें। यदि जलयन्त्र (देखें पृष्ठ क्रमाङ्क 254) हो तो वह पानी में डाल देवें अथवा केशर के द्वारा रकाबी पर लिखकर कार्य सम्पन्न करें।

प्रथम मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन, पात्रशुद्धि, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्राराधन कर सिद्धभक्ति पढ़कर विनायक यन्त्र पूजा/ नवदेव पूजा करें। जुलूस के आते एवं जाते हुए मार्ग में प्रतिष्ठाचार्य रक्षामन्त्र/शान्तिमन्त्र पढ़ता हुआ पीले सरसों सभी दिशाओं में क्षेपण करते रहें।

उपजाति

द्रव्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे, ह्यनर्घमर्घं वितरामि भक्त्या ।

भवे भवे भक्तिरुदारभावाद्, येषां सुखायास्तु निरन्तराया ॥

ॐ ह्रीं अहं मङ्गलोत्तमशरणभूतेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नवदेव पूजा

आर्या

अरिहन्त-सिद्धसाधु-त्रितयं, जिनधर्म-बिम्ब-वचनानि ।

जिननिलयान् नवदेवान्, संस्थापये भावतो नित्यम् ॥

ॐ ह्रीं नवदेवसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं नवदेवसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं नवदेवसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

उपजाति / इन्द्रवज्रा / उपेन्द्रवज्रा

ये घाति-जाति-प्रतिघाति-जातं, शक्राद्यलङ्घ्यं जगदेकसारम् ।

प्रपेदिरेऽनन्तचतुष्टयं तान्, यजे जिनेन्द्रानिह कर्णिकायाम् ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

निःशेषवन्धक्षयलब्ध-शुद्ध-बुद्धस्वभावाग्निजसौख्यवृद्धान् ।

आराधये पूर्वदले सुसिद्धान्, स्वात्मोपलब्धये स्फुट-मष्टधेष्ट्या ॥2॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

ये पञ्चधाचारमरं मुमुक्षू-नाचारयन्ति स्वयमाचरन्तः ।
अभ्यर्चये दक्षिणदिग्दलेता-नाचार्यवर्यान्स्वपरार्थ-चर्यान् ॥3॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

येषामुपान्त्यं समुपेत्य शास्त्राण्यधीयते मुक्तिकृते विनेयाः ।
अपश्चिमान्पश्चिमदिग्दलेस्मिन्-नमूनुपाध्यायगुरुन्महामि ॥4॥

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

ध्यानैकतानानबहिः प्रचारान्, सर्वसहान् निर्वृत्तिसाधनार्थम् ।
सम्पूजयाम्युत्तरदिग्दले तान्, साधूनशेषान् गुणशीलसिन्धून् ॥5॥

ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

आराधकानभ्युदये समस्तान्, निःश्रेयसे वा धरति ध्रुवं यः ।
तं धर्ममाग्नेय-विदिग्दलान्ते, सम्पूजये केवलिनोपदिष्टम् ॥6॥

ॐ ह्रीं जिनधर्मायार्घ्यम् ।

सुनिश्चितासम्भवबाधकत्वात्, प्रमाणभूतं सनयप्रमाणम् ।
यजे हि नानाष्टकभेदवेदं, मत्यादिकं नैऋतकोणपत्रे ॥7॥

ॐ ह्रीं जिनागमायार्घ्यम् ।

व्यपेतभूषायुध-वेशदोषान्, उपेत-निःसङ्गतयार्द्रमूर्तीन् ।
जिनेन्द्रबिम्बान् भुवनत्रयस्थान्, समर्चये वायुविदिग्दलेऽस्मिन् ॥8॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यम् ।

शालत्रयान्सदमनि केतु-मानस्तम्भालयान्मङ्गल-मङ्गलाढ्यान् ।
गृहान् जिनानामकृतान् कृतांश्च, भूतेशकोणस्थदले यजामि ॥9॥

ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यम् ।

शार्दूलविक्रीडित

मध्ये कर्णिकमर्हदार्यमनघं बाह्येऽष्टपत्रोदरे,
सिद्धान् सुरिवरांश्च पाठकगुरुन् साधूंश्च दिक्पत्रगान् ।
सद्धर्मागमचैत्य-चैत्यनिलयान् कोणस्थदिकपत्रगान्,
भक्त्या सर्वसुरासुरेन्द्रमहितान् तानष्टधेष्ट्या यजे ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हदादिनवदेवेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीर्थमण्डलपूजा¹

1. ॐ ह्रीं परब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तयेऽर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं पद्महृददेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं महापद्महृददेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं तिगिञ्छहृददेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं केशरीहृददेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं महापुण्डरीकहृददेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व०।
7. ॐ ह्रीं पुण्डरीकहृददेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं गङ्गानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं सिन्धुनदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं रोहिन्नदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं रोहितास्यानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व०।
12. ॐ ह्रीं हरिन्नदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं हरिकान्तानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं सीतानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं सीतोदानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं नारीनदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं नरकान्तानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं स्वर्णकूलानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं रूप्यकूलानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं रक्तानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं रक्तोदानदीदेवता-स्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं लवणोदकालोदमागधादितीर्थस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व०।
23. ॐ ह्रीं संख्यातीत-समुद्रदेवस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व० स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं लोकस्थिततीर्थस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

¹ इन मन्त्रों को परिष्कृत किया गया है।

ॐ हां हीं हूं हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीतासीतोदा-नारीनरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला-रक्तारक्तोदाःक्षीराम्भोनिधिजलं सुवर्णघट-प्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षतपुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु भं भं भ्रौं भ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं ब्रां ब्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मन्त्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम्।

ॐ ह्रीं श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-शान्ति-पुष्टयः श्रीदिवकुमार्यो कलश-मुखेष्वेतेषु नित्यनिविष्टा भवत भवतेति स्वाहा।

(कलशां पर पुष्पक्षेपण करके शुद्ध करें)

1. ॐ ह्रीं इन्द्रकलशशुद्धिं करोमि।
2. ॐ ह्रीं अग्निकलशशुद्धिं करोमि।
3. ॐ ह्रीं यमकलशशुद्धिं करोमि।
4. ॐ ह्रीं नैऋत्यकलशशुद्धिं करोमि।
5. ॐ ह्रीं वरुणकलशशुद्धिं करोमि।
6. ॐ ह्रीं पवनकलशशुद्धिं करोमि।
7. ॐ ह्रीं कुबेरकलशशुद्धिं करोमि।
8. ॐ ह्रीं ईशानकलशशुद्धिं करोमि।
9. ॐ ह्रीं गारुन्मतकलशशुद्धिं करोमि।
10. ॐ ह्रीं मरकतमणिकलशशुद्धिं करोमि।
11. ॐ ह्रीं गाङ्गेयकलशशुद्धिं करोमि।
12. ॐ ह्रीं हाटककलशशुद्धिं करोमि।
13. ॐ ह्रीं हिरण्यकलशशुद्धिं करोमि।
14. ॐ ह्रीं कनककलशशुद्धिं करोमि।
15. ॐ ह्रीं अष्टापदकलशशुद्धिं करोमि।
16. ॐ ह्रीं महारजतकलशशुद्धिं करोमि।
17. ॐ ह्रीं आनन्दकलशशुद्धिं करोमि।
18. ॐ ह्रीं नन्दकलशशुद्धिं करोमि।
19. ॐ ह्रीं विजयकलशशुद्धिं करोमि।
20. ॐ ह्रीं अजितकलशशुद्धिं करोमि।
21. ॐ ह्रीं अपराजितकलशशुद्धिं करोमि।

22. वं ही शतानन्दकलशशुद्धिं करोमि।
23. वं ही स्नानदकलशशुद्धिं करोमि।
24. वं ही कुन्दकलशशुद्धिं करोमि।
25. वं ही मल्लिकाख्यकलशशुद्धिं करोमि।
26. वं ही चम्पककलशशुद्धिं करोमि।
27. वं ही कदम्बकलशशुद्धिं करोमि।
28. वं ही मन्दारकलशशुद्धिं करोमि।
29. वं ही पारिजातकलशशुद्धिं करोमि।
30. वं ही सन्तानकलशशुद्धिं करोमि।
31. वं ही हरिचन्दनकलशशुद्धिं करोमि।
32. वं ही कल्पवृक्षकलशशुद्धिं करोमि।
33. वं ही जपाकलशशुद्धिं करोमि।
34. वं ही विशालकलशशुद्धिं करोमि।
35. वं ही भद्रकुम्भकलशशुद्धिं करोमि।
36. वं ही पूर्णकुम्भकलशशुद्धिं करोमि।
37. वं ही जयन्तकलशशुद्धिं करोमि।
38. वं ही वैजयन्तकलशशुद्धिं करोमि।
39. वं ही चन्द्रकलशशुद्धिं करोमि।
40. वं ही सूर्यकलशशुद्धिं करोमि।
41. वं ही लोकालोककलशशुद्धिं करोमि।
42. वं ही त्रिकूटकलशशुद्धिं करोमि।
43. वं ही उदयाचलकलशशुद्धिं करोमि।
44. वं ही हिमाचलकलशशुद्धिं करोमि।
45. वं ही निषधकलशशुद्धिं करोमि।
46. वं ही माल्यवतकलशशुद्धिं करोमि।
47. वं ही सत्पात्रकलशशुद्धिं करोमि।
48. वं ही गन्धमादनकलशशुद्धिं करोमि।
49. वं ही सुदर्शनकलशशुद्धिं करोमि।
50. वं ही मन्दरकलशशुद्धिं करोमि।
51. वं ही अचलकलशशुद्धिं करोमि।

52. वं ही विद्युन्मालिकलशशुद्धिं करोमि।
53. वं ही चूडामणिकलशशुद्धिं करोमि।
54. वं ही गुलिकाकलशशुद्धिं करोमि।
55. वं ही दक्षिणावर्तकलशशुद्धिं करोमि।
56. वं ही कोककलशशुद्धिं करोमि।
57. वं ही राजहंसकलशशुद्धिं करोमि।
58. वं ही हरितकलशशुद्धिं करोमि।
59. वं ही मृगेन्द्रकलशशुद्धिं करोमि।
60. वं ही कोकनदकलशशुद्धिं करोमि।
61. वं ही कालकलशशुद्धिं करोमि।
62. वं ही पद्मकलशशुद्धिं करोमि।
63. वं ही महाकालकलशशुद्धिं करोमि।
64. वं ही सर्वरत्नकलशशुद्धिं करोमि।
65. वं ही पाण्डुककलशशुद्धिं करोमि।
66. वं ही नैसर्पकलशशुद्धिं करोमि।
67. वं ही मानवकलशशुद्धिं करोमि।
68. वं ही शङ्खनिधिकलशशुद्धिं करोमि।
69. वं ही पिङ्गलकलशशुद्धिं करोमि।
70. वं ही पुष्करावर्तकलशशुद्धिं करोमि।
71. वं ही मकरध्वजकलशशुद्धिं करोमि।
72. वं ही ब्रह्मकलशशुद्धिं करोमि।
73. वं ही सुवर्णकलशशुद्धिं करोमि।
74. वं ही इन्द्रनीलकलशशुद्धिं करोमि।
75. वं ही अशोककलशशुद्धिं करोमि।
76. वं ही पुष्पदन्तकलशशुद्धिं करोमि।
77. वं ही कुमुदकलशशुद्धिं करोमि।
78. वं ही दर्शनकलशशुद्धिं करोमि।
79. वं ही ज्ञानकलशशुद्धिं करोमि।
80. वं ही चारित्रकलशशुद्धिं करोमि।
81. वं ही सर्वार्थसिद्धिकलशशुद्धिं करोमि।

(तत्पश्चात् कलशों में जल भरें)

सगभरा

ॐ क्षीराब्धिं सर्वतीर्थोदकमयवपुषा स्वैरमाक्रोशतोस्य,
क्षीरैः पद्माकरस्य प्रणयमुपगतान् शातकुम्भीयकुम्भान् ।
सानन्दं श्यादिदेवीनिचयपरिचयोज्जुम्भमाणप्रभावान्,
एतानभ्युद्धरामो भगवदभिषव-श्रीविधानाय हर्षात् ॥

इति कलशोद्धारमन्त्रः

पश्चात् शान्तिभक्ति पढ़कर विसर्जन करके कलशों पर पुष्पक्षेपण करके कलश वितरित करें।

नोट-नवीन मन्दिर, वेदी तथा कलश की शुद्धि (पृष्ठ 96 से) 81 मन्त्रों से करें तथा विधानादि की अस्थायी वेदी की शुद्धि वेदी संस्कार विधि के मन्त्रों से सम्पन्न करें।

सामान्य वेदी संस्कार विधि

मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन, पात्रशुद्धि, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्र, सिद्धभक्ति पढ़कर घटयात्रा में लाये कलशों से वेदी शुद्धि एवं स्थल शुद्धि निम्न मन्त्र द्वारा करें।

1. ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु हूं फद् स्वाहा (जल के छींटे लगाये)

2. ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा (पुष्पक्षेपण करें)

सुरापगादि-तीर्थेभ्यः उद्भवैः वारिसञ्चयैः ।

प्रक्षालयामि सद्देवीं तीर्थकृद्भवने स्थिताम् ॥

ॐ ह्रीं शुद्धजलेन वेदी-प्रक्षालनं कुर्मः ।

उपजाति

भव्यात्मनां दृष्टकर्मणोर्घं प्रक्षालनार्थं जिनयज्ञवेदीम् ।

कुशौद्धतैः प्रोक्षणमन्त्र-पूतैः सम्प्रोक्षयामः परितः पयोभिः ॥

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं हः जिनयज्ञवेदीप्रोक्षणं करोमि ।

(वेदी को शुद्ध वस्त्र से प्रोक्षण करें)

ॐ हूं क्षूं फद् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय
स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द
क्षः क्षः हूं फद् स्वाहा ।

(यह मन्त्र पढ़कर वेदी पर पुष्पक्षेपण करें)

अनुष्टुभ्

कुङ्कुमैः केसरैः पङ्कैः प्रासादं शोभयाम्यहम् ।

कृतं स्वस्तिकहस्तौघैर्वह्नि-मध्ये मनोहरैः ॥

इति कुङ्कुमै-केसरैः मङ्गल-स्वस्तिक-करणम् ।

(वेदी की दीवार पर स्वस्तिक बनावें)

नोट- यदि घटयात्रा के साथ जिनविम्व लाए हों तो अभिषेक करके वेदी में निम्न क्रिया पूर्वक विराजमान करें। नहीं तो वेदी पर यन्त्र, कलश एवं दीपक स्थापित करें।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्यसंयुक्तजिनबिम्बस्थापनं करोमि ।

(सिंहासन में जिनविम्व की स्थापना करें)

उपजाति

प्रत्यूह-निर्णाशविधौ प्रसिद्धं गणेशवक्त्राम्बुजगीत-कीर्तिम् ।

यन्त्रं पुरापूजित-मन्त्र नेयं पात्रे लिखित्वापि कृतार्चनादि ॥

ॐ ह्रीं विनायकयन्त्रं स्थापयामि ।

शालिनी

वेद्या मूले पञ्चरत्नोपशोभं कण्ठेलम्बान्माल्यमादर्शयुक्तम् ।

माणिक्याभं काञ्चनं पूगदर्भस्रक्वासोभं सद्घटं स्थापयेद् वै ॥

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽवसर्पिण्याः

दुःखमकालस्य प्रथमपादे श्रीमद्वीरनिर्वाणेसंवत्सरे
ऋतौ मासानामुत्तमे मासे पक्षे..... तिथौ
वासरे सर्वदूषणरहितेऽस्मिन् विधीयमानेकर्मणि.....मन्दिरे
निर्विघ्नकार्यसमाप्त्यर्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतादि-श्रीफल-शोभितं
मङ्गलकलश-स्थापनं करोमि । इवीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा ।

द्वुतविलम्बित

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम् ।

तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमङ्गलकं मुदा ॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि ।

पञ्चवर्णेन सूत्रेण दिव्यगन्धयुतेन वै ।
रक्षामन्त्रं समुच्चार्य वेदिकां परिवेष्टयेत् ॥

ॐ ह्रीं वेदिकां पञ्चवर्णसूत्रेण वेष्टयामि स्वस्ति भवतु ।
रक्षामन्त्र पढ़ते हुए वेदी को सुगन्धित पञ्चवर्णसूत्र से तीन बार वेष्टित करें।

मङ्गलं जिननामानि मङ्गलं मुनि-सेवनम् ।
मङ्गलं श्रुतमध्येयं मङ्गलं जिनसद्वृषम् ॥

ॐ ह्रीं स्वस्ति-विधानाय पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

(वेदी पर पुष्प क्षेपण करें)

चौबीस तीर्थङ्कर पूजा/विनायक यन्त्र पूजा करें शान्तिभक्ति करके कार्य पूर्ण करें।

इन्द्रप्रतिष्ठा

नोट- यदि पात्रों का सकलीकरण न हुआ हो तो पहले सकलीकरण करके फिर इन्द्रप्रतिष्ठा करें।

भक्ति- (1) सिद्धभक्ति (2) शान्तिभक्ति

प्रमुख इन्द्र इन्द्राणी हेतु सावधानियाँ

1. मानसिक विकृति न हो।
 2. स्वस्थ एवं निरोग हो, अतिवृद्ध न हो।
 3. देव, शास्त्र एवं गुरु के प्रति समर्पण और इनकी पूर्ण विनय करना।
 4. नित्य देव दर्शन का नियम तथा श्रावकोचित क्रियाओं का ज्ञान हो।
 5. श्वेत दाग आदि चर्मरोग न हों। सर्वाङ्ग सुन्दर हो अर्थात् हीनाधिक अङ्ग न हों।
 6. समाज द्वारा मान्य हों, बहिष्कृत न हों।
 7. विधुर न हों।
 8. पाँच माह से ज्यादा का गर्भ न हो।
 9. अत्यन्त छोटा अर्थात् दूध पीता बच्चा न हो।
 10. ऋतु काल के पाँचवें दिन ही पूजन में सम्मिलित हों।
- यदि शारीरिक विकृति या श्वेत दाग (जिनसे झाव न होता हो) आदि हों तो इन्द्र न बनकर सामान्य रूप से पूजा में संलग्न हो सकते हैं। विधवा महिलाएँ भी पूजा कर सकती हैं। वह माङ्गलिक क्रियाएँ सम्पन्न नहीं करेंगी।
- ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं झावय झावय सं सं क्लीं क्लीं ब्रूं ब्रूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं इर्वीं श्वीं हं सं: स्वाहा।
(शरीर पर मन्त्रित जल के छींटे लगाकर शुद्ध करें)

उपजाति

धृत्वाग्रतो मङ्गलयन्त्रधाम्नि प्रसाधनान्यार्हतयज्ञपीठे।
अनादिसिद्धादभिमन्त्रपूला-न्यङ्गेषु धार्याणि यथाप्रसादम् ॥
ॐ ह्रूं णमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं
ॐ ह्रूं णमो उवञ्जायाणं ॐ ह्रूं णमो लोए सव्वसाहूणं इन्द्र-इन्द्राण्योराभूषणानि
पवित्राणि कुरु कुरु ।

(जल से मुकुट-माला आदि शुद्ध करें)

(85)

प्रतिष्ठा पराग

उपजाति

दृग्बोधदेशत्रतरूप-रत्नत्रयं भवेन्मे कलितैक-भक्तम्।
आकर्मिका-ब्रह्मनिवृत्तियुक्तं स्याद्यज्ञदीक्षाविधिना विशिष्टम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्देवयज्ञदीक्षाङ्गीकारः। (सब पात्रों पर पुष्पक्षेपण करें)

यजमान एवं इन्द्र की पात्रता एवं संस्कार

अनुष्टुभ्

देशजातिकुलाचारैः श्रेष्ठो दक्षः सुलक्षणः।
त्यागी वाग्मी शुचिः शुद्धसम्यक्त्वः सद्रतो युवा ॥1॥
श्रावकाध्ययनज्योति - वास्तुसारपुराणवित्।
निश्चयव्यवहारज्ञः प्रतिष्ठाविधिवित्प्रभुः ॥2॥
विनीतः सुभगो मन्दकषायो विजितेन्द्रियः।
जिनेज्यादिक्रियानिष्ठो भूरिसत्त्वार्थबान्धवः ॥3॥
दृष्टसृष्टक्रियो वार्तः सम्पूर्णाङ्गः परार्थकृत।
वर्णा गृही वा सद्रुत्तिरशूद्रो याजको दुराट् ॥4॥
गुणिनोप्यगुणे व्यर्था गुणवत्यगुणा अपि।
याजकेन्ये कृतार्थाः स्युस्तन्मृग्योऽसौ स्फुरदगुणः ॥5॥
आयुष्मंस्त्वयि वर्तन्ते प्रोक्ता याजकसद्गुणाः।
जिनाग्रयाजकतया सौधर्मेन्द्रोऽसि सोऽधुना ॥6॥
इत्युच्चैर्वदता दत्तान्समन्त्रान् गुरुणाक्षतान्।
स्वीकृत्याञ्जलिनोपांशुमन्त्रमुच्चार्य नामिते ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा णमो अरिहन्ताणं अनाहत-पराक्रमस्ते
इन्द्रो भवतु भवतु ह्रीं नमः स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करें)

शची की पात्रता एवं संस्कार

शार्दूलविक्रीडित

सौभाग्यामलचारुभूषणचरित्रालङ्कृतां पावनीं,
कल्पद्वासवभामिनीं व्रतगुणैःशीलैर्महाशोभनाम् ।
अन्यां वा कृतिकर्मसङ्ग्रहकरीं योग्यामुदीक्ष्य ध्रुवं,
संदीक्षाव्रतशुद्धये वितनुतामाचार्यवर्यः स्वयम् ॥
अस्मिन् कर्मणि मात्रुपासनविधावेषा प्रशस्ता भव,
त्वेवं सभ्यजनाः प्रमाणयत सद्धर्मत्वबुद्धयेतिताम् ।
माङ्गल्यादिविभूषणैः कृतमहोत्सवामिमां रक्षय,
मन्त्रोपास्तितया नियोज्य कुमुमक्षेपं विदध्योत्सवे ॥

इति शचीदेवी प्रतिज्ञानाय पुष्पाञ्जलिः। (पुष्पक्षेपण करें)

इन्द्रप्रतिष्ठा

इन्द्रवज्रा / उपजाति / उपेन्द्रवज्रा

धौतान्तरीयं विधुकान्तिसूत्रैः सद्ग्रन्थितं धौतनवीनशुद्धम् ।
नग्नत्वलब्धिर्न भवेच्च यावत् सन्धार्यते भूषणमूरुभूम्याः ॥

इति अषोवस्त्रं अवधारयामि। (धोती का स्पर्श करें)

संव्यानमञ्चदशया विभान्तमखण्डधौताभिनवं मृदुत्वम् ।
सन्धार्यते पीतसितांशुवर्ण-मंशोपरिष्ट्याद् धृतभूषणाङ्गम् ॥

इति दुकूलं अवधारयामि। (दुपट्टा का स्पर्श करें)

जिनाग्निभूमिस्फुरितां भ्रजं मे स्वयंवरं यज्ञविधानपत्नी ।
करोतु यत्नादचलत्वहेतो-रितीव मालामुररीकरोमि ॥

इति रत्नमालां अवधारयामि। (माला धारण करें)

शीर्षण्यशुम्भन्मुकुटं त्रिलोकी-हर्षाप्तराज्यस्य च पट्टबन्धम् ।
दधामि पापोर्भिकूलप्रहन्तु-रत्नाढ्यमालाभिरु-दञ्चिताङ्गम् ॥

इति मुकुटं अवधारयामि। (मुकुट धारण करें)

ग्रेवेयकं मौक्तिकदामधाम-विराजितं स्वर्णनिबद्धयुक्तम् ।
दधेऽध्वरापर्णविसर्पणेच्छु-र्महाधनाभोगनिरूपणाङ्गम् ॥

इति कण्ठाभरणं अवधारयामि। (कण्ठाभरण धारण करें)

पाठान्तर-¹ कृतमहोत्सवामिमां

मुक्तावलीगोस्तनचन्द्रमाला-विभूषणान्युत्तमनाकभाजाम् ।
यथार्हसंसर्गगतानि यज्ञलक्ष्मीसमालिङ्गनकृद्-दधेऽहम् ॥

इति हारं अवधारयामि। (हार धारण करें)

एकत्र भास्वानपरत्र सोमः सेवां विधातुं जिनपस्य भक्त्या ।
रूपं परावृत्य च कुण्डलस्य मिषादवाप्ते इव कुण्डले द्व ॥

इति कुण्डलद्वयं अवधारयामि। (कुण्डल धारण करें)

भुजासु केयूरमपास्तदुष्ट-वीर्यस्य सम्यक् जयकृत्ध्वजाङ्गम् ।
दधे निधीनां नवकैश्च रत्नै-र्विमण्डितं सद्ग्रथितं सुवर्णैः ॥

इति केयूरं अवधारयामि। (बाजूबन्द धारण करें)

वसन्ततिलका

सम्यक् पिनद्धनवनिर्मलरत्नपङ्कित रोचिर्बृहद्वलयजात बहुप्रकारम् ।
कल्याण निर्मितमहं कटकं जिनेश पूजाविधानललिते स्वकरे करोमि ॥

इति कङ्कणं अवधारयामि।

प्रोत्फुल्लनीलकुलिशोत्पलपद्मराग-निर्जत्करप्रकरबन्धसुरेन्द्रचापम् ॥
जैनेन्द्रयज्ञसमयेऽङ्गुलिपर्वमूले रत्नाङ्गुलीयकमहं विनिवेशयामि ॥

इति रत्नमुद्रिकां अवधारयामि। (मुद्रिका धारण करें)

उपजाति

यज्ञार्थमेवं सृजतादि चक्रेश्वरेण चिहं विधिभूषणानाम् ।
यज्ञोपवीतं विततं हि रत्नत्रयस्य मार्गं विदधाम्यतोऽहम् ॥

इति यज्ञोपवीतं धारणं। (यज्ञोपवीत धारण करें)

अन्यैश्च दीक्षां यजनस्य गाढं कुर्वद्भिरिष्टैः कटिसूत्रमुख्यैः ।
सम्भूषणैर्भूषयतां शरीरं जिनेन्द्रपूजा सुखदा घटेत ॥

इति कटिमेखलां अवधारयामि। (कटिसूत्र धारण करें)

विधेर्विधातुर्यजनोत्सवेऽहं गोहादिमूर्च्छामपनोदयामि ।
अनन्यचेताः कृतिमादधामि स्वर्गादिलक्ष्मीमपि हापयामि ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-समक्षकं दृढव्रतं समारूढं भवतु स्वाहा ।
इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण-सकलकर्मक्षयार्थं पञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं

करोम्यहम् ।

(यह पढ़कर घर-गृहस्थी के कार्यों से उत्सवपर्यन्त निवृत्त रहने की प्रतिज्ञा करें)

मण्डप प्रतिष्ठा

मन्त्र : 1. शान्ति मन्त्र	मण्डल : 1. नवदेव मण्डल
यन्त्र : 1. नवदेव यन्त्र	
भक्तियाँ : 1. सिद्धभक्ति	2. तीर्थङ्करभक्ति
3. चैत्यभक्ति	4. शान्तिभक्ति

मण्डपप्रतिष्ठा-सावधानियाँ

1. मुख्य इन्द्र ही क्रिया सम्पादित करें। इन्द्राणी साथ में रहेंगी।
 2. प्रत्येक दिशा में क्रिया पुष्पों द्वारा करें।
 3. मण्डल पर स्वस्तिक बनाकर मन्त्रपूर्वक कलश स्थापित करें।
 4. दीपक काँच की पेटी में स्थापित करें, जिससे जीवों का घात न हो।
 5. कलश में धागा लपेटते समय सावधानी रखें।
 6. कलश को उपयुक्त साधनों से स्थिर करें।
 7. मण्डल पर लघु ध्वजाएँ दिशा के अनुसार वर्णक्रम में स्थापित करें।
 8. मण्डल-ध्वजा की शुद्धि एवं स्वस्तिक अङ्कन स्वर्ण सौभाग्यवती से कराकर स्थापित करें।
 9. पूर्ण मनोयोग से क्रिया सम्पन्न करें।
 10. अनुष्ठान स्थल एवं मण्डप को रक्षामन्त्र द्वारा वेष्टित करें।
- मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्र एवं सिद्ध, तीर्थङ्कर, चैत्य एवं शान्ति भक्तियाँ पढ़कर कार्य आरम्भ करें।

अनुष्टुभ

इन्द्रवेद्यपि हस्तानां विज्ञेयाष्टोत्तरं शतम् ।
शतेन्द्रो जिनबिम्बानां प्रतिष्ठां कुरुते स्वयम् ॥

शार्दूलविक्रीडित

साप्तरत्नशतेन्द्रिवेदिरुचिरं शक्रः कुबेरेण यं,
ज्यायांसं मणिमण्डपं विरचयत्यर्हत्प्रतिष्ठाकृते ।

(89)

प्रतिष्ठा पराग

अन्तर्निर्मितदिव्यवेदिविलसलक्ष्मीकटाक्षोद्भटः,
सोऽयं मङ्गलमण्डपो विजयते जैनप्रतिष्ठोत्सवे ।

ॐ ह्रीं अहं वेदी/बिम्बप्रतिष्ठाविधाने मण्डपशुद्धयर्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।
(पुष्पक्षेपण करें)
मण्डपशुद्धि-मन्त्र-ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप/वेदी-प्रभृतिस्थानानां
शुद्धिं कुरुमः ।

उपजाति

चतुर्णिकायामरसङ्घ एष आगत्य यज्ञे विधिना नियोगम् ।
स्वीकृत्य भक्त्या हि यथार्हदेशे सुस्था भवन्त्वाहिनिककल्पनायाम् ॥
भो चतुर्णिकायदेवाः! यथायोग्यस्थाने तिष्ठत तिष्ठत विघ्नं निवारयत
निवारयत विधीयमानकार्ये सहयोगं कुरुत कुरुत ।
(मण्डल पर पुष्पक्षेपण करें)

वसन्ततिलका

आयात मारुतसुराः पवनोद्भटाशाः सङ्घट्टसंलसितनिर्मलतान्तरिक्षाः ।
वात्यादिदोषपरिभूतवसुन्धरायां प्रत्यूहकर्म निखिलं परिमार्जयन्तु ॥
भो वायुकुमारदेवगणाः! यथायोग्यस्थाने तिष्ठत तिष्ठत वायुकृतविघ्नं निवारयत
निवारयत विधीयमानकार्ये सहयोगं कुरुत कुरुत ।
(मण्डल पर पुष्पक्षेपण करें)

आयात वास्तुविधिषूद्भटसन्निवेशा योग्यांशभागपरिपुष्ट-वपुःप्रदेशाः ।
अस्मिन् मखे रुचिरसुस्थितभूषणाङ्गे सुस्था यथार्हविधिना जिनभक्तिभाजः ॥
भो वास्तुकुमारदेवगणाः! यथायोग्यस्थाने तिष्ठत तिष्ठत विघ्नं निवारयत
निवारयत विधीयमानकार्ये सहयोगं कुरुत कुरुत ।
(मण्डल पर पुष्पक्षेपण करें)

आयात निर्मलनभःकृतसन्निवेशा मेघासुराः प्रमदभारनमच्छिरस्काः ।
अस्मिन् मखे विकृतविक्रिययानितान्ते सुस्था भवन्तु जिनभक्तिमुदाहरन्तु ॥
भो मेघकुमारदेवगणाः! यथायोग्यस्थाने तिष्ठत तिष्ठत मेघकृतविघ्नं
निवारयत-निवारयत विधीयमानकार्ये सहयोगं कुरुत कुरुत ।
(मण्डल पर पुष्पक्षेपण करें)

आयात पावकसुराः सुरराजपूज्यसंस्थापनाविधिषु संस्कृतविक्रियार्हाः ।
स्थाने यथोचितकृते परिबद्धकक्षाः सन्तु श्रियं लभत पुण्यसमाजभाजाम् ॥
भो अग्निकुमारदेवगणाः! यथायोग्यस्थाने तिष्ठत तिष्ठत अग्निकृतविघ्नं
निवारयत-निवारयत विधीयमानकार्ये सहयोगं कुरुत कुरुत ।

(मण्डल पर पुष्पक्षेपण करें)

नागाः समाविशत भूतल-सनिवेशाः स्वां भक्तिमुल्लसितगात्रतया प्रकाशय ।
आशीर्विषादिकृतविघ्नविनाशहेतोः सुस्था भवन्तु निजयोग्यमहासनेषु ॥
भो नागकुमारदेवगणाः! यथायोग्यस्थाने तिष्ठत तिष्ठत विघ्नं निवारयत-
निवारयत विधीयमानकार्ये सहयोगं कुरुत कुरुत ।

(मण्डल पर पुष्पक्षेपण करें)

तोटक

पुरुहूतदिशि स्थितिमेहि करोद्धृत-काञ्चनदण्डगखण्डरुचे ।
विधिना कुमुदेश्वर! सव्यशये धृतपङ्कजशङ्कितकङ्कणके ॥
भो कुमुदप्रतीहार! निजपूर्वद्वारि तिष्ठ तिष्ठ सर्वविघ्ननिवारणं कुरु कुरु ।

(पूर्व दिशा में पुष्पक्षेपण करें)

रथोद्धता

वामनाशु-यमदिग्विभागतः स्थानमेहि जिनयज्ञकर्माणि ।
भक्तिभारकृतदुष्टनिग्रहः पूतशासनकृतमबन्ध्यकः ॥
भो वामनप्रतीहार! निजदक्षिणद्वारि तिष्ठ तिष्ठ सर्वविघ्ननिवारणं कुरु कुरु ।

(दक्षिण दिशा में पुष्पक्षेपण करें)

स्वागता

पश्चिमासु विततासु हरित्सु भूरिभक्तिभरभृकृतपीठाः ।
अञ्जनस्वहितकाम्ययाध्वरे तिष्ठ विघ्नविलयं प्रणिधेहि ॥
भो अञ्जनप्रतीहार! निजपश्चिमद्वारि तिष्ठ तिष्ठ सर्वविघ्ननिवारणं कुरु कुरु ।

(पश्चिम दिशा में पुष्पक्षेपण करें)

पुष्पदन्तभवनासुरमध्ये सत्कृतोऽसि यत इत्थमवोचम् ।
उत्तरत्रमणिदण्डकराग्रस्तिष्ठ विघ्नविनिवृत्तिविधायी ॥
भो पुष्पदन्तप्रतीहार! निजउत्तरद्वारि तिष्ठ तिष्ठ सर्वविघ्ननिवारणं कुरु कुरु ।

(उत्तर दिशा में पुष्पक्षेपण करें)

मालिनी

करकृतकुसुमानामञ्जलिं संवितीर्य धनदमणिसुरत्नानीशपूजार्थसार्थे ।
विकिर विकिर शीघ्रं भक्तिमुद्भाव्य-यित्वा' निगदतु परमाङ्गे मण्डपोर्ध्वावकाशे ॥
भो धनद! रत्नवृष्टिं मुञ्च मुञ्च स्वाहा ।

इत्युक्त्वा मण्डपोपरि सर्ववर्णाञ्चितपुष्पाक्षताः क्षेप्याः

(मण्डप के ऊपर रजत पुष्प सहित अक्षत वरसावें)

अथ मण्डले चूर्णनिक्षेपविधिः ।

शार्दूलचिक्रीडित

मुक्ताचूर्णमुदीर्णपूर्णकनकस्थाल्यर्पितं शुद्धिभृद्,
व्यस्रोद्भासितपेषणेषु युवती श्लाघ्याभिरुत्पथितम् ।
चञ्चन्द्र कलाकलाप हृदयाहङ्कारनिर्वापकम्,
स्थाप्याग्रेविधिमञ्जुलं धनद भो सन्मण्डलं संलिख ॥

श्वेतचूर्णस्थापनम् ॥

वसन्ततिलका

हारिद्रपीतमणिचूर्णकृताधिवासा स्वर्णावखण्डपरिमण्डलभृद्विकल्पः ।
त्वं भो कुवेर! जिनसद्मनि चित्रशोभे सन्मण्डलं रदशुभायति पुण्यहेतोः ॥

पीतचूर्णस्थापनम् ॥

वैडूर्यरत्नकृतचूर्णमनर्घ्यजातं वास्तोष्पतीयवनभूसदृशं मनोज्ञं ।
उड्डीयमानशुकपक्षवदाप्लुताङ्गं संगृह्य गुह्यकपते रदमण्डलानि ॥
हरिचूर्णं स्थापनम् ॥

माणिक्यताम्रमणिचूर्णमुपांशुमन्त्रैः हस्ते प्रगृह्य समवसृतिचित्रकार ।
सन्मण्डलं जिनपतेः प्रतियातनेष्टौ संलिख्य निर्जरगणे कृतिमान् भवेथाः ॥

रक्तचूर्णस्थापनम् ॥

गारुत्मताश्मशिखकण्ठमणिप्रवाहजातः सुकौशलकृता हृदयापिहारी ।
चूर्णोलिपक्षसमतामुपनीय यक्षराजेन मण्डलविधौ विनियोक्तुमिष्टः ॥
कृष्णचूर्णस्थापनम् ॥

इन्द्रवज्रा

कोणेषु वेद्याश्चतुरस्रदेशे संस्थाप्य गाढं घनघातयोगात् ।
सद्दीरकान् शङ्कुवदासितांश्च काष्ठाविमूर्ढीं शिथिलीकरोतु ॥
इति वेद्याः कोणे हीरकस्थापनम् ॥

शालिनी

स्थाने स्थाने सनिवेश्याः पताका लघ्वः स्थूला उन्नतांशा महोर्व्याम्।
वादित्राणां नादपूर्वं वरस्त्रीगीतध्वानैर्मङ्गलार्थैरनूनाः॥
ॐ णमो अरिहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्तिर्भवतु स्वाहा
(इति वेदीपरीतो लघुपताकास्थापनम्)

(पूर्व में - पीली ध्वजा 1, आग्नेय में-लाल 1, दक्षिण में-काली 1, नैऋत्य में-हरी 1, पश्चिम में-श्वेत 1, वायव्य में-नीली 1, उत्तर में-काली 1, ईशान में-पञ्चरङ्ग 1, कुल 8 ध्वजाएँ वेदी पर स्थापित करें)

शालिनी

स जयतु जिनधर्मो यावदाचन्द्रतारं व्रतनियमतपोभिर्वर्द्धतां साधुसङ्घः।
अहरहरभिवृद्धिं यान्तु चैत्यालयास्ते तदधिकृतजनानां क्षेममारोग्यमस्तु॥
इति पठित्वा विश्वकल्याणार्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(सब दिशाओं में पुष्पक्षेपण करें)

शालिनी

वेद्या मूले पञ्चरत्नोपशोभं कण्ठेलम्बान्माल्यमादर्शयुक्तम्।
माणिक्याभं काञ्चनं पूगदर्भस्रक्वासोभं सद्घटं स्थापयेद् वै॥
ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽवसर्पिण्याः
दुःखमकालस्य प्रथमपादे श्रीमद्वीरनिर्वाणेसंवत्सरे
ऋतौ मासानामुत्तमे मासेपक्षे तिथौ वासरे
सर्वदूषणरहितेऽस्मिन् विधीयमानेकर्मणि.....मन्दिरे
निर्विघ्नकार्यसमाप्त्यर्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतादि-श्रीफल-शोभितं मङ्गल-
कलश-स्थापनं करोमि। इवीं श्वीं हं सः स्वाहा।

द्रुतविलम्बित

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमङ्गलकं मुदा॥
ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

अनुष्टुभ्

पञ्चसूत्रं समादाय याजको वेष्टयेत्तदा।
मण्डपं सुन्दरं कृत्वा वादित्रकल-शब्दकैः॥
ॐ ह्रीं पञ्चवर्णसूत्रेण त्रिवारं वेष्टयामि।

बृहद् वेदी एवं मानस्तम्भप्रतिष्ठा

मन्त्र	- 1. शान्तिमन्त्र	2. मातृकामन्त्र	3. रक्षामन्त्र
मण्डल	- 1. यागमण्डल		
यन्त्र	- 1. विनायक यन्त्र	2. अचल यन्त्र	
भक्तियाँ	- 1. सिद्धभक्ति	2. श्रुतभक्ति	3. आचार्यभक्ति
	4. चैत्यभक्ति	5. चारित्रभक्ति	6. शान्तिभक्ति

वेदीप्रतिष्ठा सावधानियाँ

- वेदी का निर्माण शास्त्रानुसार हुआ हो। वेदी के वगल में दोनों ओर स्थान ठीक बराबर हो, अर्थात् वेदी भवन के ठीक मध्य में बनाई गई हो, नहीं तो भुजा दोष आता है।
- वेदी दीवार से सटी न हो। दीवार से लगा स्थान राक्षस का होता है अतः परिक्रमा के लिए स्थान छोड़ कर ही वेदी बनाना चाहिए।
- वेदी तिरछी न हो, वेदी वर्गाकार या चौड़ाई एवं लम्बाई के डेढ़ गुने माप से बनाई गई हो।
- वेदी में पद्मासन प्रतिमा का आसन नाभि से नीचे न हो, वेदी में कटनी एक या तीन हों।
- वेदी समतल हो किसी ओर झुकाव न हो अन्यथा प्रतिमा की दृष्टि पर प्रभाव पड़ेगा।
- वेदी का निर्माण ठोस हो, वेदी पोली नहीं होनी चाहिए।
- यदि वेदी प्रथम तल पर बनाई गयी हो तो निचले तल में वेदी के नीचे ठोस आधार बनाना अनिवार्य है।
- वेदी उत्तर या पूर्व मुख हो। यदि पूर्व उत्तर सम्भव न हो तो वेदी ईशान मुख बनाई जा सकती है।
- वेदी के ऊपर गाटर या बीम न आता हो।
- वेदी के पीछे अलमारी खिड़की या झरोखा या द्वार न बनाया गया हो।
- मन्दिर में वेदियों की संख्या प्रत्येक तल पर विषम संख्या में हो।
- वेदी के मूलनायक की दृष्टि बाधित न हो अर्थात् सामने द्वार हो जिसकी ऊँचाई मूलनायक की दृष्टि के अनुसार हो, बीच में कोई खम्भा आदि न हो।

13. वेदी पर कलश एवं ध्वजा लगाने हेतु स्थान हो।
14. वेदी में छत्र, भामण्डल एवं वन्दनवार हेतु उचित स्थान पर हुक लगे हुए हों।
15. वेदी में स्थापित बिम्बों की संख्या विषम हो।
16. मूलनायक को स्थिर करने हेतु आसन के अनुसार खाँचा बना हो। प्रतिमा स्थिर करने में सफेद सीमेन्ट का उपयोग करें, किसी प्रकार के केमीकल का प्रयोग न करें।
17. प्रतिष्ठा कारक के परिवार को जिनदर्शन एवं पुरुष वर्ग को अभिषेक पूजन का नियम दिलाएँ।
18. कार्य का शुभारम्भ स्वर्ण सौभाग्यवती स्त्री या कन्या से करवाएँ।

मङ्गलाचरण

अनुष्टुभ्

शुद्धं शुद्धात्म-सद्भावं सिद्ध-संज्ञान-दर्शनम्।
 सिद्धं शुद्ध-प्रमाणाप्ति-निरस्त-पर-दर्शनम् ॥1॥
 विश्वकर्माथि-लोकस्य विश्वकर्मापदेशकम्।
 विश्वकर्म-क्षयार्थिभ्यो विश्व-कर्मक्षयप्रदम् ॥2॥
 आदिदेवं जिनं नौमि विश्वकर्म-जयं प्रभुम्।
 शेषांश्च वर्धमानान्त-जिनान् प्रवचनं गुरुन् ॥3॥
 विद्यानुवाद - सत्सूत्राद्वाग्देवीकल्पस्ततः।
 चन्द्रप्रज्ञप्तिसंज्ञायाः सूर्य-प्रज्ञप्तिसंज्ञिकात् ॥4॥
 तथा महापुराणार्यात् श्रावकाध्ययनश्रुयात्।
 सारं संगृह्य वक्ष्येहं प्रतिष्ठासार-सङ्ग्रहम् ॥5॥

प्रतिष्ठाचार्य लक्षण

तत्र तावत्प्रवक्ष्यामि प्रतिष्ठाचार्य-लक्षणम्।
 तस्योपदेशतो वक्ष्ये विश्वकर्म-प्रवर्तनम् ॥1॥
 शरण्यं सर्व-भूतानां वराङ्गगुण-भूषणम्।
 नत्वा जिनेश्वरं वीरं वक्ष्याचार्येन्द्रयोगुणम् ॥2॥

आचारादि-गुणाधारो रागद्वेष-विवर्जितः।
 पक्षपातोच्चितः शान्तः साधुवर्गाग्रणीर्गणी ॥3॥
 अशेषशास्त्र-विच्यक्षुःप्रव्यक्तं लौकिक-स्थितिः।
 गम्भीरो मृदुभाषी च स सूरिः परिकीर्तितः ॥4॥
 कुलीनो जाति-सम्पन्नः कुत्साहीनः सुदेशजः।
 कल्याणाङ्गो रुजाहीनः प्रसन्नः सकलेन्द्रियः ॥5॥
 शुभलक्षण-सम्पन्नः सौम्यरूपः सुदर्शनः।
 विप्रो वा क्षत्रियो वैश्यो विकर्मकरणोज्जितः ॥6॥
 ब्रह्मचारी गृहस्थो वा सम्यग्दृष्टिर्जितेन्द्रियः।
 निःकषायः प्रशान्तात्मा वेश्यादिव्यसनोज्जितः ॥7॥
 उपासक-व्रताचार्यो दृष्ट-सृष्ट-क्रियोऽसकृत्।
 श्रद्धालुर्भक्ति-सम्पन्नः कृतज्ञो विनयान्वितः ॥8॥
 व्रतशीलतपोदान - जिनपूजा - समुद्यतः।
 जिनवन्दन-कर्मादिष्वनुष्ठानपरः शुचिः ॥9॥
 श्रावकाध्ययने दक्षः प्रतिष्ठा-विधि-वित्सुधीः।
 महापुराण-शास्त्रज्ञो वास्तु-विद्या-विशारदः ॥10॥
 एवं-गुणो महासत्त्वः प्रतिष्ठाचार्य इष्यते।
 न चार्थार्थी न च द्वेषी भृष्ट-लिङ्गी कलङ्कवान् ॥11॥
 नैव पाखण्डि-पुत्रो वा देव-द्रव्योपजीविकः।
 नाधिकाङ्गो न हीनाङ्गो नाति-दीर्घो न वामनः ॥12॥
 न निकृष्ट-क्रियावृत्ति-नाति-वृद्धो न बालकः।
 गीत-वाद्योपजीवी नो भाण्डो वैतालिको नटः ॥13॥
 उन्मत्तो ग्रह-ग्रस्तो वा भोजने पङ्क्ति-वर्जितः।
 गर्भाधानादि-संस्कारै-र्विहीनो नाति-मोहवान् ॥14॥
 ज्ञाता उपासकाद्यन्ते न त्रयो न महाव्रती।
 शास्त्रज्ञः कुल-जातोऽपि वर्जनीयस्तथा-विधः ॥15॥
 एवं समासतः प्रोक्तं प्रतिष्ठाचार्य-लक्षणम्।
 प्रतिष्ठालग्नसंशुद्धिं भणिष्यामो यथागमम् ॥16॥

यदि मोहात्तथा-भूतः प्रतिष्ठा कुरुते तदा।
 पुरं राष्ट्रं नरेन्द्रश्च प्रजा सर्वा विनश्यति ॥17॥
 न कर्ता फल-माप्नोति नापि कारयिता स्वकम्।
 अथोक्त-लक्षणोपेतो यदि पूजयते त्वमुम् ॥18॥
 यज्ञसूत्र-युतं देहं शिखा-प्रन्थि-दर्भासनम्।
 मदर्थ-मर्चा व्यर्थं ब्रह्मचर्यस्य धारणम् ॥19॥
 अभुक्त-शुक्लाम्बरं धार्यं नासा नेत्रोन्मीलितम्।
 ब्रह्मचर्यस्य रूपस्थं ईर्यापथ-विशोधनम् ॥20॥

जापमन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अहं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहन्ताणं
 ह्यै सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

(इस मन्त्र का सवा लाख या इक्यावन हजार जाप करें।)

प्रथम दिवस की क्रिया

शुद्धि विधान

मङ्गलपञ्चक या मङ्गलाष्टक पाठ पढ़कर, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्र पढ़कर कार्य आरम्भ करें। विनायक यन्त्र का अभिषेक एवं पूजा करके जाप्यानुष्ठान आरम्भ करें। तत्पश्चात् ध्वजारोहण, घटयात्रा करके मन्दिर एवं वेदी शुद्धि 81 मन्त्रों द्वारा करें। यदि शिखर कलश की शुद्धि करना हो तो बड़ी थाली में केशर से स्वस्तिक बनाकर कलश स्थापित करके मन्त्रों द्वारा शुद्धि कर लेना चाहिए। एक साथ तीनों की शुद्धि करना हो तो भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा शुद्धि करा लेना चाहिए तत्पश्चात् वेदी संस्कार एवं शिखर कलश पूजन आदि क्रियाएँ अलग-अलग करें।

अनुष्ठुभ

कुम्भमिन्द्राह्वयं दिव्यमिन्द्रशस्त्रसमप्रभम्।

ऐद्रं पुष्यैः समर्चामि नवार्हद्भवनोत्सवे ॥1॥

ॐ ह्रीं इन्द्रकलशेन वेदिका (मन्दिर/ मानस्तम्भ/ कलश) शुद्धिं करोमि।

अग्निज्वाला-समानाभमग्न्याख्यं बहुलाक्षतैः।
 पूजयामि जिनागारस्नानाय सुखहेतवे ॥2॥
 ॐ ह्रीं अग्निकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि।
 यमदण्ड-समानाभमलौकिकमणिश्रितम्।
 यमाख्ययमदिग्पाल-मान्यं सञ्चर्चयेऽनघम् ॥3॥
 ॐ ह्रीं यमकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि।
 नैऋताख्यं महाकुम्भं नैऋत्याधिपरक्षितम्।
 संशब्दये जिनागारं स्नानाय मधुरस्तवैः ॥4॥
 ॐ ह्रीं नैऋत्यकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि।
 वरुणाख्यं घटं दिव्यं वरुणासुररक्षितम्।
 संशब्दये जिनेन्द्रस्य वेश्मस्नानाय चम्पकैः ॥5॥
 ॐ ह्रीं वरुणकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि।
 पवनामरसंसेव्यं पवनामरसुररक्षितम्।
 पवनाख्यं घटं नीरं गन्धप्रसूनशालिजैः ॥6॥
 ॐ ह्रीं पवनकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि।
 कुबेराख्यं घटं दिव्यं कुबेरगृह-शोभितम्।
 जिनवेश्मप्लवायात्र समाह्वये कदम्बकैः ॥7॥
 ॐ ह्रीं कुबेरकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि।
 ईशानाख्यं मदाधारमीशादिदिग्विभासितम्।
 ॐ ह्रीं तिष्ठेद्विधानेन काश्मीरैस्तन्महे मुदा ॥8॥
 ॐ ह्रीं ईशानकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि।
 कुम्भं गारुन्मताह्वानं गारुन्मणिविनिर्मितम्।
 सरसैर्दिव्य-पूजार्घैः श्रये जैनमहोत्सवे ॥9॥
 ॐ ह्रीं गारुन्मतकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि।
 कलशं सुन्दराकारं वैडूर्यमणिनिर्मितम्।
 दिव्यं मरकताभिख्यं स्थापयेऽर्हद्-गृहोत्सवे ॥10॥
 ॐ ह्रीं मरकतमणिकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि।

गाङ्गेयनिर्मितं कुम्भं गाङ्गेयाख्यं महोन्नतम् ।
गङ्गा-वनरसापूर्णं पूजयेऽर्हत्सुवेश्मनि ॥11॥

ॐ ह्रीं गाङ्गेयकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

प्रतप्तहाटकैः स्पष्टं श्रीमद्धाटक संज्ञकम् ।
कुम्भं तीर्थजलापूर्णमर्चयामि यथाविधिः ॥12॥

ॐ ह्रीं हाटककलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

हिरण्याख्यं महाकुम्भं हिरण्येन समर्जितम् ।
लसत्पङ्कजमालाढयं यजेऽर्हत्सद्मसम्महे ॥13॥

ॐ ह्रीं हिरण्यकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कनककसंकाशं नानामणिविमण्डितम् ।
यजेऽर्हन्मन्दिरे कुम्भं शुद्धनीर-समाश्रितम् ॥14॥

ॐ ह्रीं कनककलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

अष्टापदाख्यं सत्कुम्भं हेममृक् प्रविराजितम् ।
क्षीरोदवारि सम्पूर्णमर्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥15॥

ॐ ह्रीं अष्टापदकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

महारजतनामाढयं महारजतनिर्मितम् ।
तीर्थाम्बुपूरनिभृतमर्हद्गृहेऽर्चये मुदा ॥16॥

ॐ ह्रीं महारजतकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

आनन्ददायकं दिव्यं सानन्दाख्यं मनोहरम् ।
नित्यं तीर्थजलैः पूर्णं स्थापये चैत्यसम्महे ॥17॥

ॐ ह्रीं आनन्दकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

नन्दाख्यं नन्दनोत्कृष्टं प्रणन्दितगमं जितम् ।
कुम्भं समर्चये दिव्यं नानामणिविनिर्मितम् ॥18॥

ॐ ह्रीं नन्दकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कुम्भं विजयनामानं विजयोजित विश्वकम् ।
पूर्णं तीर्थजलै-दिव्यमर्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥19॥

ॐ ह्रीं विजयकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

नाना तीर्थजलाकीर्णं कुम्भं त्वजितनामकम् ।
मानवे विविधाहाभिः स्मर जिनमन्दिरोत्सवे ॥20॥

ॐ ह्रीं अजितकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

अपराजितनामानं घटं काञ्चनसन्निभम् ।
सं प्रतिष्ठापये चैत्यमहे जलसुमाक्षतैः ॥21॥

ॐ ह्रीं अपराजितकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

महोदरं शतानन्दनामधेयं प्रभास्वरम् ।
कलशं कमलैः पूर्णं प्रार्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥22॥

ॐ ह्रीं शतानन्दकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

सह-स्नानदसत्ख्यातिं पद्मादितीर्थ-सम्भृतम् ।
पुष्पमालावृतं कुम्भं महाम्यर्हद्गृहक्षणे ॥23॥

ॐ ह्रीं स्नानकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कुन्दाख्यं कुन्दपुष्पाढयं कुन्दमृक्प्रविराजितम् ।
प्रार्चये कुन्दपुष्पौघैः कुम्भं भव्यजिनालये ॥24॥

ॐ ह्रीं कुन्दकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

प्रस्फुटन्मल्लिका पुष्पसमूहामोद-वासितैः ।
नीरैः पूर्णं यजे हेममल्लिकाख्यं महाघटम् ॥25॥

ॐ ह्रीं मल्लिकाख्यकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

अपूर्वचम्पकामोद-प्रवासित-जलैर्भृतम् ।
चम्पकाख्यं घटं दिव्यं सूत्रितं सम्यगर्चये ॥26॥

ॐ ह्रीं चम्पककलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कदम्बरजसा व्याप्तकदम्बाख्यं महाघटम् ।
उपाक्षिप्त-विधानेनार्चये जिनगृहालये ॥27॥

ॐ ह्रीं कदम्बकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

मन्दराख्यं महाकुम्भं मन्दारस्रग्विभूषितम् ।
दिव्यैरर्चाभि मन्दारैः प्रत्यग्रं जिनमन्दिरे ॥28॥

ॐ ह्रीं मन्दारकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

प्रत्यग्र-पारिजातौघसमर्चित-जलैर्भृतम् ।

पारिजाताभिधं कुम्भमर्चयामि पयोभरैः ॥29 ॥

ॐ ह्रीं पारिजातकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

सन्तान-पल्लवोत्फुल्ल-प्रसूननिकरार्चितम् ।

सन्तानाख्यं जलैः पूर्णं संस्थाप्य-पूजयेऽनिशम् ॥30 ॥

ॐ ह्रीं सन्तानकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

हरिचन्दन-पुष्पाभं हरिचन्दन-संज्ञकम् ।

हरिचन्दन-कर्पूरैः कुम्भं सम्प्रार्चये मुदा ॥31 ॥

ॐ ह्रीं हरिचन्दनकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कल्पवृक्षमहापुष्पप्रकरणे प्रसाधितम् ।

कल्पवृक्षाभिधं कुम्भं पूजनाय प्रकल्पये ॥32 ॥

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

जपाख्यं जपदामाभं जपापुष्पाख्य-बालकम् ।

यजे जगत्प्रभोर्नव्य-चैत्यस्नानाय केवलम् ॥33 ॥

ॐ ह्रीं जपाकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

विशालाख्यं घटं दिव्यं विशालं रत्ननिर्मितम् ।

विशालयामि पुष्पौघैः कुन्दमन्दार-सम्भवैः ॥34 ॥

ॐ ह्रीं विशालकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कुम्भं श्रीभद्र कुम्भाख्यं भद्रेभकुम्भसुन्दरम् ।

पारिभद्र-प्रसूनौघैः शोभयामि मनोहरैः ॥35 ॥

ॐ ह्रीं भद्रकुम्भकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

घटं श्रीपूर्णकुम्भाख्यं पूर्ण-कुम्भमिवोन्नतम् ।

क्षीरोदनीरसम्पूर्णैः सुरत्नैर्वर्णयाम्यहम् ॥36 ॥

ॐ ह्रीं पूर्णकुम्भकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

जयन्तं सर्वकुम्भानां जयन्ताख्यं महाघटम् ।

विकसञ्जयपुष्पौघैः संयजामि तदुत्सवे ॥37 ॥

ॐ ह्रीं जयन्तकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

वैजयन्ताभिधं कुम्भं सत्यं विजयदायकम् ।

नव्यप्रासादचर्यार्थैश्चार्चयेऽहं वनादिभिः ॥38 ॥

ॐ ह्रीं वैजयन्तकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

चन्द्रकान्तमहारत्न-विनिर्मित-महाघटम् ।

चन्द्राख्यं जगदुत्कृष्टं पूजये विविधार्चनैः ॥39 ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

सूर्य-कान्ताशमसन्दोहविराजितं महोदयम् ।

सूर्याख्यं कुम्भमुत्कृष्टैः प्रयजे तन्महार्चकैः ॥40 ॥

ॐ ह्रीं सूर्यकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

लोकालोक-प्रविख्यातं लोकालोक-विधानकम् ।

कुम्भं संस्थापयाम्यत्र सम्पूज्य विविधार्चनैः ॥41 ॥

ॐ ह्रीं लोकालोककलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

त्रिकूटनामकं कुम्भं त्रिकूटाद्रिसमानकम् ।

समर्च्य विविधार्घेण स्थापये तन्महोत्सवे ॥42 ॥

ॐ ह्रीं त्रिकूटकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

उदयाख्यं महाकुम्भमुदयाचल-सन्निभम् ।

स्थापयामि जिनागारेऽभिषवाय महोन्नतिम् ॥43 ॥

ॐ ह्रीं उदयाचलकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

हिमवत्पर्वताभिख्यं हिमाचल-समुन्नतिम् ।

कूटं निवेशयाम्यत्र स्नानाय नव्यवेश्मनः ॥44 ॥

ॐ ह्रीं हिमाचलकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

निषधाद्रिसमोत्सेधं निषधाख्यं घटं वरम् ।

संविधायार्हणां दिव्यां स्थापयेऽहं न्महोत्सवे ॥45 ॥

ॐ ह्रीं निषधकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

माल्यवत्कुम्भनामानं नानामालाविराजितम् ।

शुद्धस्फटिकसंकाशं कुम्भं तत्र निवेशये ॥46 ॥

ॐ ह्रीं माल्यवत्कलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

सत्पारिपात्रकोत्सेधं सत्पारिपात्रकाहवयम् ।
कलशं श्रीजिनागारस्नानाय पूजयेऽनघम् ॥47 ॥

ॐ ह्रीं सत्पात्रकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

गन्धमादननामानं गन्धमादप्रपूरितम् ।
सम्पूजये जलाद्यर्घीर्जनौकस्नानहेतवे ॥48 ॥

ॐ ह्रीं गन्धमादनकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

सुदर्शन-समाह्वानं सुदर्शनगरिष्ठकम् ।
कलशं विशुद्धये जैनवेश्मनः स्थापयेऽनघम् ॥49 ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कलशं मन्दराकारं मन्दराख्यं महोन्नतिम् ।
विधापयामि जैनेन्द्र-भवनस्नान-हेतवे ॥50 ॥

ॐ ह्रीं मन्दरकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

अचलेत्यब्धिना पूर्णमचलाख्यं घटं नवम् ।
आम्रपल्लव-शोभाढ्यं तदर्थं स्थापयाम्यहम् ॥51 ॥

ॐ ह्रीं अचलकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

विद्युन्मालासमाकारं विद्युन्माल्यभिधानकम् ।
कलशं स्थापये दिव्यं नाना-पूजनवस्तुभिः ॥52 ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

चूडामण्याख्य-मुत्तुङ्गं चूडामणि-समुन्नतिम् ।
पूर्णं तीर्थोदकैः कुम्भं तदुत्सवे निधापये ॥53 ॥

ॐ ह्रीं चूडामणिकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

सद्धारगुलिकाभालं गुलिकाहवयमुत्तमम् ।
कुम्भं निवेशयाम्यत्र जैनमन्दिर-शुद्धये ॥54 ॥

ॐ ह्रीं गुलिकाकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

दक्षिणावर्तनामानं दक्षिणावर्तसन्निभम् ।
घटं च घटितं लक्ष्म्या तत्कृते सन्निवेशये ॥55 ॥

ॐ ह्रीं दक्षिणावर्तकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कोकाख्यं कोकसंकाशं वारिजाशमविनिर्मितम् ।
घटं निधापये जैनवेश्मनः शुद्धि-हेतवे ॥56 ॥

ॐ ह्रीं कोककलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

राजहंस-समानाभं राजहंस-समाहवयम् ।
घटं तं जाघटाम्यत्र नवाहंश्वेश्म-शुद्धये ॥57 ॥

ॐ ह्रीं राजहंसकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कलशं हरिताभिख्यं हरिताशमविनिर्मितम् ।
पूजये दिव्यरत्नेन दिव्यगन्धाम्बुचम्पकैः ॥58 ॥

ॐ ह्रीं हरितकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

मृगेन्द्राहवयमुत्तुङ्गं समाहवायार्चनादिभिः ।
मृगेन्द्रवत्प्रगर्जन्तं स्नानकालेषु वेश्मनः ॥59 ॥

ॐ ह्रीं मृगेन्द्रकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

कुम्भं कोकनदाकारं श्रीमत्कोकनदाहवयम् ।
त्रिभङ्गा-नीरसम्पूर्णं घटयेऽस्मिन्महोत्सवे ॥60 ॥

ॐ ह्रीं कोकनदकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

स्निग्धाञ्जन-समाकारमणिनिर्मितमुत्तमम् ।
कालाख्यं कलशं हृद्यं तदुत्सवे निवेशये ॥61 ॥

ॐ ह्रीं कालकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

पद्माख्यं पद्मचक्राख्यं पद्मरागविनिर्मितम् ।
कुम्भं समाहवये नव्यप्रासाद-स्नपनाय वै ॥62 ॥

ॐ ह्रीं पद्मकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

अत्यन्त-श्यामलाकार-प्रस्तरैर्निर्मितं घटम् ।
प्रासादस्नानकालेऽत्र महाकालं निवेशये ॥63 ॥

ॐ ह्रीं महाकालकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

पञ्चप्रकारसदरत्न-विनिर्मितं महोन्नतम् ।
कलशं सर्वरत्नाख्यं स्नानाय श्रीजिनौकसः ॥64 ॥

ॐ ह्रीं सर्वरत्नकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

- पाण्डुकाकारपाषाणनिर्मितं पाण्डुकाह्वयम् ।
कुम्भं तीर्थोद-सम्पूर्णं निवेशये यथाविधिम् ॥65 ॥
- ॐ ह्रीं पाण्डुकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
नैःसर्पकाङ्गलाकारमणिनिर्मित-मुन्नतम् ।
कुम्भं स्थापयाम्यत्र तीर्थवारिप्रपूरितम् ॥66 ॥
- ॐ ह्रीं नैसर्पकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
मानवाख्यं घटं नव्यमानये तीर्थवार्धतम् ।
स्थापयेऽर्हन्महावेश्म-स्नपनाय जलार्जितम् ॥67 ॥
- ॐ ह्रीं मानवकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
शङ्खसंकाशरत्नौघ-विनिर्मितमहोन्नतम् ।
संस्थाप्य पूजये दिव्यं शङ्खाख्यं जलचन्दनैः ॥68 ॥
- ॐ ह्रीं शङ्खनिधिकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
पिङ्गलाख्यं च पिङ्गाभं पिङ्गाश्रमभिर्विनिर्मितम् ।
घटं तीर्थाम्बुसम्पूर्णं तदर्थं सन्निधापये ॥69 ॥
- ॐ ह्रीं पिङ्गलकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
पुष्करावर्तनामानं कलशं रत्ननिर्मितम् ।
जिनोदवासित-स्नानालोकं संकल्पयाम्यहम् ॥70 ॥
- ॐ ह्रीं पुष्करावर्तकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
मकरध्वजनामानमिन्द्र-नील-विधापितम् ।
कूटं गङ्गाम्बुपर्याप्तं पवित्रं स्थापयेद्वरम् ॥71 ॥
- ॐ ह्रीं मकरध्वजकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
ब्रह्माभिख्यं चतुर्वक्त्रं कुम्भं ब्रह्मसमर्चितम् ।
ब्रह्मतीर्थजलैः पूर्णं स्थापये नीरचन्दनैः ॥72 ॥
- ॐ ह्रीं ब्रह्मकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
सुवर्णनिर्मितं कुम्भं सुवर्णाख्यं महासुखम् ।
स्फुरद्रत्नचयं चारुं संस्थाप्याहं समर्चये ॥73 ॥
- ॐ ह्रीं सुवर्णकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।

- कदली-पत्रसंकाशं नीलाश्रमकमयं घटम् ।
स्थापयामीन्द्रनीलाख्यं सम्भृतं तीर्थवारिणा ॥74 ॥
- ॐ ह्रीं इन्द्रनीलकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
अशोक-कुसुमामोद-वासिताम्भः प्रपूरितम् ।
अशोकाख्यं महाकुम्भं निधापये जिनौकसाम् ॥75 ॥
- ॐ ह्रीं अशोककलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
पुष्पदन्तसमानाभं पुष्पदन्तसमाह्वयम् ।
कलशं सलिलैः पूर्णं संस्थापयेऽर्हन्मन्दिरे ॥76 ॥
- ॐ ह्रीं पुष्पदन्तकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
कुमुदाख्यं घटं नव्यं कुमुदमृग-विराजितम् ।
कुमुदैरचये स्नाने संस्थाप्य श्रीजिनौकसः ॥77 ॥
- ॐ ह्रीं कुमुदकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
येषु दृष्टेषु भव्यानां सम्यक्त्वं प्रकटीभवेत् ।
दर्शनाख्यं महाकुम्भं सम्भावये जलादिभिः ॥78 ॥
- ॐ ह्रीं दर्शनकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
यस्य दर्शनमात्रेण धर्मोऽधर्मः प्रबुध्यते ।
कुम्भं ज्ञानाख्यमुत्तुङ्गं निवेशये जलैर्भूतम् ॥79 ॥
- ॐ ह्रीं ज्ञानकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
दर्शनाद्यस्य भव्यानां वृत्ते मतिः प्रजायते ।
चारित्राख्यं वनैः पूर्णं कुम्भं संस्थापये मुदा ॥80 ॥
- ॐ ह्रीं चारित्रकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
सर्वार्थसिद्धिकर्तारं सर्वार्थसिद्धिनामकम् ।
कुम्भं समर्चये जैनवेश्मनः स्नानहेतवे ॥81 ॥
- ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिकलशेन वेदिकाशुद्धिं करोमि ।
इस प्रकार शुद्धि करके नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप करें ।

वेदी संस्कार विधि

वेदी के सामने टेबिल पर यन्त्र स्थापित करें

ॐ जय जय जय निस्सही निस्सही निस्सही वर्धस्व वर्धस्व वर्धस्व स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति वर्द्धतां जिनशासनं णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्जायाणं णमो लोए सव्व साहूणं। चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।।

ॐ ह्रीं अनादिसिद्धमन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(वेदी पर पुष्पक्षेपण करें)

वास्तु शान्ति

- ॐ णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्जायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रीं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
(प्रत्येक मन्त्र के बाद वेदी पर पुष्प / पीली सरसों क्षेपण करना)
- ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसर्द्धिभ्यो नमः स्वाहा।
- ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयर्द्धिभ्यो नमः स्वाहा।
- ॐ ह्रीं दशदिशातः आगतविघ्नान् निवारय-2 सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
- ॐ ह्रीं दुर्मुहूर्त-दुःशकुनादिकृतोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
- ॐ ह्रीं परकृत-मन्त्रतन्त्र-डाकिनी-शाकिनी-भूत-पिशाचादि-कृतोपद्रव-शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
- ॐ ह्रीं वास्तुदेवेभ्यः स्वाहा।
- ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोपशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
- ॐ ह्रीं सर्वाधिब्याधिशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
- ॐ ह्रीं सर्वत्र क्षेमं आरोग्यतां विस्तारय विस्तारय सर्वं हृष्टं पुष्टं प्रसन्नचित्तं कुरु कुरु स्वाहा।

(107)

प्रतिष्ठा परा

- ॐ ह्रीं यजमानादीनां सर्वसङ्घस्य शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं समृद्धिं अक्षीणर्द्धिं पुत्र-पौत्रादिवृद्धिं आयुर्वृद्धिं धनधान्यसमृद्धिं धर्मवृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।।
- ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
- ॐ भूर्भुवः स्वः नमः स्वाहा।
- ॐ ह्रीं क्रौं आं अनुत्पन्नानां द्रव्याणामुत्पादकाय उत्पन्नानां द्रव्याणा वृद्धिकराय चिन्तामणिपार्श्वनाथाय वसुदाय नमः स्वाहा।

इन्द्रवज्रा

पृथ्वी-विकारात्सलिल-प्रवेशादग्नि-विघातात्पवन-प्रकोपात्।

चौर-प्रयोगादशनि-प्रपाताच्चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम्॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अहं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरिहन्ताणं ह्रीं सर्वविघ्न निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

पृष्ठ 89 से चतुर्णिकाया... आदि 11 श्लोक पढ़कर क्रिया सम्पन्न करें।

उपजाति

आयात कन्या जिनवेदिशुद्धयै सुवर्णरूपाभरणा भुजाद्वया।

छत्रत्रयाद्यष्ट-सुद्रव्ययुक्ता जिनेन्द्र-सेवार्थमुपागताश्च॥

श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-शान्ति-पुष्टि-दिवकुमार्यः वेदी-शुद्धयर्थं समागच्छत समागच्छत।

(आठ कन्याओं में अष्ट कुमारियों की स्थापना करें)

अनुष्टुभ्

पूतमृत्-कुङ्कुम-द्वेधा-चन्दन-क्वाथ-हस्तया।

सन्मार्ज्यं प्रोक्ष्य लेप्यासौ स्नातालङ्कृत-कन्यया॥

ॐ ह्रीं चन्दनादिक्वाथेन वेदीशुद्धिं कुर्मः (अष्टदेवियों से वेदीशुद्धि करावें)

शालिनी

कङ्कालैलाजातिपत्रं लवङ्ग-श्रीखण्डोग्र-कुष्टसिद्धार्थदौर्वाः।

सर्वौषध्या वासितैस्तीर्थतोयैः कुम्भोद्गीर्णैः स्नापयाम्यहवेदीम्॥

ॐ ह्रीं सर्वौषधिजलेन वेदीशुद्धिं कुर्मः।

अनुष्टुभ्

पूज्यपूजा विशेषण गोशीर्षेण इतालाना।
देवदेवाधि सेवायै वेदिकां चर्चये धुना॥

ॐ ह्रीं चन्दनेन वेदीशुद्धिं कुर्मः।

कर्पूरागुरु काश्मीर चन्दनानां द्रवेण च।
जिनयज्ञ विधानार्थं वेदी स चर्चयाम्यहम्॥

ॐ ह्रीं कर्पूरादिद्रवेण वेदीं सञ्चर्चयामः।

सुरापगादितीर्थभ्यः उद्भवैः वारिसञ्चयैः।
प्रक्षालयामि सद्वेदीं तीर्थकृद्-भवने स्थिताम्॥

ॐ ह्रीं शुद्धजलेन वेदी-प्रक्षालनं कुर्मः।

उपजाति

भव्यात्मनां दृष्टकर्मणौघं प्रक्षालनार्थं जिनयज्ञवेदीम्।
कुशौद्धतैः प्रोक्षणमन्त्र-पूतैः सम्प्रोक्षयामः परितः पयोभिः॥

ॐ ह्रं ह्रीं हूं ह्रौं हः जिनयज्ञवेदीप्रोक्षणं करोमि।

(वेदी को शुद्ध वस्त्र से प्रोक्षण करें)

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यै विबुधैः प्रणुत्या।

भक्त्या सदागत्य हि यागभूमेः कुर्वन्तु शुद्धिं पवनाख्यदेवाः॥*

भो वायुकुमार! सर्वविघ्नविनाशनाय वेदिकाभूमिशुद्धिं कुरु कुरु फट् स्वाहा।

(वेदी की शुद्ध वस्त्र से हवा कर शुद्धि करें)

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यै विबुधैः प्रणुत्या।

भक्त्या सदागत्य हि यागभूमेः कुर्वन्तु शुद्धिं वरमेघदेवाः॥*

भो मेघकुमार! वेदिधरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा।

(वेदी पर जल के छींटे लगावें)

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यै विबुधैः प्रणुत्या।

भक्त्या सदागत्य हि यागभूमेः कुर्वन्तु शुद्धिं ज्वलनाख्यदेवाः॥*

भो अग्निकुमार! वेदिभूमिं ज्वलय ज्वलय अं हं सं वं झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा।

(वेदी पर कपूर जलाकर चारों ओर चलाकर अग्नि से शुद्धि करें)

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यै विबुधैः प्रणुत्या।
आगत्य ते नागकुमार देवा विपादिवाधां विनिवारयन्तु॥*
भो षष्टिसहस्रनागाः! जिनवेदिकारक्षां कुरु कुरु स्वाहा।
(ऐशान दिशा में जल के छींटे लगावें)

ॐ हूं हूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय
स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द
क्षः क्षः हूं फट् स्वाहा। (यह मन्त्र पढ़कर वेदी पर पुष्प क्षेपण करें)

अनुष्टुभ्

नानाभरणोज्ज्वलै-वस्त्रैः किङ्किणी-तारकादिभिः।
अर्धचन्द्र-सुदण्डाद्यैः वेदिकां च विभूषयेत्॥
प्रतिदिशं सुहस्तां च सुप्रशस्तां सुवेदिकाम्।
सुप्रभाख्यां महापूतां जिनस्य स्थापयाम्यहम्॥

वेद्यां चन्द्रोपकादिषु पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अनुष्टुभ्

कुङ्कुमैः केसरैः पङ्कैः प्रासादं शोभयाम्यहम्।
कृते स्वस्तिक-हस्तौघे-बीहे-मध्ये मनोहरैः॥

इति कुङ्कुम-केसरैः मङ्गलस्वस्तिक-करणम्।

(वेदी की दीवार पर स्वस्तिक बनावें। वेदी की ऊपर वाली कटनी पर विनायक यन्त्र को सिंहासन में विराजमान करें)

उपजाति

प्रत्यूह-निर्णाशविधौ प्रसिद्धं गणेन्द्रवक्त्राम्बुजगीत-कीर्तिम्।
यन्त्रं पुरापूजित-मन्त्र नेयं पात्रे लिखित्वापि कृतार्चनादि॥

ॐ ह्रीं विनायक-यन्त्रं स्थापयामि।

शालिनी

वेद्या मूले पञ्चरत्नोपशोभं कण्ठेलम्बान्माल्यमादर्शयुक्तम्।
माणिक्याभं काञ्चनं पूगदर्भसक्वासोभं सद्घटं स्थापयेद् वै॥

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्मणिश्रीवीरनिर्वाणसंवत्सरे..... मासे पक्षे तिथौ वासरे प्रशस्तलग्ने कार्यस्यनिर्विघ्न-समाप्त्यर्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत- श्रीफलादि-शोभितं मङ्गल-कलश-स्थापनं करोमि। इर्वीं श्वीं हं सः स्वाहा।

द्वतविलम्बित

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमङ्गलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

शालिनी

स्थाने स्थाने सन्निवेश्याः पताकालघ्वः स्थूलाउन्नतांशा महोर्व्याम्।
वादित्राणां नादपूर्वं वरस्त्रीगीत-ध्वानैर्मङ्गलार्थं रनूनैः॥

इति वेद्यग्रभूमौ च वेदीपरितो लघुपताका-स्थापनम्।

(पूर्व में-पीली ध्वजा 1, आग्नेय में- लाल 1, दक्षिण में-काली 2, नैऋत्य में-हरी 1, पश्चिम में-श्वेत 1, वायव्य में-नीली 1, उत्तर में काली ईशान में पञ्चरङ्ग 1, कुल 8 ध्वजाएँ वेदी पर स्थापित करें)

अनुष्टुभ्

पञ्चवर्णेन सूत्रेण दिव्यगन्धयुतेन वै।
रक्षामन्त्रं समुच्चार्य वेदिकां परिवेष्टयेत्॥

ॐ ह्रीं वेदिकां पञ्चवर्णसूत्रेण वेष्टयामि स्वस्ति भवतु।

(रक्षामन्त्र पढ़ते हुए वेदी को सुगन्धित पञ्चवर्णसूत्र से तीन बार वेष्टित करें।)

मङ्गलं जिननामानि मङ्गलं मुनि-सेवनम्।

मङ्गलं श्रुतमध्येयं मङ्गलं जिनसद्वृषम्॥

ॐ परब्रह्मणे नमोनमः स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नन्द नन्द वद्धस्व वद्धस्व
विजयस्व विजयस्व अनुसाधि अनुसाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं
माङ्गल्यं माङ्गल्यम्।

इति वेदीप्रतिष्ठा मन्त्रेण पुण्याञ्जलिं क्षिपेत्।

अथ वेदी प्रतिष्ठायां तत्शुद्ध्यर्थं भावशुद्धि पूर्व आचार्यभक्ति, श्रुतभक्ति पूर्व
कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(आचार्यभक्ति एवं श्रुतभक्ति का पाठ करके यन्त्र पूजा करें।)

यन्त्रपूजा

परमेष्ठिन्! मङ्गलादित्रय विघ्नविनाशने।

समागच्छ तिष्ठ तिष्ठ मम सन्निहितो भव॥

ॐ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुपरमेष्ठिन्! मङ्गल-लोकोत्तम! शरणभूत!
अत्रावतर अवतर संवौषद् (आह्वानं), अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं),
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषद्। (सन्निधिकरणं)।

इन्द्रवज्रा / उपजाति

स्वच्छैर्जलैस्तीर्थ - भवैर्जरापमृत्यूग्र - रोगापनुदे पुरस्तात्।

अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्माङ्गलिकान् यजेऽहम्॥

ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व- साधुमङ्गललोकोत्तम-
शरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चन्दनैर्गन्ध - हृतालिवृन्द - चितैर्हिमांशु - प्रसरावदातैः।

अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्माङ्गलिकान् यजेऽहम्॥

ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुमङ्गल-
लोकोत्तमशरणेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

सदक्षतैर्मौक्तिक - कान्तिपाटच्चरैः सितैर्मानस - नेत्रमित्रैः।

अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्माङ्गलिकान् यजेऽहम्॥

ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-मङ्गललोकोत्तम-
शरणेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पे - रनेकै - रसवर्णगन्ध - प्रभासुरैर्वासित - दिग्वितानैः।

अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्माङ्गलिकान् यजेऽहम्॥

ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-मङ्गललोकोत्तम-
शरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्यपिण्डैर्घृत - शर्कराक्त - हविष्यभागैः सुरसाभिरामैः।

अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्माङ्गलिकान् यजेऽहम्॥

ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-मङ्गललोकोत्तम-
शरणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरातिकै रत्नसुवर्णरुक्मपात्रार्पितैज्ञान - विकाशहेतोः।
अहंमुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्माङ्गलिकान् यजेऽहम् ॥
ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-मङ्गललोकोत्तम-
शरणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आशासु यद्धूम - वितान - मृच्छं तैर्धूप - वृन्दैर्दहनोपसर्पैः।
अहंमुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्माङ्गलिकान् यजेऽहम् ॥
ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-मङ्गललोकोत्तम-
शरणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलै - रसालैर्वरदाडिमाद्यै - हृद्घ्राणहार्यै - रमलैरुदारैः।
अहंमुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्माङ्गलिकान् यजेऽहम् ॥
ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-मङ्गललोकोत्तम-
शरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे ह्यनर्घमर्घं वितरामि भक्त्या।
भवे भवे भक्तिरुदारभावाद्येषां सुखायास्तु निरन्तराया ॥
ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-मङ्गल-
लोकोत्तमशरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनादि-सन्तानभवान् जिनेन्द्रा-नर्हत्पदेष्टा-नुपदिष्टधर्मान्।
द्वेधा श्रिया लिङ्गित-पादपद्मान् यजामि वेदीप्रकृतिप्रसक्त्यै ॥
ॐ ह्रीं उद्भिन्नानन्तज्ञानगभस्तिरसदृष्टलोकालोकानुभावान् मोक्षमार्ग-
प्रकाशनानन्तचिद्रूपविलासान् अर्हत्परमेष्ठिनः सम्पूजयामि स्वाहा।

कर्माष्ट-नाशाच्युत-भावकर्मोद्भूतीन् निजात्मस्व-विलासभूपान्।
सिद्धा-ननन्तास्त्रिक-कालमध्ये गीतान् यजामीष्ट-विधिप्रशक्त्यै ॥
ॐ ह्रीं द्विविधकर्मताण्डवापनोदविलसत्स्वाकारचिद्विलासवृत्तीन्
निजाष्टगुणगणोद्घूर्णान् प्रगुणी-भूतानन्तमाहात्म्यान् लोकाग्र-शिखरावस्थायिनः
सिद्धपरमेष्ठिनोऽर्चयामि स्वाहा।

ये पञ्चधाचार-परायणा-नामग्रेसरा दीक्षणशिक्षिकासु।
प्रमाण-निर्णीतपदार्थसार्थानाचार्य-वर्यान् परिपूजयामि ॥
ॐ ह्रीं व्यवहाराधाराचारवत्त्वाद्यनेक-गुणमणि-भूषितोरस्कान् सङ्घप्रति-
सार्थवाहानाचार्यवर्यान् परिपूजयामि स्वाहा।

अर्थश्रुतं सत्यविवोधनेन द्रव्यश्रुतं ग्रन्थविदर्भनेन।
येऽध्यापयन्ति प्रवरानुभावास्तेऽध्यापका मेऽहंण्या दुहन्तु ॥
ॐ ह्रीं द्वादशाङ्गश्रुताम्बुनिधिपारङ्गतान् परिप्राप्तपदार्थस्वरूपान् उपाध्याय-
परमेष्ठिनः पूजयामि स्वाहा।

उपेन्द्रवज्रा

द्विधा तपोभावनया प्रवीणान् स्वकर्म-भूमिप्र-विखण्डनेषु।
विविक्त-शय्यासन-हर्म्यपीठस्थितान् तपस्विप्रवरान् यजामि ॥
ॐ ह्रीं घोरतपश्चरणोद्युत्तक्रप्रयासभासमानान् स्वकारुण्यपुण्य- पुण्यागण्य-
पण्यरत्नालङ्कृतपदान् साधुपरमेष्ठिनः पूजयामि स्वाहा।

गीतिका

अहंन्मङ्गलमर्चं सुरनरविद्याधरैक - पूज्यपदम्।
तोयप्रभृति-भिरर्घ्वैर्विनीत-मूर्ध्ना शिवाप्तये नित्यम् ॥
ॐ ह्रीं अहंन्मङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रौव्योत्पादविनाशन - रूपाखिल - वस्तुजाननार्थकरम्।
सिद्धं मङ्गलमिति वा मत्त्वाचं चाष्टविधवसुभिः ॥
ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्या

यदर्शन-कृतविभवाद् रोगोपद्रव-गणा मृगा इव मृगेन्द्रात्।
दूरं भजन्ति देशं साधुश्रेयोऽर्च्यते विधिना ॥
ॐ ह्रीं साधुमङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
केवलि-मुखावगतया वाण्या निर्दिष्ट-भेदधर्मगणम्।
मत्वा भवसिन्धुतरीं प्रयजे तन्मङ्गलं शुद्ध्यै ॥
ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्ममङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तममथ जिनराट्पदाब्ज-सेवनममित-दोषविलयाय।
शक्तं मत्वा धृतये जलगन्धैरीडितुं प्रभवे ॥
ॐ ह्रीं अरिहन्तलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्धाश्च्युत-दोषमला-लोकाग्रं प्राप्य शिवसुखं ब्रजिताः।
उत्तमपथागा लोके तानर्घं वसुविधार्चनया ॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रनरेन्द्रसुरेन्द्रैरथिततपसां व्रतैषिणां सुधियाम् ।
उत्तम-पन्थानमसावर्चेऽहं सलिलगन्धमुखैः ॥

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रागपिशाच-विमर्दनमत्र भवे धर्मधारिणा-मतुलम् ।
उत्तममपगतकामो वृषमर्चे शुचितरं कुसुमैः ॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हच्चरणमथार्चेऽनन्त-जनुष्वपि न जातु सम्प्राप्तम् ।
नर्तनगानादि-विधीनुद्दिश्याष्ट-कर्मणां शान्त्यै ॥

ॐ ह्रीं अरिहन्तशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गीतिका

निर्व्याबाध-गुणादिक-प्राग्रं शरणं समेतचिदनन्तम् ।
सिद्धानाममृतानां भूत्यै पूजेयमशुभ-हान्यर्थम् ॥

ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चिदचिद्भेदं शरणं लौकिक-माप्यं प्रयोजनातीतम् ।
त्यक्त्वा साधुजनानां शरणं भूत्यै यजामि परमार्थम् ॥

ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आर्या

केवलिनाथ-मुखोद्गतधर्मः प्राणिसुखहितार्थ-मुद्दिष्टः ।
तत्प्राप्त्यै तद्यजनं कुर्वे मख - विघ्ननाशाय ॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला*

या सर्वशान्तिं कुरुते सदैव, प्राराध्यमानो लभतेऽभिवृद्धिम् ।
आरोग्यमायुष्यमयाभिनन्दि, तद्यन्त्र पूजा भवतु प्रशान्त्यै ॥1॥
अर्हत्सुसिद्धाः सकलार्यसूरिः, सुपाठका वा मुनयः प्रपूज्याः ।
यस्मिन् च यन्त्रे परमेष्ठिनो ये, तद्यन्त्र पूजा भवतु प्रशान्त्यै ॥2॥
यन्नाममात्रं विधुनोति पापं, चत्वारि नित्यं खलु मङ्गलानि ।
स्थितानि वै विश्वजनीनवृत्तेस्, तद्यन्त्र पूजा भवतु प्रशान्त्यै ॥3॥
इन्द्रा नरेन्द्रा न तथाहमिन्द्राः, खगेन्द्रवृन्दा न च मन्त्र तन्त्राः ।
शरण्यभूता न तथा ततो हि, तद्यन्त्र पूजा भवतु प्रशान्त्यै ॥4॥

निघ्नन्ति मिथ्यातिमिरभ्रमं ये, त्रैलोक्यमध्ये चतुरुत्तमास्ते ।
तेषां प्रतिष्ठा खलु विद्यतेऽत्र, तद्यन्त्र पूजा भवतु प्रशान्त्यै ॥5॥

चतुःशरण-माङ्गल्यं चतुरुत्तमदेवताः ।

कार्यस्य साधकाः सन्तु यन्त्रस्य परमेष्ठिनः ॥6॥

ॐ ह्रीं वेदिकाशुद्धिविधाने अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-मङ्गल-
लोकोत्तमशरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महर्षिपर्युपासन

स्वागताच्छन्दः

औषधी-रसबलर्द्धि-तपःस्थाः क्षेत्रबुद्धि-कलिताः क्रिययाढ्याः ।
विक्रियर्द्धि-महिताः प्रणिधान-प्राप्तसंसृति-तया मुनिपूज्याः ॥1॥
केवलावधिमनः प्रसराङ्गाः बीजकोष्ठमति-भाजन-शुद्धाः ।
वीतरागमद-मत्सरभावा बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥2॥
यद्-वचोऽमृतमहानद-मग्ना जन्मदाह-परिताप-मपास्य ।
निर्वचुः सुखसमाजतटेषु बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥3॥
श्रोतृभिन्न-मतयः पदपन्थाः दृष्टसंसृति-पदार्थ-विभावाः ।
तत्त्वसङ्कलित-धर्म्य-सुशुक्ला बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥4॥
स्पर्शन-श्रवणलोकन-बुद्धाः घ्राण-संस्थ-रसनोपकृता ये ।
दूरतोऽप्यनुभवं हि समाप्ता बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥5॥
छिन्नस्वर्य-विधिना चतुर्दशदिग्गु पूर्व-मतिना निमित्तगाः ।
वादिबुद्धिःकृतिनो मतिश्रमा-बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥6॥
अष्टधोक्त-दशधाभिदया ये बुद्धिवृद्धि-सहिताः शिवयत्नाः ।
विष्णमलादिगदहापनदेहा बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥7॥
दृष्टिवक्त्रमनसां विषभक्ति-प्रीणिताः श्रुतसरित्पति-पुष्टाः ।
लोकमङ्गलिषु संन्यसिता ये बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥8॥
वाक्यमानस-बलेन समग्राः उग्रदीप्त-तपसस्त्रिक-गुप्ताः ।
घोरवीर्यगुण-भावितचित्ता बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥9॥
दुग्धमध्वमृत-भोजनकृत्याः सर्पिषाश्रव-वचोऽभि-नियुक्ताः ।
अण्वलाघव-वशित्वविदर्भा बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥10॥
कामरूप-गुरुताप्रति-सर्पान्तर्द्ध्य-हीनवसति-गृहयुक्ताः ।
चारणा जलफलाग्नि-सूत्रा बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥11॥

आत्मशक्ति-विभवागतसर्व-पौद्गलीय ममताश्च्युतवस्त्राः ।

सत्परीषह-भटार्दनदास्ते बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥12 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रकार-सकल-ऋद्धिप्राप्त-मुनिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसन्ततिलका

आद्येशितु-वृषभसेन-पुरस्सरा ये सिंहादिसेन-पुरतोऽजित-तीर्थभर्तुः ।
श्रीसम्भवस्य किल चारु-विसेनमुख्या-स्तुर्यस्य वज्रधरमुख्यगणाधिराजाः ॥11 ॥

कोकध्वजस्य चमराधिप-पूर्वगाः स्युः पद्मप्रभस्य कुलिशादिपुरः स्थिताश्च ।
श्रीसप्तमस्य बल-मुख्यकृताः पुराणे चन्द्रप्रभस्य शमिनः खलु दत्तमुख्याः ॥12 ॥

मकराङ्कितो गणभृतश्च विदर्भमुख्याः श्रीशीतलस्य गणपा अनगारगण्याः ।
श्रेयोजिनस्य निकटे ध्वनि कुन्धुपूर्वा धर्मादियो गणधरा वसुपूज्यसूनोः ॥13 ॥

मेवादयश्च विमलेशितुरुद्धबुद्ध्या जय्यार्य-नामभरणाश्चतुर्दशस्य ।
धर्मस्य भान्ति शमिनः सदरिष्टमूलाश्चक्रायुधप्रभृतयः खलु शान्तिभर्तुः ॥14 ॥

कुन्धुप्रभोर्यमभृतः कथिताः स्वयम्भू-वर्याः पुनन्त्वर-विभोः स्मृतकुम्भमान्याः ।
मल्लेर्विशाखमुनयो मुनिसुव्रतस्य मल्लि-प्रवेकगणता नमिभर्तुरिष्टाः ॥15 ॥

सप्तर्द्धि-पूजितपदाः सुप्रभासमुख्या नेमीश्वरस्य वरदत्तमुखा गणेशाः ।
पाश्वर्प्रभोः स्वयमितः सुभवान्तनाम्ना वीरस्य गौतममुनीन्द्र मुखाः पुनन्तु ॥16 ॥

एभ्योऽर्घ्यपाद्यमिह यज्ञधरावनार्थं दत्तं मया विलसतां शुचिवेदिकायाम् ।
पुष्पाञ्जलि-प्रकरतुन्दिल-माज्यपात्र-मुत्तारयामि मुनिमान्य-चरित्रभक्त्या ॥17 ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकरगणधरेभ्यस्त्रिपञ्चाशत्-सहितचतुर्दशशत-
संख्येभ्यश्चारुपात्रमग्रे कृत्वार्घ्य-मुत्तारयामीति स्वाहा ।

-चारित्रभक्ति पठें ।

चौबीस गणधर अर्घ्यं

अनुष्टुभ्

इन्द्रभूति-रगिनभूतिर्वायुभूतिः सुधर्मकः ।

मौर्यमौड्यो पुत्रमित्रा-वकम्पन-सुनामधृक् ।

अन्धवेलः प्रभासश्च रुद्रसंख्यानं मुनीन् यजे

ॐ ह्रीं गौतमादिएकादश-मुनिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गौतमं च सुधर्मं च जम्बूस्वामिन-मूर्ध्वगम् ॥

ॐ ह्रीं अन्त्यकेवलित्रयार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रुतकेवलिनोऽन्याश्च विष्णुनन्द्यपराजितान् ।

गोवर्धनं भद्रबाहुं दशपूर्वधरं यज ॥

ॐ ह्रीं श्रुतकेवलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विशाख-प्रोष्ठिलनक्षत्रजयनागपुरस्सरान् ।

सिद्धार्थ-धृतिषेणाद्भौ विजयं बुद्धिबलं तथा ॥

गङ्गदेवं धर्मसेनमेकादश तु सुश्रुतान् ।

नक्षत्रं जयपालाख्यं पाण्डुं च ध्रुवसेनकम् ॥

कंसाचार्य-पुरोङ्गीयज्ञातारं¹ प्रयजेऽन्वहम् ।

ॐ ह्रीं कतिचिदङ्ग-धारिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुभद्रं च यशोभद्रं भद्रबाहुं मुनीश्वरम् ॥

लोहाचार्यं पुरा पूर्वज्ञानचक्रधरं नमः ।

अर्हद्वलिं भूतबलिं माघनन्दिन-मुत्तमम् ॥

धरसेनं मुनीन्द्रं च पुष्पदन्तसमाहवयम् ।

जिनचन्द्रं कुन्दकुन्द-मुमास्वामिनमर्थये ॥

ॐ ह्रीं ऐदंयुगीनदीक्षाधरणधुरन्धरनिर्ग्रन्थाचार्यवर्येभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति
स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडित

निर्ग्रन्थान् वकुशान् पुलाककुशलान् किंशील-निर्ग्रन्थकान्,

मूलस्वोत्तरसद्गुणावधृतसाः किञ्चित्प्रकारं गतान् ।

वन्दित्वा जिनकल्पसूत्रितपदान् प्रध्वस्तपापोदयान्,

वेदी-शुद्धि-विधिं ददन्तु मुनयो ह्यर्घेण सम्पूजिताः ॥

ॐ ह्रीं पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातकपदधरत्रिकन्यून-नवकोटिसंख्य
मुनिवरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महार्घ्यं, शान्तिपाठ एवं विसर्जन करके वेदी पर यवनिका (पर्दा) लगावें तथा शान्तिभक्ति
करके कार्य पूर्ण करें ।

पाठान्तर-¹ पूर्वोङ्गीय ज्ञातारं
नोट-गणधरों की संख्यानुसार मन्त्रों का स्थान परिवर्तित किया गया है ।

यागमण्डल विधान

द्वितीय दिवस की क्रिया

मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन, रक्षा, शान्तिमन्त्राराधन करके अभिषेक शान्तिधारा पूर्वक नित्य पूजा एवं अर्घ्यावली के पश्चात् यागमण्डल विधान करके कार्य पूर्ण करें।

जिनबिम्ब-स्थापन विधि

तृतीय दिवस की क्रिया

मङ्गलाष्टक या मङ्गलपञ्चक के पश्चात् पात्रशुद्धि, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्राराधन करके जिन प्रतिमाओं को वेदी में विराजमान करना है उनका अभिषेक करके प्रक्षालन कर अर्घ्य चढ़ाने के पश्चात् भक्तियों पढ़कर नवीन वेदी में विराजमान करें। प्रथम मूलनायक प्रतिमा के नीचे अचल यन्त्र, स्वस्तिक, पञ्चरत्न एवं पारद स्थापित करना चाहिए। ध्यान रहे प्रतिष्ठा ग्रन्थों में बिम्ब स्थापना दो प्रकार से कही है- (1) स्थिर बिम्ब (2) चल बिम्ब

मूलनायक बिम्ब को स्थिर प्रतिमा कहते हैं। इसे वेदी से कभी नहीं उठाना चाहिए। अन्य प्रतिमाएँ चल बिम्ब हैं उत्सव विधानादि में वेदी से उठा भी सकते हैं।

वेदी प्रतिष्ठा के समय मूलनायक तीर्थङ्कर की प्रतिमा विराजमान करते समय उन्हीं तीर्थङ्कर भगवान का प्रतिष्ठित यन्त्र या अचल यन्त्र सीधा एवं बीचों बीच प्रतिमा के नीचे विराजमान करना चाहिए।

स्थापना के पूर्व अचलमन्त्र की 108 बार जाप करें।

मन्त्र - ॐ नमोऽहं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ ओ औ अं अः, क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व, श ष स ह क्लीं ह्रीं क्रौं स्वाहा।

यदि यन्त्र न हो तो केशर से लिखें। चौबीस तीर्थङ्करों के चौबीस यन्त्र हैं जिन्हें मूलनायक तीर्थङ्कर प्रतिमानुसार अलग-अलग प्रतिमा के नीचे स्थापित करना चाहिए। (देखें पृष्ठ 257)

अनुष्ठुभ्

मन्त्रं पठेत् जपं पद्मपीठे गन्धेन तल्लिखेत्।

पञ्चरत्नमत्र क्षिप्त्वा प्रतिमां स्थापयेत्ततः॥

ॐ ह्रीं पञ्चरत्नं - स्थापयामि।

(वेदी पर पञ्चरत्न स्थापित करके रजत-स्वस्तिक स्थापित करें।)

वेद्यां पारदं क्षिप्त्वा श्रीखण्डं कुङ्कुमं तथा।

प्रथमं स्थापयेद् गर्भे कोणे वेद्याः जिनस्य च॥

ॐ ह्रीं वेद्याः कोणे पारदं स्थापयामि।

संस्थाप्यं निश्चलं यन्त्रमधस्तात् प्रतिमां नयेत्।

लेखनं स्वर्णलेखन्या यन्त्रं तस्य धरार्पितम्॥

ॐ ह्रीं अचलयन्त्रं स्थापयामि।

यस्य नामप्रभावेण विपदो न स्पृशन्ति नृन्।

येनेन्द्रोऽयष्ट-भक्त्या तत्प्रातिहार्याष्टकं त्विदम्॥

ॐ ह्रीं वेदिकोपरि-अष्टप्रातिहार्य-स्थापनार्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

रत्नांशुबद्धेन्द्रधनुर्व्यात्तास्याहरिवाहनम्।

यच्चक्रे धर्मैकात्मा सिंहपीठं तदस्त्वदः॥

ॐ ह्रीं सिंहासनश्रियै स्वाहा। (सिंहासनं स्थापयामि।)

बिम्ब-स्थापन

निर्मितं वीतरागस्य रत्नपाषाण-धातुभिः।

निराकारं च सिद्धानां बिम्बं संस्थापये मुदा॥

ॐ ह्रं ह्रीं हूं ह्रौं हः अ सि आ उ सा अष्टादशदोष-रहिताय षट्चत्वारिंशत्-गुण-सहिताय अनन्त-चतुष्टय-मण्डिताय निर्दग्ध-कर्मबीजाय सौम्याय शान्ताय मङ्गलाय जिनबिम्बं वेदिकायां सिंहासने वा कमलासने वा स्थापनं करोमि।*

यन्त्रं षोडशभावानां सिद्धचक्रं वृषा दश।

द्वादशाङ्गं-गिरां यन्त्रं स्थापये जिनपृष्ठके॥

ॐ ह्रीं षोडशकारण-दशधर्म-सिद्धचक्र-श्रुतस्कन्धादियन्त्राणां स्थापनं करोमि।

*बिम्ब-स्थापन का द्वितीय मन्त्र

ॐ नमोऽहंते केवलिते परमयोगिने अनन्त-विशुद्ध-परिणाम-परिस्फुर-च्छुक्लध्यानाग्नि-निर्दग्धकर्मबीजाय प्राप्तानन्त-चतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय मङ्गलाय वरदाय अष्टादशदोष-रहिताय स्वाहा। ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं, परम-हंसाय परमेष्ठिने हं सः हं ह्रं हूं ह्रौं ह्रौं हः जिनाय नमः वेदिकोपरि जिनं स्थापयामि संवौषट्।

- प्रवाद्य भेद्यो मेघौघ-ध्वनिजिद् योजनं सदा।
व्याप्नुवन् यो न केनापि व्यधाय्येष स तद्ध्वनिः ॥
ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिश्रियै स्वाहा। (दिव्यध्वनिं स्थापयामि।)
- यक्षैर्दोर्धूयमानार्हदेहं छायाछलाच्छ्रुता।
या चामरचतुःषष्टिर्नानटीति स्म सास्त्वियम् ॥
ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरश्रियै स्वाहा। (चतुःषष्टिचामराणि स्थापयामि।)
- चक्षुषोः पश्यतां सप्त भासयत्यनिशं भवान्।
भामण्डलेऽब्रुडन् यत्र विश्वतेजांस्यदोऽस्तु तत् ॥
ॐ ह्रीं भामण्डलश्रियै स्वाहा। (भामण्डलं स्थापयामि।)
- रत्नरोचिर्नददभृङ्ग - खगो वातचलल्लतः।
विश्वाशोकीकृते व्यक्तं योऽशोको नग एष सः ॥
ॐ ह्रीं रत्नाशोकश्रियै स्वाहा। (रत्नाशोकं स्थापयामि।)
- मुक्त-प्रारोह-मालम्बिमुक्तालम्बूष-लक्षणम्।
छत्रत्रयं स्वभावाच्छ्री-निधिवद्-भात्यदोऽस्तु तत् ॥
ॐ ह्रीं छत्रत्रयश्रियै स्वाहा। (छत्रत्रयं स्थापयामि।)
- सभ्याः श्रुण्वन्त्वसभ्योक्तीर्मैऽतीवातीव योऽध्वनत्।
सार्धद्वादश-कोट्युद्यद्वादित्रोऽयं स दुन्दुभिः ॥
ॐ ह्रीं दुन्दुभिः श्रियै स्वाहा। (दुन्दुभिं स्थापयामि।)
- गङ्गाम्भःसुभगैर्गुञ्जद्भृङ्गौघैः सुमनस्तमैः।
सुमनोभिः सुमनसां वृष्टिर्यासर्जि सास्त्वसौ ॥
ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिश्रियै स्वाहा। (पुष्पवृष्टिं स्थापयामि।)
- इत्यष्टौ प्रातिहार्याणि प्रतिमायां जिनेशिनः।
स्थापितानि च निघ्नन्तु भाक्तिकानां सदापदः ॥
ॐ ह्रीं प्रतिमाग्रे अष्टस्थानेषु पुष्पाणि स्थापयामि।
- भृङ्गार-कुम्भ-मुकुर-स्वस्तिक-ध्वजरोपणम्।
व्यजनेन सुसंयुक्तं जिनाग्रे द्रव्यमङ्गलम् ॥
ॐ ह्रीं अष्टमङ्गल-द्रव्य-स्थापनाय पीठिकायामष्टस्थानेषु पुष्पाणि
क्षिपेत्।

- (1) ॐ ह्रीं भृङ्गारश्रियै स्वाहा। (भृङ्गारं स्थापयामि।)
- (2) ॐ ह्रीं कलशश्रियै स्वाहा। (कलशं स्थापयामि।)
- (3) ॐ ह्रीं दर्पणश्रियै स्वाहा। (दर्पणं स्थापयामि।)
- (4) ॐ ह्रीं स्वस्तिकश्रियै स्वाहा। (स्वस्तिकं स्थापयामि।)
- (5) ॐ ह्रीं ध्वजश्रियै स्वाहा। (ध्वजं स्थापयामि।)
- (6) ॐ ह्रीं व्यजनश्रियै स्वाहा। (व्यजनं स्थापयामि।)
- (7) ॐ ह्रीं सुप्रतिष्ठश्रियै स्वाहा। (सुप्रतिष्ठं स्थापयामि।)
- (8) ॐ ह्रीं चामरश्रियै स्वाहा। (चामराणि स्थापयामि।)
- नोट-त्रिलोकसार एवं तिलोपपण्णती ग्रन्थों में स्वस्तिक के स्थान पर छत्र का उल्लेख मिलता है।
पार्श्वद्वये जिनेन्द्रस्य देवेन्द्रयुगलं स्थितम्।
चामरं पुष्पहस्तं च वस्त्राभूषण-संयुतम् ॥
ॐ ह्रीं इन्द्रयुगलश्रियै स्वाहा। (इन्द्रयुगलं स्थापयामि।)
- वन्दनमालिका बध्ना मणिमुक्तादि-निर्मिता।
वेदिकायां परं रम्या किङ्किण्यादि-विभूषिता ॥
ॐ ह्रीं वन्दनमालां बध्नामि स्वस्ति भवतु।
- स्थापनीयं वरं शास्त्रं कुन्दकुन्दादि-निर्मितम्।
जैन-तत्त्वप्रबोधाय स्याद्वादेन विभूषितम् ॥
ॐ ह्रीं जिनशास्त्रं स्थापयामि।
- रत्नविद्रुम-मुक्तादि-निर्मितं जपसाधनम्।
स्थाप्यं मालाष्टकं नूनं कर्मनिर्हरणक्षमम् ॥
ॐ ह्रीं जपमालां स्थापयामि।
- घण्टां च झल्लरीमुच्चैष्टङ्कारेण समन्विताम्।
बध्नीयाद् भव्यजीवाना-माहवानाय मनोरमाम् ॥
ॐ ह्रीं घण्टां झल्लरीं च बध्नामि स्वस्ति भवतु।
- सार्वकालिक-पूजार्थं भूस्वर्णादिकद्रव्यकम्।
वित्तानुसारतो दद्यात् पूजोपकरणानि च ॥
इस अवसर पर जिनवाणी, जिनमन्दिर, विद्यालय आदि को दान की
घोषणा करावे।

यावत्त्रिलोक्यां जिनमन्दिरार्चां तिष्ठन्ति शक्रादिभिरर्च्यमानाः ।
तावज्जिनादि-प्रतिमा-प्रतिष्ठां शिवार्थिनोऽनेन विधापयन्तु ॥
प्रतिष्ठाचार्य प्रतिष्ठाकारको पर आशीर्वाद के पुष्पक्षेपण करके जिनेन्द्रदेव की पूजा करें।

पूजा

अनुष्ठुभ्

देवस्त्वं त्रिजगन्नाथस्त्वं त्रैलोक्यैकनायकः ।

केवलज्ञान-दीपस्त्वं मिथ्यात्व-ध्वंसनायकः ॥

ॐ ह्रीं सिंहासन-दिव्यध्वनि-चतुःषष्टिचामर-प्रभामण्डल-अशोकवृक्ष-
छत्रत्रय-दुन्दुभि-पुष्पवृष्टि-मणिमयमाला-भृङ्गार-कलश-दर्पण-छत्र
सुप्रतिष्ठ-श्वेतध्वजा-व्यजनेन्द्र युगल-यक्षद्वय-सर्वाभ्यन्तर-बाह्योपकरण-
संयुक्त-जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम् । अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
सन्निधिकरणम् ।

उपजाति

हिमाचलान्निर्गत-स्वर्धुनीय-सौरभ्यशीतोज्ज्वल-नीरकुम्भैः ।

महामि सर्वज्ञपदाब्जयुग्मं शक्रादि-भव्यौघ-भवप्रशान्त्यै ॥2 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्पूरकाशमीर-सुचन्दनाद्यैः सौगन्ध्यभारेण सुगन्धिताशैः ।

महामि सर्वज्ञपदाब्जयुग्मं शक्रादि-भव्यौघ-भवप्रशान्त्यै ॥3 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्द्रोज्ज्वलै-निर्मल-शालिपुञ्जैर्मुक्तावतारैरिव शोभमानैः ।

महामि सर्वज्ञपदाब्जयुग्मं शक्रादि-भव्यौघ-भवप्रशान्त्यै ॥4 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सत्पारिजात-प्रभृति-प्रसूनैरामोद-सन्तोषित-षट्पदौघैः ।

महामि सर्वज्ञपदाब्जयुग्मं शक्रादि-भव्यौघ-भवप्रशान्त्यै ॥5 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नानारसापूरित-भव्यभोज्यैः पक्वान्न-शाल्योदनसञ्चयैश्च ।

महामि सर्वज्ञपदाब्जयुग्मं शक्रादि-भव्यौघ-भवप्रशान्त्यै ॥6 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नप्रभादिद्युति-सञ्चितेन दीपेन भाभासित-दिक्ययेन ।

महामि सर्वज्ञपदाब्जयुग्मं शक्रादि-भव्यौघ-भवप्रशान्त्यै ॥7 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पांटीरचूर्णेन सुगन्धितेन कर्पूरगन्धेन सुवासितेन ।

महामि सर्वज्ञपदाब्जयुग्मं शक्रादि-भव्यौघ-भवप्रशान्त्यै ॥8 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूगार्द्र-द्राक्षाफल-चोचमोच-खर्जूर-संशोभित-मातुलिङ्गैः ।

महामि सर्वज्ञपदाब्जयुग्मं शक्रादि-भव्यौघ-भवप्रशान्त्यै ॥9 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाटीरनीराक्षत-पुष्पपुञ्ज-नैवेद्यदीपादि-समुच्चयेन ।

महामि सर्वज्ञपदाब्जयुग्मं शक्रादि-भव्यौघ-भवप्रशान्त्यै ॥10 ॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टप्रातिहार्य एवं मङ्गलद्रव्य सहित जिनेन्द्र की अर्घ्यावली

वनस्पतित्वेऽपि गतप्रशोकोऽशोको बभूवातिमद-प्रसूनः ।

अनेक-सन्दर्शक-शोकहारी वृक्षो जिनेन्द्राश्रयण-प्रभावात् ॥11 ॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष-प्रातिहार्यसहिताय जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसन्ततिलका

श्रेयस्तरुः फलति नोऽमरसौख्य-मुच्चै-र्हर्षोत्सुकत्व-परिलम्भन-सन्निषेण ।

देवैः कृता सुमनसां परिवृष्टिरेषा मोदं ददातु भवदुःखजुषां जनानाम् ॥12 ॥

ॐ ह्रीं देवकृत-पुष्पवृष्टि-प्रातिहार्यसम्पन्नाय जिनायार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

त्रैलोक्यवस्तु-मननस्मरणावबोधो येन स्वयं श्रवणगोचरतां गतेन ।

सञ्जायते मुखर-दौष्ट-विघातशून्यो भूयाद् ध्वनिर्भव-गद-प्रसरतिहर्ता ॥13 ॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि-प्रातिहार्यसम्पन्नाय जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

- यक्षेशपाणि-लतिकाङ्कुर-सङ्गतानि तुर्याधिषष्टि-गणनान्यपि देवनद्यः ।
 वीचिप्रमाणि भवतो द्विकपाशर्वयोस्ते सच्यामराण्यघचयं मम निर्दलन्तु ॥14 ॥
 ॐ ह्रीं चतुःषष्टि-चामर-प्रातिहार्य-सम्पन्नाय जिनायार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।
 सिंहासने छविरियं जिनदेवतायाः केषां मनोऽवधृतपापहरी न वा स्यात् ।
 स्याद्वाद-संस्कृत- पदार्थगुणप्रकाशोऽस्या मेस्तुनिर्हंत-मदाविल-जातशक्तेः ॥15 ॥
 ॐ ह्रीं सिंहासन-प्रातिहार्य-सम्पन्नाय जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 भामण्डलेऽवयवपृष्ठ-विभागरश्मि-क्लृप्ते जनस्य भवसप्तक-दर्शनेन ।
 श्रद्धान-माप्त-गुरुधर्म-परम्पराणां गाढं भवेत्तदिति देवपतिर्नमस्यः ॥16 ॥
 ॐ ह्रीं भामण्डल-प्रातिहार्य-सम्पन्नाय जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 देवस्य मोह-विजयं परिशसितुं द्राक् देवाः स्वहस्ततलतः परिवादयन्ति ।
 वाद्यानि मङ्गलनिवास-कराणि सद्यो मिथ्यात्व-मोहजयिनः सुभागानि च स्युः ॥17 ॥
 ॐ ह्रीं दुन्दुभि-प्रातिहार्य-सम्पन्नाय जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 छत्रत्रयं जिनप-मूर्धनि भासमानं त्रैलोक्य-राज्यपतिता-मभिदर्शयद्वा ।
 सोमार्क-वह्नि-प्रतिमं सितपीतरक्तरत्नादि-रञ्जितमिदं मम मङ्गलाय ॥18 ॥
 ॐ ह्रीं छत्रत्रय-प्रातिहार्य-सम्पन्नाय जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनुष्टुभ्

छत्रचामरभृङ्गार-कुम्भाब्द-व्यजन-ध्वजान् ।

स्वसुप्रतिष्ठान् यानिन्द्रो भर्तुस्तेनेऽत्र सन्तु ते ॥19 ॥

- ॐ ह्रीं अष्टमङ्गलद्रव्य-संयुक्त-जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसन्ततिलका

जाम्बूनदाब्द-सहितं मणिबद्धरत्न-भृङ्गारझारिवर-भूषित-मुक्ति-सौख्यम् ।

वेद्यां प्रमाणरचितं भवशङ्कराग्रं-चैत्यं महामि सुरवृन्द-महामहेरम् ॥20 ॥

- ॐ ह्रीं वेदिका-स्थित-जिनचैत्यायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नानामणीखचित-हेममयैकभूप-मुल्लोच-तोरण-मृदङ्गमनेकवाद्यम् ।

वेद्यां प्रमाणरचितं भवशङ्कराग्रं-चैत्यं महामि सुरवृन्द-महामहेरम् ॥21 ॥

- ॐ ह्रीं वेदिका-स्थित-जिनचैत्यायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

- गन्धोद-दुन्दुभि-मरुज्जयरत्नवृष्टि-सङ्गीत-किन्नर-सुरासुरमानवाच्यम् ।
 वेद्यां प्रमाणरचितं भवशङ्कराग्रं-चैत्यं महामि सुरवृन्द-महामहेरम् ॥22 ॥
 ॐ ह्रीं वेदिका-स्थित-जिनचैत्यायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 पूर्णेन्दुछत्र-वर-चामर-वीज्यमान-माखण्डलस्तवननिर्भर-विश्वदेवम् ।
 वेद्याम्प्रमाणरचितं भवशङ्कराग्रं-चैत्यं महामि सुरवृन्द-महामहेरम् ॥23 ॥
 ॐ ह्रीं वेदिका-स्थित-जिनचैत्यायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 नेत्रे च कर्णहृदये शिवसौख्यकारि रत्नानुविम्बितमनर्घ्य-विजृम्भमाणम् ।
 वेद्यां प्रमाणरचितं भवशङ्कराग्रं-चैत्यं महामि सुरवृन्द-महामहेरम् ॥24 ॥
 ॐ ह्रीं वेदिका-स्थित-जिनचैत्यायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनुष्टुभ्

समूहं जिनबिम्बानां प्रत्येकं मङ्गलाष्टकैः ।

धूप-कुम्भोपकरणैरर्चामः पूर्णाद्रव्यकैः ॥25 ॥

- ॐ ह्रीं वेदिका-स्थित-जिनचैत्येभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

शार्दूलविक्रीडित

सद्बुद्धिं विशदं श्रुताद्यसहितं ज्ञानाब्धि-पारङ्गतम्,
 सेव्यं धीमत्पर्ययैर्गुणशतैः सर्वज्ञसत्केवलम् ।

लोकालोक-विलोक-भास्करविभं धर्माभूताम्भोनिधिम्,
 साम्राज्याखिलशर्म-विश्वकमलं सम्पूजयामो मुदा ॥26 ॥

पद्मरि

जय सुमति-प्रकाशनसारसार, हतमिथ्यामोह-महान्धकार ।
 भव्यौघजलजबोधनदिनेन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥27 ॥

सहजावधिराजित देवदेव, सुरनर-किन्नर-कृतसुखदसेव ।
 गुणमणिरत्नाकर शर्मकन्द, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥28 ॥

सज्ज्ञानरश्मिततिवर्धमान, सुखसन्तति-नित्य-विजृम्भमाण ।
 जय परमानन्द महाजिनेन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥29 ॥

वरकेवल-किरणावलि-विचित्र, लोकालोकालोकनपवित्र ।
 कृतसमवसरणसद्धर्मकेन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥30 ॥

श्रीमन्दिर-सुरसुन्दरनिवास, दिव्यध्वनि-दूरीकृत-नृत्रास ।
निर्ग्रन्थतपोधन नतनरेन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥31 ॥
श्वेतातपत्र-शोभानिधान, चामीकर-चामर-वीज्यमान ।
भामण्डलमण्डित-पृष्ठकेन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥32 ॥
माङ्गल्यशुभाष्टक-प्रातिहार्य, सद्धान-विदूरित-साम्पराय ।
मङ्गलपदार्थराजितवृषेन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥33 ॥
सेवागतदेव-चतुर्णिकाय, किन्नरगन्धर्व-महोरगाय ।
जय खेचर-गगनाङ्गणदिवेन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥34 ॥
मृदुगायक जनकृत-कुशलताल, काहल-वीणारस-विनतभाल ।
भेरीमृदङ्ग-झल्लरिक्तेन्द्र, प्रणताखिल देव नतामरेन्द्र ॥35 ॥
शृङ्गारहारभरभारदूर, जय मारमल्ल-विजयैकशूर ।
रम्भानवयौवनवदनचन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥36 ॥
सङ्गीत-नृत्यविभ्रम-विलास, हे स्वात्मसौख्य-सुन्दर-निवास ।
भूयो भूयो विनमित-खगेन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥37 ॥
अग्रे सुरसुन्दर्यो लसन्ति, वरभक्तिभावतस्तव नमन्ति ।
हे अमरीनेत्र चकोरचन्द्र, प्रणताखिलदेव नतामरेन्द्र ॥38 ॥

शालिनी

सुरनरफणिनाथः स्वान्तसन्तोषकारी, जितमदनप्रहारी विश्वलोकोपकारी ।
जयतु जयतु देवः श्रीजिनेन्द्राभिधानः, नमति ललितकीर्तिस्त्वां सुभक्ति प्रधानः ॥39 ॥

ॐ ह्रीं वेदिकास्थित-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितम्

इत्थं ये जिनभक्तिसङ्गतधियः सज्ज्ञानसिन्धूपमाः,
माङ्गल्यैः कलितं कलङ्कहतये प्रार्थन्ति नित्यं जिनम् ।
ते पुत्रादि-विभूतिभूषिततमा लब्ध्वा सुराणां सुखं,
क्षिप्रं यान्ति शिवं सदा सुखमयं सन्दह्य कर्माटवीम् ॥40 ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शान्तिपाठ शान्तिहवन, पुण्याहवाचन, शान्तिभक्ति, यज्ञदीक्षा समापन कर कार्य
सम्पन्न करें।)

□□□

मानस्तम्भ प्रतिष्ठा

इसकी समस्त क्रियाविधि वेदी प्रतिष्ठानुसार करें।

मानस्तम्भ पूजा

गीतिका

मान स्तम्भ में जिन चतुर्दिश हैं महाशुभसोहना,
जिन लखत मान पलात मानिन होत हिय निर्माहना ।
तिस मॉहि श्री जिनराज प्रतिमा लखे आनन्द हो घना,
कर आहवान सुथाप पूजों लहें शिव सुख सोहना ॥

दोहा

मानस्तम्भ के शीर्ष में प्रतिमा श्री भगवान ।
कर आहवान सु जोर कर तिष्ठ तिष्ठ इत आन ॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ-चतुर्दिक्-स्थित-जिनेन्द्राः! अत्रावतरत अवतरत संवौषट् ।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ-चतुर्दिक्-स्थित-जिनेन्द्राः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ-चतुर्दिक्-स्थित-जिनेन्द्राः! अत्र मम सन्निहितो भवत
भवत वषट् ।

योगीरासा

कञ्चन झारी उज्ज्वल जल ले श्री जिन चरण चढ़ाऊँ,
भाव सहित श्री जिनवर पूजों जनम जनम सुख पाऊँ ।
मानस्तम्भ सोहनो सुन्दर चारों दिश जिन पाऊँ,
पूजत हर्ष होत भविजीवन सुर शिव लक्ष्मी पाऊँ ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-मानस्तम्भस्थित-जिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर सरस सुवासी उत्तम लेकर धारो,

भव आताप विनाशन कारण श्रीजिन चरण निहारो। मानस्तम्भ०

ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-मानस्तम्भस्थित-जिनेन्द्रभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्ताफल उनहार सु तन्दुल कान्ति चन्द्र सम धारें,

पुञ्ज धारों जिनवर पद आगे अक्षय पद विस्तारें। मानस्तम्भ०

ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-मानस्तम्भस्थित-जिनेन्द्रेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

- मन्मथ पीड़ा अति दुखदायी, जग जन नित्य सतावे।
पूजत श्री जिन चरण मनोहर काम व्यथा न आवे। मानस्तम्भ०
- ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-मानस्तम्भस्थित-जिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षुधा तृषा यह रोग महा है सबको नित्य सतावे।
क्षुधा रोग निरवारन कारन श्री जिनचरण चढ़ावें। मानस्तम्भ०
- ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-मानस्तम्भस्थित-जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मणिमय दीप अमोलक लेकर कनक रकावी धरिये,
मोह अन्ध के नाशन कारण जगमग ज्योति उजरिये। मानस्तम्भ०
- ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-मानस्तम्भस्थित-जिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूप सुगन्ध समूह अनूपम खेय अगनि में डालो,
अष्ट कर्म ये दुष्ट भयानक इनको तुरतहि जालो। मानस्तम्भ०
- ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-मानस्तम्भस्थित-जिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीफल लौंग लायची सुन्दर पिस्ता जाति घनेरा,
पूज जिनेश्वर शिवफल पईये स्वर्गादिक सुख केरा। मानस्तम्भ०
- ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-मानस्तम्भस्थित-जिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।
आठ द्रव्य मिल अर्घ्य संजोयो पूजो श्री जिनभाई,
भव सागर से पार उतारो जय जय जय जिनराई। मानस्तम्भ०
- ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-मानस्तम्भस्थित-जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मानस्तम्भ पूरवदिशा श्री जिन बिम्ब निहार।
अर्घ्य लाय पूजा करूँ हो जाऊँ भवपार॥
- ॐ ह्रीं मानस्तम्भे पूर्वदिक्-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मानस्तम्भ दक्षिण दिशा श्री जिन बिम्ब निहार।
अर्घ्य लाय पूजा करूँ हो जाऊँ भवपार॥
- ॐ ह्रीं मानस्तम्भे दक्षिणदिक्-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मानस्तम्भ पश्चिम दिशा श्री जिन बिम्ब निहार।
अर्घ्य लाय पूजा करूँ हो जाऊँ भवपार॥
- ॐ ह्रीं मानस्तम्भे पश्चिमदिक्-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

- मानस्तम्भ उत्तर दिशा श्री जिन बिम्ब निहार।
अर्घ्य लाय पूजा करूँ हो जाऊँ भवपार॥
- ॐ ह्रीं मानस्तम्भे उत्तरदिक्-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

मानस्तम्भ सुहावनो चारों दिश जिन थान।
सुर नर मुनि खग हर्षयुत पूजें आनन्द ठान॥1॥

पद्वरि

- जय जय जय मानस्तम्भ सार, शोभित नीचे चौकोर धार।
जय ऊपर गोलाकार जान, जय अति उचुङ्ग दैदीप्यमान॥2॥
- जय ऊपर महा अति जगमगात, जय वज्रमयी नीचे सुहात।
जय लसै स्फटिकमय बीचमान, वैडूर्य मणि सम ऊर्ध्वजान॥3॥
- जय तापर कमल बनें स्वरूप, जय तापर है कलशा अनूप।
जय दण्ड ध्वजा तापर सुहात, जय जगमग जगमग लहलहात॥4॥
- जय घण्टा छत्र सु चमर जान, जय बँधी रतनमाला प्रमाण।
जय नाना मणिमय शोभकार, राजत सो मानस्तम्भ सार॥5॥
- ता मूल सु चारों दिश निहार, जिन प्रतिमा सो है परम सार।
सुरगण पूजत जय जय उचार, कर नृत्य ताल स्वर को सम्हार॥6॥
- सननं सननं बाजे सितार, घननं घननं घन घण्ट धार।
द्रम द्रम द्रम द्रम बाजत मृदङ्ग, कर ताल तबल अरु मूह चङ्ग॥7॥
- छम छम छम छम नूपुर बजाय, क्षण भूमि क्षणक आकाश जाय।
तहाँ नाचत मघवा आप जान, तिहि शोभा को वरणें महान॥8॥
- इम नृत्य गान उत्सव महान, पूजनकर सुरपति हरष ठान।
जय पञ्च रतन मय अति सुरङ्ग, जय मानस्तम्भ दिपै अभङ्ग॥9॥
- जय मानी जन सब मान छोड़, देखत नावत शिर हाथ जोड़।
जय तातें मानस्तम्भ नाम, सार्थक कीन्हों शोभाभिराम॥10॥

जय ऐसो मानस्तम्भ सार, सोहे चारों दिश जिन निहार।
जिनराज विभव देखत जु सार, महिमा बरनत पावे न पार ॥11॥

दोहा

श्री जिन मानस्तम्भ की, गुणमाला सुविशाल।
जो नर पहिरे कण्ठ में, सुर शिव पावे हाल ॥12॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिङ्-स्थित-मानस्तम्भ-जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ पढ़कर पूजा का कार्य पूर्ण करें। तत्पश्चात् शान्तिहवन एवं पुण्याहवाचन करके शान्त्यष्टक, शान्तिभक्ति, यज्ञ दीक्षा समापन करके कार्य सम्पन्न करें।
(इति मानस्तम्भप्रतिष्ठा)

खण्डित प्रतिमा का फल

नख खण्डित होने पर	:	शत्रु भयकारक
अंगुली खण्डित होने पर	:	देश विनाशकारक
बाहु खण्डित होने पर	:	बन्धन कारक
नासिका खण्डित होने पर	:	कुल नाशकारक
चरण खण्डित होने पर	:	द्रव्य क्षयकारक
पादपीठ खण्डित होने पर	:	स्वजन नाशक
चिह्न खण्डित होने पर	:	वाहन नाशक
परिकर खण्डित होने पर	:	सेवक नाशक
छत्र खण्डित होने पर	:	लक्ष्मी नाशक
श्रीवत्स खण्डित होने पर	:	सुख नाशक
कान खण्डित होने पर	:	बन्धु नाशक

ग्रीवा से खण्डित बिम्ब सर्वथा अपूजनीय है

यन्त्र प्रतिष्ठा*

मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र एवं शान्तिमन्त्राराधन करके सिद्धभक्ति पढ़ें। पश्चात् जिन यन्त्रों की प्रतिष्ठा करना हो उन्हें सर्वोपधि के जल से शुद्ध कर निम्न मन्त्र पढ़कर केशर लगाना चाहिए। फिर जल से अभिषेक करें।
ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

ॐ ह्रीं अहं श्रीजिनाय परमजिनाय नमः यन्त्रं स्नपयामि।

(21 बार मन्त्रोच्चारण कर जल की धारा दें)

शान्तिधारा-मन्त्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारिलोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि- पण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। सर्वेषां पुष्टिरस्तु। तुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वशान्तिर्भवतु शान्तिर्भवतु शान्तिर्भवतु।

(यन्त्रों का शुद्ध वस्त्र से मार्जन करें तथा यह मन्त्र 19 बार पढ़ते हुए पुष्पक्षेपण करें)

ॐ परमहंसाय नमः हं सः हं सः हं हं हं ह्रौं ह्रौं हः असिआउसा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र्येभ्यो नमः।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अ सि आ उ सा अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ऐ ओ औ अं अः, क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व, श ष स ह आयुष्यप्राणाः अमुष्य जीवाः इह स्थिताः अमुष्य (अमुष्य के स्थान पर यन्त्र का नाम लेवें।) यन्त्र मन्त्र तन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि कायवाङ्मनश्चक्षुश्रोत्रघ्राण- प्राणाः इहैवायन्तु अहं अत्र सुखं चिरं तिष्ठन्तु।

(9 बार णमोकारमन्त्र पढ़ें)

इस प्रकार शुद्धि करके यन्त्रों की पूजा करके उपयोग में लाना चाहिये।

* आचार्य महावीर कीर्ति स्मृति ग्रन्थ।

यन्त्रपूजा
उपजाति

करोमि विघ्नौघ-विनाशहेतु, आह्वानसंस्थापन सन्निधानम् ।
यन्त्रस्य पूजाविधयोघसर्व-रक्षाभिधानस्य मनो मुहूर्तम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हः अ सि आ उ सा हूं फट् रक्षय रक्षय यन्त्रस्य अत्र
एहि एहि संवौषद् आह्वानं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम
सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

इन्द्रवज्रा

श्रीमत्कनत्काञ्चननिर्मितोरु, भृङ्गारनालाद्वलितैः पयोभिः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हः अ सि आ उ सा अहं नमः । ॐ ह्रीं भगवते ह्स्त्रूं
क्षां झ्रौं यन्त्राधिपतये चौरारिमरि-शाकिनी-प्रभृति- घोरोपसर्गदुष्ट-
ग्रहराक्षस-भूतप्रेत- पिशाचादीन् अपनय अपनय सर्वरोगापमृत्यु- विनाशाय
फट् आयुष्ये वर्धय वर्धय सर्वयजमानस्य रक्षां कुरु कुरु लक्ष्मी-प्रभावोदितं
तुष्टि पुष्टि आयुरारोग्य- क्षेमकल्याण-विभव- वितरणोपेतवरप्रसाद- सद्धर्म-
वृद्धयर्थं सिद्धयर्थं शान्त्यर्थं यन्त्रराजाय(यन्त्र का नाम) जलं
समर्पयामि स्वाहा ।

प्रक्षीणपङ्ककसुसारसारैः सौरभ्यसम्प्रीणितविश्वलोकैः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हः यन्त्रराजायचन्दनं समर्पयामि स्वाहा ।

शाल्यक्षतैः क्षीरपयोभिफेन-पिण्डौपमै रक्षत-मुक्तलक्ष्यैः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हः यन्त्रराजायअक्षतान् समर्पयामि स्वाहा ।

मन्दारजाती-वकुलादिमुक्त-कुन्दादिपुष्पैः सुरभीकृताशैः ।
यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हः यन्त्रराजाय.....पुष्पं समर्पयामि स्वाहा ।

शाल्यत्रापक्वात्रसमस्तशाकैः क्षीरात्रयुक्तैश्चरुभिर्विचित्रैः ।

यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हः.....यन्त्रराजाय.....नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा ।
कर्पूरदीपज्वलितैः प्रदीपैः निशेषताशेषदिगन्धकारैः ।

यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हः यन्त्रराजाय.....दीपं समर्पयामि स्वाहा ।
पापौघपूर्णेः घनधूपधूपैः धूमैः सुकालाङ्गरुचन्दनौघैः ।

यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हः यन्त्रराजाय.....धूपं समर्पयामि स्वाहा ।
नारङ्गपूगाग्रसुमातुलिङ्ग-कञ्जारमोच्यादिफलैर्मनोऽहैः ।

यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हःयन्त्रराजाय.....फलं समर्पयामि स्वाहा ।
शीताम्बु-गन्धाक्षत-पुष्पमुख्यैः द्रव्यैः कृतं चार्घ्यमिदं ददेऽहम् ।

यन्त्रस्य विघ्नौघशमाय सर्व-रक्षाभिधानस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हःयन्त्रराजाय.....अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।
जयमाला*

बीजाक्षरैरुत्कटशक्तिपूतै, ह्रींमादितीर्थङ्करवाच्यभूतैः ।

सुमन्त्रितं यन्त्रमिदं जगत्सु, करोतु रक्षां परितो विपत्सु ॥1॥

प्रतिष्ठिता यत्र समस्तदेवा, ज्योतिष्कवैमानिकभावना वा ।

पातालदेवाः सकलार्तशक्तिं, निघ्नन्तु विघ्नानि जिनेन्द्रभक्त्या ॥2॥

धर्मार्थकामार्थमहार्थसिद्धयै, जन्मार्तकामार्तजरार्तमुक्त्यै ।

संस्थापयन्तु प्रचुरेण लोका, मह्यामधो यन्त्रमिदं सदैव ॥3॥

देवै र्मनुष्यैः पशुभिः प्रकृत्या, चतुर्विधैर्वै प्रचुरोपसर्गैः ।

रक्षां प्रकर्तुं प्रभवन्ति लोके, यद्यन्त्रपूजाविधयो सदैव ॥4॥

जिनालयादिप्रभवादिकार्ये, बिम्बस्य चौर्यक्षरणादिवार्ये ।

निर्माणे मङ्गलकार्यभूते, संस्थापयेद् यन्त्रमिदं जगत्सु ॥5॥

सर्वकार्यप्रसिध्यर्थं विश्वविघ्नौघशान्तये ।

यन्त्रपूजाविधिर्नित्य-माशीर्वादं प्रयच्छतु ॥6॥

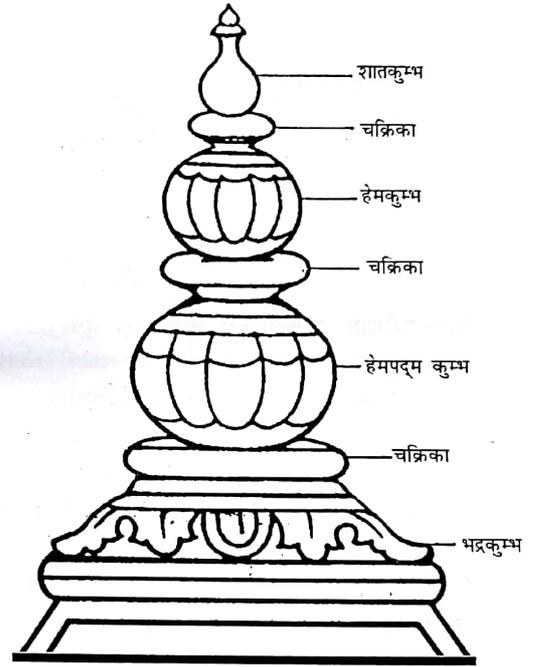
ॐ हं ह्रीं हूं ह्रौं हःयन्त्रराजाय.....अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।
महार्घ्यं, शान्तिपाठ, विसर्जन एवं शान्तिभक्ति पढ़कर कार्य समाप्त करें ।

कलशारोहण विधि

- मन्त्र- (1) शान्ति मन्त्र
मण्डल- (1) यागमण्डल
(2) पञ्च परमेष्ठी मण्डल (इनमें से कोई एक)
यन्त्र- (1) विनायक यन्त्र (2) आकाश यन्त्र
भक्तियाँ (1) सिद्धभक्ति (2) श्रुतभक्ति (3) आचार्यभक्ति
(4) चारित्र्यभक्ति (5) चैत्यभक्ति (6) शान्तिभक्ति

कलशारोहण हेतु सावधानियाँ

1. शिखर मण्डोवर से सवा, डेढ़ या पौने दो गुना ऊँचा निर्मित किया गया हो।
2. बिम्ब स्थापना के पूर्व निर्माण कार्य पूर्ण हो गया हो कारीगर एवं मजदूर का कोई कार्य शेष न रह गया हो।
3. कलशारोहण के लिए शिखर एवं कलश तक पहुँचने के लिए लकड़ी की पाड़ (साधन) सुरक्षित एवं मजबूत हों।
4. क्षीरार्णव ग्रन्थानुसार कलश की उत्कृष्ट ऊँचाई मन्दिर की सम्पूर्ण ऊँचाई का 6 (छटवाँ) हिस्सा होना चाहिये।
5. कलश लगाने के शंकु मजबूत हो उसमें कलश, कलश-शुद्धि के पूर्व ही लगाकर देख लें।
6. कलश के नग विषम संख्या में हों उसमें छिद्र न हों। एक दूसरे में ठीक से व्यवस्थित हो जाते हों।
7. वेदी की शुद्धि के साथ कलशशुद्धि करवा लें।
8. कलश लगाने वाले शुद्ध धोती दुपट्टा पहने हों।
9. कलश को लगाने हेतु सीमेंट या पीली मिट्टी छने पानी में बनवाने के निर्देश दें।
10. कारीगर स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर कार्य सम्पादित करें।
11. मूलनायक भगवान के दाहिने हाथ के पीछे की विदिशा में लगाने का विधान मिलता है।
12. ध्वजकलश से कम से कम तीन फुट ऊँचा हो जिसे पूर्व में ही लगा कर देख लें अर्थात् ध्वजा फहराते समय कलश से ऊँची बनी रहे।



कलशारोहण के समय कलश का एक-एक नग लगाते हुए उसका अर्घ्य समर्पित करके क्रमशः सभी नग लगाना चाहिए। तत्पश्चात् ध्वजा लगानी चाहिए।

नोट - क्षीरार्णव ग्रन्थ पृष्ठ 161 के अनुसार कलश की ऊँचाई जिनालय की ऊँचाई से 6वां भाग उत्कृष्ट मानी गयी है।

13. ध्वजदण्ड का स्थान शिखर की ऊँचाई के 24 भाग करके 22 वें भाग में रखें।
14. ध्वजा का आकार सही हो तथा उसे ध्वजदण्ड में लगाकर देख लें।
15. कलशारोहण एवं ध्वजारोहण जिनबिम्ब स्थापित करने के पश्चात् करें।
16. कलशारोहण के समय भक्तियाँ विधिवत् करें।
17. तड़ित चालक की व्यवस्था अनिवार्यतः देख लें।

प्रस्तावना

अनुष्टुभ्

नतामरशिरौ - रत्नप्रभाप्रोतनखत्विषे।
 नमो जिनाय दुर्वारमारवीरमदच्छिदे ॥1॥
 जिनवाग्देवतां नत्वा गुरुन् साधून्पुनः पुनः।
 कलशारोहणार्चा वै करोमि जिनयज्ञके ॥2॥
 तत्रादौ गन्धकुट्टयन्तः सकलीकरणान्वितः।
 देवशास्त्रगुरुणां च पूजनं कुरुतां ततः ॥3॥
 महर्षीणां पर्युपासं पञ्च-कौमारपूजनम्।
 पञ्च-सद्गुरु-पूजां च शान्तिधारात्रयं पुनः ॥4॥
 अर्हत्सिद्धमुनीनाञ्चाष्टकं कृत्वा पृथक्ततः।
 कुम्भस्य स्नपनं गन्धलेपनं मालयार्चनम् ॥5॥
 तत्र पुष्पाञ्जलिं क्षिप्त्वा सिद्धार्थकुशदर्भकान्।
 परिक्षिप्य जलैः कुम्भं सेचनीयं पृथक् पृथक् ॥6॥
 सुरं मेघकुमाराख्यं पूजयेत्सलिलादिभिः।
 पूजयेत् शङ्खदेवञ्च सप्तावयवपूजनम् ॥7॥
 ध्वजादिरोहणं कृत्वा मन्त्रोच्चारणपूर्वकम्।
 मङ्गलद्रव्यविन्यासं स्वकीयपरिपूजनम् ॥8॥
 कुम्भे ब्रगधरणं चैव चन्दनैर्लेपनं पुनः।
 रक्षाभिधानं पुण्याहं घोषणं स्वस्तिवाचनम् ॥9॥
 आशीर्वादविसर्गं च सर्षपान् मस्तके क्षिपेत्।
 मन्दिरं त्रिकवारं च परिक्राम्येत मूर्धनि ॥10॥

शिखरस्य स्वर्ण-कुम्भं शङ्खौ संस्थापयेत्पुनः।
 जयवाद्यादि-सोत्साहं नृत्यगीतैर्महाजनैः ॥11॥
 सयागं च महापूजां महादानं पुनः पुनः।
 द्रव्यदानं तु ताम्बूलैः फलैः सन्तोषयेत्कृती ॥12॥

जिनमन्दिर में देव, शास्त्र, गुरु की पूजा करके घटयात्रा पश्चात् कलशशुद्धि विधान, 81 कलशों द्वारा शुद्धि, चन्दनलेपन, शान्तिधारा आदि क्रियाएँ करके भक्तियाँ करें। कलशा के सातों नगों पर पुष्पक्षेपण कर जिनालय के ऊपर ले जावें और कलशा सिर पर रखकर शिखर की या जिनालय की तीन प्रदक्षिणा करें। पश्चात् शिखर की शुद्धि 21 मन्त्रों द्वारा करना चाहिए। कलशारोहण और ध्वजारोहण वादित्रवादन पूर्वक जयकारों के साथ करें। अन्त में शान्ति हवन, पुण्याहवाचन, शान्तिभक्ति, शान्तिपाठ विसर्जन करें।

प्रथम दिवस

जाप्यानुष्ठान एवं कलशशुद्धि

प्रातः नित्यमह पूजा करके मङ्गलध्वजा की स्थापना करके कार्य आरम्भ करें। फिर पात्रशुद्धि, सकलीकरण, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्राराधन कर सवालाख या कम से कम 51 हजार शान्ति मन्त्र का सङ्कल्प करके जाप्य प्रारम्भ करें। घटयात्रा विधि करें और 81 कलशों द्वारा कलश की शुद्धि करके कार्य सम्पादित करें।

मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्राराधन करके सभी भक्तियाँ पढ़कर पृष्ठ 115 से महर्षिपर्युपासन अर्घ्य, चारित्र्यभक्ति एवं चौबीस गणधरों के अर्घ्य चढ़ाये।

तदनन्तर नीचे के श्लोक बोलते हुए कलश पर पुष्पक्षेपण करें।

अनुष्टुभ्

वृषभोऽजितनामा च शम्भवश्चाभिनन्दनः।
 सुमतिः पद्मभासश्च सुपाश्वो जिनसत्तमः ॥
 चन्द्राभः पुष्पदन्तश्च शीतलो भगवान्मुनिः।
 श्रेयांश्च वासुपूज्यश्च विमलो विमलद्युतिः ॥
 अनन्तो धर्मनामा च शान्तिः कुन्थुर्जिनोत्तमः।
 अरश्च मल्लिनाथश्च सुव्रतो नमितीर्थकृत् ॥

हरिवंश-समुद्भूतोऽरिष्टनेमि-जिनेश्वरः ।
ध्वस्तोपसर्गदित्यारिः पार्श्वो नागेन्द्रपूजितः ॥
कर्मान्तकृन्महावीरः सिद्धार्थकुलसम्भवः ।
एते सुरासुरौघेण पूजिता विमलत्विषः ॥
पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभिः ।
चतुर्विधस्य सङ्घस्य शान्तिं कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥

(कलश पर पुष्प वर्षा करें)

वासुपूज्यस्तथा मल्लिर्नेमिः पार्श्वोऽथ सन्मतिः ।
कौमारे पञ्च-निष्क्रान्तास्तान्यजे विघ्नशान्तये ॥

ॐ ह्रीं पञ्च-कौमार-निष्क्रान्त-जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हन् सिद्धस्तथा सुरिरुपाध्यायोऽथ सन्मुनिः ।
पञ्चैते गुरवो नित्यमाराध्या कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शत्रवो निधनं यान्तु हतास्ते परिपन्थिनः ।
सुखमायुः सदा चैवं प्रतापोऽप्रतिमोऽस्तु च ॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते शान्तिनाथाय सर्वशान्तिकराय सर्वक्षुद्रोपद्रवनाशनाय
सर्वपरकृतपरचक्रविध्वंसनाय जिनमतसूर्योद्योतकाय नमः जरां छिन्द छिन्द
जन्म छिन्द छिन्द वैरिणं छिन्द छिन्द विषं छिन्द छिन्द सर्पवृश्चिकभयं
छिन्द छिन्द सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु ।

कलशा पर तीन बार शान्तिधारा देवें तदनन्तर अष्टद्रव्य से पूजा करें ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
व्योमगङ्गाजलैः पूतैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
चन्दनं मिश्रोदकाद्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
सदृक्षै रक्षतैर्विद्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
कुन्दादिसमुदायैश्च यजेऽहं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
चरुभिः स्वर्णकस्थाल्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
प्रदीपैर्घृतपूराद्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
धूपैर्धूपित् धूम्राग्रैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हत्सिद्धमुनीनां च क्रमौ परमपावनौ ।
मोचचोचफलाद्यैश्च यजेऽहं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपसुधूपकैः ।
फलैरर्घैर्महापूतैरर्हत्सिद्धमुनीन् यजे ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ प्रीयन्तां प्रीयन्तां सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकेशास्त्रिलोक- महितास्त्रि-
लोक-मध्ये तीर्थङ्करा भगवन्तोऽर्हन्तः परमवृषभादयो भुवनत्रयजनानां
तेजः प्रताप-बलवीर्य- लक्ष्मी-भाग्य- सौभाग्यकरा भवन्तु । ह्रीं ह्रीं
हूं ह्रीं हः अजरामरा भवन्तु । सर्वशान्तिं तुष्टिं-पुष्टिं बलं वीर्यं च कुर्वन्तु
स्वाहा ।

(कलशा पर शान्तिधारा देवें)

यन्त्रप्रस्थापितस्वर्णभृङ्गनिर्यातसज्जलैः ।
सेचयामि महोत्साहात्स्वर्णकुम्भमहोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं भृङ्गारादिकलशक्षालनं करोमि ।

हेमाभकर्तृसत्कुम्भैश्चन्दनादिसुगन्धितैः ।
देवाराध्यजनोत्साहे स्नपनं ते करोम्यहम् ॥

ॐ ह्रीं सुगन्धितसलिलेन कलशक्षालनं करोमि ।

पुनः पुनर्विलिम्पामि निर्लिप्तं गणपूजितम् ।
स्वर्णकुम्भमहोत्साहे यजेऽहं जिनमन्दिरम् ॥

ॐ ह्रीं चन्दनेन पुनर्लिप्तं करोमि ।

क्षीराणवजलैः शुभ्रैः सुगन्धै रससंयुतैः ।
कलशान् शोधयेत्सम्यक् स्थैर्यार्थं मन्दिरोपरि ॥

ॐ ह्रीं जलेन कलशं परिषेचयामि ।

जिनमन्दिर-रक्षार्थं कुम्भादीनां च रोहणम् ।
करोमि द्योतनार्थं च ततः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

ॐ ह्रीं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ।

सिद्धार्थकुशदर्भादीन् क्षेपयामि समन्ततः ।
तेन चैत्यगृहद्वारे क्षेत्र-रक्षार्थं-मुत्तमान् ॥

ॐ ह्रीं सिद्धार्थकुशदर्भान् समन्तात् सर्वदिक्षु कुम्भोपरि क्षिपामि ।

(कलश के चारों ओर सरसों का क्षेपण)

चन्दनैः चन्द्र-संकाशैः कर्पूरादि-विमिश्रितैः ।
जिन-प्रासाद-कुम्भं वा स्वस्तिकेन विभूषये ॥

ॐ ह्रीं कलशोपरि मङ्गल स्वस्तिकं आरोपयामि ।

जिनाग्नि-स्पर्श-मात्रेण त्रैलोक्यानुग्रहक्षमाः ।
तेषां पुण्य-समूहेन वृत्ता धार्याः वरम्रजः ॥

ॐ ह्रीं कलशोपरि मङ्गलमाला वेष्टयामि ।

पञ्चवर्णमयैः सूत्रैस्तन्तुभिः सप्तभिः वरैः ।
कुर्वे रक्षाविधानं तत् कुम्भकस्य च वेष्टनम् ॥

इति पञ्चवर्ण-सूत्रेण सप्तवारं कलश वेष्टनं करोमि ।

इस प्रकार कलश शुद्धि करके शान्तिपाठ, विसर्जन एवं शान्तिभक्ति करें।
कलश पवित्र एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।

विधान अनुष्ठान

द्वितीय दिवस

प्रातः नित्यमह पूजा, यागमण्डल विधान या पञ्चपरमेष्ठी विधान करें।

शिखरशुद्धि एवं कलशारोहण

तृतीय दिवस

प्रातः नित्यमह पूजा करके, शिखरशुद्धि, कलश एवं ध्वजारोहण करके शान्तिहवन एवं विसर्जन करना चाहिए।

शिखरशुद्धि¹

मङ्गलाष्टक, पात्रशुद्धि, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्राराधन, अभिषेक, नित्यमह, विनायकयन्त्र पूजा कर चैत्यभक्ति करके मन्दिर शिखर की शुद्धि करना चाहिए।

- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अहं अ सि आ उ सा मन्दिर-शिखरस्य सर्वशान्त्यर्थं रत्नत्रय-प्राप्त्यर्थं प्रथम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
- ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रुं श्रीं श्रः हं सं पः ठः ठः आत्मविशुद्धिकरणार्थं मोहादि-विघ्न-विनाशार्थं च द्वितीय-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
- ॐ ह्रीं क्लृं हं सं श्रीं श्रीं क्रौं क्लीं सकलपाप-विध्वंसनार्थं तृतीय-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
- ॐ ह्रीं ख्लृं हां ह्रीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा चतुर्थ-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
- ॐ ह्रीं ग्लृं श्रीं क्रौं इवीं रः रः हं हः पञ्चम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
- ॐ ह्रीं घ्लृं हां ह्रीं हूं हौं हः श्रीं श्रीं श्रुं श्रीं श्रः षष्ठ-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
- ॐ ह्रीं झ्लृं हां श्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सप्तम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
- ॐ ह्रीं च्लृं हं सं श्रीं श्रीं क्रौं क्लीं अष्टम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
- ॐ ह्रीं छ्लृं श्रीं हं सः हां ह्रीं द्रीं ह्रीं हः नवम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
- ॐ ह्रीं ज्लृं अहं णमो विउलमदीणं दशम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।

¹ इन मन्त्रों को परिष्कृत किया गया है।

11. ॐ ह्रीं इम्ब्यु अर्हं णमो दशपुव्वीणं एकादशम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
12. ॐ ह्रीं उम्ब्यु अर्हं णमो चउदशपुव्वीणं द्वादशम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
13. ॐ ह्रीं अर्हं उम्ब्यु णमो अट्ट-महाणिमित्त-कुसलाणं त्रयोदशम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
14. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय थम्ब्यु-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय चतुर्दशम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
15. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय धम्ब्यु- बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय पञ्चदशम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
16. ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय न्म्ब्यु-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय षोडशम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
17. ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय स्म्ब्यु-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय सप्तदशम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
18. ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्म्ब्यु-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय अष्टादशम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
19. ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय ब्म्ब्यु-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय एकोनविंशतितम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
20. ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भ्म्ब्यु-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय विंशतितम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।
21. ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः म्ब्यु-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय एकविंशतितम-कलशेनाभिषेकं करोम्यहम् ।

इन 21 कलशों द्वारा शिखर की शुद्धि कराके शिखर पर चार दिशा में चार स्वस्तिक बनाकर तीन प्रदक्षिणा देकर कलशारोहण की क्रिया करें ।

कलशारोहण एवं ध्वजारोहण

अनुष्ठुभ्

लौहरूप-महाशङ्को वैरवंश-विनाशकः ।

शिखरे त्वं निषीदात्र महाभक्त्या स्थितो भव ॥

ॐ ह्रीं हे शङ्को! आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः सन्निहितो भव भव वषट् ।

(कलशदण्ड (कुश) का स्पर्श कर पुष्प छोड़ें)

कलश के सबसे ऊपर के नग में आकाशमण्डल यन्त्र स्थापित करके नीचे के नग से क्रमशः कलश स्थापना करें ।

अनेकान्त-मतोद्योत-प्रचण्डोऽथ दिवामणिः ।

एवं वितर्ककं शङ्कु चार्यं पुष्पवरोत्तमैः ॥

ॐ ह्रीं शङ्कुवर्चनं करोमि ।

(कुश पर पुष्प छोड़ें)

- (1) सद्धर्म-कुम्भ-घटितस्य सुकुम्भकस्य, धाम्ना सुदीर्घमधिपीठमलङ्कारिण्युः । देवाधिदेवभवने प्रथमं सुकुम्भं, भद्रेति नामकमहं विनिवेशयामि ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये प्रथमस्थाने भद्रकुम्भस्थापनं करोमि ।

(कलश का प्रथम नग स्थापित करें)

हेममयीं भद्रकुम्भं पूजये विधितोऽन्वहम् ।

जिनमन्दिरमूर्धस्थां परिपूर्तिं प्रसूचिकाम् ॥

ॐ ह्रीं भद्रकुम्भपूजनं करोमि ।

(प्रथम नग पर अर्घ्य चढ़ावें)

- (2) स्थाल्या उपरिमे भागे सच्चाामीकर-चक्रिकाम् ।

स्थापयेऽहं विशेषेण मुखे च कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये द्वितीयस्थाने भद्रकुम्भपीठे चक्रिका-स्थापनं करोमि ।

(द्वितीय नग की स्थापना करें)

चक्रिकां हि समर्चामि धर्मचक्र-समन्विताम् ।

पूजयेत्कलशोद्दारे जिनमन्दिर-रक्षकान् ॥

ॐ ह्रीं भद्रकुम्भकलशपीठे चक्रिकापूजनं करोमीति स्वाहा ।

(द्वितीय नग पर अर्घ्य चढ़ावें)

- (3) हेमपद्मस्थितं देव करोमि हेमपद्मवत् ।

जिनमन्दिर-मूर्धस्थं स्थिरं तिष्ठ दिवानिशम् ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये तृतीयस्थाने हेमपद्मकुम्भस्थापनं करोमि ।

(तृतीय नग की स्थापना करें)

हेमपद्म-निभं हेमपद्मकुम्भं समर्चयेत् ।

प्रतिष्ठाया विधौ नित्यं जलगन्धाक्षतादिभिः ॥

ॐ ह्रीं हेमपद्मकुम्भार्चनं करोमीति स्वाहा ।

(तृतीय नग पर अर्घ्य चढ़ावें)

- (4) स्थाल्यां उपरिमे भागे सच्चाामीकर-चक्रिकाम् ।

चिरं तिष्ठतु शोभा च करिभूतां जिनमूर्ध्नि ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये चतुर्थस्थाने हेमपद्मकुम्भपीठे कनकचक्रिका-स्थापनं करोमि ।

(चतुर्थ नग की स्थापना करें)

चक्रिका-पूजनं कुर्वे भृङ्गरक्षार्थमेव च ।
जलगन्धादिभिः सम्यक् शान्त्यर्थं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं कनकचक्रिका-पूजनं करोमीति स्वाहा ।

(चतुर्थ नग पर अर्घ्य चढ़ावे)

(5) हेमकुम्भमहे स्थालीं चक्रिकोपरि सुस्थिराम् ।
चिरं जयतु साम्राज्यं, पदवी यत्प्रसादतः ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये पञ्चमस्थाने हेमकुम्भ-स्थापनं
करोमि । (पञ्चम नग की स्थापना करें)

हेमकुम्भमहे स्थालीं पूजयेत् विधितो मुदा ।
जिनमन्दिरनिर्माणे रक्षार्थं तदुपद्रवात् ॥

ॐ ह्रीं हेमकुम्भस्थाली-पूजनं करोमीति स्वाहा ।

(पञ्चम नग पर अर्घ्य चढ़ावे)

(6) चामीकरचक्रिकां च कर्मकाण्डनिकन्दना ।
अत्रैव च स्थिरीभूत्वा चिरं तिष्ठ महामखे ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये षष्ठस्थाने हेमकुम्भकलशपीठे
चामीकरचक्रिका-स्थापनं करोमि । (षष्ठ नग की स्थापना करें)

षष्ठस्थाने हि सुस्थाप्या सच्चामीकरचक्रिका ।
चक्रिकापूजनं कुर्वे शान्त्यर्थं कलशोत्सवे ॥

ॐ ह्रीं चामीकरचक्रिका-पूजनं करोमीति स्वाहा (षष्ठ नग पर अर्घ्य चढ़ावे)

(7) शातकुम्भमयी-कुम्भे संस्थाप्या चूलिका वरा ।
सा कुम्भचूलिका प्रोक्ता तां कुर्वे सुभगस्थिताम् ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये सप्तमस्थाने शातकुम्भचूलिका-स्थापनं
करोमि । (सप्तम नग की स्थापना करें)

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैरष्टद्रव्यमनोहरैः ।

शातकुम्भमहे कुम्भचूलिकां पूजयेत् मुदा ॥

ॐ ह्रीं शातकुम्भचूलिका-पूजनं करोमि । (सप्तम नग पर अर्घ्य चढ़ावे)

मुक्तिदृती समासक्ते मूर्धनि स्तात्समा नवा ।

देवाराध्य जनोत्साहं मिथ्यादृङ्मदमर्दनम् ॥

ॐ ह्रीं कलशोपरिमालां धारयामि । (कलश पर माला बाँधें)

स्रग्धारणं गन्धलेपं सर्वायवचर्चनम् ।
रक्षाभिधानमुद्घोष्य स्थापयेत्कलशं जनः ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्म-मन्दिरपरि शिराप्रदेशे भद्रपीठ महाकुम्भ महापीठ चिरं
स्थायीभव सर्वजीवानां क्षेमायुरारोग्यं वृद्ध्यर्थं तिष्ठ तिष्ठ याजक-यजमानादीनां
सर्वसौख्यविधानार्थं प्रत्यूहव्यूहप्रणाशनार्थं कल्पान्तरं स्थायी भव ।
कलश पर सब दिशा में पुष्पक्षेपण करें ।

ध्वजारोहण

तदनन्तर 68 पृष्ठ से नवदेवपूजा करके यह मन्त्र पढ़कर ध्वजारोहण
करना चाहिए ।

वसन्ततिलका

रत्नत्रयात्मकतयाभिमतेऽत्रदण्डे, लोकत्रयप्रकृतकेवलबोधरूपम् ।
सङ्कल्पपूजितमिदं ध्वजमर्च्यलग्ने, स्वारोपयामि सति मङ्गलवाद्यघोषे ॥

ॐ णमो अरिहंताणं स्वस्तिभद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्तिर्भवतु स्वाहा ।

मन्दिर के कलश से ध्वज की ऊँचाई का फल

अनुष्टुभ

कलशादुच्छ्रिते हस्तं ध्वजे नीरोगता भवेत् ।

द्विहस्तमुच्छ्रिते तस्मात्पुत्रर्द्धिर्जायते परा ॥

त्रिहस्तं सस्यसम्पत्तिर्नृपवृद्धिश्चतुकरम् ।

पञ्चहस्तं सुभिक्षं स्याद्राष्ट्रवृद्धिश्च जायते ॥

मन्दिर की शिखर पर लगे कलश से ध्वज

एक हाथ ऊँची- आरोग्यकारक दो हाथ ऊँची- पुत्र एवं सम्पत्तिकारक
तीन हाथ ऊँची- धन-धान्यकारक चार हाथ ऊँची- राजा की वृद्धिकारक
पाँच हाथ ऊँची- सुभिक्ष और राष्ट्रवृद्धि कारक

ध्वजारोहण कर शान्त्यष्टक, शान्तिभक्ति पढ़कर कार्य सम्पन्न करें। पश्चात्
शान्तिहवन, पुण्याहवाचन, शान्तिपाठ, विसर्जन कर यज्ञदीक्षा समापन विधिपूर्वक
कार्य करें।

शान्ति हवन विधि

- मन्त्र - अनुष्ठान में किया गया जाप मन्त्र
मण्डल - अनुष्ठान मण्डल
यन्त्र - विनायक यन्त्र
भक्तियों - (1) सिद्धभक्ति (2) शान्तिभक्ति

हवन की सावधानियाँ

1. समिधा के रूप में चन्दन की लकड़ी एवं कपूर का प्रयोग श्रेष्ठ है।
2. लिपिस्टिक, नैलपालिश या हिंसा सौंदर्य प्रसाधन वाले हवन न करें।
3. कुण्डों की संख्या विषम होनी चाहिए।
4. धूप शुद्ध एवं मर्यादित होनी चाहिए।
5. होमाहुति अग्निवास के अनुसार करें।*
6. तीनों मुख्य कुण्डों की लम्बाई चौड़ाई एवं गहराई एक अरतति (15 इंच) होना चाहिए।
7. हवन कुण्ड गीले नहीं होना चाहिए।
8. अँगूठी, कड़ा, छल्ला, श्रीफल आदि हवन कुण्ड में रखना आगमोक्त नहीं है।
9. 8 वर्ष से छोटे बच्चों को हवन करना वर्जित है।
10. छोटे बच्चों को गोद में लेकर हवन न करें।
11. पेंट-शर्ट, सलवार-कुर्ता, जींस, टी-शर्ट आदि पहिनकर हवन न करें। शुद्ध धोती-दुपट्टा, साड़ी पहिनकर ही करें।
12. हवन आहुति में पुष्पों का प्रयोग आगमोक्त नहीं है। आहुति में साकिल्ल अल्पमात्रा में ले तथा प्रत्येक मन्त्र में आहुति करें।

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा।

(जल के छींटे लगावें)

ॐ ह्रीं श्रीं शीं भूः स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करें)

* अष्टाहिनक, दशलक्षण आदि महापर्वों के पश्चात् अग्निवास देखना अनिवार्य नहीं है। (पुस्तक चक्रावली पृष्ठ 66)

(147)

प्रतिष्ठा पराग

- ॐ ह्रीं नीरजसे नमः। (जलं) ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः। (चन्दनं)
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः। (अक्षतं) ॐ ह्रीं विमलाय नमः। (पुष्पं)
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः। (नैवेद्यं) ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योतनाय नमः। (दीपं)
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः। (धूपं) ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः। (फलं)
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः। (अर्घ्यं) (उपर्युक्त मन्त्रों से भूमिशुद्धि करें।)

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थङ्कराय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्राय पवित्रजलेन स्थलशुद्धिं होमकुण्डशुद्धिं पात्रशुद्धिं समिधाशुद्धिं साकल्यशुद्धिं च करोमि।
(जल द्वारा पात्रों की शुद्धि करें।)

अनुष्ठुभ्

अहं मन्त्रं नमस्कृत्य रत्नत्रय-तपोनिधिम्,
सिद्ध-यन्त्रं स्थापयामि सर्वोपद्रव-शान्तये।

श्रीपीठे विनायकयन्त्र-स्थापनं करोमि

(यन्त्र स्थापित करके अर्घ्य समर्पित करें)

उपजाति

द्रव्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे ह्यनर्घ्य-मर्घ्यं वितरामि भक्त्या।
भवे भवे भक्तिरुदारभावाद्येषां सुखायास्तु निरन्तराया ॥

ॐ ह्रीं विनायक-सिद्धयन्त्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो वायुकुमार! सर्वविघ्नविनाशनाय महीपूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा।
(वस्त्र से कुण्ड साफ करें)

भो मेघकुमार! धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा।
(जल से भूमि शुद्ध करें)

भो अग्निकुमार! धरां ज्वलय ज्वलय अं हं सं वं झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा।
(कपूर जलाकर कुण्ड शुद्ध करें)

इन्द्रवज्रा

चूर्णानि संमर्घं सितासितानि पीतानि रक्तानि हरिन्निभानि।

पात्रे निधायार्घ्यमनर्घ्यशील आचार्यभक्तिं प्रपठेद् यतात्मा ॥

(सौभाग्यवती स्त्रियाँ एवं अष्टकुमारियाँ कुण्ड पर चूर्ण स्थापित कर शोभायमान करें।)

ॐ ह्रीं अहं पञ्चवर्णसूत्रेण त्रीन् वारान् वेष्टयामि ।

(कुण्डों की कटनी पर सूत बाँधें)

ॐ ह्रीं अहं ह्रूं ह्रूं णिस्सहि आसने उपविशामि स्वाहा ।

(आसन पर बैठें)

ॐ नमोऽहंते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

(हवन में बैठने वाले सभी पात्रों के दाहिने हाथ में मौली बाँधें)

ॐ ह्रीं अहं मौनस्थितार्थं मौनव्रतं गृह्णामि स्वाहा ।

ॐ ह्रं ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रः नमोऽहंते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म- तिगिञ्छकेसरि- महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु- रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता- सीतासीतोदा-नारीनरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला- रक्तारक्तोदाःक्षीराम्भोनिधिजलं सुवर्णघट- प्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मन्त्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम् ।

(मन्त्र पढ़ते हुए जल शुद्ध करके मङ्गल कलश में भरें।)

ॐ ह्रीं अहं स्वस्तिविधानाय पुण्याहवाचनार्थं मङ्गलकलशं स्थापयामि ।

द्वतविलम्बित

रुचिर-दीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम् ।

तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमङ्गलकं मुदा ॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि ।

शार्दूलविक्रीडित

मध्ये-कर्णिकमहदार्थ-मनघं बाह्येऽष्ट-पत्रोदरे,

सिद्धान् सूरिवरांश्च पाठकगुरून् साधूंश्च दिक्पत्रगान् ।

सद्धर्मागमचैत्यचैत्यनिलयान् कोणस्थदिक्पत्रगान्,

भक्त्या सर्वसुरासुरेन्द्रमहितान् तानष्टधेष्ट्या यजे ।

ॐ ह्रीं अहंदादिनवदेवेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनय-गर्भितद्वादशाङ्ग-श्रुतज्ञानायार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।
(जिनवाणी को अर्घ्य दें)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(निर्ग्रन्थ गुरुओं को अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं होमार्थम् अग्नित्रयाधारभूतसमिधां स्थापयामि ।

(होमकुण्ड में समिधा स्थापित करें)

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्निं स्थापयामि ।

(दीपक से कपूर जलाकर अग्नि प्रज्वलित करें)

अनुष्टुभ

कुण्डत्रये महापूते सुधृत समिधान्तरे ।

द्रव्ये शुद्धाग्निना सद्यः प्रज्वलनं करोम्यहम् ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं स्वाहा इत्यग्निं सन्धुक्षयेत् ।

वसन्ततिलका

श्रीतीर्थनाथ-परिनिर्वृति-पूतकाले, ह्यागत्यवह्नि-सुरपामुकुटोल्लसदिभः

वह्निवृजैर्जिनपदेह-मुदारभक्त्या, देहुस्तदग्नि-महमर्चयितुं दधामि ।

ॐ ह्रीं चतुरस्रे तीर्थङ्करकुण्डे गार्हपत्याग्नौ कृत-संस्काराय तीर्थङ्करपरम-देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौकोर कुण्ड के पास अर्घ्य चढ़ावें)

उपजाति

गणाधिपानां शिवयातिकालेऽग्नीन्द्रोत्तमाङ्ग-स्फुरदुग्ररोचिः ।

संस्थाप्य पूज्यश्च समाहवनीयो, विघ्नौघ-शान्त्यै विधिना हुताशः ॥

ॐ ह्रीं वृत्ते गणधरकुण्डे आह्वनीयाग्नौ कृत-संस्काराय गणधर-देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(गोल कुण्ड के पास अर्घ्य चढ़ावें)

श्रीदक्षिणाग्निः परिकल्पितश्च, किरीटदेशात् प्रणिताग्निदेवैः ।

निर्वाणकल्याणक-पूतकाले, तमर्चये विघ्न-विनाशनाय ॥

ॐ ह्रीं त्रिकोणे सामान्यकेवलिकुण्डे दक्षिणाग्नौ कृत-संस्काराय सामान्य-केवलिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(त्रिकोण कुण्ड के पास अर्घ्य चढ़ावें)

आहुति मन्त्राः

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा।	ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा।
ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा।	ॐ ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा।
ॐ ह्रीं साधुभ्यः स्वाहा।	ॐ ह्रीं जिनधर्मायः स्वाहा।
ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा।	ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्यः स्वाहा।
ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा।	ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा।
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा।	ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा।

पीठिका मन्त्राः

षट्त्रिंशत्पीठिकामन्त्रैः काम्यमन्त्रावसानकैः।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः ॥1॥

सत्यजाताय नमः।	अर्हज्जाताय नमः।
परमजाताय नमः।	अनुपमजाताय नमः।
स्वप्रधानाय नमः।	अचलाय नमः।
अक्षयाय नमः।	अव्याबाधाय नमः।
अनन्तज्ञानाय नमः।	अनन्तदर्शनाय नमः।
अनन्तवीर्याय नमः।	अनन्तसुखाय नमः।
नीरजसे नमः।	निर्मलाय नमः।
अच्छेद्याय नमः।	अभेद्याय नमः।
अजराय नमः।	अमराय नमः।
अप्रमेयाय नमः।	अगर्भवासाय नमः।
अक्षोभ्याय नमः।	अविलीनाय नमः।
परमघनाय नमः।	परमकाष्ठयोगरूपाय नमः।
लोकाग्रवासिने नमो नमः।	परमसिद्धेभ्यो नमोनमः।
अर्हत् सिद्धेभ्योः नमो नमः।	केवलिसिद्धेभ्यो नमो नमः।
अन्तःकृतसिद्धेभ्यो नमो नमः।	परम्परसिद्धेभ्यो नमो नमः।
अनादिपरम्परसिद्धेभ्यो नमो नमः।	अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। आसन्नभव्य आसन्नभव्य। निर्वाणपूजार्ह
निर्वाण-पूजार्ह। अग्नीन्द्र अग्नीन्द्र स्वाहा।

काम्यमन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।
(हवन पात्रों पर पुष्पक्षेपण करें)

जाति-मन्त्राः

दशभिर्जातिमन्त्रैश्च तावदव्यग्रमानसः।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः ॥2॥

सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्यामि। अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्यामि।
अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्यामि। अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्यामि।
अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्यामि। अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्यामि।

रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्यामि।

सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते। सरस्वति सरस्वति स्वाहा।

काम्यमन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।
(हवन पात्रों पर पुष्पक्षेपण करें)

निस्तारक-मन्त्राः

निस्तारकादिभिर्मन्त्रैः त्रयोदशमितैरयम्।

इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः ॥3॥

सत्यजाताय स्वाहा।	अर्हज्जाताय स्वाहा।
षट्कर्मणे स्वाहा।	ग्रामयतये स्वाहा।
अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा।	स्नातकाय स्वाहा।
श्रावकाय स्वाहा।	देवब्राह्मणाय स्वाहा।
सुब्राह्मणाय स्वाहा।	अनुपमाय स्वाहा।
सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे।	निधिपते निधिपते। वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा।

काम्यमन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।
(हवन पात्रों पर पुष्पक्षेपण करें)

ऋषि मन्त्राः

ऋषिमन्त्रैर्महर्ष्युक्तैः अष्टादशमितैरथ ।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः ॥4 ॥

सत्यजाताय नमः।	अर्हज्जाताय नमः।
निर्ग्रन्थाय नमः।	वीतरागाय नमः।
महाव्रताय नमः।	त्रिगुप्ताय नमः।
महायोगाय नमः।	विविधयोगाय नमः।
विविधर्द्धये नमः।	अङ्गधराय नमः।
पूर्वधराय नमः।	गणधराय नमः।
परमऋषिभ्यो नमो नमः।	अनुपमजाताय नमो नमः।
सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। भूपते भूपते। नगरपते नगरपते। कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा।	

काम्यमन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।
(हवन पात्रों पर पुष्पक्षेपण करें)

सुरेन्द्रमन्त्राः

अथ षोडशभिर्मन्त्रैः सुरेन्द्रादिभिराञ्जसैः ।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः ॥5 ॥

सत्यजाताय स्वाहा।	अर्हज्जाताय स्वाहा।
दिव्यजाताय स्वाहा।	दिव्यार्च्यजाताय स्वाहा।
नेमिनाथाय स्वाहा।	सौधर्माय स्वाहा।
कल्पाधिपतये स्वाहा।	अनुचराय स्वाहा।
परम्प्रेन्द्राय स्वाहा।	अहमिन्द्राय स्वाहा।
परमार्हताय स्वाहा।	अनुपमाय स्वाहा।
सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। कल्पपते कल्पपते। दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते। वज्रनामन् वज्रनामन् स्वाहा।	

काम्यमन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।
(हवन पात्रों पर पुष्पक्षेपण करें)

परमराजादिमन्त्राः

मन्त्रैर्परमराज्याद्यैरथ द्वादशसंख्यकैः ।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः ॥6 ॥

सत्यजाताय स्वाहा।	अर्हज्जाताय स्वाहा।
अनुपमेन्द्राय स्वाहा।	विजयार्च्यजाताय स्वाहा।
नेमिनाथाय स्वाहा।	परमजाताय स्वाहा।
परमार्हताय स्वाहा।	अनुपमाय स्वाहा।
सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। उग्रतेजः उग्रतेजः। दिशाञ्जय दिशाञ्जय। नेमि-विजय नेमि-विजय स्वाहा।	

काम्यमन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।
(हवन पात्रों पर पुष्पक्षेपण करें)

परमेष्ठिमन्त्राः

परमेष्ठियादिभिर्मन्त्रैः षड्विंशतिमितैरथ ।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः ॥7 ॥

सत्यजाताय नमः।	अर्हज्जाताय नमः।
परमजाताय नमः।	परमार्हताय नमः।
परमरूपाय नमः।	परमतेजसे नमः।
परमगुणाय नमः।	परमस्थानाय नमः।
परमयोगिने नमः।	परमभाग्याय नमः।
परमर्द्धये नमः।	परमप्रसादाय नमः।
परमकांक्षिताय नमः।	परमविजयाय नमः।
परमविज्ञानाय नमः।	परमदर्शनाय नमः।
परमवीर्याय नमः।	परमसुखाय नमः।

परमसर्वज्ञाय नमः।

अर्हते नमः।

परमेष्ठिने नमो नमः।

परमनेत्रे नमो नमः।

सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। त्रिलोक्यविजय त्रिलोक्यविजय। धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते।
धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा।

काम्यमन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु

(हवन पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें तत्पश्चात् जप मन्त्र की दशांश आहुतियों करें)

विश्वशान्ति एवं कल्याण की भावना से निम्न शान्तिमन्त्रों की आहुति दे सकते हैं।

वृहच्छान्ति आहुति-मन्त्राः¹

उपजाति

नव्येन गव्येन घृतेन सम्यक्-सुवार्पिते-नाहुतिभिः कृताभिः।

होमं विधास्यामि समित्समानसंख्याभिरत्यूर्जितशान्ति-मन्त्रैः॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।

णमो उवज्जायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

चत्तारि मंगले-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा॥1॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्व-परकृच्छुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामर-विनाशनाय ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा॥2॥

ॐ हूं शूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्र-खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं सर्वशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहन्ताणं ह्रीं सर्वविघ्नशान्तिर्भवतु स्वाहा॥4॥

¹ प. म. ला. जे. प्र. ह. लि. हा.

ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा॥5॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थङ्कराय नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा॥6॥

ॐ अ हां सि हीं आ हूं उ हौं सा हः जगदातप-विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्यूर्-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय भ्म्ल्यूर्-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय म्म्ल्यूर्-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय र्म्ल्यूर्-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय घ्म्ल्यूर्-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय इ्म्ल्यूर्-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय स्म्ल्यूर्-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ख्म्ल्यूर्-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट-सहिताय बीजाष्ट-मण्डन-मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा ॥16 ॥

तव भक्ति-प्रसादाल्लक्ष्मी-पुर-राज्यगेह-पदभ्रष्टोपद्रव-दारिद्र्योद्भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्-भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्-भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु स्वाहा ॥17 ॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णकल्याणमङ्गलरूप-मोक्षपुरुषार्थश्च भवतु स्वाहा ॥18 ॥

पुण्याहवाचन-1

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसञ्जाता निर्वाणसागर-प्रभृतयश्चतुर्विंशति-भूत-परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ।

ॐ सम्प्रतिकालसम्भवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशति-परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ।

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदय-प्रभवा महापद्मादि-चतुर्विंशति-भविष्यत्परम-देवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ।

ॐ त्रिकालवर्ति-परमधर्माभ्युदयाः सीमन्धर-प्रभृतयो विदेह क्षेत्रगत विंशति-परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ।

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ।

ॐ सप्तर्षि-विशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेक-दिगम्बरसाधुचरणाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ।

इह वान्य-नगर/ग्राम-देवतामनुजाः सर्वे गुरु-भक्ता जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु। सर्वजिनभक्तानां धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियशः-प्रमोदोत्सवाः प्रवर्धन्ताम्। तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्टसम्पत्तिरस्तु। काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु। पापानि शाम्यन्तु। घोरानि शाम्यन्तु। पुण्यं वर्धताम्। धर्मो वर्धताम्। श्रीवर्धताम्। कुलगौत्रे चाभिवर्धताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु इर्वी क्वीं हं सः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्र-चरणारविन्देष्वानन्द-भक्तिः सदाऽस्तु।

पुण्याहवाचन-2

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषवरपुण्डरीकस्य परमेण तेजसा व्याप्तलोकालोकोत्तम-मङ्गलस्य मङ्गलस्वरूपस्य.....नामनः अनुष्ठानकर्तुः सर्वपुष्टिसम्पादनार्थं पुण्याहवाचनं करिष्ये।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं त्रिलोकोद्योतनकरा अतीतकालसञ्जाता निर्वाणसागर-महासाधुविमलप्रभ-शुद्धप्रभ-श्रीधर-सुदत्तामलप्रभोद्भाराग्नि-सन्मति-सिन्धु-कुसुमाञ्जलि-शिवगणोत्साह-ज्ञानेश्वर-परमेश्वर-विमलेश्वर-यशोधर-कृष्ण-मतिज्ञानमति-शुद्धमति-श्रीभद्रातिक्रान्तशान्ताश्चेति चतुर्विंशति-भूतपरमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥11 ॥

ॐ सम्प्रतिकालजाताः श्रेयस्करस्वर्गावतरणजन्माभिषेक-परिनिष्क्रमण-केवलज्ञाननिर्वाणकल्याणकविभूतिविभूषितमहाभ्युदयाः श्रीवृषभाजित-सम्भवाभिनन्दन-सुमतिपद्मप्रभसुपाशर्वचन्द्रप्रभ-पुष्पदन्तशीतल-श्रेयोवासुपूज्य-विमलानन्तधर्मशान्ति-कुन्ध्वरमल्लि-मुनिसुव्रतनमिनेमिपाशर्व-वर्धमानाश्चेति चतुर्विंशतिवर्तमानपरमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥12 ॥

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवाः महापद्म-सुरदेव-सुपाशर्व-स्वयंप्रभ-सर्वात्मभूत देवपुत्र-कुलपुत्रोद्भू-प्रोष्ठिल-जयकीर्ति-मुनिसुव्रतार-निष्पाप-निष्कपाय-विपुल-निर्मल-चित्रगुप्त-समाधिगुप्त-स्वयंभू-कन्दर्प-जयनाथ-विमलनाथ-देवपालानन्त-वीर्याश्चेति चतुर्विंशतिभविष्यत्तीर्थङ्करपरमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥13 ॥

ॐ त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमन्धर-युगमन्धर-बाहुसुवाहु-सञ्जातक-स्वयंप्रभ-वृषभाननानन्तवीर्य-सुरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु-भुजङ्गेश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयशोऽजितवीर्याश्चेति पञ्चविदेह-क्षेत्रविहरमाण-विंशतितीर्थङ्करपरमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥14 ॥

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥15 ॥

ॐ कोष्ठबीजपादानुसारिबुद्धिसम्भिन्नश्रोत्रज्ञाश्रमणाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥16 ॥

ॐ आमर्षश्चेल - जल्लमलविडुत्सर्ग - सर्वौषधयश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥17 ॥

ॐ जलफल-जङ्घा-तन्तु-पुष्प-श्रेणि-पत्राग्नि-शिखाकाश-चारणाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥18 ॥

ॐ अक्षीणमहानस अक्षीणमहालयाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥19 ॥

ॐ दीप्त तप्त-महोग्र-घोरपराक्रमाः घोरगुणतपसश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥110 ॥

ॐ मनोवाक्काय-बलिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥111 ॥

ॐ क्रियाविक्रिया- धारिणश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ 12 ॥

ॐ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ 13 ॥

ॐ अङ्गाङ्गबाह्यज्ञानदिवाकराः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ 14 ॥

इह वान्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ताः जिनधर्म-परायणा भवन्तु ॥ धारा ॥ 15 ॥

दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु ॥ धारा ॥ 16 ॥

मातृपितृ-भ्रातृ-पुत्र-पौत्र-कलत्रसुहृत्स्वजनसम्बन्धिबन्धुसहितस्य..... अनुष्ठानकर्तुः धन-धान्यान्वैश्वर्यबलद्युतियशःप्रमोदोत्सवाः प्रवर्धन्ताम् ॥ धारा ॥ 17 ॥

तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । कर्मासिद्धिरस्तु । इष्टसम्पत्तिरस्तु । काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु । निर्वाणपूर्वोत्सवाः सन्तु । पापानि शाम्यन्तु । घोरानि शाम्यन्तु । धर्मो वर्धताम् । पुण्यं वर्धताम् । श्रीवर्धताम् । कुलगोत्रे चाभिवर्धताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु इवीं क्षीं हं सः स्वाहा । श्रीमज्जिनेन्द्रचरणारविन्देष्वानन्द-भक्तिः सदास्तु ।

मण्डल विसर्जन

द्वतविलम्बित

जगति शान्तिविवर्धनमहसां प्रलयमस्तु जिनस्तवनेन मे (ते), सुकृतबुद्धिरलं क्षमया युतो जिनवृषे हृदये मम (तव) वर्तताम् ।

शार्दूलविक्रीडित

मोहध्वान्तविदारणं विशद विश्वोद्भासि दीप्तिश्रियं, सन्मार्गप्रतिभासकं विबुधसन्दोहामृतापादकम् ॥ श्रीपादं जिनचन्द्रशान्तिशरणं सद्भक्तिमानौमि ते, भूयस्तापहरस्य देव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ।

अनुष्टुभ

मङ्गलार्थं समाहूता विसर्ज्याखिलदेवताः, विसर्जनाख्यमन्त्रेण वित्तीयं कृसुमाञ्जलिम् ॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठामहोत्सवे (कर्मणि) आहूयमान-देवगणाः स्वस्थानं गच्छन्तु अपराधक्षमापणं भवतु ।

मङ्गलध्वज विसर्जन

अनुष्टुभ

प्रमादाज्ञानदर्पाद्यैः विहितं विहितं न यत् । जिनेन्द्रास्तु प्रसादास्ते सफलं सकलं च तत् ॥ 1 ॥ अस्मिन्यज्ञे सुराहूताः शिष्टार्हत्प्रभुपूजने ।

इष्ट-मस्माक-मापाद्य तुष्टा यान्तु यथायथम् ॥ 2 ॥

(मङ्गलध्वजवेदी पर पुष्पक्षेपण करें तथा ध्वजा का अवरोहण करें)

यज्ञदीक्षासमापन-विधि

वसन्ततिलका

यज्ञोचितं व्रतविशेषवृत्तोद्घतिष्ठन्, यष्टा प्रतीन्द्रसहितः स्वयमे पुरावत् । एतानि तानि भगवज्जिनयज्ञदीक्षा, चिह्नान्यथैष विभुजामि गुरोः पदाग्रे ॥ अथाहंत् पूजासमापन-करणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा-वन्दनास्तवसमेतं श्रीमच्छान्तिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(नौ बार णमोकारमन्त्र पढ़ें)

मुकुट, माला, यज्ञोपवीत, रक्षासूत्र का त्याग करें ।

हवन का उद्देश्य

संकल्प किया धार्मिक कार्य के समापन के पश्चात् सात प्रकार के मन्त्रों (पीठिका मन्त्र, जाति मन्त्र, निस्तारक मन्त्र, ऋषि मन्त्र, सुरेन्द्र मन्त्र, परमराज मन्त्र एवं परमेष्ठी मन्त्र) के द्वारा आहुतियाँ एवं दशांश आहुतियाँ दी जाती हैं। जिनका उद्देश्य है सप्त परम पदों की प्राप्ति की भावना-

सज्जातिः सद्गृहित्वं च पारिव्राज्यं सुरेन्द्रता ।

साम्राज्यं परमार्हन्त्यं परनिर्वाणमित्यपि ॥

सद्जाति, सद्गृहस्थ, दीक्षा, सुरेन्द्रपद, चक्रवर्ती, अर्हत एवं निर्वाण सप्त परम स्थान हैं।

जिस तरह धूप अग्नि में स्थूल शरीर को नष्ट करके ऊर्ध्वगमन करती है, उसी प्रकार हम भी अपनी आत्मा को कर्म मुक्त करके ऊर्ध्वगमन करके सिद्धत्व को प्राप्त करें।

यज्ञदीक्षा-समापन स्तुति¹

जय जय अरिहन्ता, सिद्धमहन्ता, आचारज उवझायवरं,
जय साधु महानं, सम्यक् ज्ञानं, सम्यक् चारित पालकरं।
हे मङ्गलकारी, भवतपहारी, पाप प्रहारी पूज्यवरं,
दीनन निस्तारन, सुख विस्तारन, करुणाधारी ज्ञानवरं ॥1॥

हम अवसर पाये, पूज रचाये, करो महोत्सव हर्ष महौं,
बहु पुण्य उपाये, पाप धुवाये, सुख उपजाये सार महौं।
जिनगुन कथ पाये, भाव बढ़ाये, दोष हटाये यश लीना,
तन सफल कराया, आत्मलखाया, दुर्गति कारन हर लीना ॥2॥

निजमति अनुसारं, बल अनुसारं, यज्ञविधान रचाया है,
सब भूल चूक प्रभु, क्षमा करो अब, यह अरदास सुनाया है।
हम दास तिहारे, नाम लेते हैं, इतना भाव बढ़ाया है,
सच याही ये सब, कार्य पूर्ण हों, यह श्रद्धान जमाया है ॥3॥

तुम गुण का चिन्तन, होय निरन्तर, जावत उच्च न हो पावें,
तुम्हरी पद पूजा, करें निरन्तर, जावत उच्च न पद पावें।
हम पठन तत्त्व, अभ्यास रहें नित, जावत बोध न सर्व लहें,
शुभ सामायिक अरु, ध्यान आत्म का, करत रहे निज तत्त्व गहें ॥4॥

जय जय तीर्थङ्कर, गुणरत्नाकर, सम्यक्ज्ञान दिवाकर हो,
जय जय गुण पूरन, ओगुन चूरन, संशय तिमिर हरन रवि हो।
जय जय भवसागर, तारनकारन, तुमही भवि अवलम्बन हो,
जय जय कृत कृत्यं, नमें तुम्हें नित, तुम सब संकट तारन हो ॥5॥

(प्रतिष्ठा पात्रों का कर्त्तव्य है कि वह आत्म कल्याणार्थ स्मृति स्वरूप कोई नियम
अवश्य धारण करें। कम से कम प्रतिदिन दर्शन, छानकर पानी पीना एवं रात्रि
भोजन का त्याग शक्त्यनुसार करना चाहिए।)

□□□

भूमिशुद्धि-शिलान्यास

मन्त्र	- 1. शान्तिमन्त्र/वृहच्छान्तिमन्त्र	2. भूमिजागरणमन्त्र
	3. अचलमन्त्र	4. रक्षामन्त्र
मण्डल	- 1. नवदेव मण्डल	
यन्त्र	- 1. विनायकयन्त्र	2. नवदेवयन्त्र
	3. अचलयन्त्र	
भक्तियाँ	- 1. सिद्धभक्ति	2. श्रुतभक्ति
	3. तीर्थङ्करभक्ति	4. शान्तिभक्ति

शिलान्यास की सावधानियाँ

1. भूमि को वास्तु दोष एवं शल्यों से रहित होना चाहिए।
2. शिलान्यास से पूर्व भूमि को साफ एवं शुद्ध करवा लेना चाहिए।
3. शिलान्यासकर्ता सदाचारी एवं व्यसन मुक्त हो।
4. माङ्गलिक क्रियाएँ सौभाग्यवती महिला या कन्या से ही सम्पन्न कराएँ।
5. यन्त्र पूजा के पश्चात् आवश्यक मन्त्र जाप एवं भक्तियाँ अवश्य करें।
6. जाप अनुष्ठान शुद्ध धोती एवं दुपट्टे पहिनकर कराएँ।
7. शिलान्यास राहू के चक्रानुसार निर्देशित कोण में करें।
8. खात-मुहूर्त शुभ अधोमुख नक्षत्र एवं चरलग्न में करें।
9. शिलान्यास ऊर्ध्वमुख नक्षत्र एवं स्थिर लग्न में करें।
10. शिलान्यास के पूर्व शिल्पी का सम्मान करावें।
11. शिलान्यास के बाद गर्त को पूरा भरवा देवें खाली एवं खुला न छोड़ें।

वास्तु विधान

वास्तु विधान अर्थात् जहाँ वास्तु (गृह, प्रतिष्ठान, धर्मशाला, चैत्यालय आदि) का निर्माण करना हो उस स्थान की परीक्षा, दोष (शल्य) निवारण, क्षेत्र स्थित देवों की स्वीकृति, स्थलशुद्धि, खनन, अनुष्ठान, शान्तिहवन आदि करके निर्माण कार्य का

¹ प्रतिष्ठा रत्नाकर पृष्ठ 433

शुभारम्भ करना। वास्तु विधान की कई विधियाँ उपलब्ध हैं, प्रतिष्ठा पाठ के रचयिता आचार्य जयसेन स्वामी ने वास्तु विधान के आठ भेद बताए हैं, जिसका क्षेत्र परीक्षा से लेकर वास्तु निर्माण का शुभारम्भ करने का वर्णन विस्तृत रूप में मिलता है।

इन्द्रवज्रा

स्थानं परीक्षां च दिशां च साधनं वस्त्वर्चनं मण्डललेखनार्चने।
ग्रावानिवेशो भुवनस्य लक्षणं शैलानयश्चेति तदष्टधा मतं ॥

1. स्थान परीक्षा 2. दिग्साधन 3. वास्तुशुद्धि 4. मण्डल शुद्धि 5. मण्डलशान्ति
6. शिलानयन 7. शिलास्थापन 8. गृहलक्षण पूर्वक वास्तु विधान करके वास्तु का निर्माण करना चाहिए।

1. स्थान परीक्षा- जिस भूमि में जिनालय आदि वास्तु का निर्माण करना हो वह टेड़ी-मेड़ी, ऊबड़-खाबड़, पथरीली, बज्जर, वामीयुक्त विपरीत ढाल वाली एवं कटी हुई न हो अर्थात् वर्गाकार-आयताकार बिना कटे कोने वाली एवं उपजाऊ होना आवश्यक है। स्थान परीक्षा शास्त्रोक्त विधि से करें।
2. दिग्साधन - जिनालय का निर्माण भूमि के पश्चिम या दक्षिण भाग में करें, जिससे उसका मुख पूर्व या उत्तर में हो।
3. वास्तुशुद्धि - भूमि का शल्यशोधन विधिपूर्वक करें। भूमि में राख, बाल, हड्डी एवं कील आदि शल्य पदार्थ न हों। भूमि में अशुद्ध कचरा या पुराने मलवा का भराव न हो। भूमि की 5 फुट मिट्टी निकाल देने पर शल्य का दोष नहीं रहता है। विशेष रूप से वेदी के स्थान को 5 फीट खोदकर पत्थर आदि से भरकर ठोस मजबूत करें। इसमें लोहे का उपयोग कदापि न करें।
4. मण्डलशुद्धि - भूमि के निर्माण स्थल पर ही विनायक यन्त्र पूजा, शान्ति मन्त्र, भूमिजागरण मन्त्र एवं अचल मन्त्राराधन अनुष्ठान सङ्कल्प पूर्वक करके देवाज्ञा, वास्तुविधान क्रिया सम्पादित करना।
5. मण्डल शान्ति - मन्त्र अनुष्ठान के पश्चात् उसकी दशांश आहुति द्वारा शान्ति कल्याणकामना यज्ञ आवश्यक भक्तियों के पाठ पूर्वक सम्पादित करना।

6. शिलानयन - मुख्य शिला पर मौलिवन्धन एवं नन्द्यावर्त अन्न कर अन्य शिलाओं को पञ्चपरमेष्ठी मन्त्रों से मन्त्रित कर शुद्ध करना।
7. शिलास्थापन - नवीन मन्त्रित उपकरणों से भूमि खनन करके गर्तशुद्धि, सिद्धार्था स्थापन, वाण स्थापन, मौलिवन्धन क्रिया सहित मूल शिला एवं अन्य शिलाओं का मन्त्रपूर्वक स्थापन।
8. गृह लक्षण - वास्तु-शास्त्रानुरूप ईशान में जल एवं देव स्थान, आग्नेय में अग्नि, नैऋत्य में स्वामी स्थान, उत्तर में कुबेर स्थान, केन्द्र में ब्रह्मस्थान आदि को ध्यान में रखकर निर्माण करना।
(विशेष विवरण हेतु देखें प्रतिष्ठा रत्नाकर)

वास्तुविधान की आवश्यकता

जिस क्षेत्र में गृह निवास या चैत्यालय का निर्माण किया जाना है उसमें यदि दोष होगा तो उसमें होने वाले समस्त कार्यों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जिससे शारीरिक, मानसिक अशान्ति होने के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाएँ भी सम्भावित रहती हैं।

शार्दूलविक्रीडित

एते वास्तुसुराः समस्तधरिणी-संवाहनी-वाहिताः।
प्रत्यूहाद्यविधायिनस्त्वपचिताः प्रत्यूहसंहारकाः ॥
आद्याः प्रापितपूजनाः प्रमुदिताः सर्व-प्रभाभान्विताः।
यष्टुर्याजकभूपमन्त्रि-सुजनानाञ्च श्रिय सन्तु ते ॥

इन्द्रवज्रा

पृथ्वीविकारात्सलिलप्रवेशात्-अग्निर्विदाहात्पवनप्रकोपात्।
चा रप्रयोगादपि वास्तुदेवः च त्यालयं रक्षतु सर्वकालम् ॥
तिर्यक्-प्रचारा-दशनिः प्रपातात्, बीजप्ररोहाद्दुम-खण्डपातात्।
कीट-प्रवेशादपि वास्तुदेवः, च त्यालयं रक्षतु सर्वकालम् ॥

खातविधि

भूमि परीक्षण के पश्चात् यदि वह स्थान अनुकूल हो तो भूमि शुद्धि करके मन्दिर निर्माण मुहूर्त अनुसार शुभ लग्न में भूमि जागृत नक्षत्र, वृष वास्तुचक्र,

अधोमुख नक्षत्र आदि का विशेष ध्यान रखते हुए कार्य आरम्भ करें। जिस स्थान पर खनन कार्य करना हो वहाँ पण्डाल लगाकर जुलूस पूर्वक जिनालय से विनायक यन्त्र लाकर भूमि शुद्धि करके विराजमान करें। मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्र पूर्वक सकलीकरण करके यन्त्र अभिषेक, शान्तिधारा पूजन करके मन्त्रों की जाप करें।

कार्य की निर्विघ्नता हेतु शान्तिमन्त्र का 11 हजार और भूमि जागृत करने हेतु भूमिजागरण मन्त्र का 11 हजार जाप आवश्यक है।

शान्तिमन्त्र

ॐ ह्रीं अहं अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

बृहच्छान्ति-मन्त्र

ॐ ह्रं ह्रीं हूं ह्रौं हः अ सि आ उ सा सर्वविघ्न-विनाशनं सर्वशान्तिं च कुरु कुरु स्वाहा।

भूमिजागरण-मन्त्र

(कार्य स्थल अनुसार मन्त्र का जाप करें)

ॐ ह्रं ह्रीं हूं ह्रौं हः जिनगर्भगृहक्षेत्रे धरित्रीं जागृतावस्थायां कुरु कुरु स्वाहा।

अचल-मन्त्र

ॐ नमोऽहं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ ओ औ अं अं; क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व, श ष स ह ह्रीं क्लीं क्रौं स्वाहा।

(इस मन्त्र की एक माला करें तत्पश्चात् भक्तियाँ पढ़कर कार्य आरम्भ करें।)

खात-क्रिया

मुहूर्तानुसार जिस दिशा में खात करना हो उस कोने पर सीमा के भीतर दो हाथ लम्बी चौड़ी भूमि साफ कर कुङ्कुम व हल्दी से रेखा खींचे उसके चारों कोनों में चारों खूँटी गाढ़ देवें। वहाँ चार दीपक रख कर चारों ओर कलावा को तीन बार लपेटें। उसके भीतर एक हाथ लम्बी चौड़ी भूमि मापकर कुङ्कुम से बीच में स्वस्तिक बनावें।

नीव खनन के पूर्व काम में आने वाली नवीन कुदाली, फावड़ा आदि की मन्त्र द्वारा शुद्धि करना चाहिए।

ॐ ह्रं ह्रीं हूं ह्रौं हः पञ्चपरमेष्ठिभ्यः क्षीं भूः अमृतजलेन खन्त्रीशुद्धिं करोमि।
(कुदाली, फावड़ा आदि की जल से मन्त्रित कर शुद्धि करें)

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः खन्त्रीचन्दनलेपनं करोमि।

(कुदाली, फावड़ा पर चन्दन लगावें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः रक्ष रक्ष फट् स्वाहा।

(कुदाली, फावड़ा पर मङ्गलसूत्र बाँधें)

(पश्चात् कारीगर मजदूर को वस्त्र, राशि देकर प्रसन्न करें और कार्य आरम्भ करावें। स्वर्ण, रजत, ताम्र, पत्थर, मिट्टी आदि की शिलाएँ तैयार करावें।)

अनुष्टुभ

यस्यार्थं क्रियते कर्म, सः प्रीतो नित्यमस्तु - मे।
शान्तिकं पौष्टिकं चैव, सर्वकार्येषु सिद्धिदः ॥

स्रग्धरा

घण्टाटङ्कार-वीणा-क्वणित-मुरज-धां धां क्रियाकाहलाच्छे-
च्छंकारोदार-भेरी-पटह-धल-धलङ्कार-सम्भूत-घोषे ॥
आक्रम्याशेष-काष्ठा-तट-मथ झटिति प्रोच्चटत्युद्भटेऽभ्रम्।
शिष्टाभीष्टार्हदिष्टिप्रमुख इह लतान्ताञ्जलिं प्रोत्क्षिपामः ॥

ॐ ह्रीं सर्वकार्य-सिद्ध्यर्थं वाद्यघोष-पूर्वकं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नमो नमः स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नन्द नन्द वर्धस्व
वर्धस्व विजयस्व विजयस्व अनुसाधि अनुसाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं
पुण्याहं माङ्गल्यं माङ्गल्यं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(भूमि पर पुष्पक्षेपण करें)

यज्ञस्थल पर कार्य करने के लिए भूमिरक्षक देवों से क्षमायाचना एवं कार्य हेतु स्वीकृति-

उपजाति

अहो धरायामिह ये सुराश्च क्षमन्तु यज्ञाधिकृतिं ददन्तु।

प्रीतिः पुराणा बहुवासयोगात् क्षितावतोऽस्मद्विनिवेदनं वः ॥

अस्मिन् यज्ञस्थाने स्थिताः भो देवगणाः आज्ञाप्रदानं कुर्युः।

(पुष्पक्षेपण कर स्थान हेतु आज्ञा माँगें एवं श्रीफल भेंटकर आमन्त्रित करें)

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यै विबुधैः प्रणुत्या ।
भक्त्या सदागत्य हि यागभूमेः कुर्वन्तु शुद्धिं पवनाख्यदेवाः ॥*
भो वायुकुमार! सर्वविघ्नविनाशनाय महीपूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा ।
(स्वच्छ वस्त्र से स्थल मार्जन करें)

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यै विबुधैः प्रणुत्या ।
भक्त्या सदागत्य हि यागभूमेः कुर्वन्तु शुद्धिं वरमेघदेवाः ॥*
भो मेघकुमार! सर्वविघ्न विनाशनाय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं
झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा ।
(भूमि पर जल सिञ्चन करें)

तीर्थङ्कराणां प्रविहारकाले सेवा कृता यै विबुधैः प्रणुत्या ।
भक्त्या सदागत्य हि यागभूमेः कुर्वन्तु शुद्धिं ज्वलनाख्यदेवाः ॥*
भो अग्निकुमारदेव! सर्वविघ्नविनाशनाय भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं
झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा ।
(कपूर जलाकर भूमि पर डालें)

पृष्ठ 89 से चतुर्णिकाया.... आदि 11 श्लोक पढ़कर क्रिया सम्पन्न करें।

वास्तुशान्ति-विधि

1. ॐ णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्जायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं हौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।
(प्रत्येक मन्त्र के बाद भूमि पर पुष्प, पीले सरसों का क्षेपण करना)
- 2 ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसद्धिभ्यो नमः स्वाहा ।
- 3 ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयद्धिभ्यो नमः स्वाहा ।
- 4 ॐ ह्रीं दशदिशातः आगतविघ्नान् निवारय-2 सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।
- 5 ॐ ह्रीं दुर्मुहूर्त-दुःशकुनादिकृतोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।
- 6 ॐ ह्रीं परकृत-मन्त्रतन्त्र-डाकिनी-शाकिनी-भूत-पिशाचादि-कृतोपद्रव-
शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।
- 7 ॐ ह्रीं वास्तुदेवेभ्यः स्वाहा ।
- 8 ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोपशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।
- 9 ॐ ह्रीं सर्वाधिव्याधिशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।
- 10 ॐ ह्रीं सर्वत्र-क्षेमं आरोग्यतां विस्तारय विस्तारय सर्वं हृष्टं पुष्टं प्रसन्नचित्तं
कुरु कुरु स्वाहा ।

- 11 ॐ ह्रीं यजमानादीनां सर्वसङ्घस्य शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं समृद्धिं
अक्षीणद्धिं पुत्र-पौत्रादिवृद्धिं आयुर्वृद्धिं धनधान्यसमृद्धिं धर्मवृद्धिं कुरु कुरु
स्वाहा ।
- 12 ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षौं क्षं क्षः नमोऽहंते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।
- 13 ॐ भूर्भुवः स्वः नमः स्वाहा ।
- 14 ॐ ह्रीं क्रीं आं अनुत्पन्नानां द्रव्याणामुत्पादकाय उत्पन्नानां द्रव्याणां
वृद्धिकराय चिन्तामणिपार्ष्वनाथाय वसुदाय नमः स्वाहा ।
(नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर पीले सरसों अथवा पुष्प छोड़ें)

- भो इन्द्र-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥1॥
भो अग्नि-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥2॥
भो यम-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥3॥
भो नैऋत्य-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥4॥
भो वरुण-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥5॥
भो पवन-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥6॥
भो कृबेर-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥7॥
भो ऐशान-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥8॥
भो आर्य-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥9॥
भो विवस्वान्-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥10॥
भो मित्र-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥11॥
भो भूधर-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥12॥
भो शचीन्द्र-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥13॥
भो प्राचीन्द्र-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥14॥
भो इन्द्र-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥15॥
भो इन्द्रराज-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥16॥
भो रुद्र-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥17॥
भो रुन्द्र-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥18॥
भो आप-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥19॥
भो आपवत्स-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥20॥
भो पर्जन्य-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥21॥
भो जयन्त-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥22॥

- भो भास्कर-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥23 ॥
 भो सत्य-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥24 ॥
 भो भृश-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥25 ॥
 भो अन्तरीक्ष-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥26 ॥
 भो पुष्प-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥27 ॥
 भो वितथ-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥28 ॥
 भो राक्षस-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥29 ॥
 भो गन्धर्व-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥30 ॥
 भो भृङ्गराज-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥31 ॥
 भो मृषदेव-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥32 ॥
 भो दौवारिक-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥33 ॥
 भो सुग्रीव-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥34 ॥
 भो पुष्पदन्त-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥35 ॥
 भो असुर-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥36 ॥
 भो शेष-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥37 ॥
 भो रोग-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥38 ॥
 भो नागराज-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥39 ॥
 भो मुख्य-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥40 ॥
 भो भल्लारक-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥41 ॥
 भो भृंग-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥42 ॥
 भो आदित्य-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥43 ॥
 भो उदित-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥44 ॥
 भो विचारदेव-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥45 ॥
 भो पूतना-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥46 ॥
 भो पापराक्षसी-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥47 ॥
 भो चरकी-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥48 ॥
 भो ब्रह्मदेव-वास्तुदेव वास्तुशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ॥49 ॥

जिस कोण में कार्य करना हो वहाँ नौ बार णमोकारमन्त्र पढ़कर पूर्व या उत्तर दिशा में मुँह करके 'ॐ ह्रीं क्षूं फट् स्वाहा मन्त्रोच्चारण करते हुए गेंती-फावड़ा आदि से कार्य आरम्भ करें।

गर्त की गहराई ठोस मिट्टी तक करें। ठोस जमीन न मिलने की स्थिति में शल्य निवारण हेतु कम से कम 5 फुट गहरा करके पत्थर एवं कंकरीट से

उसका ठोस आधार बनायें। गर्त की लम्बाई चौड़ाई आवश्यकतानुसार करें। शिलान्यास दीवार के नीचे ही करें। मूल शिलानुसार गर्त में ताम्र शलाका (वाण) स्थापित करके क्रिया सम्पादित करें।

नीव प्रशस्ति

श्रीवीतरागाय नमः ॐ स्वस्तिश्री.....महावीर निर्वाणाब्दे.....विक्रमाब्दे.....
 ..मासे.....पक्षे.....तिथी.....वासरे प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभदेवभगवतः
 परम्परायां चतुर्विंशति तीर्थङ्कर महावीरभगवतः शासनकाले श्रीदिगम्बरजैन
 मूलसंघे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये सरस्वतिगच्छेमण्डलान्तर्गत.....नगरे.
वास्तव्य.....प्रतिष्ठाचार्यत्वे.....गौत्रोत्पन्न-श्रीमदभिः.....
नामभिः श्रावक-करकमलेन जिनमन्दिरस्य/ वेदिकायाः/ पञ्चकल्याणक
 वेदिकायाः/ पाण्डुकशिला नीवपूरणं क्रियते स्वस्तिभवतु।

शिलान्यास

ऊर्ध्वमुख नक्षत्र में स्थिरलग्न में कार्य का शुभारम्भ मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन आदि क्रियाओं पूर्वक विनायकयन्त्र अभिषेक एवं पूजा के पश्चात् पिसी हल्दी से नन्दावर्त स्वस्तिक बनायें तथा रङ्गोली से उस स्थान की साज सज्जा करके 'ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः पञ्चपरमेष्ठिभ्यः क्षीं भूः खन्त्रीशुद्धिं करोमि' मन्त्र द्वारा स्वर्ण (अखण्ड) सौभाग्यवती महिलाओं से स्थल की प्रथम शुद्धि हरिद्रा चूर्ण एवं शुद्ध जल से कराकर कार्य आरम्भ करें। 5"×5" की पाँच मारवल की शिलाओं पर "हां हीं हूं ह्रौं हः" इन बीजाक्षरों को लिखकर मङ्गलसूत्र से वेष्टित करें। फिर क्रमशः पाँचों शिलाओं को थाली में स्वस्तिक बनाकर उसमें रखकर निम्न मन्त्र 108 बार पढ़कर पुष्प क्षेपण कर मन्त्रित करें तथा प्रशस्तिपत्र को जल से शुद्ध करें।

- | | | |
|------------------------|---|------------------------|
| (1) हां वाली शिला को | - | ॐ ह्रां अर्हद्भ्यः नमः |
| (2) हीं वाली शिला को | - | ॐ ह्रौं सिद्धेभ्यः नमः |
| (3) हूं वाली शिला को | - | ॐ हूं सूरिभ्यः नमः |
| (4) ह्रौं वाली शिला को | - | ॐ ह्रौं पाठकेभ्यः नमः |
| (5) हः वाली शिला को | - | ॐ हः सर्वसाधुभ्यः नमः |

- सिद्धभक्ति पढ़कर अष्टद्रव्य से गर्त शुद्धि करें।
 ॐ ह्रीं नीरजसे नमः। (जल) ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः। (चन्दन)
 ॐ ह्रीं अक्षताय नमः। (अक्षत) ॐ ह्रीं विमलाय नमः। (पुष्प)
 ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः। (नेत्रेध) ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योतनाय नमः। (दीप)
 ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः। (धूप) ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः। (फल)
 ॐ ह्रीं वसुकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः। (अर्घ्य)

इस प्रकार शुद्धि करके शिला स्थापन करने की विधि करें विशेष-मन्दिर एवं वेदी शिलान्यास में स्वर्ण शलाका निम्न मन्त्र द्वारा बीच में लगावें।

ॐ भगवते श्रीपाशर्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसेविताय अट्टे मुडे शुद्रविडे घभूत-भविष्यत्-वर्तमानाय स्वाहा।

वसन्ततिलका

स्वर्गापवर्ग - सुखमङ्गलताप्रदान-
 मासन्न भव्यसकला सुभृतां हि भूयात् ।
 माङ्गल्य-भूत शुभपूत सुभाग्यदं च,
 सिद्धार्थपुञ्जमनघं विकरामि दिक्षु ॥

ॐ ह्रीं वेद्यां आग्नेयादि-कोणेषु सिद्धार्थान् स्थापनं करोमि।

(आठों दिशाओं में पीले सरसों क्षेपण करना)

इन्द्रवज्रा

भूकम्पकम्पाद्शनि - प्रपाताद, दुष्टाक्षिदोषादवनिस्थ दोषात्।
 माऽभूत् कदाचिच्च चिरं प्रहाणिः, प्रक्षेपयामि क्षिति मध्य बाणान् ॥

ॐ वेदीकोणेषु वाणस्थापनं करोमि।

(आग्नेयादि दिशा में 8 वाण (ताम्रशलाका) स्थापित करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्वीं भूः रक्ष रक्ष स्वाहा।

(मङ्गलसूत्र (मौली) से तीन घेरा लगा दें।)

उपजाति

आधारभूता महिताऽतिमुख्या, शिलाविशालाऽस्ति जिनालयस्य।

तामत्र शुद्ध्या जिननाममन्त्रैः, कृत्वा पवित्रं भुवि धारयामि ॥

ॐ सर्वजनानन्दकारिणि सौभाग्यवति तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

शिला के मध्य में प्रशस्ति रखें उसके ऊपर नन्द्यावर्त स्वस्तिक स्थापित कर उस पर यन्त्र स्थापित करके नवदेव अर्घ्य चढ़ावें।
 ॐ ह्रीं नन्द्यावर्तस्वस्तिक-स्थापनं करोमि।

शार्दूलविक्रीडित

मध्ये वेदिसकर्णिकं दलचतुष्कोणाष्टसंख्यैर्दलैः
 युक्तं द्वित्रिचतुर्हताष्टदलवत्पद्मं वृहत्तद्वहिः ।
 सद्भाः कोणकपञ्चमण्डलवृत्तं संलिख्य तत्रार्चितान्
 मन्त्रागान्नावदेवतान्वृतसुरानर्घ्येण सम्भावयेत् ॥

ॐ ह्रीं मातृकायन्त्रस्थापनं करोमि च अर्घ्यं समर्पयामि।

नवदेवता अर्घ्य

मध्ये कर्णिकमर्हदार्य - मनघं बाह्येष्टपत्रोदरे,
 सिद्धान् सूरिवरांश्च पाठक-गुरुन् साधूंश्च दिक्पत्रगान् ।
 सद्धर्मागम-चैत्यचैत्यनिलयान् कोणस्थ-दिक्पत्रगान्,
 भक्त्या सर्वसुरासुरेन्द्र-महितान् तानष्टधेष्ट्या यजे ॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि-नवदेवेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे मध्य में अचलयन्त्र पर ह्रीं वाली शिला, पूर्व दिशा में ह्रीं वाली शिला, दक्षिण दिशा में हूं वाली शिला, पश्चिम दिशा में ह्रीं वाली शिला तथा उत्तर दिशा में हः वाली शिला मध्य शिला से सटाकर स्थापित करें।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ह्रीं शिलास्थापनं करोमि।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं शिलास्थापनं करोमि।

ॐ हूं णमो आइरियाणं हूं शिलास्थापनं करोमि।

ॐ ह्रीं णमो उवज्जायाणं ह्रीं शिलास्थापनं करोमि।

ॐ हः णमो लोए सव्व साहूणं हः शिलास्थापनं करोमि।

इन शिलाओं के ऊपर क्रमशः स्वर्ण, रजत, ताम्र शिलाएँ स्थापित करावें। मङ्गल-द्रव्य के रूप में यदि किसी की भावना हो तो चाँदी के सिक्के या स्वस्तिक स्थापित करवा सकते हैं। इन्हीं शिलाओं के ऊपर मङ्गलद्रव्य से परिपूर्ण कलश दीपक सहित स्थापित करें।

कलशों को जल से शुद्ध करके उन पर केशर से स्वस्तिक बनाएँ, मङ्गलसूत्र बाँधे पञ्चरत्न, हल्दी की गाँठें, सुपारी, पारद, पीली सरसों, चाँदी का स्वस्तिक, चाँदी के सिक्के कलश में डालना चाहिए।

वसन्ततिलका

सिद्धार्थपूगफल - पारदपञ्चरत्नै-
हार्दिरिद्रखण्डविविधैः कलशं प्रपूर्य,
तस्योपरिज्वलितदीप-शिखां निधाय,
संस्थापयामि तमहं क्षितिमूलभागे॥

उँ ह्रीं मङ्गलकलश-स्थापनं करोमि।

एक कलश बीच में और चार चारों दिशाओं में रखें पश्चात् अनादि मन्त्र पढ़कर गर्त को पूरा भर दें और शान्तिहवन, पुण्याहवाचन, शान्त्यष्टक, शान्तिभक्ति एवं शान्ति पाठ पढ़कर विसर्जन करें।

वस्त्र विधान

खण्डिते जीर्णो छिन्ने च मलिने चैव वाससि।
दानपूजाजपोहोमः स्वाध्यायो निष्फलं भवेत्॥१॥
कषायं धूम्रवर्णं च केशजं केशभूषितम्।
छिन्नाग्रं चोप वस्त्रं च कुत्सित नाचरेन्नरः॥२॥
दग्धं जीर्णं च मलिनं मूसकोपहतं तथा।
खादितं गो महिष्याद्यैस्तत्याज्यं सर्वथा द्विजैः॥३॥

फटा वस्त्र, जीर्ण, बहुत पुराना, छेद सहित, मलिन वस्त्र, काला, ऊन से बना हुआ, जल गया हो, चूहों के द्वारा कतरा गया, गाय भैंस द्वारा खया गया, धूम्र वर्ण वाला, अत्यन्त छोटा इन वस्त्रों से दान, पूजा, हवन, जाप, ध्यान, स्वाध्याय नहीं करना।

उमास्वमी श्रावकाचार 55

परिशिष्ट

सङ्केत सूची

1. प्र. पा. - प्रतिष्ठापाठ आचार्य जयसेन
2. प्र. ति. - प्रतिष्ठातिलक नेमिचन्द्रदेव
3. प्र. सा. - प्रतिष्ठासारोद्धार पं. आशाधर
4. प्र. र. - प्रतिष्ठासरोद्धार पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'
5. पं. म. ला. जै. ह. लि. डा. - पं. मन्मूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य हस्तलिखित डायरी

देव उत्थापन विधि

प्रतिष्ठा विधि के अन्तर्गत जिनबिंब एवं जिनालय (शिखर, वेदी) आदि की प्रतिष्ठा मन्त्र एवं अनुष्ठान पूर्वक सम्पादित की जाती है। नवदेवताओं में जिनचैत्य एवं जिन चैत्यालय दोनों ही पूजनीय हैं। कहा भी है "दृष्टं जिनेन्द्र-भवनं भवतापहारि।"

प्रतिष्ठा विधि के अनुसार अचलबिम्ब एवं चलबिम्ब अलग-अलग प्रतिष्ठित किये जाते हैं। प्रत्येक वेदी के अलग-अलग मूलनायक होते हैं जो अचल (मातृका) यन्त्र स्वस्तिक आदि के साथ स्थापित किये जाते हैं। अन्य चल बिम्ब सामान्य विधि से स्थापित किये जाते हैं। विधान अनुष्ठान या विमानोत्सव में धातु के चल बिम्ब ही विराजमान करें। पाषाण बिम्बों को अभिषेक हेतु उठाने से प्रतिमा खण्डित होने की कई घटनाएँ देखने में आयी है। अतः पाषाण बिम्बों का प्रक्षाल वेदी में ही करना चाहिए।

मञ्जन के समय भी मूलनायक को नहीं उठाना चाहिए क्योंकि अचल बिम्ब (मूलनायक) को अनुष्ठान करके देवाज्ञा लेकर ही वेदी से उठाया जाता है। मन्दिर शिखर या वेदी के जीर्ण हो जाने से या प्राकृतिक प्रकोप, अतिजल वृष्टि, भूकम्प, बिजली गिरने से क्षतिग्रस्त होने पर इनका जीर्णोद्धार करना अनिवार्य है। यदि जीर्णोद्धार के लिए भी मूलनायक उठाना अनिवार्य हो तो निम्न अनुष्ठानपूर्वक कार्य सम्पादित करें।

प्रतिष्ठाचार्य के निर्देशन में जिनबिम्ब उत्थापन के सङ्कल्प के साथ शान्ति मन्त्र का सवालाख जाप, शान्तिविधान, वेदी के समक्ष बृहच्छान्तिमन्त्र की जाप एवं हवन करें। तत्पश्चात् शासक रक्षक देवों से आज्ञा लेकर पुनः स्थापित

करने की समयावधि का सङ्कल्प करके बिम्ब को अस्थाई वेदी पर, इस प्रकार स्थापित करें कि प्रतिदिन उनका अभिषेक, पूजन एवं दर्शन होता रहे।

जीर्णोद्धार का कार्य शुरू करने के पूर्व चाँदी का बैल या हाथी बनाकर णमोकारमन्त्र का स्मरण करते हुए हाथी के दाँत या बैल के सींग से सर्वप्रथम वास्तु के उस स्थान पर प्रहार करके उसको कुरेदें जहाँ जीर्णोद्धार करना है तत्पश्चात् नवीन कुदाल, फावड़े को मन्त्र से शुद्ध करके उससे कार्य प्रारम्भ करें।

जीर्णोद्धार करते समय यह ध्यान रखें वास्तु का स्वरूप न बदलें यथास्थिति ही उसका जीर्णोद्धार करना चाहिए। यदि शिखर जीर्ण हो गया है तो उसे हटाये बिना उसी के ऊपर नवीन शिखर बनाकर कलशारोहण, ध्वजारोहण करना चाहिए।

यदि पूर्व वास्तु में कोई दोष हो तो किन्हीं आचार्य/मुनिराज के परामर्श से प्रतिष्ठाचार्य के निर्देशन में कार्य करें। जीर्णोद्धार पूर्ण होने तक समाज के सभी आबाल वृद्ध को णमोकारमन्त्र की जाप तथा शक्तिशः त्याग करना चाहिए। जीर्णोद्धार के बाद वेदीप्रतिष्ठा पूर्वक मूलनायक भगवान को मूलनायक के रूप में ही विराजमान करना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में मूलनायक प्रतिमा नहीं बदलना चाहिए।

यदि नगर में जैन परिवार अन्य स्थान पर पलायन कर गये हों और पूजा करने वाला कोई नहीं हो तो सभी परिवारों को संयुक्त रूप से पूजा व्यवस्था बनानी चाहिए। जिनालय से मूलनायक सहित बिम्बों को अन्य नगर में ले जाने का विधान शास्त्रों में नहीं मिलता है। प्राकृतिक प्रकोपवश या अन्य कारण वश मूलनायक सहित सम्पूर्ण बिम्बों को अन्य स्थान में स्थापित करने के सम्बन्ध में वरिष्ठ आचार्यों एवं विद्वानों से परामर्श किया गया। सभी के मतानुसार जिनालय से विधिपूर्वक अनुष्ठान करके देवाज्ञा लेकर वेदी से बिम्ब उठाने की क्रिया आचार्य/ मुनिराजों के सान्निध्य में प्रतिष्ठाचार्य के निर्देशन में ही सम्पादित करें। मूलनायक प्रतिमा को मूलनायक के रूप में ही पृथक वेदी में विराजमान करना चाहिए। मूलवेदी पर श्रीफल, मङ्गलकलश एवं दीपक विराजमान कर गर्भगृह का मुख्यद्वार स्थायी रूप से दीवार बनाकर बन्द कर देना चाहिए। जिनालय का शेषभाग एवं प्रांगण पारमार्थिक कार्य हेतु किसी संस्था को इस शर्त के अनुसार सौंपें कि आवश्यकता पड़ने पर वापिस ले लिया जायेगा। जिससे उस खाली मन्दिर का दुरुपयोग न हो। मन्दिर रिक्त करने का प्रायश्चित्त आचार्य/मुनिराजों से अवश्य लेना चाहिए।

शान्तिकर्म

अनुष्ठान में किसी प्रकार की विघ्नवाधा या उपसर्गादि होने पर मन्दिर में विशेष अशुद्धि, प्राकृतिक प्रकोप, प्रतिमा गिरने, खण्डित होने पर बृहच्छान्ति मन्त्र की विशेष शान्तिधारा, 21 हजार बृहच्छान्तिमन्त्राराधन, चौसठ ऋद्धि विधान, हवन तथा श्रीपार्श्वनाथ स्तोत्र(वीजाक्षर मन्त्र सहित)या उवसगगहर स्तोत्र का ग्यारह वार शुद्धोच्चारण सहित पाठ करें।

बृहच्छान्तिमन्त्र

- ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्जायाणं णमो लोए सव्व साहूणं। चत्तारि मंगलं- अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ॐ ह्रीं अनादि-सिद्धमन्त्र-पूजन-भक्ति-प्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।
- ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्व-क्षामडामर-विनाशनाय ॐ हं ह्रीं हूं हं हः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा।
- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहन्ताणं ह्रीं सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।
- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इर्वीं इर्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं नमोऽर्हते भगवते सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।
- ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सर्वकर्मविमुक्ताय अष्टगुण-समृद्धाय फट् सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।
- ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल -निवासिनि पापमलक्षयङ्कुरि श्रुतज्वाला-सहस्र-प्रज्वलिते सरस्वति तव भक्तिप्रसादात् मम पापविनाशनं भवतु क्षां क्षीं क्षूं क्षीं क्षः क्षीरवरधवले अमृत-सम्भवे वं वं हूं हूं सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा सरस्वति! तव भक्तिप्रसादात् सुज्ञानं भवतु स्वाहा।

7. ॐ णमो भगवदो वड्डमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सब्बजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।
8. ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्र-खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं फट् स्वाहा।
9. ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
10. ॐ उसहायि जिणे पणमामि सया अमलो विमलो विरजो वरकप्पत्तु, सअकामदुहा मम रक्ख सया पुरुविज्जुणुहि पुरुविज्जुणुहि।
ॐ अट्टेव य अट्टसया अट्टसहस्सा य अट्टकोडीओ।
रक्खं तुम्म सरीरं देवासुरपणमिया सिद्धा।
11. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वधा सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।
12. ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः एतन्मन्त्र-प्रसादात् सर्वभूत-व्यन्तरादि-बाधाविनाशनं भवतु सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा।
14. ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
15. ॐ हां हीं हूं हौं हः सर्वदिशागत-विघ्नविनाशनं भवतु स्वाहा।
16. ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः सर्वदिशागत-विघ्नविनाशनं भवतु स्वाहा।
17. ॐ सम्प्रतिकाल-श्रेयस्कर-स्वर्गावतरण-जन्माभिषेक-परिनिष्क्रमण-केवलज्ञान-निर्वाणकल्याणक-विभूति-विभूषित-महाभ्युदयाः श्रीऋषभाजित-सम्भवाभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपाशर्व-चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्त-शीतल-श्रेयो-वासुपूज्य-विमलानन्त-धर्म-शान्ति-कुन्ध्वर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पाशर्व-वर्धमान-परमदेवपूजनभक्ति-प्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसञ्जाताः निर्वाण-सागर-महासाधु-विमल-प्रभ-शुद्धाभ-श्रीधर-सुदत्तामल-प्रभोद्धारारिण-सन्मति-सिन्धु-कुसुमाञ्जलि-शिव-गणोत्साह-ज्ञानेश्वर-परमेश्वर-विमलेश्वर-यशोधर-कृष्णमति-ज्ञानमति-शुद्धमति-श्रीभद्रातिक्रान्तशान्ताश्चेति चतुर्विंशति-भूतपरमदेवपूजनभक्ति-प्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु स्वाहा।

19. ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवाः महापद्म-सुरदेव-सुरप्रभ-स्वयंप्रभ-सर्वायुध-जयदेवोदयदेव-प्रभादेवोदङ्कदेव-प्रश्नकीर्ति-जयकीर्ति-पूर्णबुद्धि-निकपाय-विमलप्रभ-बहुल-निर्मल-चित्रगुप्त-समाधिगुप्त-स्वयंभू-कन्दर्प-जयनाथ-विमलनाथ-दिव्यवादानन्तवीर्याश्चेति चतुर्विंशतिभविष्यत्परमदेव पूजन-भक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु स्वाहा।
20. ॐ त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमन्धर-युगमन्धर-वाहुसुवाहु-सञ्जातक-स्वयंप्रभ-वृषभाननानन्तवीर्य-सुरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रवाहु-भुजङ्गमेश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयशोऽजितवीर्याश्चेति पञ्चविदेहक्षेत्रविहरमाणविंशति-तीर्थङ्करपरमदेव-पूजनभक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु स्वाहा।
21. पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूरि-भूतिभिः।
चतुर्विधस्य सङ्घस्य शान्तिं कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नाः
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥
दुर्भिक्षादिमहादोष-निवारणपरम्पराः।
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं जिनश्रुतमुनीश्वराः ॥
यत्संस्मरणमात्रेण विघ्ना नश्यन्ति मूलतः।
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं जिनश्रुतमुनीश्वराः ॥
पदार्थान् लभते प्राणी यत्प्रसादात् प्रसादतः।
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं जिनश्रुतमुनीश्वराः ॥
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं हां हीं हूं हौं हः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा ऋद्धिमन्त्रभक्तिप्रसादात् सर्वेषां शान्तिर्भवतु विसूचिका-ज्वरादि-रोग-विनाशनं भवतु स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं शिरोरोगविनाशनं भवतु स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं नासिकारोगविनाशनं भवतु स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अक्षिरोगविनाशनं भवतु स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगविनाशनं भवतु स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धीणं ममात्मनि विवेकज्ञानं भवतु स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं हृदयरोगविनाशनं भवतु स्वाहा।

29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं परस्परविरोधविनाशनं भवतु स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं श्वासरोगविनाशनं भवतु स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं कवित्वं पाण्डित्यं च भवतु स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धीणं प्रतिवादिदिद्याविनाशनं भवतु स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धीणं अन्यगृहीतं श्रुतज्ञानं भवतु स्वाहा॥
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं बहुश्रुतज्ञानं भवतु स्वाहा॥
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुच्चीणं सर्ववेदी' भवतु स्वाहा॥
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुच्चीणं स्वसमय-परसमय-वेदी' भवतु स्वाहा
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अडुंगमहाणिमित्तकुसलाणं जीवितमरणादिज्ञानं भवतु स्वाहा
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणपत्ताणं कामितवस्तु-प्राप्तिर्भवतु स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं उपदेशप्रदेशमात्र-ज्ञानं भवतु स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्टपदार्थचिन्ताज्ञानं भवतु स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं आयुष्यावसानज्ञानं भवतु स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अन्तरिक्षगमनं भवतु स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेषप्रतिहतं भवतु स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं स्थावरजङ्गमकृतविघ्नविनाशनं भवतु स्वाहा
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं वचःस्तम्भनं भवतु स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं सेनास्तम्भनं भवतु स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अग्निस्तम्भनं भवतु स्वाहा।
49. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं जलस्तम्भनं भवतु स्वाहा।
50. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विषरोगादिविनाशनं भवतु स्वाहा।
51. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं लूतागर्भान्तिका-वलिविनाशनं भवतु स्वाहा
52. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं दुष्टमृगादिभयविनाशनं भवतु स्वाहा।
53. ॐ ह्रीं अर्हं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं भूतप्रेतादिभयविनाशो भवतु स्वाहा
54. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अपस्मारप्रलापनचिन्ताविनाशो भवतु स्वाहा
55. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं सर्वापमृत्युविनाशो भवतु स्वाहा।
56. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं जन्मान्तरवैरभावविनाशो भवतु स्वाहा।
57. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं गजमारीविनाशनं भवतु स्वाहा।

1. वेदिनो, 2. वेदिनो

58. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं मनुष्यामरोपसर्गविनाशो भवतु स्वाहा।
59. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं गोमारीविनाशो भवतु स्वाहा।
60. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं अजमारीविनाशो भवतु स्वाहा।
61. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं महिषमारीविनाशो भवतु स्वाहा।
62. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अष्टादशकृष्णगण्डमालादिकविनाशनं भवतु स्वाहा।
63. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्वशीतज्वरविनाशनं भवतु स्वाहा।
64. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं समस्तोपसर्गविनाशनं भवतु स्वाहा।
65. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमइसवीणं सर्वव्याधिविनाशनं भवतु स्वाहा।
66. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अक्षीणद्धिर्भवतु स्वाहा।
67. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्डमाणबुद्धिरिसस्स राजपुरुषादिभयविनाशनं भवतु स्वाहा
68. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धायदणाणं धनधान्यसमृद्धिर्भवतु रत्नत्रयं भवतु स्वाहा।
69. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि-महावीर-वड्डमाण-बुद्धिरिसीणं समाधि-सुखं भवतु स्वाहा।
70. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खर-घणप्पयालं विउव्वणपत्ताणं सर्वज्वरादिरोग-विनाशनं भवतु स्वाहा।
71. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वरायवसीकरणकुसलाणं श्रीजिणाणं सर्वराज्यप्रजा-वशीभूतं भवतु स्वाहा।
72. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दुस्सहकडुणिवारयाणं श्रीजिणाणं सर्वदुःखनिवारणं भवतु स्वाहा।
73. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इत्थितरो अविणासयाणं विट्ठोसहिपत्ताणं समस्तस्त्रीरोग-विनाशनं भवतु स्वाहा।
74. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तक्खरभय-पणासयाणं श्रीजिणाणं समस्तचौरादिभय-विनाशनं भवतु स्वाहा।
75. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अपुव्वल-पइड्डियाणं बलद्धिपत्ताणं समस्तमनोवांछित-सिद्धिर्भवतु स्वाहा।
76. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं मिगरोय-वारयाणं सर्वमृगीरोगविनाशनं भवतु स्वाहा।
77. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धायदणाणं वंदिमो अप्पाणं समस्तबन्धन-भय-विनाशनं भवतु स्वाहा।

78. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दब्बंकराए सर्वार्थसिद्धिर्भवतु स्वाहा ।
 79. ॐ ह्रीं अर्हं णमो धम्मराए जपतिए गर्भपतन-निवारणं भवतु स्वाहा ।
 80. ॐ ह्रीं अर्हं णमो धणवुद्धिकराए धनगोधन-लाभं भवतु स्वाहा ।
 81. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्त-इत्थिकराए सन्तानवर्धनं भवतु स्वाहा ।
 82. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हगदहारिए सर्वेषां रोग-विनाशनं भवतु स्वाहा ।
 83. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगालभववज्जणाए अग्निभयनिवारणं भवतु स्वाहा ।
 84. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इक्खुवज्जणाए मधुरजलं भवतु स्वाहा ।
 85. ॐ ह्रीं अर्हं णमो णगभयपणासए वन-नगमेदिनीकृतोपद्रवविनाशनं भवतु स्वाहा ।
 86. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पासे सिद्धासुणांतिए सर्पविष-विनाशनं भवतु स्वाहा ।
 87. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खिगदणासए नेत्रपीडा-निवारणं भवतु स्वाहा ।
 88. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुप्फियतरुपत्ताए सर्ववृक्षलतामारीनिवारणं भवतु स्वाहा ।
 89. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जयदेवपासेपत्ताए राज्यसन्मानं भवतु स्वाहा ।
 90. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जावित्तापरिवत्ताए दुर्भिक्षकृतोपद्रव-विनाशनं भवतु स्वाहा ।
 91. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठि मिट्ठि भक्खकराए सर्वाङ्गपीडा-निवारणं भवतु स्वाहा ।
 92. ॐ ह्रीं अर्हं णमो हां ह्रीं हूं ह्रीं हः धनधान्यसमृद्धिर्भवतु रत्नत्रयं भवतु स्वाहा ।
 93. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पाश्र्वतीर्थङ्कराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय अनन्तचतुष्टय-सहिताय समवसरण-केवलज्ञान-लक्ष्मीशोभिताय अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय परमेष्ठिपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय अनन्तसंसारचक्र-परिमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शनवीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशङ्कराय सत्यब्रह्मणे उपसर्ग-विनाशनाय घातिकर्मक्षयङ्कराय अजराय अभवाय ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका-प्रमुखचतुः-सङ्घोपसर्ग-विनाशनाय अघातिकर्म-विनाशनाय देवाधिदेवाय नमो नमः स्वाहा ।
 94. पूर्वोक्त-मन्त्राणां पूजन-भक्तिप्रसादात् ऋष्यार्यिकाश्रावक-श्राविकाणां सर्वक्रोध-मान-माया-लोभ-हास्यरत्यरतिशोक-भय-जुगुप्सा-स्त्रीपुरुषनपुंसक-वेद-विनाशनं भवतु स्वाहा ।

95. मिथ्यात्व-रागद्वेष-मोह-मत्सरासूयेर्ष्या-विभाव-विकार-विषाद-प्रमाद-कषाय-विकथा-विनाशनं भवतु स्वाहा ।
 96. सर्वपञ्चेन्द्रिय-विषयेच्छास्नेहाशार्त्त-रौद्राकुलताव्याधिदीनता-पापदोष-विरोध-विनाशनं भवतु स्वाहा ।
 97. सर्वममकार-विकल्प-निद्रा-तृष्णाधितापदुःखवैराहंकार-सङ्कल्प-विनाशो भवतु स्वाहा ।
 98. सर्वाहारभयमैथुनपरिग्रह-संज्ञा-विनाशो भवतु स्वाहा ।
 99. सर्वोपसर्गविघ्नराजचोरदुष्ट-मृगेहलोकपरलोकाकस्मान्-मरणवेदना-शरणा-त्राणभयविनाशो भवतु स्वाहा ।
 100. सर्वक्षयरोग-कुष्ठरोग-ज्वरातिसारादिरोग-विनाशनं भवतु स्वाहा ।
 101. सर्वनरगज-गोमहिष-धान्य-वृक्षगुल्मपत्रपुष्प-फलमारीराष्ट्रदेशमारी-विश्वमारीविनाशो भवतु स्वाहा ।
 102. सर्वमोहनीय-ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय-वेदनीय-नाम-गोत्रायु-अन्तराय-कर्म-विनाशनं भवतु स्वाहा ।
 103. ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः अ सि आ उ सा नमः मन्त्रभक्ति-प्रसादात्सर्वेषां यजमानानां शान्तिर्भवतु स्वाहा ।
 104. ॐ हां हिं हुं हूं हें हैं ह्रीं हः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्येभ्यो ह्रीं नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा ।
 105. ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थङ्कराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा ।
 106. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय जगच्छान्तिकराय सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।
 107. ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं क्लीं शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु अ सि आ उ सा इर्वीं क्ष्वीं हं सं तं पं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय श्रीं ह्रीं सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा ।
 108. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं हां ह्रीं हूं हें हैं ह्रीं हः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि ।

□□□

सर्वविघ्नविनाशकं श्रीपार्श्वनाथमन्त्रात्मकस्तोत्रम्

स्रग्धरा

श्रीमद्देवेन्द्र-वृन्दारक-मुकुटमणिज्योतिषां चक्रवाले-
व्यालीढं पादपीठं शठ-कमठ-कृतोपद्रवैर्बाधितस्य ।
लोकालोकावभासिस्फुरदुरु-विमलज्ञानदीपप्रदीपः,
प्रध्वस्त-ध्वान्तजालः स वितरतु सुखं पार्श्वनाथोऽत्र नित्यम् ॥1१॥

हां हीं हूं हौं हः एतैर्मरकत-मणि-भाक्रान्त-मूर्तिर्हि वं मं,
हं सं तं बीजमन्त्रैः कृतसकल-जगत्क्षेम-रक्षोरुवक्षः ।
क्षां क्षीं क्षूं क्षें समस्तक्षितितल-महितज्योति-रुद्योतितार्थः,
क्षैं क्षौं क्षौं क्षः क्षिप्त-बीजात्मक-सकलतनुर्नः सदा पार्श्वनाथः ॥12॥

हींकारं रेफयुक्तं र र र र र रं देव सं सं प्रयुक्तं,
हीं क्लीं ब्रूं द्रां सरेफं विषदलनकला-पञ्चकोद्भासि हूं हूं ।
धूं धूं धूं धूम्रवर्णै-रखिलमिह जगन्मे-विधेह्यामुवश्यं,
वौषट्मन्त्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व ! मां रक्ष रक्ष ॥13॥

आं हीं क्रौं सर्ववश्यं कुरु कुरु सरसं क्रामणं तिष्ठ तिष्ठ,
हूं हूं हूं रक्ष रक्ष प्रबल-बलमहाभैरवारातिभीतेः ।
द्रां द्रीं द्रूं द्रावयेति द्रव हन हन फट् फट् वषट् भिन्दि भिन्दि,
स्वाहामन्त्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व ! मां रक्ष रक्ष ॥14॥

हं सः झ्वीं क्ष्वीं स हं सः कुवलय-कलितै-रर्चिताङ्गप्रसूनैः,
झं वं हं पक्षि हं हं हर हर हर हूं पक्षिपः पक्षिकोपम् ।
वं झं हं संभवं सः सर सर सर सूं सः स्वधाबीजमन्त्रै-
स्त्रायस्व स्थावरादि-प्रबलविषमुखं हारिभिः पार्श्वनाथः ॥15॥

क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः एतैरहिपति-विनुतै-मन्त्रबीजैश्च नित्यं,
हाहाकारोग्रनादै-ज्वल-दनलशिखा-कल्पदीर्घोर्ध्वकेशैः ।
पिङ्गाक्षैर्लोलजिह्वै-र्विषमविषधरालङ्कृतैस्तीक्ष्णदंष्ट्रै-
भूतैः प्रेतैः पिशाचै-रनघकृत-महोपद्रवाद्रक्ष रक्ष ॥16॥

ऊं झ्रौं झ्रः शाकिनीनां सपदि हरमिदं भिन्दि शुद्धेन्द्रबुद्धेः,
ग्लौं क्ष्मं ठं दिव्य-जिह्वागतिमतिकुपितं स्तम्भनं संविधेहि ।
फट् फट् फट् सर्वरोग-ग्रहमरणभयोच्चाटनं चैव पार्श्वः,
त्रायस्वाशेष - दोषा - दमर - नरवरैर्नूतपादारविन्दः ॥17॥

(183)

प्रतिष्ठा पराग

स्क्रां स्क्रीं स्क्रूं स्क्रौं स्क्रः एवं प्रबल-बल-फलं मन्त्रबीजं जिनेन्द्र!
रां रीं रूं रौं रः एभिः परमतरहितं पार्श्वदेवाधिदेवम् ।
क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः एतैः ज ज ज ज ज जरा जर्जरीकृत्यदेहं,
धूं धूं धूं धूम्रवर्णं दुरित-विरहितं पार्श्व! मां रक्ष नित्यं ॥8॥
हींकारे चन्द्रमध्ये बहिरपि वलये षोडशं वर्णपूर्णं,
बाह्ये ठङ्कार-वेष्ट्यं वसुदलसहितं मूलमन्त्रेण युक्तम् ।
साक्षात्-त्रैलोक्यवश्यं सकल-सुखकरं सर्वरोग-प्रणाशं,
स्यादेतद् यन्त्ररूपं परमपदमिदं पातु मां पार्श्वनाथः ॥9॥
इत्थं मन्त्राक्षरार्थं वचनमनुपमं पार्श्वनाथस्य नित्यं,
विद्वेषोच्चाटन-स्तम्भन-जनवश-कृत्पाप-रोगापनोदि ।
प्रोत्सर्पज्जङ्गम-स्थावरविषमविष-ध्वंसनं चायुदीर्घ-
मारोग्यैश्वर्य-भक्त्या स्मरति पठति यः स्तौति तस्येष्ट-सिद्धिः ॥10॥

उवसग्गहर पार्श्वनाथ स्तोत्रम्

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं ।
विसहर-विस-णिण्णासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥
विसहर-फुलिंमंतं, कठे धारेदि जो सया मणुवो ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जति उवसामं ॥
चिट्ठदु दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होदि ।
णर-तिरियेसु वि जीवा, पावति ण दुक्ख-दोगच्चं ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कम्पपायव-सरिसे ।
पावति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥
इह संथुदो महायस! भत्तिभर हिदयेण ।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंदं ॥
(ओं अमरतरु-कामधेणु-चिंतामणि कामकुंभमादिया ।
सिरि-पासणाह-सेवाग्गहणे सव्वे वि दासत्तं ॥
उवसग्गहरं त्थोत्तं, कादूणं जेण संघकल्लाणं ।
करुणायरेण विहिदं, स भद्दबाहू गुरू जयदु ॥)

मन्त्र

ऊं अहं णमिदूणं पास विसहर विसणिण्णासणं जिण फुलिंमं ह्वीं श्रीं दलीं ब्रूं नमः ॥

चैत्य-चैत्यालय निर्माण : वास्तु-विचार

जैनदर्शन के अनुसार लोक-रचना अनादिनिधन है। कोई आदि अंत नहीं है, स्वयंसिद्ध अर्थात् अकृत्रिम है, जिसमें 99% रचना शाश्वत (अपरिवर्तनशील) है। अधोलोक एवं ऊर्ध्वलोक की रचना में कोई परिवर्तन नहीं होता। मध्यलोक में भी केवल जम्बू, धातकी एवं पुष्करार्ध द्वीपों के आर्यखंडों में ही काल-चक्र का विशेष परिणामन होता है, शेष-खंडों में नहीं।

प्रकृति के नियम भी शाश्वत हैं। आधुनिक विज्ञान का विकास भी प्रकृति के नियमानुसार ही हुआ है, जैसे पहिये का घूमना, चक्की का चलना, विद्युत उपकरणों की गति, घड़ी की गति आदि। जब भी विज्ञान ने प्रकृति के विरुद्ध कार्य किया, हानि उठानी पड़ी तथा विनाश का कारण बना, चाहे वह पर्यावरण पारिस्थितिक, जैविक, रासायनिक या भौतिक कोई भी कार्य हो।

प्रकृति ने स्वयंसिद्ध होने के साथ-साथ मानव-शरीर के निर्माण को भी निश्चित-आकार एवं स्थान दिया है। आचार्य श्री वीरसेन स्वामी ने 'धवला' -टीका में स्पष्ट उल्लेख किया है। नारकी 8 ताल, देव 10 ताल, मनुष्य 9 ताल, एवं तिर्यच विभिन्न-ताल वाले होते हैं। इसी प्रकार वास्तु अर्थात् निर्माण-व्यवस्था भी अनादिनिधन है। जैनदर्शन ने नव-देवताओं को आराध्य/पूज्य माना है, जिनमें चैत्य-चैत्यालय भी हैं। अकृत्रिम-चैत्यालयों एवं प्रतिमाओं की दिशा एवं माप-अनुपात निश्चित हैं। अकृत्रिम-चैत्यालय पूर्व एवं उत्तराभिमुख हैं, प्रतिमायें गर्भगृह में स्थापित हैं। शिखर-युक्त जिनालयों में मुख्यद्वार एवं लघुद्वार हैं, प्रतिमा की दृष्टि द्वार से बाहर निकलती है। प्रतिमाएँ समचतुरस्र-संस्थान-युक्त हैं। प्रतिष्ठा शास्त्रों एवं वास्तु-शास्त्रों में मंदिर एवं प्रतिमा के माप का विस्तृत उल्लेख है। उसी अनुसार यदि कृत्रिम-जिनालयों की रचना की जावे, तो वह लौकिक एवं पारलौकिक विकास में सहयोगी होती है। वर्तमान में इसमें कई विसंगतियाँ सामने आ रही हैं। विपरीत-निर्माण से प्रतिष्ठाकारक, प्रतिष्ठाचार्य एवं समाज पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। आचार्यों ने वास्तुग्रंथों के उल्लंघन न करने का भी स्पष्ट कथन किया है।

वर्तमान में नगरीय विकास के कारण जगह-जगह पर मंदिरों का निर्माण हो रहा है। मंदिर-हेतु भूखंड का चुनाव करते समय प्रवेश की दिशा

का ध्यान अवश्य रखें। भूमिशोधन करके मंदिर-निर्माण करने के पूर्व प्रतिष्ठाचार्य एवं वास्तुशास्त्री से परामर्श अवश्य लें।

शास्त्रानुसार भूमि का चयन कर शुभलग्न, योग, तिथि नक्षत्र में शिलान्यास से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की अनुष्ठान विधि सम्पन्न करें।

निर्माण में वास्तु के नियमों का उल्लंघन न करें।

जैन चैत्यालयं चैत्यमुत्तमं निर्मापयन् शुभम्।

वांछन् स्वस्य नृपादेश्च वास्तुशास्त्रं न लंघयेत्। 17, प्रतिष्ठा सारोद्धार

मूलतः आचार्यों ने एक वेदी एवं एक शिखर का ही उल्लेख किया है। आवश्यकतानुसार अन्य वेदी एवं शिखर भी शास्त्रानुसार ही बनाना चाहिए। आचार्य जयसेन स्वामी ने प्रतिष्ठापाठ ग्रंथ में जिनालय एक खण्ड, दो खण्ड तीन खण्ड या चार खण्ड आदि के बनाने का तथा सबसे ऊपरी खण्ड पर कलश एवं ध्वजा लगाने का उल्लेख किया है।

द्वित्रिक्षणं वाऽपि चतुः क्षणादि श्रृंगोन्नतं केतुपरीत भालं।

वास्तुत्पथं कर्तुरनर्थयोगस्तस्माद्द्विधेयं किल वास्तु पूर्वम् ॥ 141 ॥

एक खण्ड के मंदिर में एक वेदी नीचे, दो खण्ड के मंदिर में एक वेदी नीचे, एक ऊपर अर्थात् दो खण्ड का मंदिर, तीन खण्ड का मंदिर एवं चार खण्ड का मंदिर भी बना सकते हैं। इनमें प्रत्येक खण्ड में एक-एक वेदी (विषम संख्या) वास्तु के अनुरूप बनाना चाहिए। यदि किसी मंदिर में नीचे तीन तथा ऊपर तीन वेदियां हों तो वह भी अशुभ नहीं हैं। परन्तु एक खण्ड में दो (सम) वेदियां नहीं बनाना चाहिए।

मंदिर निर्माण में निम्न सावधानियाँ अवश्य रखी जावें:-

1. मंदिर के परिसर में मंदिर जी के नीचे क्षेत्र के साथ अन्य निवास एवं प्रसाधन (बाथरूम) आदि का निर्माण न करें। यदि इसका निर्माण करना ही पड़े, तो मंदिर भवन से हटकर अलग भूमि पर करें।
2. वेदी का निर्माण गर्भगृह में ही करें। गर्भगृह ठीक चौकोर आय के अनुसार बनायें।

3. गर्भगृह के बाहर की दोनों ओर बराबर-स्थान छोड़ें। वेदी ठोस एवं परिक्रमा-स्थान छोड़कर ही बनायें। दीवार से सटी वेदी बनाना अशुभ है। वेदी के ठीक ऊपर बीम या गार्डर नहीं होना चाहिए।
 4. वेदी पर पद्मासन प्रतिमा का आसन नाभि से नीचा न हो तथा वेदी पर एक या तीन कटनी ही बनायें, दो नहीं।
 5. वेदी में प्रतिमाएँ विषम-संख्या में ही विराजमान करें।
 6. एक ही तल पर दो वेदियों का निर्माण न करें।
 7. वेदी के पीछे खिड़की, झरोखा, अलमारी, द्वार कदापि न बनायें।
 8. प्रतिमा जी को प्रतिष्ठा से पूर्व प्रतिष्ठाचार्य को अवश्य दिखायें।
 9. मूलनायक-प्रतिमा, प्रतिष्ठाकारक, नगर एवं तीर्थकर की राशि का मिलान करके ही निश्चित करें।
 10. मंदिर के मुख्य-द्वार के सामने खंभा, कुआँ, पेड़ तथा वेदी के द्वार के सामने स्तंभ नहीं होना चाहिए।
 11. मंदिर के निर्माण में पूर्व एवं उत्तर-खाली हो तथा दक्षिण-पश्चिम भारी रखना चाहिए।
 12. कुआँ, बोर-वैल आदि उत्तर या पूर्व में बनायें दक्षिण में नहीं।
 13. मंदिर का मुख्य-द्वार दक्षिण दिशा में कदापि न बनायें।
 14. मंदिर पूर्व या उत्तर-मुखी बनायें। प्रवेश की अन्य दिशा होने पर भी वेदी को उत्तर या पूर्व-मुखी ही बनायें।
 15. यथासंभव मंदिर का निर्माण पत्थर से ही करावें। आचार्यों ने लोहे को अधम धातु माना है। वास्तु-शास्त्र में इसको कीलक-दोष कहा है, अतः वेदी, गर्भगृह एवं शिखर में इसका कदापि उपयोग न करें। इसके अतिरिक्त जिनालय एवं प्रतिमा-संबंधी जानकारी वरिष्ठ-विद्वानों से प्राप्त करके उनके परामर्श-अनुसार की निर्माण-कार्य का शुभारंभ करें।
- शिलान्यास से प्रतिमा-विराजमान करने तक प्रत्येक-कार्य शुभ-लग्न, एवं शुभ-मुहूर्त में ही करना चाहिए। तभी जिनबिम्ब एवं जिनालय हमारे लौकिक एवं पारलौकिक लक्ष्यों की पूर्ति में सहयोगी हो सकेंगे।

□□□

हीनांग प्रतिमा का फल निम्नानुसार है

वक्रनासिका	—	दुःखकारक
अंग छोटे हों	—	क्षयकारक
विकृत नेत्र	—	नेत्र विनाशक
छोटा मुख	—	भोग विनाशक
हीन कटि	—	आचार्य विनाशक
हीन जंघा	—	पुत्र-मित्र विनाशक
हीन आसन	—	ऋद्धि नाशक
हीनहस्त एवं चरण	—	धन-क्षयकारक
ऊर्ध्वमुख	—	धन नाशकारक
अधोमुख	—	चिन्तावर्धक
वक्र-ग्रीवा	—	स्वदेशनाशक
ऊँचा नीचा मुख	—	विदेश गमन
विषम आसन	—	व्याधिकारक
अन्याय के धन से निर्मित	—	दुष्कालकारक
न्यूनाधिक अंग	—	स्व-पर-पक्ष को कष्ट
रौद्र रूप	—	बिम्ब निर्माता का नाश
अधिक अंग	—	शिल्पकार का नाश
दुर्बल अंग	—	द्रव्य का नाश
पतला उदर	—	दुर्भिक्षकारक
तिरछी दृष्टि	—	अपूजनीय विरोधकारक
गाढ़ दृष्टि	—	अशुभकारक
अधोदृष्टि	—	विघ्नकारक पुत्रनाश
ऊर्ध्वदृष्टि	—	भार्यानाश
नेत्ररहित	—	नेत्र-नाशकारक
बड़ा उदर	—	उदर-रोगकारक
हीनाधिक हृदय	—	हृदय-रोगकारक
हीन अंस	—	पुत्र नाशक

□□□

घर/प्रतिष्ठान में यन्त्र की स्थापना

गृह चैत्यालय में 9 इंच अवगाहना तक की प्रतिमा तथा प्रतिमा के पीछे यन्त्र स्थापित करने का विधान आचार्यों ने किया है। परन्तु गृह/प्रतिष्ठान में केवल यन्त्र स्थापना का कोई शास्त्रीय प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ है।

भक्ति, पूजा, श्रद्धा एवं समर्पण पर आधारित होती है। जिनेन्द्र भगवान के प्रति अन्तरङ्ग श्रद्धानपूर्वक की जाने वाली भक्ति ही हमारे असाता कर्मों के संवर एवं निर्जरा में हेतु बनती है। यन्त्र आदि केवल माध्यम हैं। यदि श्रावक प्रतिदिन अभिषेक, पूजन एवं जाप करे तो यन्त्रादि अवलम्बनों की आवश्यकता ही नहीं होगी। आज श्रावक यह चाहता है कि प्रतिदिन श्रावक की चर्या न करके केवल कुछ यन्त्र घर/प्रतिष्ठान में स्थापित करने मात्र से उसे सुख समृद्धि मिलने लगे जो सर्वथा असम्भव है।

वर्तमान में यन्त्रों का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। लोग अपनी छोटी-बड़ी बाधाओं का निवारण यन्त्रों के माध्यम से मानने लगे हैं। प्रचुरता से होने वाले इन यन्त्रों के प्रयोग में प्रायः शुद्धि-अशुद्धि का ध्यान नहीं रखा जाता है। मुझे यन्त्रों के इस प्रयोग का शास्त्रीय औचित्य प्रतीत नहीं होता है। जो भी लोग यन्त्रों के प्रयोग में विश्वास रखते हैं उनसे इतना जरूर कहना चाहते हैं कि वे कम से कम शुद्धि-अशुद्धि का विवेक अवश्य रखें।

घर की महिलाएँ अशुद्धि काल में भी बैठक, रसोई एवं अन्य कक्षों में कार्य करती हैं, इसलिए गृह में यन्त्रादि की स्थापना विचारणीय है। यन्त्र 'शब्द ब्रह्म' होते हैं, इनकी अवमानना होने पर विपरीत प्रभाव भी देखा गया है।

श्रावक को प्रतिदिन जिनमन्दिर जाकर देवपूजादि कार्य सम्पन्न करना अनिवार्य है। यदि जिनमन्दिर घर से इतनी दूर हो कि प्रतिदिन जाना सम्भव नहीं हो सकता तो छुट्टी के दिनों में मन्दिर जाने का सङ्कल्प करके नित्य चर्या करने के लिए जिनवाणी की स्थापना गृह के पवित्र स्थान (जिससे शौचादि का स्थान संलग्न न हो) में करें, जहाँ अशुद्ध अवस्था में किसी का आवागमन न हो। घर के सभी सदस्य प्रतिदिन स्नान करके अपनी धार्मिक चर्या वहाँ सम्पादित करें।

यदि यन्त्र घर/प्रतिष्ठान में रखना ही चाहें तो प्रतिष्ठित शुद्ध यन्त्र ही रखें। जिनका जाप प्रतिदिन करें। यन्त्र शुद्ध स्थान में पूर्व या उत्तर मुख विराजमान करें।

वर्तमान में विभिन्न प्रकार के यन्त्रों का प्रचलन देखा जा रहा है, जिसके व्यामोह में न पड़ें। लाभ-हानि, आपत्ति-विपत्ति, सुख-दुख, यश-अपयश सभी कर्मोदय से होते हैं। जिनेन्द्र अर्चना ही वर्तमान में सर्वश्रेष्ठ उपाय है अतः शक्त्यनुसार दर्शन-पूजा का सङ्कल्प करके अपना पुण्य बढ़ाएँ।

□□□

श्रुतपञ्चमी पर्व एवं पूजन विधि

श्रुतपञ्चमी जिनवाणी संरक्षण, प्रचार एवं संवर्द्धन का सङ्कल्प दिवस है। श्रुतपञ्चमी व्रत करने वालों के साथ-साथ सभी श्रावकों को सजग होकर जिनवाणी का बहुमान करते हुए धार्मिक अनुष्ठान उत्साह एवं उल्लास पूर्वक मनाना चाहिए। विद्वान्, सक्रिय कार्यकर्ता एवं सङ्गठन निम्न कार्य कर सकते हैं।

जिनालय, गर्भगृह, सरस्वती भण्डार शास्त्रों की अलमारियों की समय-समय पर सफाई करते रहें जिससे मकड़ी के जाले एवं जीवोत्पत्ति न हो सके, शास्त्रों को सूर्य की रोशनी दिखाकर व्यवस्थित करें तथा कपूर, लौंग एवं पारद की गोली आदि ऐसे पदार्थ डालें जिससे वर्षा काल में त्रस जीवों की उत्पत्ति न हो। जीर्ण शास्त्रों की नई जिल्द, अछार परिवर्तन, पुराने खराब कवर (आवरण) हटाकर नये कवर चढ़ाना चाहिए, पुरानी पूजा की पुस्तकों एवं शास्त्रों के कटे-फटे पत्रों को अलग करके उनके स्थान पर स्केन या फोटो कॉपी पृष्ठ जोड़कर उनको पूर्ण करके जिल्द करवाएँ।

श्रुतपञ्चमी के दिन प्रातः सामूहिक पूजा के पश्चात् जिनवाणी पूजा, श्रुतस्कन्ध विधान विधि पूर्वक सम्पादित करें। दोपहर में शास्त्र सज्जा एवं अछार सज्जा प्रतियोगिता, श्रुत परम्परा का वाचन, जिनवाणी का महत्त्व, जिनवाणी संरक्षण आदि विषयक सङ्गोष्ठियों से जन चेतना जागृत करना चाहिये।

प्रभावना हेतु जिनवाणी की पालकी, विमान, शोभायात्रा का आयोजन करें। संध्या आरती, सामूहिक जाप एवं शास्त्र प्रवचन के साथ ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएँ भी करा सकते हैं।

यदि दिगम्बर श्रमण सङ्घ की सन्निधि का सौभाग्य हो तो उनके आशीर्वाद एवं श्रीमुख से नवीन ग्रन्थ का स्वाध्याय आरम्भ करना सर्वश्रेष्ठ है। यदि सङ्घ

सान्निध्य नहीं है तो भी स्वाध्याय का शुभारम्भ सङ्कल्प पूर्वक करें। ग्रन्थ का स्वाध्याय पूर्ण होने तक किसी रस, फल आदि का त्याग करने से स्वाध्याय के प्रति बहुमान एवं परिणामों की विशुद्धि होती है।

यदि आपके नगर में पाठशाला नहीं हो या शास्त्र सभा नहीं होती हो तो सामाजिक सङ्गठनों, विद्वानों, त्यागी-वृत्ती श्रावकों के माध्यम से इनका शुभारम्भ करके बालकों में संस्कारारोपण का कार्य अनिवार्यतः करें।

जो ग्रन्थ वर्तमान में अतिआवश्यक प्रतीत हो रहे हों या जिन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ प्रकाशित नहीं हुई हों उन्हें प्रकाशित कर सरस्वती भण्डार को वृद्धिगत करें।

श्रुतपञ्चमी के दिन प्रातः सामूहिक पूजा के पश्चात् जिनवाणी पूजा, श्रुतस्कन्ध विधान विधि पूर्वक सम्पादित करें। दोपहर में शास्त्र सज्जा एवं अछार सज्जा प्रतियोगिता, श्रुत परम्परा का वाचन, जिनवाणी का महत्त्व, जिनवाणी संरक्षण आदि विषयक संगोष्ठियों से जन चेतना जागृत करना।

प्रभावना हेतु जिनवाणी की पालकी, विमान, शोभायात्रा का आयोजन करें। संध्या आरती, सामूहिक जाप एवं शास्त्र प्रवचन के साथ ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएँ भी करा सकते हैं।

महावीर निर्वाणोत्सव आगम के परिप्रेक्ष्य में

वर्तमान शासननायक भगवान महावीर का निर्वाण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि के अन्तिम प्रहर में स्वाति नक्षत्र में हुआ था। लौकिक मान्यता से कभी इसे चतुर्दशी एवं कभी अमावस्या को मनाया जाता है, इस विसंगति का निराकरण आचार्यों ने तिलोपपणत्ति, षट्खण्डागम (धवला टीका), कषाय पाहुड (जय धवला टीका), उत्तरपुराण, वर्द्धमान चरित्र, पुराणसार संग्रह, दशभक्ति संग्रह आदि ग्रन्थों में किया है। जिस तिथि में स्वाति नक्षत्र होता है उसी तिथि में निर्वाण महोत्सव मनाया चाहिए।

तिथि क्षय या वृद्धि होने पर स्वाति नक्षत्र के अनुसार तथा नक्षत्र क्षय-वृद्धि होने पर चतुर्दशी तिथि के अनुसार निर्वाण महोत्सव मनाया चाहिए। व्रतों के लिए दो तिथि हों तो प्रथम तिथि को मान्य माना गया है।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को भगवान् महावीर स्वामी का समवसरण विसर्जित हुआ और उन्होंने निर्वाण प्राप्ति के लिए पावापुरी के पद्मसरोवर में योग निरोध धारण किया। इसी कारण त्रयोदशी धन्य त्रयोदशी के रूप में प्रसिद्ध हुई और

धार्मिक अनुष्ठान में धन्य त्रयोदशी का व्रत भी प्रचलित हुआ।

प्रातः भगवान् का निर्वाण होते ही सौधर्म इन्द्रादिक ने आनन्दकूट नाटक के साथ निर्वाण महोत्सव मनाया। प्रतिवर्ष वर्तमान में भी धार्मिक अनुष्ठान संयम साधना एवं व्रत विधान पूर्वक यह महोत्सव मनाया जाता है।

उसी दिन गोधूलि बेला में महावीर स्वामी के प्रथम गणधर गौतम स्वामी को कैवल्य की प्राप्ति हुई। कैवल्य ज्योति प्रकट होने के उपलक्ष्य में दीप प्रज्वलित करके दीपोत्सव मनाते हैं। दीपावली मनाने के विभिन्न सम्प्रदायों में विभिन्न कथानक हैं, जिनके अनुसार दीपावली मनायी जाती है। जैन श्रावक भी उन्हीं का अनुसरण कर लक्ष्मी पूजा, व्यापार उपकरण पूजा, देवी देवता पूजा आदि क्रियाएँ रात्रि में सम्पन्न करते हैं जो जैन धर्मानुसार उचित नहीं हैं।

दीपोत्सव हेतु निर्देश

1. पूजा हेतु स्थान की शुद्धि करके उच्चि पीठिका (टेबिल) पर उत्तर या पूर्वाभिमुख जिनवाणी विराजमान कर पूजन अनुष्ठान शुद्ध वस्त्रों में सूर्यास्त से पूर्व सम्पन्न करें।
2. पूजा में भगवान की अप्रतिष्ठित धातु, प्लास्टिक की मूर्तियाँ तथा देवी देवताओं की मूर्ति या चित्र/फोटो/कलेण्डर आदि नहीं रखना चाहिए क्योंकि वह पूजनीय नहीं हैं अतः पूजा हेतु जिनवाणी रखें।
3. पूजा में रुपया, सिक्का, खाद्यान्न आदि न रखें, दीपावली के दिन धन लक्ष्मी की नहीं ज्ञान लक्ष्मी की आराधना एवं कामना करें।
4. व्यापारिक उपकरण तराजू, बाँट, मीटर, आदि की पूजा न करके स्वस्तिक अङ्कित कर उन्हें शुद्ध तथा व्यवस्थित करके निष्ठापूर्वक व्यापार करने का संकल्प करें।
5. दूध, अक्षत, आदि मङ्गल द्रव्य के रूप में रख सकते हैं, पर उनसे पूजन न करके प्रज्वलित दीपों से आरती करें।
6. दीपावली पावन पर्व है अतः जुआ, सट्टा, मद्यपान आदि छोटे कर्म नहीं करना चाहिए।
7. पूजा के बाद मिष्ठान्न वितरण प्रसाद के रूप में न करके अपनी शम्यनुसार प्रमोद रूप में प्रभावना वितरित करना चाहिए।
8. धनतेरस (धन्य त्रयोदशी) के दिन महावीर भगवान योग निरोध करके मुक्ति लक्ष्मी पाने को अग्रसर हुए थे इसी भावना से पूजानुष्ठान आदि करें परन्तु धार्मिक मान्यता से बर्तन, रजत या स्वर्णादि क्रय नहीं करना चाहिए।

9. पटाखों से अत्यधिक जीव हिंसा एवं प्रदूषण होता है। स्वयं को भी क्षति पहुँचने की संभावना रहती है एवं पाप का भारी बन्ध होता है, अतः पटाखों का प्रयोग न करें।

दीपावली पूजन विधि

दीपावली के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर सामायिक, पाठ आदि दिनचर्या से निर्वृत्त होकर स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहिनकर अष्टद्रव्य लेकर मन्दिर जी जाना चाहिए। मन्दिर में पूरे उत्साह के साथ अभिषेक एवं नित्य पूजा के बाद महावीर निर्वाण पूजा, निर्वाणकाण्ड पढ़कर लाडू चढ़ाएँ तत्पश्चात् स्वाध्याय एवं आत्म चिन्तन करें। मुनि, आर्यिका आदि पात्रों के होने पर आहार दान के पश्चात् ही भोजन करना चाहिए।

आवश्यक सामग्री- शुद्ध प्रासुक जल, पूजन के बर्तन, अष्टद्रव्य, चौकी, घिसी हुई केशर, दीपक, घी, बाती, कलश (मङ्गलीक, सुपारी, पीली सरसों, सवा रुपया, पञ्चरत्न, चाँदी का स्वस्तिक सहित) श्रीफल, आचार्य प्रणीत ग्रन्थ, मौली (पचरंगा धागा)।

आवश्यक मन्त्र-शुद्धि मन्त्र, स्थल शुद्धि मन्त्र, तिलक मन्त्र, सकलीकरण मन्त्र, रक्षा मन्त्र, शान्तिमन्त्र, कलशस्थापन मन्त्र, दीपकस्थापन मन्त्र।

विधि-अपराहण काल में स्नानोपरान्त शुद्ध वस्त्र पहिनकर पूजा के लिए अष्टद्रव्य शुद्ध प्रासुक जल से धोकर तैयार करें। शुद्धि मन्त्र द्वारा स्वयं की शुद्धि करके जिस स्थान पर पूजा करना है उस स्थान की शुद्धि करें। मङ्गलाष्टक पढ़कर सकलीकरण, तिलक, रक्षासूत्रबन्धन करके रक्षामन्त्र एवं शान्तिमन्त्र पढ़ते हुए पुष्प क्षेपण करें। माण्डने पर ऊँचे चौके पर आचार्य प्रणीत ग्रन्थ विनय पूर्वक पूर्व या उत्तराभिमुख विराजमान करें। श्री का मण्डल बनाकर ईशान कोण में श्रीफल युक्त कलश एवं आग्नेय कोण में जाली से ढँककर दीपक स्थापित करें।

लय एवं शुद्धोच्चारण के साथ विनयपाठ, पूजा पीठिका स्वस्तिपाठ, परमर्षि स्वस्ति पाठ पढ़कर देवशास्त्रगुरु, वर्तमान चौबीसी, आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी का अर्घ्य चढ़ाकर गौतमस्वामी एवं सरस्वती पूजन करके शान्ति पाठ पूर्वक विसर्जन करें। यह अनुष्ठान विधि सांयकालीन भोजन के पूर्व ही पूर्ण करें।

श्रीगौतमगणधर पूजा

जय जय इन्द्रभूति गौतमगणधर स्वामी मुनिवर जय जय।
तीथङ्कर श्री महावीर के प्रथम मुख्य गणधर जय जय।।
द्वादशाङ्ग श्रुत पूर्ण ज्ञानधारी गौतम स्वामी जय जय।
वीर प्रभु की दिव्यध्वनि जिनवाणी को सुन हुए अभय।।
ऋद्धि सिद्धि मङ्गल के दाता मोक्ष प्रदाता गणधर देव।
मङ्गलमय शिव पथ पर चलकर मैं सिद्ध बनूँ स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

मैं मिथ्यात्व नष्ट करने को निर्मल जल की धार करूँ।

सम्यक् दर्शन प्राप्त करूँ अरु जन्म-मरण भव रोग हलूँ।।

गौतम गणधर स्वामी के चरणों की मैं करता पूजन।

देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करूँ नमन।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा।

पञ्च पाप अविरति को त्यागूँ शीतल चन्दन चरण धरूँ।

भव आताप नाश करके प्रभु मैं अनादि भव रोग हलूँ।। गौ०

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।

पञ्च प्रमाद नष्ट करने को उज्ज्वल अक्षत भेंट करूँ।

अक्षय पद की प्राप्ति हेतु प्रभु मैं अनादि भव रोग हलूँ।। गौ०

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०स्वाहा।

चार कषाय अभाव हेतु मैं पुष्प मनोरम भेंट करूँ।

कामवाण विध्वंस करूँ प्रभु मैं अनादि भव रोग हलूँ।। गौ०

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०स्वाहा।

मन वच काया योग सर्व हरने को प्रभु नैवेद्य धरूँ।

क्षुधा व्याधि का नाम मिटाऊँ मैं अनादि भव रोग हलूँ।। गौ०

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने को अन्तर दीप प्रकाश करूँ।

चिर अज्ञान तिमिर को नाशूँ मैं अनादि भव रोग हलूँ।। गौ०

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व०स्वाहा।

मैं सम्यक् चारित्र्य ग्रहण कर अन्तर तप की धूप वरूँ।
अष्ट कर्म विध्वंस करूँ प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ॥गौ०

ॐ हीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्व० स्वाहा।

रत्नत्रय का परम मोक्ष फल पाने को फल भेंट करूँ।
शुद्ध स्वपद निर्वाण प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरूँ॥गौ०

ॐ हीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य चरणों में सविनय भेंट करूँ।
पद अनर्घ्य सिद्धत्व प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरूँ॥गौ०

ॐ हीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

श्रावण कृष्ण एकम के दिन समवशरण में तुम आये।
मानस्तम्भ देखते ही तो मान मोह अघ गल पाये॥

महावीर के दर्शन करते ही मिथ्यात्व हुआ चकचूर।
रत्नत्रय पाते ही दिव्यध्वनि का लाभ लिया भरपूर॥

ॐ हीं दिव्यध्वनिप्राप्त्या श्रीगौतमगणधरस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को कर्म घातिया करके क्षय।
सायंकाल समय में पाई केवलज्ञान लक्ष्मी की जय॥

ज्ञानावरण दर्शनावरणी मोहनीय का करके अन्त।
अन्तराय का सर्वनाश कर तुमने पाया पद भगवन्त॥

ॐ हीं केवलज्ञानप्राप्त्या श्रीगौतमगणधरस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विचरण करके दुखी जगत के जीवों का कल्याण किया।
अन्तिम शुक्ल ध्यान के द्वारा योगों का अवसान किया॥

देव! बानवे वर्ष अवस्था में तुमने निर्वाण लिया।
क्षेत्र गुणावा करके पावन सिद्ध स्वरूप महान लिया॥

ॐ हीं मोक्षपदप्राप्त्या श्रीगौतमगणधरस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

मगध देश के गौतमपुर वासी वसु भूति ब्राह्मण पुत्र।
माँ पृथ्वी के लाल लाड़ले इन्द्रभूति तुम ज्येष्ठ सुपुत्र॥
अग्निभूति अरु वायुभूति लघु भ्राता द्वय उत्तम विद्वान।
शिष्य पाँच सौ साथ आपके चौदह विद्या ज्ञान निधान॥
शुभ वैशाख शुक्ल दशमी को हुआ वीर को केवलज्ञान।
समवशरण की रचना करके हुआ इन्द्र को हर्ष महान॥
बारह सभा बनी अति सुन्दर गन्धकुटी के बीच प्रधान।
अन्तरिक्ष में महावीर प्रभु बैठे पद्मासन निज ध्यान॥
छियासठ दिन हो गए दिव्यध्वनि खिरी नहीं प्रभु की जान।
अवधिज्ञान से लखा इन्द्र ने गणधर की है कमी प्रधान॥
इन्द्रभूति गौतम पहले गणधर होंगे यह जान लिया।
वृद्ध ब्राह्मण वेश बना, गौतम के गृह प्रवेश किया॥
पहुँच इन्द्र ने नमस्कार कर किया निवेदन विनयमयी।
मेरे गुरु श्लोक सुनाकर मौन हो गए ज्ञानमयी॥
अर्थ भाव वे बता न पाए वही जानने आया हूँ।
आप श्रेष्ठ विद्वान् जगत में शरण आपकी आया हूँ॥
इन्द्रभूति गौतम श्लोक श्रवण कर मन में चकराए।
झूठा अर्थ बताने के भी भाव नहीं उर में आए॥
मन में सोचा तीन काल, छः द्रव्य, जीव, षट् लेश्या क्या ?
नव पदार्थ, पञ्चास्तिकाय, गति, समिति, ज्ञान, व्रत, चारित क्या ?
बोले गुरु के पास चलो मैं वहीं अर्थ बतलाऊँगा।
अगर हुआ तो शास्त्रार्थ कर उन पर भी जय पाऊँगा॥
अति हर्षित हो इन्द्र हृदय में बोला स्वामी अभी चलें।
शंकाओं का समाधान कर मेरे मन की शल्य दलें॥
अग्निभूति अरु वायुभूति दोनों भ्राता संग लिए जभी।
शिष्य पाँच सौ संग ले गौतम साभिमान चल दिए तभी॥
समवशरण की सीमा में जाते ही हुआ गलित अभिमान।
प्रभु दर्शन करते ही पाया सम्यक्दर्शन सम्यग्ज्ञान॥

तत्क्षण सम्यक्चारित धारा मुनि वन गणधर पद पाया।
 अष्ट ऋद्धियाँ प्रगट हो गईं ज्ञान मनःपर्यय छाया।।
 खिरने लगी दिव्यध्वनि प्रभु की परम हर्ष उर में आया।
 कर्म नाशकर मोक्ष प्राप्ति का यह अपूर्व अवसर पाया।।
 ओंकार ध्वनि मेघ गर्जना सम होती है गुणशाली।
 द्वादशांग वाणी तुमने अन्तर्मुहूर्त में रच डाली।।
 दोनों भ्राता शिष्य पाँच सौ ने मिथ्यात्व तभी हरकर।
 हर्षित हो जिन दीक्षा ले ली दोनों भ्रात हुए गणधर।।
 राजगृही के विपुलाचल पर प्रथम देशना मंगलमय।
 महावीर सन्देश विश्व ने सुना शाश्वत शिव सुखमय।।
 इन्द्रभूति, श्रीअग्निभूति, श्रीवायुभूति, शुचिदत्त, महान्।
 श्री सुधर्म, माण्डव्य, मौर्यसुत, श्री अकम्य, अति ही विद्वान्।।
 अचल और मेदार्य प्रभास यही ग्यारह गणधर गुणवान्।
 महावीर के प्रथम शिष्य तुम हुए मुख्य गणधर भगवान्।।
 छह-छह घड़ी दिव्यध्वनि खिरती चार समय नित मंगलमय।
 वस्तुतत्त्व उपदेश प्राप्त कर भव्य जीव होते निजमय।।
 तीस वर्ष रह समवशरण में गूँथा श्री जिनवाणी को।
 देश-देश में कर विहार फैलाया जिनवाणी को।।
 कार्तिक कृष्ण अमावस प्रातः महावीर निर्वाण हुआ।
 सन्ध्याकाल तुम्हें भी पावापुर में केवलज्ञान हुआ।।
 ज्ञान लक्ष्मी तुमने पाई और वीर प्रभु ने पद निर्वाण।
 दीप-मालिका पर्व विश्व में तभी हुआ प्रारम्भ महान्।।
 आयु पूर्ण हुई आपकी योग नाश निर्वाण लिया।
 धन्य हो गया क्षेत्र गुणावा देवों ने जयगान किया।।
 आज तुम्हारे चरण कमल के दर्शन पाकर हर्षाया।
 रोम-रोम पुलकित है मेरे भव का अन्त निकट आया।।
 मुझको भी प्रज्ञा छैनी दो मैं निज पर मैं भेद करूँ।
 भेदज्ञान की महाशक्ति से दुखदायी भव खेद हूँ।।
 पद सिद्धत्व प्राप्त करके मैं पास तुम्हारे आ जाऊँ।
 तुम समान बन शिव पद पाकर सदा-सदा को मुस्काऊँ।।

जय जय गौतम गणधर स्वामी अभिरामी अन्तरयामी।
 पाप पुण्य पर-भाव विनाशी मुक्ति निवासी सुखधामी।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौतम स्वामी के वचन भाव सहित उर धार।

मन वच तन जो पूजते वे होते भव पार।। इत्याशीर्वादः।

महावीराष्टकस्तोत्रम्

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
 समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।
 जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो,
 महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।1।।
 अताग्रं यच्चक्षुःकमल-युगलं स्पन्द-रहितम्,
 जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तर-मपि।
 स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
 महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।2।।
 नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट-मणि-भा-जाल-जटिलम्,
 लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभूताम्।
 भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
 महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।3।।
 यदर्चा-भावेन प्रमुदित-मना ददुर् इह,
 क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुखनिधिः।
 लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा,
 महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।4।।
 कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनुज्ञान-निवहो,
 विचित्रात्माप्येको नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनयः।
 अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोऽद्भुत-गतिर्,
 महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।5।।
 यदीया वाग्गंगा विविध-नय-कल्लोल विमला,
 बृहज्ज्ञानाम्भोधि-र्जगति जनतां या स्नपयति।
 इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता,
 महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।6।।

(200)

प्रतिष्ठा पराम

वास्तुशान्ति-मन्त्र- **ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः** अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

जिस स्थान पर खनन कार्य करना है वहाँ पूर्व या उत्तर मुख खड़े होकर **ॐ हूं** फट् स्वाहा मन्त्र पढ़ते हुए अधोमुख नक्षत्र बेला में पाँच कुदाली लगाकर खनन कार्य का शुभारम्भ करें। खनन करने के पश्चात् वास्तु विधान करें। यन्त्रेशयन्त्र स्थापित कर 5 ईंटों पर कलावा बाँधकर स्वस्तिक बनाकर णमोकार मन्त्र पढ़ते हुए ऊर्ध्वमुख नक्षत्र बेला में शिलान्यास करें।

तत्पश्चात् नीव भरकर शान्तिहवन करके शान्तिभक्ति करना चाहिए।

□□□

गृहप्रवेश

गृहस्वामी की राशि एवं कलशचक्रानुसार शुभनक्षत्र, वार, तिथि एवं शुभ लगन (देखें परिशिष्ट) में ही गृहप्रवेश करना चाहिए। गृहप्रवेश के पूर्व ही मकान का निर्माण कार्य पूर्ण होना चाहिए क्योंकि गृहप्रवेश के पश्चात् कार्य कराना शास्त्रानुसार उचित नहीं है। गृहप्रवेश शुक्लपक्ष के पूर्वाह्न में ही करें क्योंकि कृष्णपक्ष में करने से चोरों का भय रहता है।

आवश्यक सामग्री-श्रीफल, पूजनद्रव्य, विनायकयन्त्र, हवन सामग्री, धूप, कपूर, दीपक, (मय जाली के), बन्दनवार, कलावा, पीली सरसों, रङ्गोली, नवीन ताम्र कलश (जिसमें हल्दी गाँठ, सुपाड़ी, पीली सरसों, रजतस्वस्तिक, पञ्चरत्न, रजत सिक्का आदि मङ्गलद्रव्य हों।) जिसे घर में शुभ दिशा एवं शुद्ध स्थान में गृहप्रवेश के पश्चात् स्थापित किया जावेगा।

गृहप्रवेश में णमोकारमन्त्र पाठ, भक्तामरविधान या शान्तिविधान किसी एक अनुष्ठान पूर्वक गृहशुद्धि एवं वास्तुशान्ति के लिए शान्ति मन्त्र की कम से कम 11 हजार या अधिक से अधिक जितनी हो सके जाप करके उसकी दशांश आहुतिपूर्वक शान्तिहवन अनिवार्य है। अनुष्ठान सुविधानुसार एक दिन-दो दिन या तीन दिन में गृहस्थाचार्य के निर्देशन में ही सम्पन्न करें।

गृहप्रवेश अनुष्ठान के एक दिन पूर्व मन्दिर जी में ही शान्तिविधान करें। जित

(201)

प्रतिष्ठा पराम

नवीन ताम्र कलश को घर में स्थापित करना है, उसे पूर्ण सामग्री के साथ विधान मण्डल पर विधि पूर्वक स्थापित करें, जिसे गृहप्रवेश के दिन मन्दिर से लेकर आयेगे।

घर के जिन कक्षों में जाप एवं विधान करना हो, उस स्थान को शुद्ध करके चन्दोवा इस प्रकार बाँधें कि यन्त्र पूर्व या उत्तरमुख विराजमान कर सकें। जिनालय से यन्त्र लाकर स्थल शुद्धि करके टेविल पर विराजमान करें। मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, शान्तिमन्त्र करके पात्र शुद्धि सकलीकरण करके जप स्थान में यन्त्र अभिषेक एवं विनायकयन्त्र पूजन करें। तत्पश्चात् जाप का सङ्कल्प करके जाप आरम्भ करें।

यदि अनुष्ठान एक ही दिन में करना हो तो दूसरे कक्ष में मण्डल पर यन्त्र स्थापित करके ईशान दिशा में कलश तथा आग्नेय दिशा में दीपक स्थापित कर पूजन एवं विधान का कार्य शुरू करें। नहीं तो विधान अनुष्ठान दूसरे दिन भी कर सकते हैं।

गृहप्रवेश के मुहूर्तानुसार (यदि प्रातः 7 बजे लगभग का मुहूर्त है तो गृहप्रवेश के पश्चात् हवन करें यदि 10 बजे के लगभग का है तो हवन करके गृहप्रवेश करें।) गृह स्वामी समस्त परिवार के साथ अक्षत, श्रीफल, मङ्गलद्रव्य लेकर मन्दिर जायें। देवदर्शन के पश्चात् वेदी या मण्डल में विधान के समय विराजमान किया गया ताम्रकलश, जलता हुआ दीपक, बन्दनवार, केशर, पीली सरसों, पुष्प आदि के साथ गाजे बाजे सहित गृहप्रवेश हेतु जायें। गृह के सामने मुख्य द्वार पर रङ्गोली से सज्जा करें।

मुख्य द्वार पर पहुँचकर दिग्बन्धन करें द्वार के ऊपर **ॐ श्री महावीराय नमः** तथा बगल में शुभ लाभ अङ्कित करें। गृहस्थाचार्य गृहप्रवेश करने वालों को (जिसकी राशि से मुहूर्त निकला हो सबसे पहले उसे फिर अन्य लोगों को) तिलक करें।

नौ बार णमोकारमन्त्र पढ़कर घर के वरिष्ठ सदस्य से प्रमुख द्वार पर बन्दनवार लगाने के पश्चात्, मङ्गलकलश, दीपक एवं मङ्गलद्रव्य के साथ दाहिना पैर आगे बढ़ाकर णमोकारमन्त्र पढ़ते हुए गृहप्रवेश करें। मङ्गलकलश को घर के शुभ एवं शुद्ध स्थान ईशान या पूर्व, उत्तर मुख करके स्थापित करें दीपक को रसोई घर की आग्नेय दिशा में स्थापित करें। णमोकारमन्त्र पढ़ते हुए रसोई का कार्य आरम्भ करें।

तत्पश्चात् घर के सभी वरिष्ठ सदस्यों से आशीर्वाद प्राप्त करें तथा गृहप्रवेश कर्ताओं का मङ्गलतिलक कर सभी बधाई दें। मिष्ठान्न वितरण तथा भोजन करावें।

मण्डल-विसर्जन करके यन्त्र को अर्घ्य चढ़ाकर यन्त्र को विधिपूर्वक जिनालय में विराजमान करके अर्घ्य चढ़ाकर कार्य पूर्ण करें।

प्रतिष्ठान शुभारम्भ

गृहप्रवेश अनुसार ही अनुष्ठान विधिपूर्वक शुभ मुहूर्त में प्रतिष्ठान का शुभारम्भ करें।

□□□

प्रथम देव दर्शन विधि

पुत्र-पुत्री के जन्म का सूतक परिवारजनों को 10 दिन का एवं माँ को 45 दिन का होता है। 45 दिन के पश्चात् शुभयोग, वार एवं तिथि में पुत्र/पुत्री को घर से गाजेबाजे के साथ जिनालय में देवदर्शन गृहस्थाचार्य द्वारा कराना चाहिए।

सर्वप्रथम शिशु की अमृतस्नान मन्त्र से मन्त्रित जल के द्वारा शुद्धि करें, गन्धोदक लगाकर तिलक करके, रक्षामन्त्र एवं शान्तिमन्त्र से मन्त्रित पुष्पक्षेपण करें। यदि आचार्य, मुनि, आर्यिका या व्रती का सान्निध्य हो तो उनका आशीर्वाद लेकर उनसे शिशु के कान में 9 वार णमोकार मन्त्र मधुर ध्वनि में सुनवाएँ। माँ को सङ्कल्पित करें कि वह 8 वर्ष तक निरन्तर शिशु को जिनदर्शन के संस्कार एवं प्रेरणा देती रहे एवं मद्य, मांस, मधु तथा व्यसन से बचाये, क्योंकि 8 वर्ष तक उसके द्वारा किए गये पाप का दोष माता-पिता को लगता है।

जिनालय में श्रीफल, मङ्गलद्रव्य, वस्त्र, वेष्टन, शास्त्र, वर्तन, दानराशि आदि सामर्थ्य अनुसार शिशु की ओर से भेंट कर उसे जिनशासन की दान परम्परा से जोड़ें।

□□□

वाहनशुद्धि-संस्कार विधि

वर्तमान मशीनी युग में रसोई से लेकर व्यापार सभी मशीनों पर अवलम्बित हो गया है। समयाभाव में व्यक्तिगत वाहनों की आवश्यकता निरन्तर बढ़ती जा रही है। प्रायः यह देखा जाता है कि वाहन क्रय करके, वाहन की पूजा, देवी देवताओं की मनौतियाँ, हवन एवं प्रसाद वितरण आदि क्रियाएँ की जाती हैं।

जैन शास्त्रों में वाहनशुद्धि-संस्कार विधि का कोई उल्लेख नहीं है, फिर भी करना चाहें तो मन्दिर में विधान अनुष्ठान विधिपूर्वक सम्पादित करके वाहन के पास मङ्गलाष्टक, दिग्बन्धन, रक्षामन्त्र, रक्षासूत्र बन्धन, स्वस्तिक ॐ का अङ्कन करके वाहन की शुद्धि-संस्कार विधि कर सकते हैं।

□□□

व्रती एवं महाव्रती का अन्तिम संस्कार

-पं. सनत कुमार विनोद कुमार रजवांस

व्रत जीवन को पवित्र करके मृत्युञ्जयी बनाते हैं। व्रतों से व्रती की कषाएँ इतनी कृश हो जाती हैं कि मरण भी महोत्सव बन जाता है। व्रती जीवन इतना निष्पृह हो जाता है कि शरीर छूटने की तैयारी स्वयं होने लगती है। व्रतों की सार्थकता का यही बिन्दु है जहाँ साधक सल्लेखनाव्रत धारण करके समाधिमरण की तैयारी करता है। वहीं जीवन के अन्तिम क्षणों में सम्पूर्ण परिग्रह एवं आरम्भ का त्याग करके समाधिमरण कर शरीर का विसर्जन करता है। व्रती/ महाव्रती के प्राणान्त के पश्चात् देहान्त की क्रिया आगमानुसार ही सम्पादित करना चाहिए। शव का अन्तिम संस्कार यथाशीघ्र करना चाहिए क्योंकि शव में अन्तर्मुहूर्त में त्रस जीवों की गुणित रूप से उत्पत्ति होने लगती है।

मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका, उत्तम श्रावक, मठपति(भट्टारक) के शव को गृहस्थों द्वारा बनाई गई शिविका या पालकी में स्थापित कर ग्राम के बाहर ले जाते हैं।

शव को क्षेपण करने का स्थान नगरादि से न अति दूर हो, न अति समीप हो, प्रकाशयुक्त हो, मर्दन किया हुआ हो अत्यन्त कठोर एवं अपवित्र न हो, बिलादि से रहित हो, बहुत ऊँचा, बहुत नीचा न हो, अति सचिकम्पन न हो, रजरहित और बाधारहित हो।

क्षपक की वसतिका से शवक्षेपण करने का स्थान नैऋत्य, दक्षिण और पश्चिम दिशा में होना चाहिए। अन्य दिशा में क्षेपण करने से सङ्घ में कई दोष उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे आग्नेय दिशा में शव क्षेपण करने से ईर्ष्या, वायव्य दिशा में कलह, पूर्व में सङ्घ में फूट, उत्तर में व्याधि, ईशान में पक्षपात आदि दोष होते हैं। जिस दिशा में ग्राम हो उस दिशा में क्षपक की पीठ करके देह स्थापित करना चाहिए। मृतक के निकट मयूर पिच्छिकादि उपकरण भी स्थापित करें क्योंकि यदि कोई क्षपक अन्त में संक्लेश परिणामों द्वारा सम्यक्त्व की विराधना करके व्यन्तरादिक देवों में उत्पन्न हुआ हो तो पिच्छी सहित अपने शरीर को देखकर मैं पूर्व भव में मुनि था यह जान सकेगा और पुनः धर्म में दृढ श्रद्धा करके सम्यग्दृष्टि हो जायेगा।

सामान्य मुनि की समाधि होने पर शरीर के दाह संस्कार के समय सिद्ध, योगि, शान्ति और समाधि भक्ति करना चाहिए। आचार्य की समाधि होने पर शरीर के दाह संस्कार के समय सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, शान्ति और समाधि भक्ति करना चाहिए। अपने गण के मुनि के समाधिस्थ होने पर उस दिन सर्व सङ्घ को उपवास करके स्वाध्याय भी नहीं करना चाहिए। दूसरे गण के मुनि के समाधिस्थ होने पर स्वाध्याय नहीं करना चाहिए उपवास भजनीय है।

शिविका में क्षपक के शव को स्थापित कर दृढ़ बन्धनों से बाँधा जाता है ताकि वह उछल न सके। शव की पीठ ग्राम की ओर हो, शव को निश्चित मार्ग से शीघ्रता पूर्वक ले जाना चाहिए। मार्ग में न खड़ा होना चाहिए और न पीछे मुड़कर देखना चाहिये। शव के आगे एक गृहस्थ मुट्ठी में कुश/ दर्भ लेकर चले, एक गृहस्थ कमण्डलु को जल से पूर्ण करके तथा उसकी नालिका आगे की ओर करके जल की पतली-पतली धार छोड़ते हुए आगे-आगे चले (अग्नि ले जाने का विधान भी कहीं-कहीं पर है) पीछे मुड़कर न देखे। पूर्व में देखे हुए स्थान पर डाभ की मुट्ठी खोलकर मुनि की देह को स्थापन करने की भूमि को सम करें। यदि डाभ/ तृण न मिलें तो ईंट के चूर्ण अथवा शुष्क केशर से संस्तर (स्थान) को सम करें। संस्तर को सम बनाकर चारों ओर खूँटी गाड़ें और उनको मौली से तीन बार वेष्टित करें। पद्मासन से शव को सिर से पैर तक माप लें। सर्वप्रथम भूमि पर चन्दन का चूरा डालें फिर रोली से त्रिकोण रूप तीन रेखाएँ माप के अनुसार डालें जो टूटी एवं विषम न हों। त्रिकोण के तीनों कोणों पर उल्टे तीन स्वस्तिक बनावें और तीनों रेखाओं के ऊपर तीनों ओर सद्ग मिलकर नौ, सात

या पाँच 'रं' लिखें त्रिकोण के मध्य में 'ॐ ह्रीं अहं' लिखें फिर 'ॐ ह्रीं काष्ठ-सञ्चयं करोमि स्वाहा' इस मन्त्र को पढ़कर त्रिकोणाकार ही लकड़ी जमावें पश्चात् 'ॐ ह्रीं ह्रीं झ्रौं अ सि आ उ सा काष्ठे शवं स्थापयामि स्वाहा' मन्त्र उच्चारण करते हुए शव को काष्ठ पर स्थापित करें और 'ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्निसन्धुक्षणं करोमि स्वाहा' यह मन्त्र बोलकर अग्नि लगावें। शव को दाह संस्कार करने के बाद तीसरे दिन वहाँ जाकर उनकी अस्थियों आदि की यथायोग्य क्रिया करनी चाहिए; क्योंकि अग्निकायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु गोमट्टसार में तीन दिन बताई गयी है अर्थात् तीन दिन में अग्नि पूर्ण शान्त हो जाती है। क्षपक की समाधिमरण से अन्तिम संस्कार तक की समस्त क्रियाएँ अत्यन्त पुण्यवर्धक एवं प्रेरणास्पद होती हैं, इनका सौभाग्य श्रावक को कभी-कभी ही प्राप्त होता है। विशेष विवरण हेतु सन्दर्भित ग्रन्थ देखें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची- हरिवंश पुराण 65/12, 13/799, आदिपुराण- 74/343-350/507, मरण-कण्डिका-40/2044/593, भगवती-आराधना-1962/1965, समाधि-दीपक- 58-62

□□□

सूतक-पातक एक दृष्टि

जन्म, मरण एवं ऋतुकाल या इनका संसर्ग/स्पर्श करने से जो अशुद्धि होती है, उसमें धार्मिक कार्य आहार दान आदि करने का निषेध शास्त्रों में उल्लिखित है। यह निम्न कारणों से होती है-

1. आर्तज-मरण सम्बन्धी
2. सौतिज-प्रसूति सम्बन्धी
3. आर्तव-ऋतुकाल सम्बन्धी
4. तत्संसर्गज-सूतक से अशुद्ध व्यक्तियों का स्पर्श।

सूतक-पातक के कारण होने वाले हर्षातिरेक या विषादातिरेक में विकारी परिणामों के उद्वेलन से अविवेक एवं प्रमाद होने लगता है, जो हिंसा का कारण बन जाता है। इसकी तीव्रता तथा काल रागादिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

चरणानुयोग, प्रथमानुयोग आदि आचार्य प्रणीत ग्रंथों में इनका उल्लेख प्राप्त होता है, कुछ ग्रंथ सन्दर्भ इस प्रकार से दृष्टव्य हैं- जयसेन

प्रतिष्ठापाठ, मूलाचार प्रदीप, महापुराण, भगवती आराधना, मूलाचार प्रायश्चित्त सङ्ग्रह, जैनव्रतविधानसङ्ग्रह आदि में इसके शास्त्रीय सन्दर्भ निम्नानुसार हैं-

दुःभाव असुचिसूदगपुष्कवईजाइसकरादीहिं-924 त्रिलोकसार
सूतकं पातकं चापि यथोक्तं जैनशासने,
एषणाशुद्धि-सिद्धयर्थं वर्जयेच्छ्रावकाग्रणी। 2/251 लाटी संहिता
दीनस्य सूतिकायाश्च छिम्पकस्य विशेषतः

मद्यविक्रियिणो मद्यपायिसंसर्गिणश्च न। 48 बोधप्राभृतम्

(संस्कृतटीका का क्षेपक श्लोक)

शवादिनापि क्लीबेन दत्तं दायकदोषभाक् 15/34 अनगार-धर्माभृत
कुटुम्बीनां सूतके जाते गते द्वादशके दिने

जिनाभिषेक पूजाभ्यां पात्रदानेन शुद्ध्यति। सूतक विधि पृ. 250

चतुर्थे दशरात्रिः स्यात् षडरात्रिः पुंसि पञ्चमे,

षष्ठे चतुरहः शुद्धिः सप्तमे च दिनत्रयम्।

अष्टमे पुंस्यहोरात्रिः नवमे प्रहरद्वयम्।

दशमे स्नानमात्रं स्यादेतत् गोत्रस्य सूचकम्॥ सूतक विधि पृष्ठ 27

अशुद्धि किसे होगी-सूतक-पातक का प्रभाव वंश व गोत्र के अनुसार लगता है, अतः सम्पत्ति के बटवारे, अन्य स्थान या विदेश में रहने, पारिवारिक वैमनस्यता, व्यापार आदि अलग-अलग होने पर भी इनका दोष लगेगा।

अशुद्धि में क्या नहीं करना-जिनाभिषेक, पूजा, द्रव्यचढ़ाना, रसोई में कार्य, मुनि एवं व्रतियों को आहार दान, वैयावृत्ति, अनुष्ठान आदि क्रियाएँ नहीं करना।

अशुद्धि काल में मंदिर में प्रवेश करें परन्तु गर्भगृह में नहीं जाएँ, मंदिर के पात्रादि को न छुएँ ।

अशुद्धि किस को नहीं होगी-विवाहिता पुत्री एवं बहिन, सकलीकरण करके जप एवं अनुष्ठान में संलग्न सभी पात्रों को इनका दोष नहीं लगेगा। केवल धागा बांधने मात्र से सूतक के दोष का परिहार नहीं होगा।

गर्भवती महिला 5 माह तक विधान अनुष्ठान एवं आहारदान कर सकती है। दैनिक देवदर्शन एवं पूजन जन्म के दिन तक कर सकती है।

सूतक-पातक की स्थिति में बोली ले सकते हैं।

आत्मघात के सूतक में विभिन्न मत हैं।

वर्तमान आचार्य एवं वरिष्ठ विद्वानों का मत है कि आत्महत्या का 6 माह का सूतक उसी परिवार को लगेगा जिसमें घटना घटी है, शेष परिवारजन जिनका खान-पान व्यापार आदि अलग-अलग है उन्हें सामान्य सूतक लगेगा।

यदि परिवार, व्यापार, पत्राचार एवं फोन का त्याग करके तीर्थ यात्रा पर संकल्प पूर्वक जाते हैं तो परिवार में होने वाले सूतक पातक का दोष नहीं लगेगा।

यदि सकलीकरण वाला पात्र अशुद्ध स्थान में जाता है या सम्पर्क रखता है तो वह भी अशुद्ध माना जायेगा।

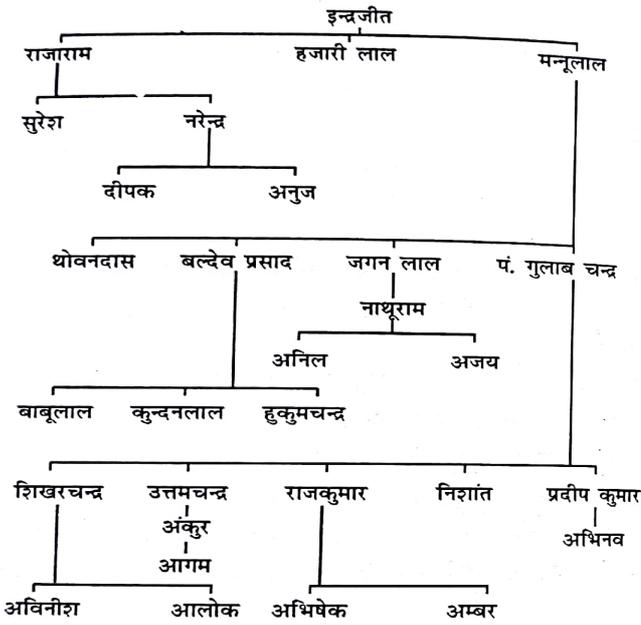
प्रायश्चित्त सङ्ग्रह पृष्ठ 153 श्लोक 134, 135, 136 में अशुद्धि काल में नीरस या आचाम्ल आहार करते हुए अपने सभी आवश्यकों का पालन मौन पूर्वक सम्पादित करने का विधान किया है। रजोनिवृत्ति के पश्चात् स्नान कर गुरु के पास जाकर प्रायश्चित्त ग्रहण कर व्रतारोपण करें।

मुनि, चण्डालादि-अस्पर्श व्यक्ति से स्पर्शित होने पर व्यवहार शुद्धि के लिए जल स्नान कर शुद्धि करें।

दिन की गणना दाह संस्कार से न करके मरणदिवस से करें।

सूतक पातक के सन्दर्भ में कई क्षेत्रीय परम्पराएँ प्रचलित हैं, पीढ़ी के निर्धारण में भी विभिन्न मान्यताएँ हैं। वरिष्ठ आचार्यों/मुनिराज एवं विद्वानों से विचार विमर्श अनुसार यदि एक ही दादा जी के पुत्र एवं पौत्र की पीढ़ी में सूतक पातक है तो उन्हीं से पीढ़ी ली जावेगी यदि दादा जी के चचेरे भाईयों की पीढ़ी में सूतक-पातक होता है तो दादा जी के पिता जी से पीढ़ी ली जावेगी।

निम्न सारणी के आधार पर पीढ़ी निर्धारण इस प्रकार होता है।



1. पीढ़ी की गिनती के लिए यदि राजारामजी के पुत्र सुरेश के यहाँ सूतक-पातक की स्थिति बनती है और गुलाबचन्द्रजी के पुत्र शिखरचन्द्रजी के परिवार में सूतक-पातक की गणना करनी हो तो गणना इन्द्रजीतजी से की जायेगी।
2. यदि सूतक-पातक जगन प्रसादजी के पुत्र नाथूरामजी के यहाँ होता है और उसकी गणना शिखरचन्द्रजी के परिवार में करनी है तो गणना मन्मूलालजी से होगी।
3. यदि शिखरचन्द्रजी के यहाँ सूतक-पातक की स्थिति है और अम्बर के परिवार में सूतक-पातक की स्थिति की गणना गुलाबचन्द्रजी से की जायेगी।

व्यवहारगत सूतक-पातक शुद्धि का काल प्रमाण

अवसर	जन्म	मरण	विशेष
3 पीढ़ी तक	10 दिन	12 दिन	
4 पीढ़ी तक	10 दिन	10 दिन	श्रावकाचार सग्रह में 5 एवं 6 दिन
5 पीढ़ी तक	6 दिन	6 दिन	श्रावकाचार सग्रह में 4 एवं 5 दिन
6 पीढ़ी तक	4 दिन	4 दिन	श्रावकाचार सग्रह में 3 एवं 4 दिन
7 पीढ़ी तक	3 दिन	3 दिन	श्रावकाचार सग्रह में 2 एवं 3 दिन
8 पीढ़ी तक	8 पहर (एक दिन)	8 पहर (एक दिन)	श्रावकाचार सग्रह में स्नान मात्र
9 पीढ़ी तक	2 पहर	2 पहर	स्नान मात्र
10 पीढ़ी तक	स्नान करने तक	स्नान करने तक	
पुत्री एवं अन्य रिश्तेदार (निज घर में)	3 दिन	3 दिन	घर से बाहर हो, तो नहीं लगेगा।
अन्य व्यक्ति, दासी, दास एवं पालतू जानवर (निज घर में)	1 दिन	1 दिन	घर से बाहर हो, तो नहीं लगेगा।
गृह त्वागी, संन्यासी, संग्राम में	-	1 दिन	
गोत्री अन्य स्थान पर (विदेश में)	खबर आने के पोछे शेष दिनों में	खबर आने के पोछे शेष दिनों में	
गर्भस्रव होने पर (तीन माह तक)	-	जितने माह का हो माता को उतने दिन	परिवारजनों को नहीं लगेगा
गर्भपात होने पर (चार माह से छः माह तक)	-	जितने माह का हो माता को उतने दिन	परिवारजनों को एक दिन का
मरा हुआ बालक जन्में	-	माता को 45 दिन	परिवारजनों को 3 दिन
जीवित बालक उत्पन्न हो नाव छेदन के पश्चात् मर जावे	-	माता को 45 दिन	परिवारजनों को 5 दिन
आठ वर्ष के बालक का मरण होने पर	-	तीन पीढ़ी तक 10 दिन	अन्य पीढ़ियों को उपयुक्तानुसार
अपघात मृत्यु-गर्भपात कराने पर	-	छः माह	प्रारिचित के पश्चात् हो शुद्ध होंगे।
रजस्वला स्त्री	-	-	5 दिन पश्चात् शुद्ध होते हैं।
अनाचारी स्त्री-पुरुष को	जीवन पर्यंत	जीवन पर्यंत	

नोट : सूतक पातक की व्यवस्था के काल का क्षेत्रीय परम्परानुसार निर्धारण करें।

व्रत ग्रहण एवं उद्यापन विधि**संकल्पपूर्वकः सेव्ये नियमोऽशुभ-कर्मणः।****निवृत्तिर्वा व्रतं स्याद्वा-प्रवृत्तिः शुभकर्मणि॥**

-सागर धर्मामृत-2/80

पंचेन्द्रिय जन्य विषयों को संकल्प पूर्वक त्याग करना और हिंसादिक अशुभ कर्मों से विरक्त होना अथवा पात्रदानादि शुभकार्यों में प्रवृत्ति करना व्रत कहलाता है।

व्रत एक पवित्र कर्म/अनुष्ठान है जो साधक की मनोदशा परिवर्तित करने में सक्षम होता है। यही कारण है कि जैनाचार्यों ने पापों से विरक्ति का नाम व्रत कहा है।

श्रावक को गृहस्थाश्रम में दैनिक आम्रव रोकने के लिए देवपूजा, स्वाध्याय, संयम, दान आदि का पालन अवश्य करना चाहिए। गृहस्थोचित कर्तव्यों का पालन करने से श्रावक अपने कर्मों की निर्जरा कर लेता है।

कषाय विषयाहारो त्यागो यत्र विधीयते।**उपवासः स विज्ञेय शेषं लंघनकं विदुः॥**

मोक्षमार्ग प्रकाशक पृ० 7/231

विषय-कषाय के साथ आहार (चारों प्रकार) का त्याग करना यथार्थ उपवास है, अन्यथा लंघन है। मात्र लंघन से आत्म कल्याण एवं कर्म निर्जरा सम्भव नहीं है। छः प्रकार का आहार निम्न प्रकार का है।

1. नोकर्माहार (तीर्थकर) 2. कर्माहार (नारकी) 3. ओजाहार (पक्षी)
4. लेपाहार (एक इन्द्रिय वृक्षादि) 5. मानसिक आहार (देव) 6. कवलाहार (मनुष्य)।
कवलाहार के चार भेद हैं:-

1. खाद्य-पूड़ी, रोटी, दाल, चावल आदि।
2. स्वाद्य-लंघन, इलायची आदि।
3. लेह्य-खड़ी आदि चाटने वाले पदार्थ।
4. पेय-पानी, दूध, शरबत, रस आदि पीने वाले पदार्थ।

उपवास के दिन इन चारों प्रकार के आहार का त्याग किया जाता है।

व्रत ग्रहण मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य ब्रह्मणो मतेस्मिन्.....वीर निर्वाण संवत्सरे मासानां मासोत्तमे मासे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे.....प्रदेशस्य.....नगरे अष्टमहाप्रातिहार्यादिशोभित श्रीमदहर्त्परमेश्वर प्रतिमा/अष्टाविंशति मूलगुण-आराधक मुनिराज सन्निधौ अहं.....व्रतस्य संकल्पं करिष्ये। अस्य व्रतस्य समाप्तिपर्यन्तं मे सावद्य त्यागः गृहस्थाश्रमजन्यारम्भ परिग्रहादीनापि त्यागः।

(नौ बार णमोकार मन्त्र को जाप कर व्रत ग्रहण करें।)

व्रत का संकल्प (हिन्दी)

श्री वीतराग सर्वज्ञदेव को नमस्कार कर वृषभादि चौबीस तीर्थकरों के द्वारा प्रवर्तित जिनधर्मानुसार.....श्री वीर निर्वाण संवत्सर.....मास में.....पक्ष में.....तिथि में.....वार में जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र, आर्यखण्ड भारत देश के... ..प्रदेश स्थित.....नगर में.....अष्ट प्रातिहार्य से शोभित जिनेन्द्र प्रतिमा अथवा अट्ठाईस मूलगुणों के पालकमुनिराज के सान्निध्य में मैं.....व्रत का संकल्प करती हूँ/करता हूँ।

इस व्रत के समाप्ति पर्यन्त यथाशक्ति पापों का त्याग कर एवं गृहस्थ संबंधी आरंभ परिग्रहादि का भी त्याग करता हूँ। इस व्रत की विधि अनुसार व्रत पूजा, व्रत कथा एवं व्रत मंत्र पूर्वक एकाशन/उपवास करूँगा/करूँगी। व्रत पूरा होने पर अपनी शक्ति अनुसार व्रत का उद्यापन करूँगा/करूँगी। हे भगवन्! मैं इस व्रत को यथा संभव शुद्धि पूर्वक करके अधिक से अधिक समय धर्म में लगाऊँगा/लगाऊँगी। फिर भी मुझसे मन से, वचन से, काय से, जाने-अनजाने में कोई गलती हो जाये तो मैं भगवान से क्षमा माँगता हूँ/माँगती हूँ।

हे भगवन्! इस व्रत को करने से मेरे सारे कष्ट दूर हो जायें, मेरे सारे दुखों का नाश हो, मुझे बोधि की प्राप्ति हो, मेरे आठों कर्मों का नाश हो और यथाशीघ्र मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो।

हे भगवन्! इस व्रत को करने से मेरे सकल परिजनों को सुख, समृद्धि और शांति मिले। जगत् के सकल जीवों को सुख और शांति मिले।

व्रतों को करके अपनी शक्तनुसार उद्यापन करें तथा नैमित्तिक व्रत अनुष्ठान में मन उत्कृष्ट रूप से उत्साहित करें अर्थात् अत्यन्त प्रभावना पूर्वक अनुष्ठान कर उद्यापन करें, जिससे व्रत की महिमा बढ़े और लोगों को व्रत करने की प्रेरणा मिले।

जिनालय में महान आश्चर्य करने वाला महाभिषेक करें। फिर परिवार एवं संघ के साथ समारोह पूर्वक महापूजा करें।

पूजा के पश्चात् अपने घर में आकर निर्दोष प्रासुक शुद्ध, मधुर और तृप्तिकारक आहार मुनिराजों को देवे, शेष बचे आहार को कुटुम्ब के साथ स्वयं ग्रहण करें। मुनिराज के न होने पर साधर्मिजनों को भोजन करावें।

जिस व्रत का उद्यापन करें उतने पूजा के बर्तन, सामग्री, छत्र, चंवर, चन्दोवा, शास्त्र, घण्टा आदि उतने ही मन्दिरों को प्रदान करें।

व्रत उद्यापन मन्त्र

ॐ अद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे शुभे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....
वासरे श्रीमदहर्त प्रतिमा सन्निधौ पूर्व.....(व्रत का नाम) गृहीतं तस्य परिसमाप्तिं
करिष्ये-अहं प्रमादाज्ञानवशात् व्रते जायमानदोषाः शान्तिमुपयान्ति। ॐ ह्रीं क्ष्वीं
स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्रचरणेषु आनन्दभक्तिः सदास्तु, समाधिमरणं भवतु,
पापविनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा सर्व शान्तिर्भवतु ह्रीं नमः।

(इस मन्त्र को नौ बार जाप करे)

व्रत उद्यापन मन्त्र (हिन्दी)

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र केनगर में.....मास में.....पक्ष में आज.....
तिथि.....वार में श्री अर्हत प्रतिमा/मुनिराज के सान्निध्य में.....व्रत ग्रहण किया
था। उसका विधि पूर्वक पालन एवं उद्यापन करके मैं आगे और व्रत करने
की भावना के साथ व्रत का समापन कर रहा हूँ/कर रही हूँ।

यदि प्रमाद या अज्ञानवश व्रत के समय कोई अपराध हुए हों तो उसकी
क्षमायाचना करता हूँ। ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा।

श्रीफल चढ़ाकर भगवान को नमस्कार कर नौ बार णमोकार मन्त्र की
जाप करें।

विभिन्न व्रतों के अभ्यास के बाद आत्म कल्याण की भावना से प्रतिमा
व्रत भी धारण करना चाहिए।

ग्यारह प्रतिमा व्रतों का क्रम

श्रावक की भूमिका में मोक्षमार्ग के अनुरूप आचरण करने के लिए ग्यारह प्रतिमा व्रतों का पालन करते हुए धर्मसाधना करते हैं:-

- प्रथम दर्शन प्रतिमा धारक सात व्यसन अतिचार सहित त्याग कर आठ मूलगुण अतिचार रहित ग्रहण करता है।
- दूसरी व्रत प्रतिमा धारक पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत इन बारह व्रतों को ग्रहण करता है। सच्चं देव, शास्त्र एवं गुरु के अतिरिक्त सभी सरागी देवी-देवताओं की पूजा का निषेध होता है।
- तीसरी सामायिक व्रत प्रतिमा धारक, प्रातः, मध्याह्न एवं संध्याकाल में सामायिक करता है।
- चौथी प्रोषध व्रत प्रतिमा धारक अष्टमी, चतुर्दशी एवं पर्व के दिनों में आरंभ छोड़कर संकल्पपूर्वक 48 घंटे के लिये चारों प्रकार के आहार का त्याग करके धर्म स्थान में रहता है।
- पाँचवी सचित्तत्याग व्रत प्रतिमा धारक सचित का त्याग करता है।
- छठी रात्रिभुक्तित्याग व्रत प्रतिमा धारक रात्रि भोजन और दिन में कुशील छोड़ता है।
- सातवीं ब्रह्मचर्य व्रत प्रतिमा धारक रात्रि और दिन में मैथुन सेवन का त्याग करता है।
- आठवीं आरंभत्याग व्रत प्रतिमा धारक आरंभ तजता है।
- नवमीं परिग्रहत्याग व्रत प्रतिमा धारक परिग्रह का त्याग करता है।
- दशवीं अनुमतित्याग व्रत प्रतिमा धारक पाप-कार्य का उपदेश व अनुमोदना का त्याग करता है।
- एकादश उद्दिष्टत्याग व्रत प्रतिमा धारक उद्देश्य सहित भोजन तजता है।

ग्यारहवीं प्रतिमा ऐलक क्षुल्लक एवं क्षुल्लिका की होती है। मुनिराज पूर्ण रत्नत्रय का पालन करते हुए साक्षात् नर से नारायण बनकर हमेशा-हमेशा के लिए मोक्ष सुख, परमानन्द के साथ आत्मगुणों से पूर्ण हो जाते हैं।

□□□

पञ्चगुरुभक्ति

मणुयणाइंद-सुर-धरिय-छत्तया, पंचकल्लाण-सोवखावली-पत्तया।
दंसणं णाण ज्ञाणं अणंतं बलं ते जिणा दिंतु अहं वरं मंगलं ॥१॥

जेहिं ज्ञाणग्गि-वाणेहिं अइदद्धयं जम्मजरमरण णयरत्तयं दद्धयं ।
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महं दिंतु सिद्धा वरं णाणयं ॥२॥

पंचहाचार पंचग्गि-संसाहया, वारसंगाइ-सुअ-जलहि-अवगाहया ।
मोक्ख-लच्छी महंती महं ते सया, सूरिणो दिंतु मोक्खं गया संगया ॥३॥

घोर-संसार-भीमाडवी-काणणे, तिक्ख-वियराल-णहपाव-पंचाणणे।
णट्ट-मग्गाण जीवाण पहदेसिया, वंदिमो ते उवज्जाय अम्हे सया ॥४॥

उग्ग तव चरण करणेहिं झीणं गया, धम्म वरझाण सुक्केक्क ज्ञाणं गया।
णिब्बरं तव सिरी ए समालिंगया, साहवो ते महामोक्ख पह मग्गया ॥५॥

एण थोत्तेण जो पंचगुरु वंदए, गुरुय-संसार-घण वेत्ति सो छिंदए।
लहइ सो सिद्ध सोक्खाइ बहुमाणं, कुणइ कम्मिंघणं पुंज पज्जालणं ॥६॥

अरुहा सिद्धा इरिया उवज्जाया साहु पंचपरमेट्टी ।
एयाण णमोयारा भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥७॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! पंचमहागुरुभक्तिकाउरस्सग्गो कओ तरस्सालोचेउं,
अट्टमहापाडिहेर संजुत्ताणं अरहंताणं अट्टगुणसंपण्णाणं उट्टलोयमत्थयम्मि
पइट्टियाणं सिद्धाणं अट्टपवयणमाउयासंजुत्ताणं आयरियाणं आयारादि
सुदणाणोवदेसयाणं उवज्जायाणं तिरयणगुणपालणरयाणं सब्वसाहूणं सया
णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ
बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ॥

(1) सिद्धभक्ति

गाहा

असरीरा जीवघणा उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायार-मणायारा लक्खण-मेयं तु सिद्धाणं ॥१॥

मूलोत्तर-पयडीणं बंधोदय-सत्त-कम्मउम्मुक्का।
मंगल-भूदा सिद्धा अट्ठ-गुणातीद-संसारा ॥२॥

अट्ठविय-कम्म-वियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ-गुणा किदकिच्चा लोयग्गिवासिणो सिद्धा ॥३॥

सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्धि-सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे ॥४॥

गमणागमण-विमुक्के विहडिय-कम्म-पयडि-संघादा।
सासय-सुह-संपत्ते ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं ॥५॥

जयमंगल-भूदाणं विमलाणं णाण-दंसणमयाणं।
तइलोय-सेहराणं णमो सया सव्व-सिद्धाणं ॥६॥

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरु-लघु-अव्वावाहं' अट्ठ-गुणा होंति सिद्धाणं ॥७॥

तव-सिद्धे णय-सिद्धे संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि ॥८॥

इच्छामि भंते! सिद्ध-भक्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं,
सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं अट्ठविह-कम्मविप्प-मुक्काणं,
अट्ठ-गुण-संपण्णाणं, उट्ट-लोय-मत्थयम्मि पयट्टियाणं तवसिद्धाणं
णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाण-
कालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि
णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि-मरणं
जिणगुण-संपत्ती होउ मज्झं।

□□□

पाठात्तर -^१ अगुरुलघुग-मवाहं (पं. आ. ध. टीका गाथा)

(2) श्रुतभक्ति

स्रग्धरा

अर्हद्वक्त्र-प्रसूतं गणधर-रचितं द्वादशाङ्गं विशालं ।
चित्रं बह्वर्थ-युक्तं मुनिगण-वृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥
मोक्षाग्र-द्वार-भूतं व्रत-चरण-फलं ज्ञेय-भाव-प्रदीपं ।
भक्त्या नित्यं प्रवन्दे श्रुतमह-मखिलं सर्वलोकैक-सारम् ॥1॥

वंशस्थ

जिनेन्द्र-वक्त्र-प्रविनिर्गतं वचो यतीन्द्र-भूति-प्रमुखैर्गणाधिपैः ।
श्रुतं धृतं तैश्च पुनः प्रकाशितं द्विषट्-प्रकारं प्रणमाम्यहं श्रुतम् ॥2॥

इन्द्रवज्रा

कोटीशतं द्वादश चैव कोटयो लक्षाण्य शीतिस्त्र्यधिकानि चैव ।
पञ्चाशदष्टौ च सहस्रसंख्य-मेतच्छ्रुतं पञ्च पदं नमामि ॥3॥

अनुष्टुभ्

अङ्ग-बाह्य-श्रुतोद्भूतान्यक्षराण्यक्षराम्नये ।
पञ्च-सप्तैकमष्टौ च दशाशीतिं समर्चये ॥4॥

गाहा

अरहंत-भासियत्यं गणहर-देवेहिं गन्थियं सम्मं ।
पणमामि भक्ति-जुत्तो सुदणाण-महोवहिं सिरसा ॥5॥

इच्छामि भंते! सुदभक्तिकाओसग्नो कओ तस्सालोचेडं अंगोवंग-
पइण्णय-पाहुडय परियम्म-सुत्त-पढमाणोय-पुव्वगय-चूलिया चेव-
सुत्तयथुइ-धम्मकहाइयं सया णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइ-गमणं समाहिमरणं जिण्णुण-संपती
होठ मज्झं ।

□□□

(3) चारित्रभक्ति

शार्दूलविक्रीडित

संसार-व्यसनाहति-प्रचलिता नित्योदय-प्रार्थिनः ।
प्रत्यासन्न-विमुक्तयः सुमतयः शान्तैनसः प्राणिनः ॥
मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं सोपानमुच्चैस्तरा-
मारोहन्तु चरित्रमुत्तममिदं जैनेन्द्रमोजस्विनः ॥1॥

अनुष्टुभ्

तिलोए सव्व-जीवाणं हियं धम्मोवदेसणं ।
वड्ढमाणं महावीरं वंदित्ता सव्ववेदिणं ॥2॥
घादिकम्म-विघातत्थं घादिकम्म-विणासिणा ।
भासियं भव्व-जीवाणं चारित्तं पंच-भेददो ॥3॥
सामायियं तु चारित्तं छेदोवड्ढावणं तथा ।
तं परिहार-विसुद्धिं च संजमं सुहुमं पुणो ॥4॥
जहाखादं तु चारित्तं तथाखादं तु तं पुणो ।
किंचाहं पंचहाचारं मंगलं मलसोहणं ॥5॥
अहिंसादीणि उत्ताणि महव्वयाणि पंच य ।
समिदीओ तदो पंच पंच-इंदिय-णिग्गहो ॥6॥
छब्भेयावासभूसिज्जा अण्हाणत्तमचेलदा ।
लोयत्तं ठिदि-भुत्तिं च' अदंतधावणमेव च ॥7॥
एय-भत्तेण संजुत्ता रिसि-मूलगुणा तथा ।
दसधम्मा तिगुत्तीओ सीलाणि सयलाणि च ॥8॥
सव्वेवि य परीसहा वुत्तुत्तरगुणा तथा ।
अण्णे वि भासिया संता तेसिं हाणीमएकया ॥9॥
जइरायेण दोसेण-मोहेणाणादरेण वा ।
वंदित्ता सव्वसिद्धाणं संजदा सा-मुमुक्खुणा ॥10॥

संजदेण मए सम्मं सव्वसंजमभाविणा।
सव्व-संजम-सिद्धीओ लब्भदे मुत्तिजं सुहं ॥11॥
धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तस्स' पणमति जस्स धम्मे सया मणो ॥12॥

इच्छामि भंते! चारित्तभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-
जोयस्स सम्मत्ताहिट्ठयस्स सव्व-पहाणस्स णिव्वाणमग्गस्स संजमस्स
कम्म-णिज्जर-फलस्स खमाहारस्स पंचमहव्वय-संपण्णस्स तिगुत्ति-गुत्तस्स
पंचसमिदिजुत्तस्स संजमस्स णाणज्झाण-साहणस्स समयाइयपवेसयस्स
सम्म-चरित्तस्स सया णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिणगुण-संपत्ती
होउ मज्झं।

(4) आचार्यभक्ति

गाहा

देस-कुल-जाइ-सुद्धा विसुद्ध-मण-वयण-काय-संजुत्ता।
तुम्हं पायपयोरुह-मिह मंगलमत्थु मे णिच्चवं ॥1॥
सगपर-समय-विदण्हू आगमहेदूहिं चावि जाणित्ता।
सुसमत्था जिण-वयणे विणए सुत्ताणु-रूवेण ॥2॥
बाल-गुरु-वुड्ढ-सेहे गिलाण-थेरे य खमणसंजुत्ता।
अट्ठावयग्ग'-अण्णे दुस्सीले चावि जाणित्ता ॥3॥
वय-समिदि-गुत्ति-जुत्ता मुत्तिपहे ठावया पुणो अण्णे।
अज्झावय-गुण-णिलया साहु-गुणोणावि संजुत्ता ॥4॥
उत्तम-खमाइए पुढवी पसण्ण-भावेण अच्छ-जल-सरिसा।
कम्मिं धण-दहणादो अगणी वाऊ असंगादो ॥5॥
गयणमिव गिरुवलेवा अक्खोहा सायरुव्व मुणि-वसहा।
एरिसगुण-णिलयाणं पायं पणमामि सुद्धमणो ॥6॥
संसार-काणणे पुण बंभममाणेहिं भव्व-जीवेहिं।
णिव्वाणस्स हु मग्गो-लद्धो तुम्हं पसाएण ॥7॥

अविसुद्धलेस्सरहिया विसुद्ध-लेस्साहि परिणदा सुद्धा।
रुहड्ढे पुण चत्ता धम्मे सुक्के य संजुत्ता ॥8॥
उग्गह - ईहावायाधारण - गुणसंपएहिं संजुत्ता।
सुत्तत्थ - भावणाए भाविय - माणेहिं वंदामि ॥9॥
तुम्हं गुणगण-संथुदि अजाण-माणेण जो मया (मए) वुत्तो।
दित्तु मम बोहि-लाहं गुरुभत्ति-जुदत्थओ णिच्चवं ॥10॥

इच्छामि भंते! आइरिय-भत्तिकाओसग्गो कओ तस्सालोचेउं
सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं पंचविहाचाराणं आयरियाणं
आयारादि-सुदणाणेवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयणगुण-पालणरयाणं सव्वसाहूणं
सया णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ
कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण-संपत्ती होउ
मज्झं।

(5) तीर्थकरभक्ति

गाहा

चउवीसं तित्थयरे उसहाइवीर-पच्छिमे वंदे।
सव्वे समण गणहरे'-सिद्धे सिरसा णमस्सामि ॥1॥

शार्दूलविक्रीडित

ये लोकेष्ट-सहस्र-लक्षणधरा ज्ञेयार्णवान्तर्गताः,
ये सम्यग्भवजाल-हेतुमथनाशु-चन्द्रार्कतेजोधिकाः।
ये साध्विन्द्र-सुराप्सरोगणशतैर्-गीतप्रणुत्यार्चितास्,
तान्देवान् वृषभादिवीरचरमान् भक्त्या नमस्याम्यहम् ॥2॥

स्रग्धरा

नाभेयं देवपूज्यं, जिनवरमजितं, सर्वलोक-प्रदीपं,
सर्वज्ञं सम्भवाख्यं, मुनिगण-वृषभं, नन्दनं देवदेवम्।
कमारिध्नं सुबुद्धिं, वर-कमलनिभं, पद्म-पुष्पाभिगन्धं,
क्षान्तं दान्तं सुपाशर्वं, सकल-शशिनभं, चन्द्रनामानमीडे ॥3॥

विख्यातं पुष्पदन्तं, भवभयमथनं, शीतलं लोकनाथं,
श्रेयांसं शीलकोशं, प्रवर-नरगुरुं, वासुपूज्यं सुपूज्यम् ।
मुक्तं दान्तेन्द्रियाश्वं, विमल-मृषिपतिं, सिंहसैन्यं मुनीन्द्रं,
धर्मं सद्धर्मकेतुं, शमदम-निलयं, स्तौमि शान्तिं शरण्यम् ॥4 ॥
कुन्धुं सिद्धालयस्थं, श्रमण-पतिमरं, त्यक्तभोगेषु चक्रं,
मल्लिं विख्यात-गोत्रं, खचर-गणनुतं, सुव्रतं सौख्य-राशिम् ।
देवेन्द्रार्च्यं नमीशं, हरिकुल-तिलकं, नेमिचन्द्रं भवान्तं,
पाशवं नागेन्द्रवन्द्यं, शरणमहमितो, वर्द्धमानं च भक्त्या ॥5 ॥

इच्छामि भन्ते! चउवीस-तित्थयर-भक्तिकाउस्सगो कओ तस्सालोचेउं
पंचमहाकल्लाण-संभण्णाणं अट्ठ-महापाडिहेर-सहियाणं
चउतीसातिसय-विसेस संजुत्ताणं बत्तीस-देविंद-मणिमय-
मउडमत्थय-महियाणं बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसिमुणिजइ-
अणगारो व गूढाणं थुइसय-सहस्स-णिलयाणं उसहाइवीर पच्छिम-मंगल-
महापुरिसाणं सया णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि ।
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं
जिणगुण-संपत्ती होउ मज्झं ।

(6) चैत्यभक्ति

इन्द्रवज्रा

वर्षेषु वर्षान्तर-पर्वतेषु नन्दीश्वरे यानि च मन्दरेषु ।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वन्दे जिन-पुङ्गवानाम् ॥1 ॥

मालिनी

अवनितल-गतानां कृत्रिमाऽकृत्रिमाणां,
वनभवन-गतानां दिव्य-वैमानिकानाम् ।
इह मनुज-कृतानां देव-राजार्चितानां,
जिनवर-निलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥2 ॥

शार्दूलविक्रीडित

जम्बू-धातकि-पुष्करार्ध-वसुधा क्षेत्रत्रये ये भवाश्-
चन्द्राम्भोज-शिखण्डिकण्ठ-कनक-प्रावृद्धनाभा जिनाः ।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षणधरा दग्धाष्ट²-कर्मन्धनाः,
भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥3 ॥

पाठान्तर -¹ नमीन्द्रं, ² दग्धाष्ट

स्रग्वरा

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजत-गिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुण्डले मानुपाङ्के ।
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवन्दे भुवन-महितले यानि चैत्यालयानि ॥4 ॥

शार्दूलविक्रीडित

द्वौ कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविन्द्रनीलप्रभौ,
द्वौ बन्धुक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ।
शेषाः षोडश-जन्म-मृत्यु-रहिताः सन्तप्तहेम-प्रभास्-
ते संज्ञान-दिवाकराः सुर-नुताः सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः ॥5 ॥

इच्छामि भन्ते! चेइयमत्ति काउसगो कओ तस्सालोचेउं
अहिलोय-तिरियलोय-उड्डलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि-जिणचेइयाणि
ताणि सव्वाणि तिसुविलोएसु भवणवासिय-वाणविंतर-
जोइसिय-कप्पवासिय त्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण
दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूवेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण
दिव्वेण ण्हाणेण णिच्चकालं अच्चिति पुज्जति वंदति णमस्सति
अहमवि इह संतो तत्थ संताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि
वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं
समाहिमरणं जिणगुण-संपत्ती होउ मज्झं ।

(7) योगिभक्ति

गाहा

थोस्सामि गुणहराणं अणयाराणं गुणेहिं तच्चेहिं ।
अंजुलि-मउलिय-हत्थो अहिवंदंतो सविभवेण ॥1 ॥
सम्मं चेव य भावे मिच्छाभावे तहेव बोद्धव्वा ।
चइऊण मिच्छभावे सम्मिणि उवट्ठिदे वंदे ॥2 ॥
दो-दोसविप्पमुक्के तिवंड-विरदे तिसल्ल-परिसुद्धे ।
तिण्णिण य गारव-रहिए तियरण-सुद्धे णमस्सामि ॥3 ॥
चउविहकसायमहणे चउगइ-संसारगमणभयभीए ।
पंचासव-पडिविरदे पंचेदियणिज्जदे वंदे ॥4 ॥

छज्जीवदयावण्णे छडायदण-विवज्जिये समिदभावे ।
 सत्तभयविप्पमुक्के सत्ताणभयंकरे वंदे ॥15 ॥
 णट्ठट्ठ-मयट्ठाणे पणट्ठ-कम्मट्ठ-णट्ठ-संसारे ।
 परमट्ठणिट्ठि-यट्ठे अट्ठ-गुणड्ढीसरे वंदे ॥16 ॥
 णवबंभवेरगुत्ते णवणय - सब्भाव - जाणगो वंदे ।
 दसविहधम्मट्ठाई दससंजम - संजुदे वंदे ॥17 ॥
 एयारसंगसुद-सायरपारगे वारसंग-सुदणिउणे ।
 वारसविह - तवणिरदे तेरसं - किरियापडे वंदे ॥18 ॥
 भूदेसु दयावण्णे चउदस चउदससु गंध-परिसुद्धे ।
 चउदसपुव्वपगह्भे चउदसमल - वज्जिदे वंदे ॥19 ॥
 वंदे चउत्थभत्तादि-जावळ्ममास-खवणि-पडिपुण्णे ।
 वंदे आदावन्ते सूरस्स य अहि - मुहट्ठिदे सूर ॥110 ॥
 बहु-विह-पडिमट्ठाई णिसेज्जवीरासणोज्जवासीयं ।
 अणिट्ठीवकंडुवदीवे चत्तदेहे य णमस्सामि ॥111 ॥
 ठाणिय-मोणवदीए अब्भोवासी य रुक्खमूली य ।
 धुदकेसमंसु-लोमे णिप्पडियम्मे य वंदामि ॥112 ॥
 जल्लमललित्तगत्ते वंदे कम्ममलकलुस-परिसुद्धे ।
 दीहणहमंसु लोये तव सिरिभरिए णमस्सामि ॥113 ॥
 णाणोदयाहि-सित्ते सीलगुणविह्वहिये तवसुगंधे ।
 ववगयराय - सुदट्ठे सिवगइ - पहणायगे वंदे ॥114 ॥
 उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे य घोरतवे ।
 वंदामि तव - महंते तव - संजमइड्ठि - संपत्तो ॥115 ॥
 आमोसहिए खेलो - सहिए जल्लोसहिए तव - सिद्धे ।
 विप्पोसहिए सव्वो - सहिए वंदामि तिविहेण ॥116 ॥
 अमयमहु - खीरसप्पि अक्खीणमहाणसे वंदे ।
 मणवल्लि-वचवल्लिकाय-वल्लिणो य वंदामि तिविहेण ॥117 ॥
 वर - कुट्ठवीय - बुद्धी पयाणुसारीय - सभिण्ण-सोयारे ।
 उग्गहईहसमत्थे सुत्तथ - विसारदे वंदे ॥118 ॥

आभिणिवोहिय मइ सुय-ओहिणा मणणाणि-सव्वणाणी य ।
 वंदे जगप्पदीवे पच्चक्खपरोक्खणाणी य ॥19 ॥
 आयास - तंतुजलसेडि - चारणे जंध - चारणे वंदे ।
 विउवणइड्ठिपहाणे विज्जाहरपण्णसमणे य ॥20 ॥
 गइचउरंगुलगमणे तहेव फलफुल्लचारणे वंदे ।
 अणुवमतवमहंते देवासुरवंदिदे वंदे ॥21 ॥
 जियभय जियउवसग्गे जिय-इंदिय परिसहे जियकसाये ।
 जियरायदोसमोहे जियसुहदुक्खे णमस्सामि ॥22 ॥
 एवं मए अभित्थुआ अणयारा रायदोस-परिसुद्धा ।
 संघस्स वरसमाहिं मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु ॥23 ॥

इच्छामि भन्ते! जोइभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं
 अड्ढाइज्जदीव दोसमुद्देसु पण्णा-रस-कम्मभूमिसु आदावण-रुक्खमूल
 अब्भोवासठाणमोण वीरासणेक्कपासकुक्कडासण चउ-छ-पक्ख-
 खवणादि-जोगजुत्ताणं सव्वसाहूणं सया णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि
 वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कमक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं
 समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ।

□□□

(8) समाधिभक्ति

अनुष्टुभ

स्वात्माभिमुखसंवित्तिलक्षणं श्रुतचक्षुणा,
 पश्यन्पश्यामि देव त्वां केवलज्ञानचक्षुषा ।

मन्नाकान्ता

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः सङ्गतिः सर्वदार्यैः,
 सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ॥1 ॥
 सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे ।
 सम्पद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥2 ॥

रथोद्धता

जैनमार्गरुचिरन्यमार्गनिर्वेगता जिनगुणस्तुतौ मतिः ।
 निष्कलङ्कविमलोक्तिभावनाः सम्भवन्तु मम जन्मजन्मनि ॥3 ॥

आर्या

गुरुमूले यतिनिचिते चैत्यसिद्धान्तवार्धिसद्घोषे ।
मम भवतु जन्मजन्मनि सन्यसनसमन्वितं मरणम् ॥4 ॥

अनुष्टुभ्

जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिसमार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवन्दनात् ॥5 ॥

शार्दूलविक्रीडित

आबाल्याज्जिन देवदेव! भवतः श्रीपादयोः सेवया,
सेवासक्तविनेयकल्पलतया कालोऽद्य-यावद् गतः ।
त्वां तस्याः फलमर्थये तदधुना प्राणप्रयाणक्षणे,
त्वन्नामप्रतिबद्धवर्णपठने कण्ठोऽस्त्वकृण्ठो मम ॥6 ॥

आर्या

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावद्यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ॥7 ॥
एकापि समर्थेयं जिनभक्तिर्दुर्गतिं निवारयितुम् ।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः ॥8 ॥

गाहा

पञ्च अरिजयणामे पञ्चयमदिसायरे जिणे वन्दे ।
पञ्चजसोयरणामे पञ्चयसीमन्दरे वन्दे ॥9 ॥
रणत्तयं च वन्दे चव्वीसजिणे च सब्बदा वन्दे ।
पञ्चगुरूणां वन्दे चारणचरणं सदा वन्दे ॥10 ॥

अनुष्टुभ्

अहमित्यक्षरं ब्रह्म - वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणिदध्मे ॥11 ॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥12 ॥

शार्दूलविक्रीडित

आकृष्टिं सुरसम्पदां विदधते मुक्तिश्रियो वश्यता-
मुच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां विद्वेषमात्मनसाम् ।
स्तम्भं दुर्गमनं प्रति प्रयततो मोहस्य सम्मोहनम्-
पायात्पञ्चनमस्क्रियाक्षरमयी साराधनदेवता ॥13 ॥

अनुष्टुभ्

अनन्तानन्तसंसार - सन्ततिच्छेद - कारणम् ।
जिनराजपदाम्भोज-स्मरणं शरणं मम ॥14 ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥15 ॥
नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥16 ॥
जिनेभक्तिर्जिनेभक्तिर्जिनेभक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥17 ॥

आर्या

याचेऽहं याचेऽहं जिन-तव चरणारविन्दयोर्भक्तिम् ।
याचेऽहं याचेऽहं पुनरपि तामेव तामेव ॥18 ॥

अनुष्टुभ्

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥19 ॥
इच्छामि भन्ते! समाहिभक्ति काओसगो कओ तस्सालोचेउं
रयणत्तयसरूव- परमप्पज्झाण-लक्खणसमाहिभत्तीए सया णिच्चकालं
अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ
सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण-संपत्ती होउ मज्झं ।

□□□

(9) निर्वाणभक्ति

गाहा

अट्ठावयम्भि उसहो चंपाए वासुपुज्ज-जिणणाहो ।
 उज्जंते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥11 ॥
 वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा ।
 सम्भेदे गिरि-सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥12 ॥
 वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे ।
 आहुट्ठ य कोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥13 ॥
 णेमिस्सामि' पजुण्णो संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो ।
 बाहत्तरि-कोडीओ उज्जंते सत्तसया सिद्धा ॥14 ॥
 रामसुआविण्ण जणा लाडणरिंदाण पंच कोडीओ ।
 पावागिरवरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥15 ॥
 पंडुसुआ तिण्ण जणा दविड-णरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
 सित्तुंजय गिरि-सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥16 ॥
 सत्तेव य बलभदा जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
 गजपंथे गिरि-सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥17 ॥
 राम-हणू-सुग्गीओ गवय-गवक्खो य णील-महणीलो ।
 णवणवदी-कोडीओ तुंगीगिरि-णिव्वुदे वंदे ॥18 ॥
 णंगाणंगकुमारा कोडी पंचद्ध मुणिवरा^२ सहिया ।
 सवणागिरिवरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥19 ॥
 दहमुहरायस्स सुआ कोडी पंचद्ध मुणिवरा सहिया ।
 रेवाउहयतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥10 ॥
 रेवा-णइए तीरे पच्छिमभायम्भि सिद्धवरकूडे ।
 दोचक्की दहकप्पे आहुट्ठय-कोडिणिव्वुदे वंदे ॥11 ॥
 वडवाणीवरणयरे दक्खिण-भायम्भि चूलगिरि-सिहरे ।
 इंदजियकुंभयण्णो णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥12 ॥
 पावागिरिवरणयरे सुवण्णभद्दाइ-मुणिवरा चउरो ।
 चलणा-णई-तडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥13 ॥

फलहोडीवरगामे पच्छिमभायम्भि दोणगिरि-सिहरे ।
 गुरुदत्ताइ-मुणिंदा णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥14 ॥
 णायकुमार-मुणिंदो बालि-महाबालि चेव अज्जेया ।
 अट्ठावयगिरि-सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥15 ॥
 अच्चलपुरवरणयरे ईसाणेभाए मेढगिरि-सिहरे ।
 आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥16 ॥
 वंसत्थलवर णयरे पच्छिमभायम्भि कुंथुगिरि-सिहरे ।
 कुलदेसभूसण-मुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥17 ॥
 जसहररायस्स' सुआ पंचसयाइं कलिंग-देसम्भि ।
 कोडिसिला (ए) कोडिमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥18 ॥
 पासस्स समवसरणे गुरु वरदत्ताइमुणिवरा पंच ।
 रिस्सिंदे-गिरि-सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥19 ॥
 जे जिणु जित्थु तत्था जे दु गया णिव्वुदिं परमं ।
 ते वंदामि य णिव्वं तियरण-सुद्धो णमस्सामि ॥20 ॥
 सेसाणं तु रिसीणं णिव्वाणं जम्भि जम्भि ठाणम्भि ।
 ते हं वन्दे सव्वे दुक्खाक्खयकारणद्वाए ॥21 ॥
 पासं तह अहिणंदण णायइहि मंगलाउरे वंदे ।
 अस्सारम्मे पट्टणि मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि ॥22 ॥
 बाहुबलि तह वंदमि पोदणपुर हत्थिणापुरे वंदे ।
 संती कुंथु व अरहो वाराणसि सुपास-पासं च ॥23 ॥
 महुराए अहिच्छित्ते वीरं पासं तहेव वंदामि ।
 जम्बुमुणिंदो वंदे णिव्वुइ-पत्तो वि जंबुवणगहणे ॥24 ॥
 पंचकल्लाण-ठाणइ जाणिवि संजादमच्चलोयम्भि ।
 मणवयण-कायसुद्धो सव्वे सिरसा णमस्सामि ॥25 ॥
 अगलदेवं वंदमि वरणयरे णिवण-कुण्डली वंदे ।
 पासं सिरपुरि वंदमि होलागिरिसंख-देवम्भि ॥26 ॥
 गोम्मटदेवं वंदमि पंचसयं धणुह देह उच्चं तं ।
 देवा कुणति वुट्टी केसरकुसुमाण तस्स उवरम्भि ॥27 ॥

गिष्वाण-ठाण-जाणवि अइसयठाणाणि अइसये-सहिया।
संजाद-मिच्चलोए सव्वे सिरसा णमस्सामि ॥28 ॥
जो जण पढइ तियालं गिष्वाण्डंकिं भाव-सुखीए।
भुंजदि णरसुरसुखं पच्छा सो लहउणिष्वाणं ॥29 ॥

इच्छामि भंते! परिणिव्वाणभक्ति काओसगो कओ तस्सालोचेउं
इमम्मि अवसपिणीए चउत्थसमयस्स पच्छिमे भाए आहुट्ठयमासहीणे
वास च उक्कम्मि सेसकालम्मि पावाए णयरीए कत्तियमासस्स
किण्हचउदसिए रत्तीए सादीए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो महदिमहावीरो
वड्ढमाणो सिद्धिगदो तिसुवि-लोएसु भवणवासिय वाणवित्तर
जोइसिइ-कप्पवासिय ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण
दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूवेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण
दिव्वेण ण्हाणेण सया णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति
परिणिव्वाण-महाकल्लाणपुज्जं करंति अहमवि इह संतो तत्थ
सत्ताइयं णिच्चकालं अच्चंमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ
कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ
मज्झं।

□□□

(10) शान्तिभक्ति (शान्त्यष्टकम्)

शार्दूलविक्रीडित

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् ! पादद्वयं ते प्रजाः,
हेतुस्तत्र विचित्र-दुःखनिचयः संसार-घोरार्णवः।
अत्यन्त - स्फुरदुग्र - रश्मिनिकर - व्याकीर्ण - भूमण्डलो,
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपाद-सलिलच्छायानुरागं रविः ॥1 ॥
क्रुद्धाशीर्विष - दष्ट - दुर्जय - विष - ज्वालावली - विक्रमो,
विद्या - भेषज - मन्त्र - तोय - हवनैर्याति प्रशान्तिं यथा।
तद्वत्ते चरणारुणाम्बुज - युग - स्तोत्रोन्मुखानां नृणां,
विघ्नाः काय-विनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः ॥2 ॥
सन्तप्तोत्तम - काञ्चन - क्षितिधर - श्री - स्पर्द्धि - गौरद्युते,
पुसां त्वच्चरण-प्रणाम-करणात्पीडाः प्रयान्ति क्षयम्।
उद्यद्-भास्कर-विस्फुरत्कर-शतव्याघात-निष्कासिताः,
नाना-देहि-विलोचन-द्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥3 ॥

त्रैलोक्येश्वर! भङ्गलब्ध - विजयादत्यन्त - रौद्रात्मकान्,
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः।
को वा प्रखलतीह केन विधिना कालोग्रदावानलान्,
न स्याच्चेत्तव पादपद्म-युगलस्तुत्यापगा वारणम् ॥4 ॥
लोकालोकनिरन्तर - प्रवितत - ज्ञानैकमूर्ते! विभो,
नानारत्न - पिनद्ध - दण्डरुचिर - श्वेतात पत्रत्रय।
त्वत्पादद्वय - पूतगीत - रवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः,
दर्पाध्मात-मृगेन्द्रभीम-निनदाह्वन्या यथा कुञ्जराः ॥5 ॥
दिव्यस्त्री - नयनाभिराम - विपुल - श्रीमेरु - चूडामणे,
भास्वद्वाल-दिवाकर-द्युतिहर ! प्राणीष्ट-भामण्डलम्।
अव्याबाध - मचिन्त्यसार - मतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतं,
सौख्यं त्वच्चरणारविन्द - युगलं स्तुत्यैव सम्प्राप्यते ॥6 ॥
यावन्नोदयते प्रभा-परिकरः श्रीभास्करो भासयंस्-
तावद्धारयतीह पङ्कज-वनं निद्राति-भारश्रमम्।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन् ! न स्यात्प्रसादोदयस्-
तावज्जीव-निकार्य एष वहति प्रायेण पापं महत् ॥7 ॥
शान्तिं शान्तिजिनेन्द्र ! शान्तमनसस्-त्वत्पाद-पद्माश्रयात्,
सम्प्राप्ताः पृथिवी-तलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः।
कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो दृष्टिं प्रसन्नां कुरु,
त्वत्पादद्वय-दैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः ॥8 ॥

दोधक

शान्तिजिनं शशि-निर्मल-वक्त्रं शील-गुणव्रत-संयम-पात्रं।
अष्ट-शतार्चित-लक्षण-गात्रं, नौमि जिनोत्तम-मम्बुज-नेत्रम् ॥9 ॥
पञ्चम-मीप्सित-चक्रधराणां, पूजितमिन्द्र-नरेन्द्र-गणैश्च।
शान्तिकरं गणशान्ति-मभीप्सुः षोडश-तीर्थकरं प्रणमामि ॥10 ॥
दिव्य-तरुः सुरपुष्प-सुवृष्टि-दुन्दुभिरासन-योजन-घोषौ।
आतप-वारण-चामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डल-तेजः ॥11 ॥
तं जगदर्चित-शान्तिजिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणार्थं तु यच्छतु शान्तिं महामरं पठते परमां च ॥12 ॥

वसन्ततिलका

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुण्डल-हार-रत्नैः, शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुत-पादपद्माः।
ते मे जिनाः प्रवर-वंश-जगत्प्रदीपाः, तीर्थङ्कराः सतत-शान्तिकरा भवन्तु ॥13 ॥

उपजाति

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां,
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः।

स्रग्धरा

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥14 ॥

वसन्ततिलका

दुर्भिक्षं चौरमारिः-क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्य-प्रदायि ॥15 ॥

तद्द्रव्य-मव्यय-मुद्रेतु शुभः स देशः सन्तान्यतां प्रतपतां सततं स कालः।
भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षु-वर्गे ॥16 ॥

अनुष्टुभ्

प्रध्वस्त - घातिकर्माणः केवलज्ञान - भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं वृषभाद्याः जिनेश्वराः ॥17 ॥

इच्छामि भन्ते! सतिभक्ति-काओसगो कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाण
संपण्णाणं अट्ठ-महापाडिहेर-सहियाणं चउतीसातिसय-विसेस-संजुत्ताणं
बत्तीस-देविंद-मणिमय-मउड-मत्थय-महियाणं बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-
रिसिमुणि-जदि-अणगारो व गूढाणं थुइसय-सहस्स-णिलयाणं उसहाइवीर-पच्छिम
मंगल-महापुरिसाणं सया णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिणगुण-संपत्ती
होउ मज्झं।

□□□

अनुष्ठान में मुहूर्त

माङ्गलिक कार्य की सफलता एवं निर्विघ्नता साधु सान्निध्य, अनुष्ठान के पात्र, अनुष्ठानकर्ता, प्रतिष्ठाचार्य, श्रावकों की सद्भावना के साथ-साथ शुभ मुहूर्त एवं लग्न पर आधारित होती है। माङ्गलिक कार्य का शुभारम्भ शुभ योगों के अनुसार करने से विघ्न बाधाएँ, प्राकृतिक प्रकोप, अन्य विषमताएँ आदि नहीं होती हैं तथा प्रभावना, धार्मिक संस्कारारोपण के साथ-साथ अतिशय भी घटित होते हैं।

मुहूर्त का शोधन करते समय विशेष ध्यान रखें कि गुरु-शुक्र, बाल, वृद्ध या अस्त न हों। प्रतिष्ठादि कार्य का शुभारम्भ अधिकमास(मलमास), क्षयमास, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, राष्ट्रीय शोक, भयआतङ्क, क्षयतिथि, अधिक-तिथि(दो तिथि होने पर प्रथम तिथि ग्राह्य), दक्षिणायन(मार्गशीर्ष मास, वास्तुसार, मुहूर्तगणपति, मुहूर्तराज, ज्योतिषरत्नाकर के अनुसार ग्राह्य) में नहीं करें।

प्रतिष्ठा एवं ज्योतिष शास्त्रों का उल्लङ्घन करके अनुष्ठान कर भी लें तो वह समाज के लिए फलदायी, सुख, समृद्धिवर्द्धक नहीं हो पाता है। अशुभ योगों के परिहार में लग्नशुद्धि एवं नवांश मैत्री को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। नवीन प्रतिष्ठाचार्यों को चाहिए कि वह प्रत्येक कार्य शुभलग्न, तिथि, वार, नक्षत्र आदि देखकर सम्पादित करें, उन्हें वरिष्ठ प्रतिष्ठाचार्यों के अनुभव का लाभ लेना चाहिए। सामान्य मुहूर्त चक्र यहाँ दिये जा रहे हैं। विशेष जानकारी के लिए प्रतिष्ठापाठ, वास्तुसार, मुहूर्त गणपति एवं भारतीय ज्योतिष अध्येय हैं।

चन्द्रमा का शुभाशुभ फल

जिसके नाम से गृहारम्भ, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठादि कार्य सम्पादित होना हो उसकी राशि से उस दिन के चन्द्रमा की गणना करें जिसका फल निम्न है।

- | | | | |
|-----------------|--------------------|-----------------|------------|
| (1) लक्ष्मी | (2) सन्तोष | (3) धन सम्पत्ति | (4) कलह |
| (5) ज्ञानवृद्धि | (6) उत्तम सम्पत्ति | (7) राज सम्मान | (8) मरण |
| (9) धर्मलाभ | (10) मनोवाञ्छित | (11) समस्त लाभ | (12) हानि। |

इस प्रकार 4, 8, 12वें चन्द्रमा में कार्य न करें। कार्य की सफलता के लिए मूलनायक तीर्थङ्कर, प्रतिष्ठाकारक एवं प्रतिष्ठाचार्य सभी के चन्द्रमा पर विचार करना चाहिए।

नक्षत्र

अधोमुख नक्षत्र- मूल, आश्लेषा, विशाखा, कृतिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा इन नक्षत्रों में कुआँ व नींव खोदना शुभ होता है।

ऊर्ध्वमुख नक्षत्र- आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रों में शिलान्यास शुभ होता है। मघा, मृगशिर, हस्त, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, अनुराधा, रेवती, श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, स्वाति, धनिष्ठा यह नक्षत्र प्रतिष्ठादि कार्यों के लिए प्रशस्त हैं।

भूमिशयन

सूर्य नक्षत्र से	- 5,7,9,12,19,26
सूर्य संक्रान्ति से	- 5,7,9,15,21,24

इसमें शुभ कार्य वर्जित हैं।

भूमिरजस्वला

सूर्य संक्रान्ति के दिन से 1, 5, 10, 11, 16, 18, 21 वें दिन इसमें कृषि कर्म, हवन, गृह एवं कूप का निर्माण कार्य वर्जित है।

गृहारम्भ खात दिशा विचार-

प्रतिष्ठापाठ, वास्तुसार, प्रासादमण्डन में उल्लेख है कि नींव खनन हेतु राहुचक्रानुसार नाग मुख के पृष्ठ भाग में अर्थात् ईशान मुख हो ती आग्नेय दिशा में आदि के अनुसार खात करें। खात कार्य अधोमुख नक्षत्र एवं चर लग्न में तथा शिलान्यास ऊर्ध्वमुख नक्षत्र एवं स्थिर लग्न में करना चाहिए। किन्हीं आचार्यों ने खातकार्य जिनालय का ईशान एवं गृह का आग्नेय कोण में करने का निर्देश दिया है।

राहुचक्र

नींव खनन हेतु राहुचक्र शुद्धि का विचार निम्नानुसार करें।

वास्तु	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय
देवालय	मीन, मेष वृष के सूर्य में राहु मुख	मिथुन, कर्क सिंह के सूर्य में राहु मुख	कन्या, तुला वृश्चिकके सूर्य में राहु मुख	धनु, मकर कुम्भ के सूर्य में राहु मुख
घर	सिंह, कन्या तुला के सूर्य में राहु मुख	वृश्चिक, धनु मकर के सूर्य में राहु मुख	कुम्भ, मीन मेष के सूर्य में राहु मुख	वृष, मिथुन कर्क के सूर्य में राहु मुख
जलाशय	मकर, कुम्भ मीन के सूर्य में राहु मुख	मेष, वृष मिथुन के सूर्य में राहु मुख	कर्क, सिंह कन्या के सूर्य में राहु मुख	तुला, वृश्चिक धनु के सूर्य में राहु मुख
वेदी	वृष, मिथुन कर्क के सूर्य में राहु मुख	सिंह, कन्या तुला के सूर्य में राहु मुख	वृश्चिक, धनु मकर के सूर्य में राहु मुख	कुम्भ, मीन मेष के सूर्य में राहु मुख
किला	कन्या, तुला वृश्चिक के सूर्य में राहु मुख	धनु, मकर कुम्भ के सूर्य में राहु-मुख	मीन, मेष वृष के सूर्य में राहु मुख	मिथुन, कर्क सिंह के सूर्य में राहु मुख

वृषवास्तुचक्र

शिलान्यास हेतु वृष वास्तु चक्रशुद्धि अनिवार्य है। सूर्य नक्षत्र से कार्य नक्षत्र की गणनानुसार उसका फल निम्न है

वृषभ के अङ्ग	सिर	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पृष्ठ	दक्षिण कुक्षि	पुच्छ	वाम कुक्षि	मुख
नक्षत्र	3	4	4	3	4	3	4	3
फल	दाह	शून्य	स्थिरता	लक्ष्मी	लाभ	स्वामी नाश	दारिद्र्य	सर्वदा पीड़ा

शल्यशोधन

जिस भूमि पर देवालय या भवन आदि बनाना हो उस भूमि के समान 9 भाग करें। इन नौ भागों में पूर्वादि आठ दिशा एवं मध्य में व, क, च, त, ए, ह, स, प और ज इन नौ अक्षरों का क्रमशः न्यास करें। यथा-

तदन्तर किसी कुंवारी कन्या को पूर्व दिशा में मुख कराकर हाथ में श्रीफल (नारियल) देकर "ॐ ह्रीं श्रीं ऐं नमो वाग्वादिनी मम प्रश्ने अवतर अवतर"। इस मन्त्र से खड़िया (सफेद) मिट्टी को 21 बार मन्त्रित कर कन्या के हाथ में देवें एवं कोई प्रश्नाक्षर लिखवाएँ। प्रश्नाक्षर से यन्त्र के अक्षर का मिलान करना, जो अक्षर आवे उस कोष्टक में दी गई दिशा में शल्य जानना चाहिए।

	पूर्व			
ईशान	प	व	क	आग्नेय
उत्तर	स	मध्य ज	च	दक्षिण
वायव्य	ह	ए	त	नैऋत्य
		पश्चिम		

दिशा	वर्ग	शल्य की जाति	शल्य की गहराई	फल
पूर्व	व वर्ग	मनुष्य की हड्डी	1.5 हाथ नीचे	गृहस्वामी की मृत्यु
आग्नेय	क वर्ग	गधे की हड्डी	2 हाथ नीचे	राजदण्ड या राजभय
दक्षिण	च वर्ग	मनुष्य की हड्डी	कमर प्रमाण नीचे	गृहस्वामी की मृत्यु
नैऋत्य	त वर्ग	कुत्ते की हड्डी	1.5 हाथ नीचे	सन्तानसुख की हानि
पश्चिम	ए वर्ग	बालक की हड्डी	2 हाथ नीचे	गृह स्वामी को परदेश
वायव्य	ह वर्ग	कोयला	4 हाथ नीचे	मित्रनाश, दुःस्वप्न
उत्तर	स वर्ग	मनुष्य की हड्डी	कमर प्रमाण नीचे	दरिद्रता
ईशान	प वर्ग	गाय की हड्डी	1.5 हाथ नीचे	धननाश
मध्य	ज वर्ग	अतिक्षार, केश, लोहा, राख आदि	छाती प्रमाण नीचे	गृहस्वामी को मृत्यु-कारक

यदि प्रश्नाक्षर से यन्त्र के अक्षर का मिलान न हो तो भूमि निःशल्य (निर्दोष) समझना चाहिए। यहाँ व क आदि अक्षरों से वर्ग, कर्ग आदि से शल्य की दिशा, जाति, गहराई एवं फल के लिए पिछले चार्ट के अनुसार शल्य जानकर उसे दूर करें।

शिलान्यास-मुहूर्तचक्र

नक्षत्र	मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, हस्त, स्वाति, रोहिणी, रेवती
वार	चन्द्र, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि
तिथि	2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15
मास	वैशाख, श्रावण, माघ, पौष, फाल्गुन
लग्न	2 3 5 6 8 9 11 12
लग्नशुद्धि	शुभ ग्रह लग्न से 1 4 7 10 5 9 स्थानों में एवं पापग्रह 3 6 11 स्थानों में शुभ होते हैं। 8 12 स्थान में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

गृह निर्माण के लिए सप्तसकार योग

शनिवार, स्वातिनक्षत्र, सिंहलग्न, शुक्लपक्ष, सप्तमी तिथि, शुभयोग और श्रावण मास में गृह निर्माण करने से हाथी, घोड़ा, धन सम्पत्ति की प्राप्ति के साथ पुत्र-पौत्र आदि की वृद्धि होती है। उक्त योग सप्तसकार योग कहलाता है।

कलशचक्र

गृहप्रवेश में कलशचक्र शुद्धि होना अनिवार्य है। सूर्य नक्षत्र से कार्य नक्षत्र की गणनानुसार उसका फल निम्न है।

नक्षत्र	1	2,3	6,7	10,11	14,15	18,19	22,23	25,26
		4,5	8,9	12,13	16,17	20,21	24	27
फल	अग्नि भय	उजाड़	लाभ	धन	कलह	विनाश	स्थिरता	स्थिरता

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्तचक्र

मास	माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ
नक्षत्र	उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती।
वार	सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि
तिथि	2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15
लग्न	2।5।8।11 उत्तम हैं। 3।6।9।12 मध्यम है। लग्न से 1।2।3।5।7।9।10।12 स्थानों में शुभग्रह शुभ होते हैं।
लग्नशुद्धि	3।6।11 स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। 4।8 स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

पुनर्निर्मित गृहप्रवेश मुहूर्तचक्र

नक्षत्र	शतभिषा, पुष्य, स्वाति, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, मृगशिर, रेवती, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी
वार	चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि
तिथि	2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13
मास	कार्तिक, मार्गशीर्ष, श्रावण, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ

दुकान मुहूर्तचक्र

नक्षत्र	रोहिणी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, पुष्य, चित्रा, रेवती, अनुराधा, मृगशिर, अश्विनी
वार	शुक्र, गुरु, बुध, सोम
तिथि	2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13

वृहद् व्यापार मुहूर्तचक्र

नक्षत्र	हस्त, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, चित्रा
वार	बुध, बृहस्पति, शुक्र
तिथि	2, 3, 5, 7, 11, 13

शान्तिक और पौष्टिक मुहूर्तचक्र

नक्षत्र	अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति, अनुराधा, मघा।
वार	चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र
तिथि	2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13

मन्दिर मुहूर्तचक्र

मास	माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष, पौष (मतान्तर से)
नक्षत्र	पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, मृगशिर, श्रवण, अश्विनी, चित्रा, पुनर्वसु, विशाखा, आर्द्रा, हस्त, धनिष्ठा, रोहिणी
वार	सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, रवि
तिथि	2, 3, 5, 7, 11, 12, 13

प्रतिमा निर्माण मुहूर्तचक्र

नक्षत्र	पुष्य रोहिणी, श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, हस्त, मृगशिर, रेवती, अनुराधा
वार	सोम, बृहस्पति, शुक्र
तिथि	2, 3, 5, 7, 11, 13

प्रतिष्ठा मुहूर्तचक्र

समय	उत्तरायण में, बृहस्पति, शुक्र और मंगल के बलवान होने पर
तिथि	शुक्लपक्ष की 1 2 5 10 13 15 और कृष्ण पक्ष की 1 2 5 मतान्तर से शुक्ल पक्ष की 7 11
नक्षत्र	पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, हस्त, रेवती, रोहिणी, अश्विनी, मृगशिर, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु। मतान्तर से-चित्रा, स्वाति, भरणी, मूल (आवश्यक होने पर)
वार	सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र
लग्न शुद्धि	2, 3, 5, 6, 8, 9, 11, 12 लग्नराशियाँ-शुभग्रह 1 4 7 15 19 10 में शुभ हैं और पापग्रह 3 6 11 में शुभ हैं। अष्टम में कोई भी ग्रह शुभ नहीं होता है।

बिम्ब स्थापना-मुहूर्तचक्र

मास	अगहन, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ
नक्षत्र	रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, उ.फा. चित्रा, अनुराधा, उ.षा., धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा., रेवती किन्हीं आचार्यों के मत से निम्न नक्षत्र भी ग्राह्य हैं। अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, स्वाति, श्रवण
वार	सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र
तिथि	शुक्लपक्ष की 1, 2, 5, 10, 13, 15 और कृष्णपक्ष की 1, 2, 5 मतान्तर से शुक्लपक्ष की 7, 11
समय	गुरुअस्त, शुक्रअस्त, क्षय तिथि, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण का काल छोड़कर प्रातः काल की बेला में ही करना चाहिए।
विशेष	बिम्बस्थापना में कलशचक्र शुद्धि अनिवार्य है।

कूपखनन-मुहूर्तचक्र

नक्षत्र	हस्त, अनुराधा, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, रोहिणी, पुष्य, मृगशिर, पूर्वाषाढ़ा
वार	बुध, बृहस्पति, शुक्र
तिथि	2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13, 15

कूपशुद्धिचक्र

रोहिणी नक्षत्र से दिनावधि नक्षत्र तक गिनें जिसका क्रमशः फल निम्न है।
 (1) 3 नक्षत्र- स्वादुजल (2) 3 नक्षत्र- निर्जल (3) 3 नक्षत्र- निर्मल जल
 (4) 3 नक्षत्र- जलहानि (5) 3 नक्षत्र- मधुरजल (6) 3 नक्षत्र-क्षारजल
 (7) 3 नक्षत्र- मिश्रितजल (8) 3 नक्षत्र- मीठाजल (9) 3 नक्षत्र-क्षारजल होगा।

होमाहुति का नक्षत्र मुहूर्त

सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो उससे तीन-तीन नक्षत्रों का एक-एक त्रिक होता है। इस प्रकार 27 नक्षत्रों के 9 त्रिक होते हैं जिसमें

- 1.सूर्य का-शोक
- 2.बुध का-लक्ष्मी व सुख
- 3.शुक्र का-धनलाम
- 4.शनि का-पीड़ा
- 5.चन्द्र का-लाम
- 6.मंगल का-बन्धु-बन्धन (मृत्यु)
- 7.गुरु का-द्रव्यलाम
- 8.राहु का-हानि
- 9.केतु का-मृत्यु

अग्निवास

शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से अभीष्ट तिथि तक एवं रविवार से अभीष्ट दिन तक संख्याओं के योग में एक जोड़कर चार का भाग से तीन एवं शून्य शेष में उत्तम, एक शेष में प्राणों का नाश एवं दो शेष होने पर अर्थ का नाश, फल प्राप्त होता है।

विशेष

मुहूर्तचक्रावली ग्रन्थ पृष्ठ 66 के अनुसार नैमित्तिक, मङ्गलकार्यों एवं वास्तु में आहुति व अग्निवास देखना आवश्यक नहीं है।

अशुभयोग चक्र

क्र.	योग का नाम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१	चरयोग (अस्थिरयोग)	पूषा, उषा	आर्द्रा	विशाखा	रोहणी	शतभिषा	मघा	मूल
२	क्रकच योग	१२ अश्विनी	११ चित्रा	१० उषा.	९ मूल	८ शतभिषा	७ पुष्य	६ भरणी
३	महादग्धा	१२ मघा	११ कृतिका	१० आर्द्रा	३ मूल	६ भरणी	अश्विन २	आश्लेषा ७
४	दग्धयोग	१२	११	५ एवं १०	३	६	८ एवं २	९ एवं ७
५	विशाख्य योग (विष योग)	४	६	७	२	८	९	७
६	हुताशन योग	१२	६	७	८	९	१०	११
७	यमघट्ट योग	मघा., पू. फाल्गुनी	विशाखा, पुष्य, आश्ले.	अश्वि., भ., ज्ये, आर्द्रा., अनु.	मूल, हस्त आर्द्रा	कृ. मू. पूषा., रे., उभाद्र	रोहणी, स्वाति	हस्त., श्रवण, शतभिषा
८	दग्ध योग	भरणी	चित्रा	उत्तराषाढ़	धनिष्ठा	उफा.	ज्येष्ठा	रेवती
९	उत्पात योग	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहणी	पुष्य	उफा.
१०	मृत्यु योग	अनु., मघा.	उषा. वि.	शत., आर्द्रा	अश्वि, मूल	मृग., शत.	आश्ले. रो.	हस्त, पूषा.
११	काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित	पू. भाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
१२	काल योग	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू. भाद्रपद

नेत्र परमा

(240)

क्र.	योग का नाम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१३	कालघण्टतिथि	१२	६	११	९	८	७, १०	१०
१४	वज्रमुसल योग	भरणी	चित्रा	उत्तराषाढ़	धनिष्ठा	उ. फा.	ज्येष्ठा	रेवती
१५	शत्रु योग	भरणी	पुष्य	उत्तराषाढ़	आर्द्रा	विशाखा	रेवती	शतभिषा
१६	अवला योग	१२ आर्द्रा	११ मृगसिर	०	२ रोहिणी	०	०	५ कृतिका
१७	यमल योग	०	०	२ मृगसिर	०	७ चित्रा	०	१२ धनिष्ठा
१८	संवर्त योग	७	०	०	१	०	०	०
१९	यमदृष्ट योग	मघा., धनि.	मूल, विशाखा	कृति., भरणी	पूषा. पुन.	उषा, अभि.	रो., अनु.	श्रवण, धनि.
२०	मृत्यु/पाप योग	१, ६, ११	२, ७, १२	१, ६, ११	३, ८, १३	४, ९, १४	२, ७, १२	५, १०, १५, ३०
२१	अधम योग एवं दिनदग्धयोग	१२	११	१०	३	६	२	७
२२	राक्षस योग	शतभिषा	आश्विन	मृगसिर	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़
२३	विषयोग	२, ७, १२ ४, ९, १४	३, ८, १३ ४, ९, १४	५, १०, १५	४, ९, १४	१, ६, ११	३, ८, १३	२, ७, १२
२४	महापापयोग	वि., अनु. ज्ये., भ.	चि., स्वा., वि., अनु., पूषा., उषा., अभि.	धनि., शत., आर्द्रा., पूषा.उषा.	मू., वि., भ., रे., धनि., अश्वि,	मघा., रो., आर्द्रा., भ., मृग, शत.	पुष्य, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा	ह., चि., उफा., भ., पूषा., रे., धनि.

(241)

प्रतिष्ठा परमा

क्र.	योग का नाम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	
२५	अशुभ योग	६, ७, ११, १२ १४	७, ११, १२, १३	१, १०, ११	१, ३, ८, ९, ११ १३, १४	२, ७, १२, ४, ६ ८	२, ३, ४, ७, ९ १४	५, ६, ७, ११ १४	
२६	अशुभ योग	शत., भ., विशा., अनु., ज्ये., मघा.	विशा., चि., ध., पूषा., उषा., अभि., आर्द्रा., अश्विनी	पूषा., उषा., मघा., आर्द्रा., ध., शत.	शत., मू., ध. आश्ले., रे., अश्वि., भ., चि.	शत., कृ., रो. मृग, आर्द्रा, हस्त, उषा, ज्येष्ठा	रो., पुष्य मघा, आश्ले, ज्ये., अभि.	रे., उषा., उषा., हस्त, चि., पूषा. पूषा. मृग., पूषा.	
२७	दृष्टत्याज्य ति.	१, ३, ७	२, ११	३, ९, १२	७, ९, ११	-	-	११, १३	
२८	कुलिक योग	७	६	५	४	३	२	१	
२९	कुलिक योग	१४वीं घटी	१२वीं घटी	१०वीं घटी	८वीं घटी	६वीं घटी	४थी घटी	२वीं (सर्वनाश)	
३०	कालवेता	८	६	४	२	१४	१२	१० (मृत्यु)	
३१	यमघण्ट	१०	८	६	४	२	१४	१२ (दरिद्रता)	
३२	कण्टक	६	४	२	१४	१२	१०	८ (विघ्न)	
वज्रपात योग	२ अनुराधा	३ उत्तरात्रय	५ मघा	६ रोहणी	७ मूल, हस्त, भरणी	८ पूषा.	९ पुष्य	१० आश्लेषा	१३ चित्रा, स्वाति
कालमुखी योग	३ अनुराधा	४ उत्तरात्रय	५ मघा	६ रोहणी	९ कृतिका				
मृत्यु योग	१, ६, ११ मू., आर्द्रा, स्वा., चि., आश्ले., शत., कृति., रे.	२, ७, १२ पूषा., उषा., पूषा., उषा.,	३, ८, १३ मृग, श्र., पुष्य, अश्वि., भ., ज्ये.,	४, ९, १४ पूषा., उषा., विशा. अनु., पुन., मघा	५, १०, १५ हस्त, धनि., रोह.				

प्रतिष्ठा पराग
(242)

शुभयोग चक्र

क्र.	योग का नाम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१	सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू. फाल्गुनी	स्वाति
२	सिद्ध योग	३, ८, १३	१, ६, ११	३, ८, १३	२, ७, १२	५, १०, १५	१, ६, ११	४, ९, १४
३	सिद्ध योग	ह. मू. उषा. उषा, उषा.	रो. मृग. पुष्य अनु., श्र.	उषा. अश्वि. रे.	-	कृ. रो. मृ. पुष्य, अनु.	अश्वि. पुन. श्र. पूषा. अनु. रे.	-
४	अमृत योग	५, १०, १५, २०	५, १०, १५	२, ७, १२	१, ६, ११	३, ८, १३	४, ९, १४	१, ६, ११
५	अमृत योग	१, ६, ११ स्वा., शत. रेव., आर्द्रा चि., आश्ले. मू., कृ.,	२, ७, १२ पूषा, उषा पूषा, उषा	१, ६, ११ स्वा., शत. आर्द्रा, रेव. चि., आश्ले. मूल, कृतिका	३, ८, १३ मृग., श्र., पुष्य ज्ये., भ. अभि., अश्वि.	४, ९, १४ ज्ये., कृति. रो., हस्त मघा, उषा.	२, ७, १२ पूषा, उषा पूषा उषा	५, १०, १५ रोहणी, हस्त धनिष्ठा
६	अमृत योग	५, १०, १५	३, ८, १३	२, ७, १२	१, ६, ११	२	३	३, ८, १३
७	अमृत योग	उषा., उषा. उषा., रोहणी पुष्य, हस्त मूल, रेवती	श्र., ध., रो. मृग., पूषा. उषा., पूषा. उषा., ह. अश्वि.	पुष्य, आश्ले. कृतिका, स्वाति उषा., रेवती	कृतिका, रोहणी शतभिषा अनुराधा	स्वाति, पुन. पुष्य, अनु.	पूषा. उषा. पूषा., उषा. अश्वि. श्रवण, अनु.	स्वाति रोहणी
८	अमृत सिद्धि योग एवं विष योग तिथि	हस्त, पु. पुनर्वसु ५	रोहणी मृगसिर ६	अश्विनी रेवती ७	अनुराधा शत. ८	पुष्य, तीनों उत्तरा ९	रेवती, श्रवण १०	श्र रो वि कृति ११

(243)

प्रतिष्ठा

क्र.	योग का नाम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
९	महाअमृत सिद्ध योग	तीनों उ.रो. पुष्य हस्त, मूल, रेवती	श्र. ध. रो. मृग पूफा., उफा., उभा., पूभा. ह., अश्वि.	पुष्य. आश्ले कृतिका, स्वाति, उभा. रेवती	कृतिका, रोहणी शतभिषा अनुराधा	स्वाति, पुनर्वसु पुष्य अनुराधा	पूफा., उफा., पूभा., उभा. अश्वि., श्रवण अनुराधा	स्वाति, रोहणी -
१०	सिद्ध योग	८	९	३,८,६,१३	२,७,१२	५,१०,११	१,६,११,१३	४,९,१४
११	त्याज्य सिद्ध एवं अमृत योग	५ हस्त	६ मृगसिर	७ अश्विनी	८ अनुराधा	९ पुष्य	-	-
१२	सवार्थ सिद्धि योग	हस्त, मूल, पुष्य, अश्वि., तीनों उत्तरा	श्र., रो., मृग., अनु., पुष्य	अश्वि, उभा., क., आश्ले.	रो., अनु., हस्त, क., मृग.	रे., अश्वि., अनु., पुष्य पुन.	अनु, रे, अश्वि., पुष्य श्रवण	श्रवण, रो. स्वाति
१३	आनन्द योग	अश्विनी	मृगसिर	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	रेवती, शत.
१४	रत्नाकुर योग	३, ८, १३	१, ६	४, ९, १४	५, १०, १५, ३०	२, ७, १२	५, १०, १५, ३०	३, ८, १३
१५	प्रशस्त योग	रेवती	हस्त	पुष्य	रोहणी	स्वाति	उ. फाल्गुनी	मूल
१६	शुभ योग	१, ८, ९, १४ ह., पुष्य, रे. मृग., उ. तीनों पुन., मूल अश्वि., धनि	२, ९ म., रोह. अनु., उभा. हस्त, श्रवण शत., पुष्य	३, ६, ८, १३ अश्वि., रे. उभा., म., वि. उफा., क., मृग. पुष्य, आश्ले.	२, ७, १२ अनु., श्र., ज्ये. पुष्य, ह., क. रो., पूषा. उफा.	५, १०, ११, १५ पुष्य, अ., पुन. पूफा, पूषा पूभा., आश्ले. ध., रे., स्वा. वि., अनु.	१, ६, ११, १३ रे., अश्वि. पूषा., उभा. अनु., मृग. श्रव., ध., पूफा. पुन.	४, ८, ९, १४ रो., श्र., अश्वि., स्वा. पु., अनु., मघा शतभिषा

क्र.	योग का नाम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१७	कुमार योग	-	१, ५, ६, १०, ११ अश्वि., रो. पुन., मघा, ह. वि., मू., श्र. पूषा.	१, ५, ६, १०, ११ अश्वि., रो. पुन., मघा, ह. वि., मू., श्र. पूषा.	१, ५, ६, १०, ११ अश्वि., रो. पुन., मघा, ह. वि., मू., श्र. पूषा.	-	१, ५, ६, १०, ११ अश्वि., रो. पुन., मघा, ह. वि., मू., श्र. पूषा.	-
	त्याज्य कुमार योग	-	११ को विशाखा	१० को पूषा.	९ को मूल, अश्वि.	-	१० को रोहणी	
१८	राजयोग	२, ३, ७, १२ १५ भ., मृग. पुष्य, पूफा. चि., अनु. पूषा., ध., उभा.	-	२, ३, ७, १२ १५ भ., मृग. पुष्य, पूफा. चि., अनु., पूषा. ध., उभा.	२, ३, ७, १२ १५ भ., मृग. पुष्य, पूफा. चि., अनु., पूषा. ध., उभा.	-	२, ३, ७, १२ १५ भ., मृग. पुष्य, पूफा. चि., अनु., पूषा. ध., उभा.	-
१९	स्थिर योग	-	-	-	-	४, ८, ९, १३ १४ क. आर्द्रा, स्वा. उफा., ज्ये. उभा., शत. रेवती, अश्वि	-	४, ८, ९, १३, १४ क., आर्द्रा, अश्वि स्वा., उफा. ज्ये., उभा. शत., रेवती

रवियोग:-

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से दिन का नक्षत्र ४, ६, ९, १०, १३, २० हो तो रवियोग होता है। यह सब प्रकार से सिद्धिकारक है। किन्तु सूर्य नक्षत्र से दिन का नक्षत्र १, ५, ७, ८, ११, १५, १६ हो तो प्राणों का नाश करने वाला है। इसमें शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

बारह मास की तिथियों में तीर्थङ्करों के कल्याणक

मास	तिथि	तीर्थङ्कर	कल्याणक	
चैत्रकृष्ण	4	पार्श्वनाथ	ज्ञानकल्याणक	
	4	अनन्तनाथ	निर्वाणकल्याणक	
	5	चन्द्रप्रभ	गर्भकल्याणक	
	8	शीतलनाथ	गर्भकल्याणक	
	9	आदिनाथ	जन्म, तपकल्याणक	
	30	अनन्तनाथ	ज्ञानकल्याणक	
चैत्रशुक्ल	30	अरनाथ	निर्वाणकल्याणक	
	1	मल्लिनाथ	गर्भकल्याणक	
	3	कुन्थुनाथ	ज्ञानकल्याणक	
	5	अजितनाथ	निर्वाणकल्याणक	
	6	सम्भवनाथ	निर्वाणकल्याणक	
	11	सुमतिनाथ	जन्म, ज्ञान, निर्वाण	
	13	महावीर	जन्मकल्याणक	
	15	पद्मप्रभ	ज्ञानकल्याणक	
	वैशाखकृष्ण	2	पार्श्वनाथ	गर्भकल्याणक
		9	मुनिसुव्रतनाथ	ज्ञानकल्याणक
10		मुनिसुव्रतनाथ	जन्म, तपकल्याणक	
13		धर्मनाथ	गर्भकल्याणक	
14		नमिनाथ	निर्वाणकल्याणक	
वैशाखशुक्ल	1	कुन्थुनाथ	जन्म, तप, निर्वाण	
	6	अभिनन्दननाथ	गर्भ, निर्वाणकल्याणक	
	9	सुमतिनाथ	तपकल्याणक	
	10	महावीर	ज्ञानकल्याणक	

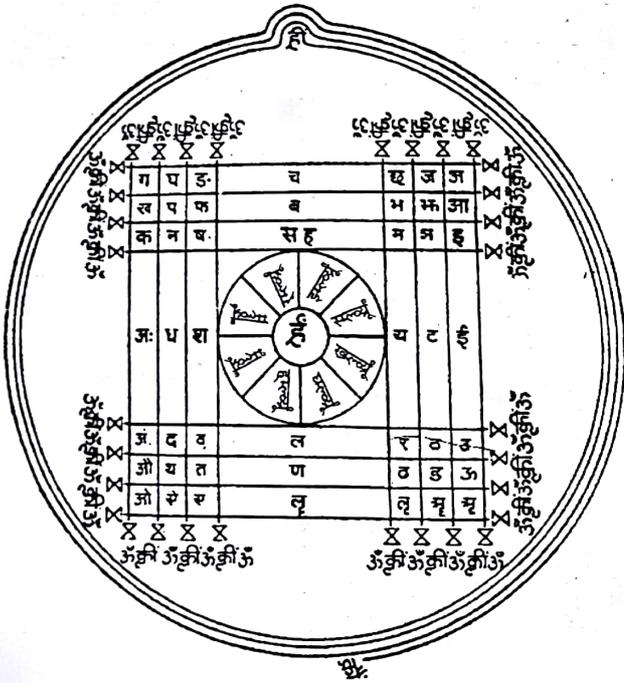
मास	तिथि	तीर्थङ्कर	कल्याणक
ज्येष्ठकृष्ण	6	श्रेयांसनाथ	गर्भकल्याणक
	10	विमलनाथ	गर्भकल्याणक
	12	अनन्तनाथ	जन्म, तपकल्याणक
	14	शान्तिनाथ	जन्म, तप, निर्वाण
	30	अजितनाथ	गर्भकल्याणक
	ज्येष्ठशुक्ल	4	धर्मनाथ
आषाढकृष्ण	12	सुपार्श्वनाथ	जन्म, तपकल्याणक
	2	आदिनाथ	गर्भकल्याणक
	6	वासुपूज्य	गर्भ कल्याणक
	8	विमलनाथ	निर्वाण कल्याणक
आषाढशुक्ल	10	नमिनाथ	जन्म, तप कल्याणक
	6	महावीर	गर्भकल्याणक
	7	नेमिनाथ	निर्वाणकल्याणक
श्रावणकृष्ण	2	मुनिसुव्रतनाथ	गर्भकल्याणक
	10	कुन्थुनाथ	गर्भकल्याणक
श्रावणशुक्ल	2	सुमतिनाथ	गर्भकल्याणक
	6	नेमिनाथ	जन्म, तपकल्याणक
	7	पार्श्वनाथ	निर्वाणकल्याणक
	15	श्रेयांसनाथ	निर्वाणकल्याणक
	7	शान्तिनाथ	गर्भकल्याणक
भद्रपदकृष्ण	7	सुपार्श्वनाथ	गर्भकल्याणक
भद्रपदशुक्ल	6	सुपार्श्वनाथ	गर्भकल्याणक
	8	पुष्पदन्त	निर्वाणकल्याणक
अश्विनकृष्ण	14	वासुपूज्य	निर्वाणकल्याणक
	2	नमिनाथ	गर्भकल्याणक

प्रतिष्ठा पराग	(248)	तीर्थङ्कर	कल्याणक
मास	तिथि		
अश्विनशुक्ल	1	नेमिनाथ	ज्ञानकल्याणक
	8	शीतलनाथ	निर्वाणकल्याणक
कार्तिककृष्ण	1	अनन्तनाथ	गर्भकल्याणक
	4	सम्भवनाथ	ज्ञानकल्याणक
	13	पद्मप्रभ	जन्म, तपकल्याणक
	30	महावीर	निर्वाणकल्याणक
कार्तिकशुक्ल	2	पुष्पदन्त	ज्ञानकल्याणक
	6	नेमिनाथ	गर्भकल्याणक
	12	अरनाथ	ज्ञानकल्याणक
	15	सम्भवनाथ	जन्मकल्याणक
मार्गशीर्षकृष्ण	10	महावीर	तपकल्याणक
मार्गशीर्षशुक्ल	1	पुष्पदन्त	जन्म, तपकल्याणक
	10	अरनाथ	तपकल्याणक
	11	मल्लिनाथ	जन्म, तपकल्याणक
	11	नेमिनाथ	ज्ञानकल्याणक
	14	अरनाथ	जन्मकल्याणक
	15	सम्भवनाथ	तपकल्याणक
पौषकृष्ण	2	मल्लिनाथ	ज्ञानकल्याणक
	11	चन्द्रप्रभ	जन्म, तपकल्याणक
	11	पार्श्वनाथ	जन्म, तपकल्याणक
	14	शीतलनाथ	ज्ञानकल्याणक
पौषशुक्ल	10	शान्तिनाथ	ज्ञानकल्याणक
	11	अजितनाथ	ज्ञानकल्याणक
	14	अभिनन्दननाथ	ज्ञानकल्याणक
	15	धर्मनाथ	ज्ञानकल्याणक

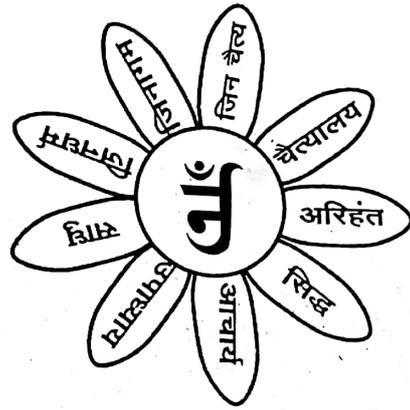
मास	तिथि	(249)	तीर्थङ्कर	कल्याणक
माघकृष्ण	6		विमलनाथ	ज्ञानकल्याणक
	6		पद्मप्रभ	गर्भकल्याणक
	12		शीतलनाथ	जन्म, तपकल्याणक
	14		आदिनाथ	निर्वाणकल्याणक
	30		श्रेयांसनाथ	ज्ञानकल्याणक
माघशुक्ल	2		वासुपूज्य	ज्ञानकल्याणक
	4		विमलनाथ	जन्म, तपकल्याणक
	9		अजितनाथ	तपकल्याणक
	10		अजितनाथ	जन्मकल्याणक
	12		अभिनन्दननाथ	जन्म, तपकल्याणक
	13		धर्मनाथ	जन्म, तपकल्याणक
फाल्गुनकृष्ण	4		पद्मप्रभ	निर्वाणकल्याणक
	6		सुपार्श्वनाथ	ज्ञानकल्याणक
	7		सुपार्श्वनाथ	निर्वाणकल्याणक
	7		चन्द्रप्रभ	ज्ञान, निर्वाणकल्याणक
	9		पुष्पदन्त	गर्भकल्याणक
	11		श्रेयांसनाथ	जन्म, तपकल्याणक
	11		आदिनाथ	ज्ञानकल्याणक
	12		मुनिसुव्रतनाथ	निर्वाणकल्याणक
	14		वासुपूज्य	जन्म, तप कल्याणक
फाल्गुनशुक्ल	3		अरनाथ	गर्भकल्याणक
	5		मल्लिनाथ	निर्वाणकल्याणक
	8		सम्भवनाथ	गर्भकल्याणक

जिस तिथि में जिन तीर्थंकरों के कल्याणक हों उन तिथियों में मन्दिर जी में विशेष पूजा-विधान एवं धार्मिक आयोजन करना चाहिए।

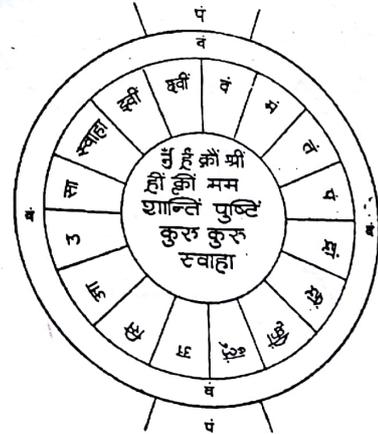
मातृकायन्त्र



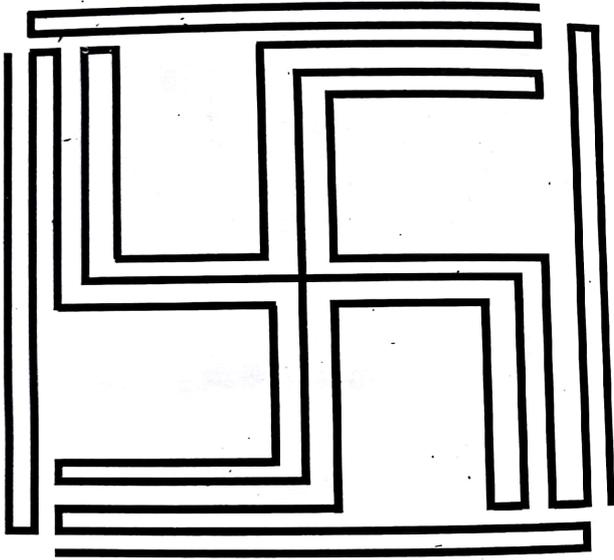
नवदेवमण्डलयन्त्र



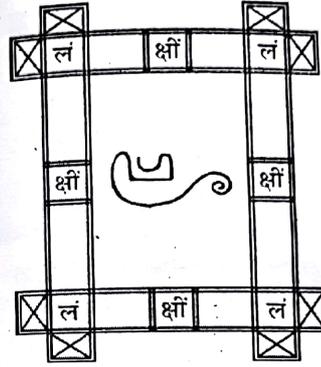
यन्त्रेशयन्त्र (पृथ्वी मण्डल)



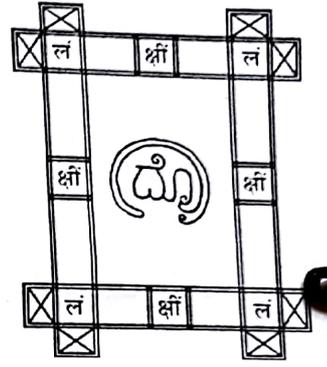
नन्द्यावर्त स्वस्तिक



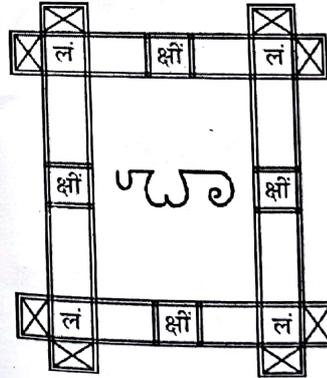
चतुर्विंशति तीर्थकर विम्ब स्थापन यन्त्र



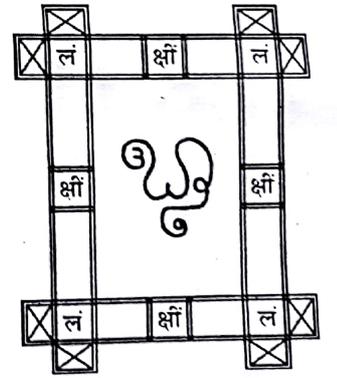
श्री ऋषभनाथ यन्त्र



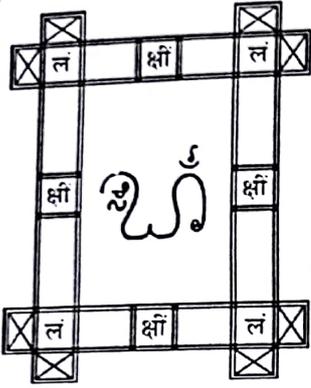
श्री अजितनाथ यन्त्र



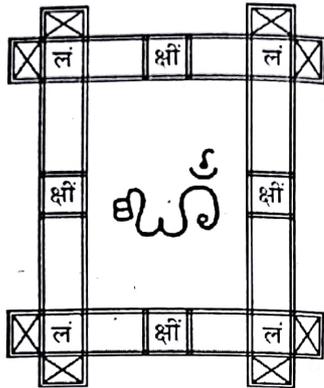
श्री सम्भवनाथ यन्त्र



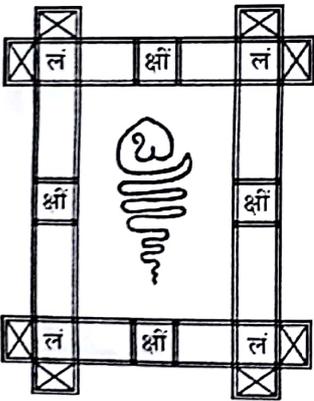
श्री अभिनन्दननाथ यन्त्र



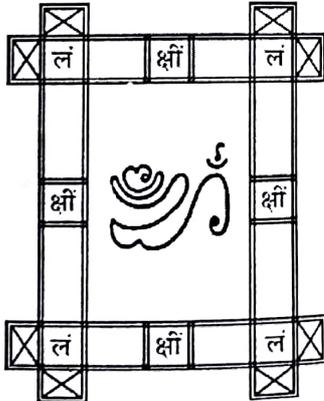
श्री सुमतिनाथ यन्त्र



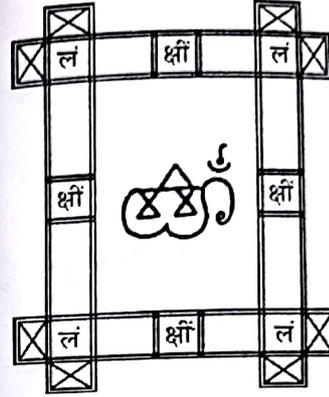
श्री पद्मप्रभ यन्त्र



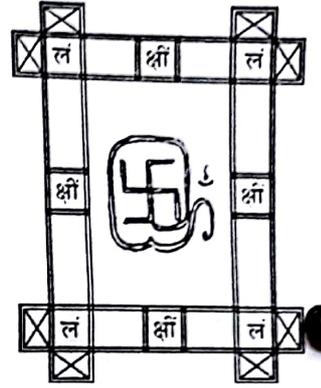
श्री सुपार्शनाथ यन्त्र



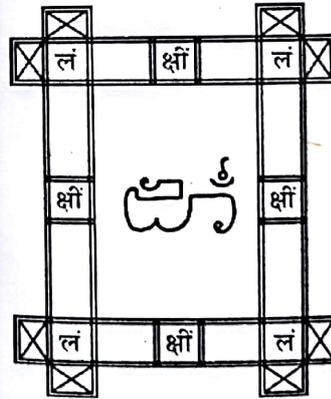
श्री चंद्रप्रभ यन्त्र



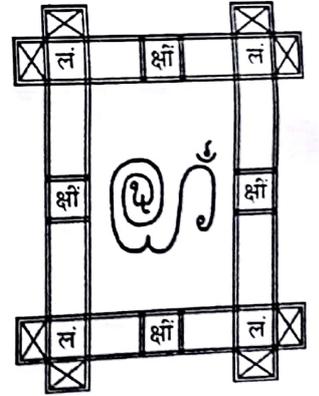
श्री पुष्पदंत यन्त्र



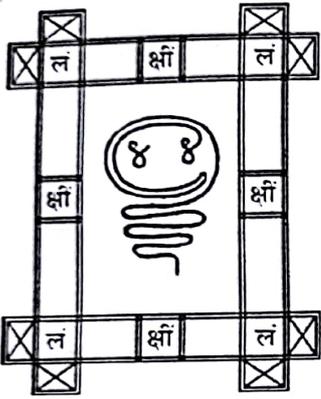
श्री शीतलनाथ यन्त्र



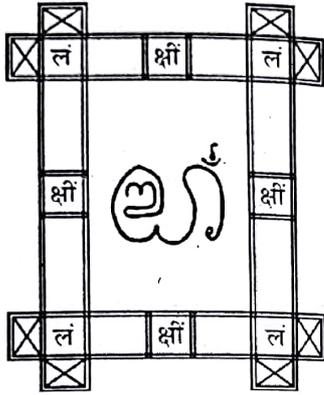
श्री श्रेयांसनाथ यन्त्र



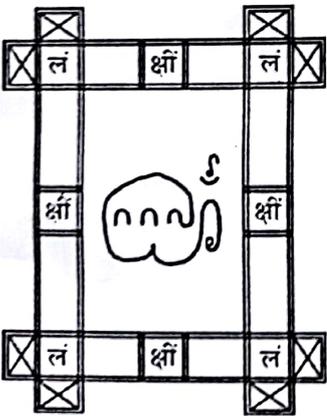
श्री वासुपूज्य यन्त्र



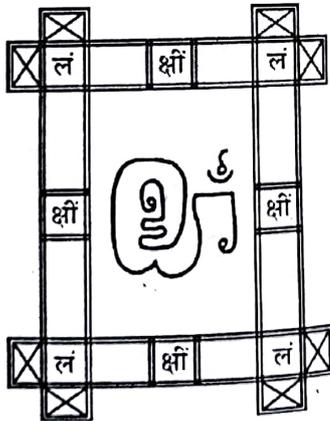
श्री विमलनाथ यन्त्र



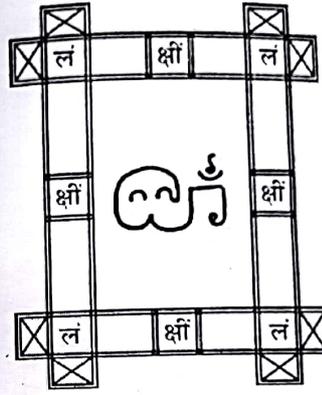
श्री अनंतनाथ यन्त्र



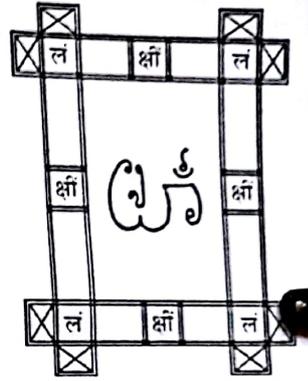
श्री घर्मनाथ यन्त्र



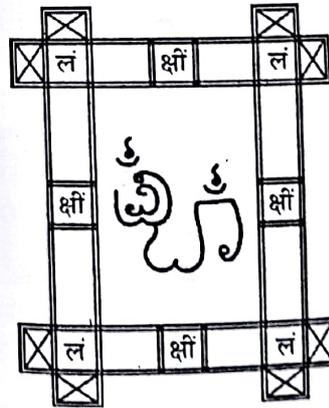
श्री शांतिनाथ यन्त्र



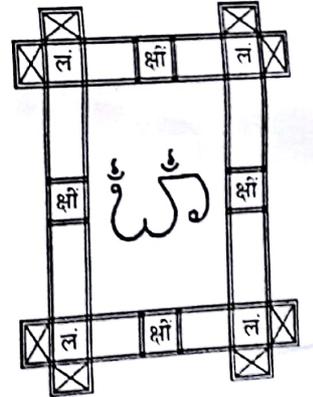
श्री कुंथुनाथ यन्त्र



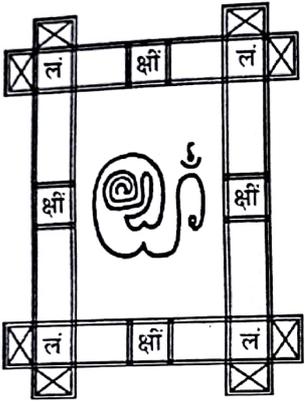
श्री जरनाथ यन्त्र



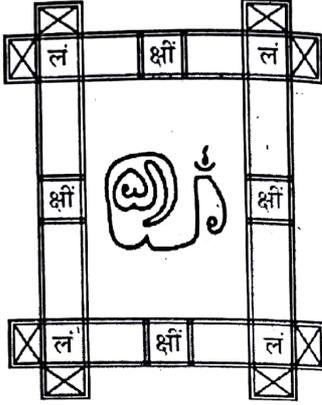
श्री मल्लिनाथ यन्त्र



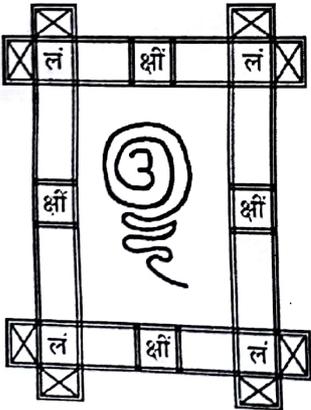
श्री मुनिसुव्रतनाथ यन्त्र



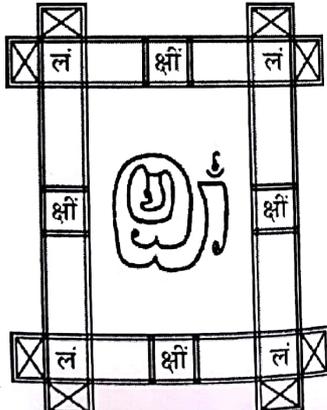
श्री नमिनाथ यन्त्र



श्री नेमिनाथ यन्त्र

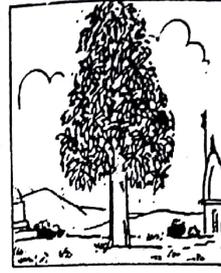


श्री पार्श्वनाथ यन्त्र



श्री महावीर यन्त्र

अष्ट प्रातिहार्य



अशोक वृक्ष



सुरपुष्प वृष्टि



देवदुन्दुभि



सिंहासन



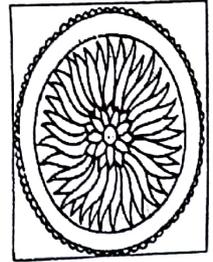
छत्र त्रय



चंवर



दिव्यध्वनि



भामंडल या प्रभामंडल

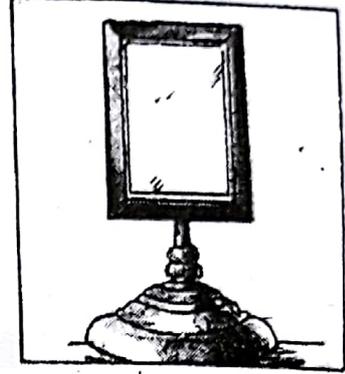
अष्टमंगल द्रव्य



झारी



कलश



दर्पण



ध्वज



चक्र



छत्र



बीजना (पंखा)



सुप्रतिष्ठ



पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'

पिता : पं. मन्मूलाल जैन, प्रतिष्ठाचार्य
 माता : श्रीमती हरबाई जैन
 जन्म : 10 जुलाई 1924, ककरवाहा, टीकमगढ़ (म.प्र.)
 शिक्षा : मध्यमा, आयुर्वेद शास्त्री, एच. एम. टी.
 व्रत : ब्रह्मचर्य प्रतिमा 4 जनवरी, 2003
 सम्प्रति : आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से
 ज्योतिष, संगीत एवं आयुर्वेद के ज्ञान के साथ बुद्धि, प्रतिभा, संयम का संवर्द्धन करके 1956 से प्रतिष्ठा कार्य में संलग्न 225 प्रतिष्ठा/गजरथ का अनुभव वितीर्ण करने का गौरव प्राप्त
 कृतित्व : अर्चनागीत, प्रतिष्ठादर्पण, विधानसंग्रह, प्रतिष्ठारत्नाकर, व्रत वैभव
 उपाधियाँ : प्रतिष्ठारत्न, प्रतिष्ठारत्नाकर, संहितासूरि, धर्मरत्न, विद्वत्त्रत्न, साहित्यरत्न, प्रतिष्ठा चूड़ामणि, प्रतिष्ठा पितामह आदि।



ब्र. जयकुमार 'निशांत'

पिता : पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प', प्रतिष्ठाचार्य
 माता : श्रीमती रामबाई जैन
 जन्म : 17 अगस्त 1959, ककरवाहा, टीकमगढ़ (म.प्र.)
 शिक्षा : एम. एस-सी. (जीव विज्ञान)
 व्रत : सन् 1986 पपौरा जी, आ. श्री विद्यासागर जी महाराज से
 सम्प्रति : शास. सेवा से स्वेच्छिक सेवा निर्वृत्ति लेकर लेखन, सम्पादन, प्रतिष्ठा एवं धार्मिक आयोजनों में संलग्न 130 प्रतिष्ठा/गजरथ का अनुभव
 कृतित्व : जिनार्चना संग्रह, पुष्पाञ्जलि, यागमण्डल विधान, विधान संग्रह, प्रतिष्ठा पराग, व्रत वैभव
 सम्पादन : मुक्तकाञ्जलि, प्रतिष्ठारत्नाकर, संस्कार सागर (मासिक)
 उपाधियाँ : प्रतिष्ठारत्न, युवारत्न, वाणीभूषण, प्रतिष्ठा चूड़ामणि

पं. मन्मूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट

1. अर्चना गीत (तृतीय संस्करण)
प्रारंभिक पूजा विधि एवं पं. पुष्प जी द्वारा रचित भक्ति गीतों का अनुपम संग्रह।
2. प्रतिष्ठा दर्पण
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधि का प्रामाणिक विवरण।
3. यागमण्डल विधान एवं पंचकल्याणक पूजा (अष्टम संस्करण)
दैनिक पूजा, यागमण्डल विधान, पंचकल्याणक पूजा एवं हवन विधि का संग्रह।
4. विधान संग्रह (सप्तम संस्करण)
12 लघु विधानों का विधि सहित संकलन।
5. प्रतिष्ठा रत्नाकर (द्वितीय संस्करण प्रेस में)
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधि का समग्र प्रामाणिक विवरण।
6. पुष्पाञ्जलि
पं. गुलाबचन्द्र "पुष्प" के व्यक्तित्व कृतित्व के साथ 300 पृष्ठों में विशेष जिज्ञासा समाधान।
7. व्रत वैभव (चार खण्ड में) द्वितीय संस्करण
450 से अधिक व्रतों की विधि, मंत्र, पूजा, उद्यापन एवं विधानों का विशेष संग्रह।